# लहरों के बीच

हरमन मेलविल के प्रसिद्ध उपन्यास
'मोबी डिक' का हिन्दी अनुवाद

राजपाल एण्ड सन्ज़ दिल्ली

Moby Dick का हिन्दी अनुवाद



अनुवादक : यादवचन्द्र जैन

| | |
|---|---|
| मूल्य | तीन रुपए |
| प्रकाशक | राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली |
| मुद्रक | युगान्तर प्रेस, दिल्ली |

## पुस्तक के सम्बन्ध में—

'लहरों के बीच' (Moby Dick) को साधारणतः विश्वसाहित्य में एक 'क्लासिक' के रूप में माना जाता है। समुद्र के वातावरण को लेकर यह एक महान् उपन्यास है। समरसेट मॉम ने इसे संसार के श्रेष्ठतम दस उपन्यासों में माना है।

अस्तु, कथा के सम्बन्ध में पुस्तक का मूल लेखक हरमन मेलविले एक स्थान पर स्वयं कहता है कि उसने 'धूर्तताओं से पूर्ण एक पुस्तक लिखी है परन्तु वह एक भेड़ की तरह दूधिया, स्वच्छ और पवित्र है।'

इस प्रकार अंधियारे की यह कहानी धूप के प्रकाश में प्रकट की गई है; जैसे 'काला और सफेद'—उपन्यास के दो प्रभावपूर्ण रंग हों।

'लहरों के बीच' (Moby Dick) में व्हेल शिकार के एक जहाज और उसके जीवन का विवरण है। सब मिलाकर भ्रमण की यह एक बहुत सुन्दर कहानी है।

—यादवचन्द्र जैन

# १

मुझे इस्माइल कहकर पुकारिए। ठीक-ठीक तो ध्यान नही कि कितने दिन हो गए, किन्तु कुछ साल पहले तट के प्रति कुछ विशेष आकर्षण न होने के कारण, न इसका ही विचार करके कि जेब भी गरम है अथवा नही, मैने सोचा कि समुद्री यात्रा की जाए और संसार के कुछ जलभागों का निरीक्षण किया जाए। मेरा यह अपना एक ढंग है जिसके द्वारा मै अपने शरीर को चुस्त व तरोताज़ा रखता हूं। जब कभी मै उदास होता हूं अथवा मेरे मन में नवम्बर महीने की-सी नमी या बूंदाबांदी की-सी काहिली भर जाती है या कभी अनिच्छा से मै किसी कफनिये की दुकान के सामने खड़ा हो जाता हूं और जो [illegible] मुर्दा मेरे सामने आता है उसके पीछे-पीछे चलने लगता हूं, या मेरे हृदय की दुर्बलता मुझे झकझोरने लगती है कि मै सडक पर चलने अथवा जान-बूझकर लोगों के हैटों को गिराने से अपने को रोकूं और एक न्यायसंगत एवं [illegible] मनुष्य की भांति व्यवहार करूं, तब मै सोचता हू कि यही उपयुक्त समय [illegible] मुझे तुरन्त समुद्र की ओर चल देना चाहिए। शिकार अथवा [illegible] मै ऐसा करता हूं। जिस दार्शनिक उत्साह के साथ 'कैटो' [illegible] तलवार की धार पर फेंक देता है, उसी प्रकार मैं समुद्रयात्रा पर चल [illegible] आश्चर्य की कोई बात नहीं। यदि दूसरे लोगों को इसका अनुभव हो जाए तो वे भी उसी प्रकार समुद्र की ओर आकर्षित होना चाहेंगे जैसे कि [illegible] होता हूं।

पानी से घिरा हुआ एक नगर 'मनहत्तो' है, जिसको चारों ओर से पक्के घाट [illegible] है, जैसे हिन्दमहासागर द्वीपों के किनारों पर मूंगे की चट्टानें—जिसकी [illegible] में व्यापार अठखेलिया करता है। दाहिने-बाएं, सड़के आपको जल की ओर ही ले जाएंगी। उसके सबसे नीचे ढलान पर 'बैटरी' है जिसका [illegible] दरगाह हर समय जल से धुलता रहता है और सर्द हवा के झोंकों से तर रहता

है। वहां कुछ घंटों पहले भूमि का निशान भी नहीं दिखाई देता था। उस स्थान पर उस भीड़ को देखिए जो जल में निगाह गड़ाए खड़ी रहती है।

'सब्बाथ'[1] के स्वप्निल अपराह्न के-से उस नगर की परिक्रमा कीजिए। 'कार्लियर्स हुक' से 'कोन्टीज स्लिप' तक जाइए और तब वहां से व्हाइट हाल होते हुए उत्तर की ओर। आप क्या देखेंगे? उस समुद्र के किनारे हजारों आदमी दृष्टि गड़ाए, ऐसे खड़े मिलेंगे जैसे नगर के चारों ओर खामोश संतरियों का पहरा लगा हो। कुछ बांधों पर बैठे मिलेंगे और कुछ लोग चीन से आए जहाजों को गोलाई में खड़े देखते होंगे। कुछ जहाजों के रस्सों पर चढ़ते दिखाई देंगे जिससे वे ऊंचाई से, समुद्र को भली प्रकार देख सकें। किन्तु ये सब अक्सर मनुष्य हैं जो सप्ताह के बाकी दिनों में किसी लकड़ी से चिपके होते हैं या प्लास्टर से—दुकानों के काउन्टर से बन्धे होते हैं अथवा किसी बेंच पर कील की तरह जड़े होते हैं या किसी डेस्क पर काम करते हुए कसे बैठे होते हैं। तब, इस समय, ऐसा क्यों दीख रहा है? क्या पृथ्वी के सब हरे-भरे खेत समाप्त हो गए? तब ये सब यहां क्या कर रहे हैं?

लेकिन, वह देखिए। सामने यह और भीड़ चली आ रही है जो सीधे पानी की ओर बढ़ रही है। लग रहा है, जैसे सब पानी में डुबकी मारने को आतुर हों। ताज्जुब! भूमि की अन्तिम सीमा तक पहुंचे बिना इन्हें सन्तोष नहीं मिल सकता। छायादार गोदामों में चक्कर काटने भर से इनको तसल्ली नहीं होगी। कभी नहीं। वे पानी के इतने निकट जाना चाहते हैं जहां तक गिरने का खतरा न हो। और वह देखिए, वहां वे मीलों-मीलों तक छितरे खड़े हैं। ये सब भूवासी हैं जो रास्तों से, संकरी गलियों से, सड़कों से और एवेन्यू से—उत्तर, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम—सब ओर से, चले आए हैं। यहां इन सबमें एकता है। बताइए! क्या उन जहाजों की तमाम कुतुबनुमाओं की सुइयों के खिंचाव का यह प्रभाव है कि उन्होंने इनको अपनी ओर खींच लिया है?

एक बार फिर ध्यान दीजिए—जैसे, आप नगरों से दूर किसी ऐसे ऊंचे स्थान पर पहुंच गए हैं जहां झीलों की बहुलता है। जो भी मार्ग चाहें आप चुन लें। उन मार्गों में—दस में से नौ, आपको घाटी की ओर ले जाएंगे और लहरों

---

१. सप्ताह का आखिरी धार्मिक विश्राम का दिन—रविवार।

के सामने छोड़ देंगे । इसमें जादू होता है । चाहे जैसे खब्तुलहवास आदमी हो, उसके गहरे से गहरे विचारों में डूबे रहने दीजिए—बस, उसको पैरों के बल खड़ा कर दीजिए और उसका एक पैर आगे बढ़ा दीजिए । वह अपने आप आपको पानी की ओर घसीट लाएगा । यदि उस प्रदेश में कहीं भी पानी है तो आप उसके साथ वहीं पहुंच जाएंगे । यदि आप किसी फैले हुए भारी अमेरिकन रेगिस्तान में प्यासे हों तो इस प्रयोग को कीजिए या आपके कारवां में यदि दैवात् कोई दर्शनशास्त्र का प्रोफेसर हो तो देख लीजिए । जी हां, जैसा कि प्रत्येक व्यक्ति जानता है, गहन चिन्तना एवं जल में, जैसे सदा-सदा से, पारस्परिक वैवाहिक सम्बन्ध है ।

अब एक कलाकार को लीजिए । वह 'सैको' की घाटी में एक रोमेन्टिक ग्राम्य दृश्यावली चित्रित करना चाहता है जो पूर्णतः स्वप्नलोक की हो और जिसमें बड़े सुहाने व चमकदार रंग भरे गए हों । कौन-सी महत्त्वपूर्ण वस्तु होगी जिसका वह प्रयोग करेगा ? वहां वृक्ष खड़े हैं, प्रत्येक में एक खोखला तना है जैसे उसके अन्दर कोई वैरागी बैठा हो या ईसा का कीलों से बिंधा कोई सलीब हो, और वहां उसकी सुनसान चरागाह जैसे सो रही है, निकट ही उसके पशु भी विश्राम पा रहे हैं, अलग एक झोपड़ी से भूरा धुंआ उड़ रहा है । दूर गहराई में—पेड़ों से घिरे जंगल के बीच एक चक्करदार रास्ता है जो पर्वतमालाओं पर झांकने नीलाकाश तक पहुंचता है । भले ही यह चित्र यों प्रचेतन दिखे, भले ही देवदार का यह पेड़ उस गड़रिए के सर पर श्वास की-सी कोमल पत्तियों को गिराता रहे किन्तु जब तक उस गड़रिए के नेत्र अपने सामने बहते हुए उस जादूभरे जलप्रवाह पर नहीं टिके हुए हैं तब तक उसका चित्र बेकार है । जाइए—जून के महीने में घास के मैदानों में जाइए । आप मीलों, घुटनों तक आई हुई कुमुदनी के बीच घुसते चले जाइए । किन्तु, आकर्षण का कौन-सा प्रभाव खटकेगा ? पानी—वहां पानी की एक बूंद भी नहीं होगी । 'नियागरा' झरने के स्थान पर बालू का प्रपात होता तो क्या आप उसे देखने के लिए हजारों मील की यात्रा करते ? क्यों, उस बेचारे गरीब कवि टेनेसी ने अचानक एक बार दो मुट्ठी चांदी पा जाने पर सोचा कि वह अपने लिए एक कोट न खरीदे जिसकी कि उसे नितान्त आवश्यकता थी वरन् अपने उस धन को 'राकअवे बीच' के समुद्र तट तक जाने की पैदल यात्रा में खर्च करे ? क्यों एक हट्टाकट्टा

नौजवान जिसमें वैसा ही उत्साही मन है—सदैव यह चाहता है कि वह समुद्र की यात्रा करे? क्यों एक यात्री के रूप में, आप अपनी पहली समुद्रयात्रा में मन के उस रहस्यमय उद्वेलन से भर जाते हैं और आपमें प्रसन्नता जागृत होती है, जब आपको पहली बार बताया जाता है कि अब किनारा दूर हो गया है? ईरान के पुराने निवासी क्यों समुद्र को पवित्र मानते हैं? यूनान वाले क्यों जल को पृथक् देवता मानते हैं और उसे सुख तथा आनन्द का दाता समझते हैं? निश्चित ही, यह सब निरर्थक तो नहीं है। इससे अधिक गहन अर्थ उस कथा के है जिसमें 'नार्सीसास'[1] उस झरने के बीच पीड़ा देने वाली किन्तु कोमल मूर्ति के दर्शन जब सहन न कर सका तो उसी में डूब गया। किन्तु उसी मूर्ति को स्वयं हम सब प्रत्येक नदी व सागर में देखते हैं। जीवन की मायावी छलना की वही असह्य व त्याज्य मूर्ति है, वही इस संसार-चक्र के रहस्य को जानने की कुंजी है।

अब, अब मैं यह कहता हूं कि जब कभी मेरे नेत्रों के समक्ष धूमिल छाया मंडराने लगती है अथवा मैं अपने वातावरण से ऊबकर, स्वभावतः, समुद्र की ओर जाता हूं तो इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि मैं एक यात्री बनकर समुद्र की ओर आया हूं। क्योंकि यात्री होकर जाने का अर्थ है एक भरा-पूरा 'पर्स' और वह 'पर्स' सचमुच तब तक एक चिथड़ा है जब तक भरा-पूरा न हो। इसके अतिरिक्त यात्रियों को समुद्री बीमारी सताती है, वे आपस में झगड़ते हैं, वे रात-रातभर सो नहीं पाते, साधारणतः वे उसका विशेष आनन्द नहीं ले पाते। —न, मैं एक यात्री होकर कभी नहीं जाता। यों मुझमें खारापन है फिर भी

---

१. एक यूनानी किंवदंती। नार्सीसास नामक एक अत्यन्त सुन्दर नवयुवक था। उसने एक बार चश्मे के स्फटिक से निर्मल पानी में अपनी परछाईं देखी। वह स्तब्ध रह गया। क्या वह वास्तव में इतना सुन्दर है? वह अपने आप पर मोहित हो गया। अब उसका काम ही एक रह गया—चश्मे के पानी में अपनी परछाईं को निहारना और अपने सौन्दर्य पर रीझते रहना। धीरे-धीरे यह आत्मरति इतनी बढ़ी कि जब एक बार वह चश्मे पर झुका हुआ अपने प्रतिबिम्ब को निहार रहा था वह इतना आत्मविस्मृत हो गया कि पानी में गिरकर डूबकर मर गया। बाद में, जिस जगह पर

मैं एक 'कमोडोर' या एक कप्तान या एक रसोइए के रूप में भी नहीं जाता हूं। अधिकार के अन्तर की इस भावना को मैं उन्हीं के लिए छोड़ता हूं जो लोग इसे पसन्द करते हैं। जहां तक मेरा सम्बन्ध है, मैं इस प्रकार के कार्यों, प्रयत्नों एवं कष्टों का तिरस्कार करता हूं। मैं जहाजों—बार्क,[1] ब्रिग,[2] शूनर[3]—अथवा इस प्रकार की अन्य वस्तुओं की बिना परवाह किए केवल अपनी ही चिन्ता में लीन रहता हूं।

जहां तक रसोइया बनने की बात है, मैं कहता हूं कि वह कार्य काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि जहाज पर वह एक प्रकार का अफसर माना जाता है। किन्तु मैंने कभी मुर्गा पकाने की बात नहीं सोची। यों मैं जानता हूं कि भली प्रकार घी-मसाला डालकर बनाई गई उस चीज़ की जितनी बड़ाई स्वयं मैं करूंगा वैसी कोई दूसरा नहीं करेगा। यह वैसी ही बात है जैसे पुराने ज़माने के मिस्र निवासियों की पके हुए इबीस[4] पर अथवा भूने हुए जलघोड़ों पर धार्मिक आस्था हो और तभी उन्होंने इन जीवों की ममियों को उन पिरामिड रूपी बावर्चीखानों में बन्द कर रखा हो।

नहीं, मैं साधारण मल्लाह के रूप में ही समुद्रयात्रा करता हूं। कभी मस्तूल तक चढ़ता हूं, तो कभी जलपोत के यंत्र पर उछलता हूं और कभी सर्वोच्च राजकीय मस्तूल तक पहुंच जाता हूं। सचमुच ही, वे लोग मुझे एक मस्तूल से दूसरे पर चढ़ने की आज्ञा देते हैं और मैं उसी प्रकार उछलता रहता हूं जैसे मई की हरियाली घास पर उछलने वाला टिड्डा। प्रारम्भ में, इस प्रकार का कार्य तो बहुत बुरा लगता है। वह कार्य एक प्रकार से व्यक्ति के सम्मान को ठेस पहुंचाता है विशेषतः यदि कोई 'वान रेन्सेलियर्स' या 'रेन्डोलफ' या 'हार्डीकेनट्से' ऐसे प्राचीन और कुलीन परिवार का हो। उस जलपोत पर जाने के पहले भी आप उस स्कूल-मास्टर की भांति अधिकार जमाते आ रहे हों जो सबसे लम्बे लड़कों को भी आतंकित किए रहता है तो आपको और भी बुरा लगेगा। जैसा मैं आपको

---

वह बैठा करता था, उसी जगह पर एक फूल का पौधा उग आया। इस फूल को भी नार्सीसास नाम दिया गया।

१, २, ३, जहाजों की किस्में।

४. एक प्रकार का पक्षी-विशेष जिसे मिस्र के लोग पूजते हैं।

समझाऊं, स्कूल-मास्टर से इस नाविक होने के बीच के परिवर्तन-काल को सहन करने के लिए 'सेनेका'[1] अथवा 'स्टोइक्स'[2] लोगों के मनगढ़न्त दार्शनिक तर्कों की भांति सन्तोष करना पड़ेगा। समय पाकर यह सब भूल जाता है।

इसकी क्या चिन्ता है कि कोई बेहरा कप्तान मुझे हुक्म देता है कि एक झाड़ू लेकर मैं जहाज के डेक को साफ कर दूं? 'न्यू टेस्टामेन्ट'[3] की तुला पर उस अपमान की क्या अहमियत होगी? क्या आप सोचते हैं कि चूंकि मैं दुष्ट कप्तानों की आज्ञाओं का श्रद्धापूर्वक तुरन्त पालन करता हूं, इसलिए देवदूत गैब्रियेल[4] की दृष्टि में मैं गिर गया हूं? गुलाम कौन नहीं है? मुझे बताइए। तब ठीक है। मेरे वे पुराने कप्तान मुझे चाहें जैसा हुक्म दें, चाहें जैसे मुझे ढकेलें या दाबें—मुझे सन्तोष है कि वह सब ठीक है क्योंकि शारीरिक अथवा दार्शनिक आधार पर हरेक ने किसी न किसी रूप में इसी प्रकार की गुलामी की है। अतएव समस्त विश्व की यह ढकेला-ढकेली चलती रहती है तथा हरेक का कन्धा दूसरे से रगड़ता रहता है और उसी में सभी को सन्तोष करना पड़ता है।

फिर, मैं सदैव ही एक मल्लाह के रूप में समुद्र में जाता हूं क्योंकि वहां वे लोग मेरे कष्टों के लिए मुझे पैसा देते हैं जबकि मैंने यह कभी नहीं सुना कि किसी यात्री को भी वे एक पाई देते हैं। इसके विपरीत यात्रियों को स्वयं पैसा देना पड़ता है। देनेवाले और पानेवाले का यह प्रभेद समस्त जगत् में फैला हुआ है। यह पैसा देने अथवा भुगतान करने की बात भी कितनी गन्दी है जिसे फलों के बगीचे वाले उन दोनों चोरों ने हम पर लादी है। लेकिन पैसा पाना—भुगतान पाना—उसके क्या कहने? नगरों की यह सब चहल-पहल जिसमें लोग

१. अमेरिका के न्यूयार्क में रहने वाले आदिवासी जो अधिकतर नाविक होते हैं।
२. ऐथेन्स के महान् दार्शनिक जीनो के शिष्य।
३. बाइबिल।
४. गैब्रियेल का अर्थ है 'परमात्मा का दूत'। कुरान में उसे एक स्थान पर परमात्मा का संवाद मानवों तक पहुंचाने वाला कहा गया है। लिखा है कि जब मुहम्मद साहब ईश्वर का कोई संवाद मनुष्यों को सुनाने वाले होते थे तो उनका मुखमंडल एक अनोखी कान्ति से प्रभासित हो उठता था। गैब्रियेल अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के संवाद मानवमात्र को देता है और भविष्यवाणियां भी करता है।

पैसा पाते हैं कितनी बढ़िया है, भले ही यह समझते हुए कि पैसा ही संसार के सब कष्टों-दुःखों के मूल में है और कोई भी धनवान किसी भी प्रकार स्वर्ग तो जा नहीं सकता। आह ! हम अपने अधःपतन को कितने सुखपूर्वक स्वीकार करते हैं ?

अन्ततः सदा मैं नाविक होकर ही समुद्र में जाता हूं क्योंकि वहां मुझे खूब कसरत करने को मिलती है और जहाज़ के सर्वोच्च डेक की स्वच्छ वायु सेवन करने को मिलती है। क्योंकि मान्यता के अनुसार संसार में सामने की ही हवा का महत्व है, न कि पिछली हवा का—(अगर आप दार्शनिक पाइथागोरस के नीति-सिद्धान्तों का अनुसरण करना न भूलें) इसके साथ यह भी है कि नीचे डेक पर बैठे 'कमोडोर' को सेकेंड हैन्ड हवा मिलती है जबकि ऊंचे यन्त्र पर बैठे मल्लाहों को ताज़ी हवा प्राप्त होती है। नाविक सोचता है कि ताज़ी हवा उसके फेफड़ों में सबसे पहले आती है किन्तु ऐसा नहीं है। वह वैसा ही है जैसे जनता अपने नेताओं को हांक ले जाती है और नेता उसकी गन्ध भी नहीं पाता। किन्तु मैं कह नहीं सकता कि क्यों समुद्र के इतने खारेपन का अनुभव करने के बाद भी तथा इतने दिनों व्यापारी-जहाज़ का मल्लाह रहने के अनन्तर मेरा मन हो रहा है कि मैं व्हेल मछलियों के शिकार पर जाने वाले जहाज पर जाना चाहता हूं। मैं समझता हूं कि वह 'भाग्य' का कोई अदृश्य पुलिस आफीसर है जो बराबर मेरी निगरानी करता है और छिपे ढंग से मेरे पीछे-पीछे चिपका रहता है; मैं कह नहीं सकता किस बुरी तरह से वह मुझ पर सवार रहता है—वही उसका उत्तर दे सकता है। और निःसन्देह इस व्हेल-यात्रा पर जाने का मेरा कार्यक्रम जैसे मेरे भाग्य में बहुत पहले ही बन चुका था। अब वह किसी बड़े प्रदर्शन में नाटक के संक्षिप्त विष्कम्भक ( मध्यान्तर ) अथवा 'सोलो' के रूप में आ टपका है। मैं सोचता हूं इस कार्यक्रम का एतद् सम्बन्धी भाग कुछ इस प्रकार की घोषणा करता होगा :

'यूनाइटेड स्टेट्स अमेरिका के राष्ट्रपति का महान चुनाव संग्राम।'

'इस्माइल नामक एक व्यक्ति द्वारा व्हेल-यात्रा।'

'अफगानिस्तान में खूंख्वार लड़ाई।'

मैं नहीं कह सकता कि भाग्य रूपी रंगमंच के मैनेजर ने व्हेल-यात्रा के गन्दे प्रसंग के लिए मुझे क्यों चुना, जबकि दूसरों को दुःखान्त नाटकों में कमाल

की भूमिका, साधारण सुखान्त प्रदर्शनों में छोटी और हलकी भूमिका या प्रहसनों में मज़ाकिया भूमिका दी गई है। किन्तु ऐसा क्यों है मुझे स्वयं ज्ञात नहीं है। अब मुझे लगता है कि इसके पीछे कुछ उद्देश्य और अर्थ दीखता है जो अनेक वेशों में मेरे सामने चालाकी से प्रस्तुत कर दी जाती है—वही मुझे अपना वांछित पार्ट अदा करने को विवश करती है। साथ ही वह मेरे मन को ऐसे संभ्रम में डाल देती है कि मैं सोचता हूं कि वह पार्ट मैंने अपनी पक्षपातरहित स्वेच्छा और उचित-अनुचित निर्णायक बुद्धि के बल पर स्वयं स्वीकार किया है।

इस सबमें उस विकराल व्हेल के प्रति आकर्षण की भावना सबसे बड़ा उद्देश्य है। इस प्रकार के अशुभ तथा विलक्षण दैत्य ने मेरे कौतूहल को न जाने कितना जागरित कर दिया था! तब उन भयंकर और दूरस्थ महासागरों ने मुझे उत्तेजित किया जहां द्वीप के सदृश विशाल उसका शरीर डोलता था। व्हेल को लेकर अकथनीय असंख्य खतरे सामने आ जाते हैं। इस प्रकार के 'पैटागोनिया[1]' के-से हज़ारों दृश्यों एवं शब्दों के चकित कर देने वाले आकर्षणों ने मुझे बरबस उस ओर खींचा। सम्भवतः, अन्य लोगों को इस प्रकार के कौतुक अपनी ओर न खींचे किन्तु मेरे लिए वे सदा ही मानसिक द्वन्द्व का कारण रहे हैं कि मैं सुदूर भागों को देखूं। निषिद्ध सागरों की यात्रा करने और खतरनाक किनारों पर उतरने में ही मुझे मज़ा आता है। क्या अच्छा है—इसको बिना भुलाए हुए भी मैं किसी भी खतरे को तत्काल पहचान लेता हूं और अगर वे अनुमति दें तो मैं उसके साथ भी एक सामाजिक-सा नाता बनाए रह सकता हूं, क्योंकि अपनी रिहाइश के सभी के साथ प्रेमभाव बनाए रखना अच्छा ही होता है।

इन सब बातों के कारण मैंने व्हेल-यात्रा का स्वागत किया। उस आश्चर्य-जगत् के विशाल जलद्वार खुल गए और तब मैंने अपनी तर्क-बुद्धि के सम्पूर्ण अभियान के साथ महसूस किया कि मेरी अन्तरात्मा में उन व्हेल मछलियों का अन्तहीन जुलूस तैर रहा है, और उन सबके बीच हुड लगाए कोई आश्चर्यजनक प्राणी है, जैसे वायु में बरफ का कोई शिलाखण्ड हो।

---

१. दक्षिण अमेरिका का एक विशाल रेगिस्तान।

# २

अपने पुराने कारपेट-बैग[1] में मैंने एक-दो कमीजें रखीं और उसे बगल में दाबकर हार्न अन्तरीप[2] तथा प्रशान्त महासागर की ओर चल दिया। उस प्राचीन और सुन्दर मनहत्तो नगर से चलकर मैं 'न्यू बेडफोर्ड' पहुंचा। यह बात दिसम्बर महीने के एक शनिवार की रात की थी। मुझे यह जानकर बहुत निराशा हुई कि 'नन्तुकेत' जाने वाला छोटा जहाज जा चुका है और अगले सोमवार के पहले वहां जाने के लिए कोई भी साधन उपलब्ध नहीं है।

व्हेल-यात्रा को जाने वाले बहुत-से नौजवान, कष्ट और आपदाओं की खोज के लिए, इसी 'न्यू बेडफोर्ड' में ठहर जाते हैं और तब यहां से अपनी जलयात्रा प्रारम्भ करते हैं किन्तु मैं ही अकेला एक ऐसा था जो वहां नहीं ठहरना चाहता था। 'नन्तुकेत' के जहाज पर यात्रा करने के अतिरिक्त मैं और कुछ नहीं सोच रहा था क्योंकि उस प्रसिद्ध एवं प्राचीन द्वीप के सम्बन्ध में बड़ी सुन्दर व तीव्र इच्छाएं मेरे मन में मौजूद थीं जो मुझे विशेष रूप से आकर्षित कर रही थीं। वैसे इधर बहुत समय से 'न्यू बेडफोर्ड' व्हेल मछली के व्यापार पर धीरे-धीरे एकाधिकार स्थापित करता रहा है और 'नन्तुकेत' का महत्व घटता रहा है, फिर भी 'कारथेज' के 'टायर' प्रान्त के समान 'नन्तुकेत' की अपनी एक मौलिक विशेषता थी क्योंकि अमेरिका की पहली मरी हुई व्हेल मछली वहीं किनारे लगी थी। 'नन्तुकेत' ही एक ऐसा स्थान था जहां के उन आदिवासियों ने—उन व्हेल पकड़ने वाले लाल रंग के लोगों ने—पहली बार उन 'केनोज'[3] में बैठकर उस सामुद्रिक महाजन्तु व्हेल का पीछा किया था। यही नहीं, 'नन्तुकेत'

---

१. मजबूत कपड़े का थैला।

२. दक्षिणी अमेरिका का धुर दक्षिणी भूभाग।

३. शिकारी नाव या डोंगी। पतली लम्बी नाव जिसे वृक्ष के तने से खोखला करके काटा जाता है।

ही एक ऐसा स्थान था जहां वह खोज करने वाला पहला 'स्लूप'[1] समुद्र में तैरा था और जैसा कहा जाता है कि उस जलपोत के एक हिस्से में विदेश से आए हुए 'काबल-स्टोन'[2] भरे हुए थे जो व्हेल मछली पर इस लिए फेंके जाते थे कि यह पता चल सके कि वे लोग उसके कितने निकट हैं ताकि वे 'बोस्पिरिट'[3] से 'हारपून'[4] फेंक सकें।

मेरे सामने अब दो रात और एक दिन शेष था जब कि मैं 'न्यू बेडफोर्ड' से अपने निर्धारित बन्दरगाह के लिए यात्रा प्रारम्भ करता, अतः खाने व सोने की समस्या प्रस्तुत थी। रात डरावनी थी, काली और उदास, साथ ही कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। वहां मैं किसी को जानता भी नहीं था। कौतूहल में मैंने अपनी जेबें टटोलीं और चांदी के कुछ सिक्के बाहर खींचे। तब मैं अपने कन्धे पर अपना झोला डाले हुए था और अपने उत्तर और दक्षिण में फैले हुए उस अन्धकार की एक दूसरे से तुलना कर रहा था और उस सुनसान सड़क के बीचोंबीच खड़ा अपने आपसे कह रहा था, 'जनाब इस्माइल साहब! आज रात जहां कहीं भी डेरा डालना वहां के खर्च की जानकारी कर लेना और जनाब! इसका भी ज्यादा ख्याल न करना कि जगह पसन्द है या नहीं।'

हौले कदम बढ़ाता मैं सड़कों पर चलने लगा। एक जगह 'दि क्रास्ड हारपून्स' का साइन बोर्ड दिखाई दिया किन्तु वहां कीमतें ज्यादा मालूम पड़ती थीं, यों जगह खुशनुमा थी। तब और आगे बढ़ने पर 'सोर्ड फिश इन' नामक सराय की चमकदार लाल खिड़कियों से निकलती तेज और चमकीली किरणों का आभास हुआ और लगा कि जैसे मकानों और उनके सामने से ठोस बरफ पिघलने लगी है। इसके अतिरिक्त उस तारकोल वाले सख्त फुटपाथ पर, आस-पास, कम से कम दस-दस इंच मोटी बरफ जमी हुई थी और जब मेरे जूते उस चकमक ठोस ऊंचाई से टकराते थे तब मुझे बहुत-बहुत कष्ट होता था। उसका

---

१. हल्की छोटी नाव।

२. एक गोलाकार पत्थर जो फर्श बनाने के काम में आता है।

३. जहाज के सामने के भाग से बंधा खम्भा।

४. व्हेल मछली पकड़ने की रस्सी बंधी बर्छी।

कारण यह था कि बहुत इस्तेमाल से मेरे जूतों के तलों की दशा अत्यन्त दयनीय हो रही थी। सड़क की चमक और बजने वाले गिलासों की आवाजों को अन्दर से आता हुआ सुनकर मैं ठिठका और एक मिनट को रुक गया तथा सोचने लगा—बहुत कीमती किन्तु खुशनुमा। अन्त में मैंने अपने आपसे कहा—'चलते जाइए इस्माइल साहब! क्या कुछ सुन नहीं रहे हैं? लेकिन दरवाजे के सामने से हट जाइए क्योंकि आपके ये फटे जूते रास्ता रोक रहे हैं।' और मैं आगे बढ़ता गया। तब जैसे किसी प्रेरणावश मैं उन सड़कों पर चलने लगा जो समुद्र की ओर जाती थीं—क्योंकि वहां मजेदार नहीं तो कम खर्च वाली सराएं जरूर थीं।

वैसी डरावनी सड़कें! दाएं-बाएं मकान नहीं, बल्कि अन्धियारे की तह पर तह-सी जमी थी और यहां-वहां टिमटिमाने वाली मोमबत्ती एक मकबरे में चिराग़-सी दिखाई दे रही थी। हफ्ते के उस अन्तिम दिन, शहर का वह हिस्सा इतनी रात को सुनसान दिखाई दे रहा था। परन्तु फौरन ही मैं एक ऐसी इमारत के सामने आया जहां धुंधली-सी रोशनी चमक रही थी और जिसका दरवाजा जैसे हरेक का स्वागत करने के लिए सपाट खुला हुआ था। उसके आसपास अजीब लापरवाही-सी दिखाई दे रही थी, जैसे वह जगह जनता के लिए ही हो। अस्तु, वहां प्रवेश करते ही जो मैंने पहला काम किया, वह यह था कि मैं बरसाती में रखे एक राख फेंकने के सन्दूक से जा टकराया और चौंककर खड़ा हो गया। उड़ती हुई राख मेरा दम घोट रही थी अतः मैंने सोचा—'हा, हा, क्या 'गोमोराह' के बरबाद शहर से यह राख उठ रही है? लेकिन यदि पहले निशान 'दि क्रास्ड हारपून्स' और 'दि सोर्ड फिश' के थे तो यह 'दि ट्रैप'[1] को लेने चाहिएं।' जो भी हो, मैंने अपने को संभाला और एक ऊंची आवाज़ को अन्दर से आते हुए सुनकर और अन्दर को एक दरवाज़े को खोलकर ढकेलते हुए मैं आगे बढ़ गया।

सामने दिखाई दिया मानो 'टाफेट'[2] की पंचायत जुड़ी हुई थी। कतारों में बैठे एक सौ काले चेहरे अपने नेता की ओर झांक रहे थे और आगे एक मंच

---

१. पिंजड़ा, फंदा।

२. यरूशलम में आदमी की बलि देने का एक प्राचीन स्थान; नरक।

पर एक काला 'एंजल आफ डूम'[1] एक किताब को पीट रहा था। वह नीग्रो लोगों का चर्च था और वह उपदेशक अन्धियारे के कालेपन के सम्बन्ध में कुछ कह रहा था। चारों तरफ रोने, चीखने और दांत किटकिटाने की आवाजें उभर रही थीं। अपना कदम पीछे फेंकते हुए मैंने अपने आपसे कहा—'हा, हा—इस्माइल साहब ! 'दि ट्रैप' के साइनबोर्ड के नाम पर तो यह बड़ा डरावना मनोरंजन है।'

आगे बढ़ते हुए अन्त में मैं एक ऐसे स्थान पर आया जहां धीमी रोशनी हो रही थी और जो 'गोदी' से अधिक दूर नहीं थी। वहां घबड़ाहट पैदा करने वाली चरचराहट की-सी एक आवाज हवा में मुझे सुनाई दी। ऊपर देखने पर दरवाजे के ऊपर एक झूलता हुआ साइनबोर्ड दिखाई दिया जिसकी जमीन का रंग सफेद था और जो एक ऊंचे और सीधे धुएं के गहरे रंग के-से धुंधलेपन का आभास दे रहा था और उस पर लिखा हुआ था—'दि स्पाउटर इन—पीटर काफिन।'

'काफिन ?'[2] 'स्पाउटर ?'[3] मैंने सोचा कि इस विषय में तो यह बहुत अशुभ है। किन्तु कहा जाता था कि नेन्तुकेत में तो यह एक बहुत प्रचलित नाम है। मेरी धारणा है कि यह 'पीटर' वहीं से यहां आया है। चूंकि रोशनी बहुत मन्द थी और स्थान उस समय सुनसान पड़ा हुआ था और लकड़ी का वह छोटा-सा ध्वस्त मकान ऐसा लग रहा था, जैसे किसी जलते हुए शहर से बचाकर वह गाड़ी में लाद लाया गया है। और उसका वह झूलता हुआ साइनबोर्ड गरीबी की चीख की भांति झूम रहा था। इसीलिए मैंने सोचा कि उस स्थान पर ठहरने पर सस्ती जगह और बढ़िया पी-काफी भी मिल सकती है।

वह विलक्षण स्थान था—एक नोकीला पुराना मकान, एक ओर झुका हुआ और उदासी-सी में डूबा हुआ। वह एक सर्द-से कोने पर खड़ा था जहां—यूरोक्लाइडन नामक तूफानी हवा ऐसा डरावना शोर कर रही थी जैसा उसने

१. विनाश दूत।
२. ताबूत; शव रखने का सन्दूक।
३. पानी का फव्वारा।

कभी नहीं किया होगा, यहां तक कि उस ग़रीब 'पॉल'[1] के जहाज़ को उछालते हुए भी नहीं किया होगा। यों 'यूरोक्लाइडन' आनन्ददायक और शान्तिप्रद पश्चिमी हवा है और उन लोगों को खुश किया करती है जो घर के अन्दर अंगीठी पर पैर सेक रहे होते हैं और बिस्तर पर जाने के लिए कुलबुला रहे होते हैं। एक पुराना लेखक—जिसकी कृतियों की आखिरी प्रति मेरे पास है—कहता है : "यह तूफानी हवा भी क्या है; उस समय में जब कि कोहरा बन्द खिड़की के बाहर फैला हो, और उस समय जब कि खिड़की में शीशा न लगा हो और इधर-उधर दोनों ही ओर कोहरा छाया हो—इन दोनों समयों के बीच ऐसा अन्तर कर देता है कि मानो मौत के सिवाय शीशा जड़ने वाला कोई है ही नहीं।" जैसे ही यह गद्यांश मेरे मस्तिष्क में बैठा वैसे ही मैंने सोचा कि उन पुराने काले शब्दों के तर्क में बहुत बल है। हां, मेरी ये आंखें ही जैसे वे खिड़कियां हैं और मेरा शरीर वह मकान। कितना अफसोस है कि लोगों ने उन छेदों और दरारों को बन्द नहीं किया है और उसे उन्होंने उस जख्म पर बांधने वाली पतली पट्टी की तरह कहीं दबा और कहीं खुला छोड़ दिया है। किन्तु अब इसे कुछ भी ठीक करने के लिए बहुत देर हो चुकी है। संसार बन चुका है, दीवारें इतनी ऊंची उठ आई हैं और लाखों-करोड़ों साल हो गए जब पत्थर की रोड़ी उठा कर फेंक दी गई थी। वह बेचारा ग़रीब 'लजारस' (एक भिक्षुक) किनारे के पत्थरों

---

१. पॉल—सिलीशिया के टारसस नामक स्थान का रहने वाला एक यहूदी था। अपने जीवन के प्रारम्भ में ही टारसस छोड़कर सीरिया में प्रतिदिन बढ़ते जाने वाले ईसाइयों के कामों में अड़ंगा डालने लगा था। जगह-जगह घूमता हुआ वह दमिश्क पहुंचा और वहां उसके जीवन में एक नया मोड़ आया। गया तो वह ईसाई धर्म-प्रचारकों के कामों में बाधा पहुंचाने, लेकिन वह स्वयं ईसाई बन गया। उसके बाद तो उसने स्वयं अपनी सारी शक्ति से ईसाई धर्म का प्रचार आरम्भ कर दिया। प्रचार कार्य के लिए उसने जल-स्थल दोनों मार्गों से अनेकानेक देशों का भ्रमण किया। पाल से चलने वाले छोटे-छोटे जहाजों पर समुद्री खतरों का मोल लेना वास्तव में पॉल जैसे उत्साही प्रचारक का ही काम था। बाद में उसे संत की उपाधि दी गई।

का तकिया बनाए दांत किटकिटाते हुए और अपनी कंपकंपी से अपने चिथड़ों को दूर फेंकते हुए तथा अपने दोनों कानों को चिथड़ों से बन्द करते हुए और मकई की बाली मुंह में दाब कर भी चाहे तो उस तूफानी 'यूरोक्लाइडन' को दूर नहीं कर सकेगा। अपने उस लाल रंग के रेशमी कपड़े में लिपटा 'डाइव्स' कहता है—( बाद में उसका रंग और लाल हो गया था ) "उफ़ ! कोहरे वाली कैसी सुहानी रात है, मृगशिरा नक्षत्र कैसा चमक रहा है, उत्तरी प्रकाश कैसा उभर रहा है। उनको पूर्व के उस उष्ण मौसम की बातें करने को दें जहां स्थायी संगीत लहरें लेता है; मैं तो केवल ऐसा अवसर चाहता हूं कि अपने ही प्रयत्न की उष्णता से सुहावने ग्रीष्म का सृजन कर सकूं।"

किन्तु 'लज़ारस' क्या सोचता है ? क्या वह उस भारी उत्तरी प्रकाश के सामने अपने ठंड से नीले पड़े हाथ ऊपर उठाकर उन्हें गरम कर सकता है ? तब क्या 'लज़ारस' को यहां के बजाय सुमात्रा में नहीं होना चाहिए ? तब क्या वह भूमध्य रेखा के समानान्तर लम्बे लेट नहीं जाएगा ? हे भगवान् ! इस कोहरे को दूर करने के लिए उस तपती गुफा में चले जाना—कैसी भयानक बात है !

अब, 'डाइव्स' के दरवाज़े के सामने उस किनारे के पत्थर पर निःसहाय 'लज़ारस' पड़ा रहे तो यह वर्फ के एक बहते हुए पहाड़ के 'मोलुक्काज़' से बांध देने से अधिक विलक्षण व आश्चर्यजनक है। यों 'डाइव्स' स्वयं बर्फ के एक महल में जमी हुई सिसकियों के इर्द-गिर्द जार की तरह रहता है और एक खाने-पीने में संयम रखने वाले समाज का सभापति होने के कारण वह सिर्फ अनाथों के गर्म आंसुओं को ही पीता है।

लेकिन अब अधिक कहने-सुनने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि हम व्हेल-यात्रा पर जा रहे हैं और वहां बताने योग्य बहुत कुछ बातें सामने आने को हैं। अपने सर्दी से नग हो गए पैरों पर से बर्फ को खरोचकर हमें देखना है कि यह 'स्पाउटर' कैसा स्थान है।

## ३

उस तिकोनी 'स्पाउटर इन' में घुसते ही एक फैला हुआ, नीचा और घुमावदार दरवाजा मिलता था, जिसमें पुराने जमाने की लकड़ी की कारीगरी के नमूने को देखकर ऐसा लगता था कि जैसे किसी काम में न लाए जाने वाले पुराने जहाज का ढांचा हो। एक ओर एक बड़ा-सा तैलचित्र लटका था, जो धुएं से काला ही न पड़ गया था, वरन् बिगड़ गया था क्योंकि इधर-उधर से और ऊटपटांग ढंग से आने वाली रोशनी को देखकर ऐसा समझ में आता था कि बहुत मनोयोग और नियमित रूप से वहां आकर उसे देखने और आसपास के लोगों से पूरी जानकारी प्राप्त करने पर ही उसके महत्व और गन्तव्य के सम्बन्ध में कुछ ज्ञात हो सकता था। उसके प्रकाश और छाया के अकथनीय खंडों को देखकर लगता था, मानो न्यू इंगलैंड के साधारण चित्रकारों के युग में, किसी उत्साही चित्रकार ने अतिशय विश्रृंखलता को चित्रित करने का प्रयास किया हो। बहुत गहराई से चिन्तन करने, बारम्बार उस पर सोचने-विचारने और तब प्रवेश-द्वार के पीछे की छोटी खिड़की को पूरी तरह खोलने पर, अन्ततः यह नतीजा निकलता था कि इस प्रकार की कल्पना चाहे जितनी डरावनी हो किन्तु अनावश्यक नहीं है।

चित्र के बीचोंबीच जो तीन नीले रंग की धुंधली-सी किन्तु सीधी खड़ी रेखाएं थीं जो विचित्र-से झाग और फेन पर तैर रही थीं और जिनके ऊपर अजीब-सा घुमावदार अपशकुनी कालापन मंडरा रहा था—यही किसी को सर्वाधिक उलझन और परेशानी में डालने वाली थीं। सचमुच, ऐसी दलदल में सनी, गीली और घास-फूस से भरी तस्वीर किसी भी कमजोरदिल आदमी को घबड़ा सकती थी। फिर भी उसमें कुछ ऐसी अनिश्चित, अर्द्धप्राप्त, अकल्पनीय ऊंचाई थी कि किसी का भी ध्यान वह बरबस अपनी ओर आकर्षित किए रहती थी, जब तक कि आप हारकर उस आश्चर्यजनक चित्र का अर्थ समझने की कसम न खा लें।

तब तत्काल ही एक कौतुकपूर्ण किन्तु (अफ़सोस है!) भ्रान्तिपूर्ण भावना

मन में आती थी। यह चार अप्राकृतिक किन्तु मौलिक विचारों का मेल होगा—यह रात की तूफ़ानी हवा के बीच का काला सागर है, यह विध्वंस किया हुआ जंगल है, यह भयंकर जाड़े का दृश्य है, यह समय रूपी बर्फीले बहार का विस्फोट है। किन्तु ये सब कल्पनाएं चित्र के बीचोंबीच बने हुए उस अपशकुन पर फिर विलीन हो जाती थीं। वह एक बार समझ में आ जाए तो सब सरल था। लेकिन ठहरिए ज़रा, क्या यह एक भारी मछली की धुंधली छाया से मिलता-जुलता नहीं है? क्या वह स्वयं विशालकाय व्हेल नहीं है?

सचमुच ही, चित्रकार का मन्तव्य मेरी कल्पना के अनुरूप है, और मेरी कल्पना स्वयं इस सम्बन्ध में अनेक बुजुर्ग लोगों से बातें करने के बाद दृढ़ हुई है। इस चित्र में 'हार्न अन्तरीप' के समीप एक जहाज़ भयानक तूफान में फंसा हुआ दिखाया गया था और वह आधा डूबा जहाज, जिसके केवल तीन टूटे हुए मस्तूल भर दिखाई दे रहे थे, घुमेड़ें ले रहा था, और एक उत्तेजित व्हेल जहाज के ऊपर से निकल जाने की क्रिया में अपने आप उन तीन मस्तूलों में फंसकर जैसे शूली पर चढ़ी जा रही थी।

इस प्रवेश-द्वार के सामने की दीवार पर भाले और गदाएं लटकी हुई थीं। कुछेक तो चमकदार दांतों से भरपूर थीं और हाथी दांत की आरी की भांति दिखाई देती थीं। कुछ में आदमी के बालों की हजारों गांठें चिपकाई गई थीं। एक तो हंसिये की तरह का था जिसका हैंडिल भारी था जो घास काटने की मशीन के द्वारा कटी घास को ढेर लगाने वाला-सा दिखाई दे रहा था। आप देखते ही कांप जाते और ताज्जुब करने लगते कि वह भी कैसा भयंकर राक्षस होगा जो इस प्रकार के डरावने हथियारों को लेकर जैसे कभी मौत की खेती करने गया होगा। इसके साथ ही मिल-जुलकर व्हेल को मारने वाले पुराने बर्छे और भाले टूटी-फूटी और बदशकल हालत में टंगे हुए थे। कुछ ऐसे हथियार थे जिनके सम्बन्ध में कहानियां प्रचलित थीं। उस एक लम्बे भाले से, जो अब मोड़कर टांग दिया गया था, पचास साल पहले कभी नाथन स्वेन ने सुबह से शाम तक पन्द्रह व्हेल मछलियां मार डाली थीं। और वह 'हारपून' जो एक 'कार्कस्क्रू'[1] की तरह दिख रहा था जावा के पास के सागरों में एक

---

1. बोतल की कार्क निकालने वाला स्क्रू।

व्हेल पर फेंका गया था और व्हेल उसे खींचकर भाग खड़ी हुई थी और वर्षों बाद में 'ब्लांको' अन्तरीप के पास मारी गई थी। आगे का लोहा उसकी पूंछ में घुस गया था और जैसे किसी मनुष्य के शरीर में सुई हिलती-डुलती घुसती चली जाती है, उसी तरह वह चालीस फुट रेंगने के बाद अन्त में पीठ के कूवड़ में घुसा हुआ मिला था।

इस अंधेरे प्रवेश-द्वार को पारकर एक नीचा मेहराबदार रास्ता था जो लग रहा था पुराने जमाने में कभी बीच की चिमनी के रूप में व्यवहार में आता होगा, जिसमें सब तरफ फायरप्लेस[1] बने हुए थे। इसके बाद पब्लिक-रूम[2] में पहुंचा जा सकता था। यहां और अधिक अंधियारा था, जहां ऊपर, बहुत नीची तथा भारी धन्नियां झुकी हुई थीं और फर्श पर टेढ़े-मेढ़े और भद्दे तख्ते लगे थे, जैसे आप किसी पुराने जहाज के काकपिट[3] में मौजूद हों, विशेषत: वैसी डरावनी रात में जबकि किनारे पर लंगर पड़ी पुरानी नाव-सा वह मकान भय उत्पन्न कर रहा था। एक ओर लम्बी और नीची दराजों वाली मेज रखी हुई थी जिस पर टूटे हुए शीशे के डिब्बे लगे थे, इन डिब्बों में विस्तृत संसार के दूर कोनों से एकत्र की हुई अनूठी वस्तुएं धूल से भरी रखी थीं। कमरे के दूसरे कोने से सटी हुई एक गहरी-सी गुफा में शराब का काउन्टर दिखाई देता था जो कुछ-कुछ व्हेल के सर की तरह प्रतीत होता था। न मालूम कैसे व्हेल के जबड़े की मेहराबदार हड्डी इतनी बड़ी खड़ी की गई थी कि उसके नीचे से एक गाड़ी निकल सकती थी। उसके अन्दर गन्दी और पुरानी दराजें गोलाकार दिखाई देती थीं जिन पर पुराने कांच के कंटर, बोतलें और कुप्पे रखे हुए थे, और विनाश के उन जबड़ों में, जैसे दूसरा शापित जोना (इसी नाम से वे उसे पुकारते थे) एक मुरझाया-सा बूढ़ा आदमी उन मल्लाहों को अधिक कीमत लेकर बकवास और मौत बेचता था।

उसके वे गिलास जिनमें वह अपना ज़हरीला पेय ढालता था—बहुत गन्दे और घृणित थे। बाहर से वे गिलास बिल्कुल ठीक दिखलाई पड़ते थे, लेकिन

---

१. अग्नि-स्थान।

२. सार्वजनिक कमरा।

३. जलपोत में घायलों के रखने का कमरा।

उभरे हुए हरे कांच के बने उन गिलासों के भीतर की पेंदी धोखा देने वाली थी। ऊपर से नीचे तक बनी हुई सामानान्तर धारियों ने पेंदी की गोलियों को ढक रखा था। एक निशान तक शराब लीजिए, आपको सिर्फ एक पेनी देना होगा, दूसरे निशान तक भरने पर एक पेनी और, इसी तरह, यहां तक कि पूरा गिलास—केप हार्न का मेजर—आप एक शिलिंग में चढ़ा सकते थे।

वहां प्रवेश करने के बाद मैंने कुछ मल्लाहों को देखा जो एक मेज़ के चारों ओर इकट्ठा होकर धीमी रोशनी में 'स्क्रिमशैन्डर'[1] के विभिन्न नमूने देखने में जुटे थे। मालिक से मिलकर मैंने कहा कि मुझे एक कमरा चाहिए। उत्तर मिला कि सारी सराय भरी हुई है, यहां तक कि एक पलंग भी खाली नहीं है। तब अपने माथे को उंगलियों से ठोंकते हुए मालिक बोला, "लेकिन ठहरो! एक हारपूनर[2] के कम्बल में साझा कर लेने में तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं है? मेरा ख्याल है तुम भी व्हेल के शिकार को ही जा रहे हो? तब तो तुम्हें इस प्रकार के अनुभवों का अभ्यस्त हो जाना चाहिए।"

मैंने उससे कहा कि मैं कभी भी किसी के साथ एक बिस्तर पर सोना पसन्द नहीं करता और अगर कभी मुझे ऐसा करना ही पड़ा तो सबसे पहले मुझे उस आदमी को परखना होगा जिसके साथ मुझे सोना होगा। मैंने यह भी कहा कि अगर सचमुच सराय में कोई स्थान खाली नहीं है तथा उस 'हारपूनर' के सम्बन्ध में भी कोई विशेष अड़चन नहीं है तो उस नए शहर और वैसी भयानक रात में इधर-उधर भटकने से तो किसी भले आदमी के कम्बल में साझा कर लेना ही ज्यादा अच्छा है।

"मैं भी यही सोचता था। तो फिर बैठो। और खाना? खाओगे? खाना फौरन मिल जाएगा।"

मैं एक पुरानी और खोदी हुई ऊंची बेंच पर बैठ गया जो देखने में तोप-खानों की बेंचों-सी लग रही थी। एक तरफ बड़ी गंभीर मुद्रा में बैठा एक मल्लाह अपने पैरों के बीच की जगह में चाकू से खोद रहा था। वह पाल ताने चले जा रहे जहाज़ का चित्र खोदना चाहता था, लेकिन

---

१. जहाज़ियों के पहनने की पोशाक।

२. बर्छी वाला व्हेल का शिकारी।

मेरा ख्याल है, उसे कुछ सफलता नहीं मिल पा रही थी।

अन्त में, हममें से चार या पांच लोगों को खाने के लिए बगल के कमरे में बुलाया गया। कमरा आइसलैंड की तरह ठंडा हो रहा था। आग बिल्कुल नहीं जल रही थी। मालिक का कहना था कि वह उसका खर्च सहन नहीं कर सकता। चर्बी की दो धीमी मोमबत्तियों के अतिरिक्त वहां कुछ न था। हमने अपनी तंग वास्कटों के बटन ऊपर तक लगा लिए और प्यालों को आधी सुन्न उंगलियों से पकड़े हुए खूब गरम चाय को अपने होंठों से चिपकाए रहे। खाना पेट भरने वाला था। केवल गोश्त और आलू ही नहीं—बड़े-बड़े पकौड़े भी थे। "हे भगवान् ! रात के खाने साथ पकौड़े।" हरा कोट पहने एक नौजवान उन पकौड़ों को देखकर भयंकर स्वर में बड़बड़ाने लगा।

"मेरे बच्चे !" मालिक बोला—"रात में सोते हुए तुम्हें मरा हुआ शैतान दिखाई देगा।"

"मकान मालिक," मैं बुदबुदाया— "यह वही 'हारपूनर' तो नहीं है न ?'

"अरे ! नहीं-नहीं।" अजब-से मजकिया लहजे में वह बोला—"वह तो एक काले रंग का आदमी है। वह पकौड़े कभी नहीं खाता—कभी नहीं। वह भुने हुए गोश्त के अतिरिक्त कुछ नहीं खाता। वह भी उसे कभी-कभी ही पसन्द आता है।"

"न आए उसे !" मैं बोला—"पर वह 'हारपूनर' है कहां ? क्या वह यहां है ?"

"वह बस आता ही होगा," उत्तर मिला।

न जाने क्यों मैं उस 'काले हारपूनर' के सम्बन्ध में शंकित होने लगा। मैं सोच रहा था कि यदि विवश होकर मुझे उसके साथ सोना ही पड़ा तो उसे मुझसे पहले कपड़े उतार कर पलंग पर जाना होगा।

भोजन समाप्त हो गया। हम लोग शराब के कमरे में फिर लौट आए। मेरे पास चूंकि और कोई काम नहीं था, इसलिए मैंने तय किया कि शाम का बाकी समय मैं दूसरों का निरीक्षण करके गुजारूंगा।

उसी समय बाहर से लड़ाई-झगड़े की आवाजें आने लगीं। चौंककर मालिक बोला—"वे 'ग्राम्पस' जहाज के नौकर हैं। आज सुबह ही मैंने उसे समुद्र किनारे से कुछ दूर देखा था। वह भारी जहाज है और तीन साल की

यात्रा पर गया था। हुर्रे ! अब हमें फीगीज़ की ताज़ी खबरें मिलेंगी।"

दरवाज़े पर जूतों की आवाज़ें सुनाई दीं। दरवाजा पूरा खुला और नाविकों का एक जत्था अन्दर घुस आया। खुरदरे और मोटे कोट पहने वे कानों में गुलूबन्द लपेटे थे, सब ऊटपटांग और फटे हुए थे। उनकी दाढ़ियां बढ़ी हुई थीं। वे ऐसे अजीब लग रहे थे जैसे 'लैब्रेडर'[1] के जंगल से रीछ पकड़कर लाए गए हों। वे लोग अभी-अभी अपने जहाज से उतरे थे और यही पहला मकान था जिसमें वे घुसे थे। इसमें कोई ताज्जुब की बात नहीं थी कि उन्होंने अपना रास्ता सीधे उस व्हेल के मुंह शराबखाने की ओर ही बनाया। इस पर उस झुर्रियों वाले बूढ़े जोना ने उनके अफसर की तरह शराब बांटते हुए उनके प्यालों को लबालब भर दिया। उनमें से एक बोला कि उसका सर सर्दी-जुकाम से दर्द कर रहा है। इस पर जोना ने काले रंग की 'जिन' और थोड़ा गुड़ उसके प्याले में घोल दिया जिसके लिए उसका दावा था कि किसी भी तरह के कफ-खांसी-जुकाम की वह अक्सीर दवा है, फिर चाहे वह कितना ही पुराना क्यों न हो और उसका प्रभाव चाहे 'लैब्रेडर' के किनारे हुआ हो या किसी बर्फीले द्वीप में।

जल्दी ही उन सबमें नशे का प्रभाव दिखाई देने लगा, जैसा समुद्र से तुरन्त बाहर आने वाले लोगों में अक्सर प्रकट होने लगता है, फिर वे चाहे जितने बड़े पियक्कड़ हों। तब उन्होंने बेहूदे ढंग से हुड़दंग मचाना प्रारम्भ कर दिया।

मैंने देखा कि उनमें से एक ने अपने को अलग रखा था और यद्यपि वह अपनी गम्भीर आकृति से अपने साथ वालों के आनन्द को नष्ट नहीं करना चाहता था फिर भी उसने उस भयानक शोर-गुल मचाने से अपने को रोके रखा था। उस व्यक्ति ने तुरन्त ही मुझे अपनी ओर आकर्षित किया और चूंकि जल-देवताओं ने तय कर रखा था कि वह मेरा जहाज का साथी बने (हालांकि जहां तक इस कथा का सम्बन्ध है, उसका भाग ज्यादा नहीं है) इसलिए मैं उसका कुछ विवरण दे रहा हूं। वह पूरा छः फीट लम्बा था, भरे-पूरे कन्धों वाला, और उसकी छाती 'काफर डाम'[2] की तरह थी। मैंने ऐसी मांस-पेशियां

---

१. उत्तरी अमेरिका का एक उत्तरी ठंडा प्रदेश।

२. नहरों के पानी बन्द करने-खोलने के चौड़े दरवाजों वाले बांध।

बहुत कम देखी हैं। उसका चेहरा गहरे भूरे रंग का और झुलसा हुआ था और उस रंग-भेद के अन्तर से उसके सफेद दांत अधिक चमक रहे थे। उसकी आंखों की गहरी छाया में अतीत की कुछ ऐसी स्मृतियां तैर रही थीं कि वह अधिक प्रफुल्लित नहीं था। उसकी आवाज़ ने तुरन्त स्पष्ट कर दिया कि वह दक्षिण प्रान्त का निवासी है तथा उसका आकर्षक शरीर देखकर मैंने सोचा कि वह वर्जीनिया के 'अलेजैनियन पर्वतश्रेणी' का निवासी हो सकता है। जब उसके साथियों का हुड़दंग अपनी सीमाओं पर पहुंचा तो वह वहां से चुपचाप खिसक गया और वह मुझे फिर तब तक नहीं दिखा जब तक जहाज़ पर वह मेरा साथी नहीं बन गया। दो-चार मिनट में ही उसके साथियों को पता चल गया कि वह वहां से खिसक गया है। किसी कारण से वह उनका अत्यन्त प्रिय साथी था, मुझे लगा, क्योंकि वे 'बल्किंगटन !—बल्किंगटन ! बल्किंगटन कहाँ है ?' की पुकार लगाते हुए मकान से बाहर चले गए।

उस समय नौ-दस बज रहा था और कमरा इन सब चीख-पुकारों के अनन्तर अतिप्राकृतिक रूप से निःशब्द तथा शान्त लग रहा था। नाविकों के प्रवेश करने से पहले एक योजना मेरे दिमाग़ में आई थी और अब मैं उसके लिए स्वयं को बधाई देने लगा।

कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे के साथ एक बिस्तर पर सोना पसन्द नहीं करता। सच तो यह है कि कोई अपने सगे भाई के साथ भी नहीं सोना चाहता। मैं इसका कारण तो नहीं बता सकता, किन्तु सोते समय लोग अपने को 'प्राइवेट' रखना चाहते हैं। और यदि परिस्थिति ऐसी हो जाए कि किसी अजनबी को किसी अजनबी सराय में 'हारपूनर' के साथ सोना पड़े तो आपकी उलझन बेहिसाब बढ़ जाएगी। फिर कोई कारण मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि नाविक होने पर भी मुझे ही किसी दूसरे के साथ बिस्तर पर सोना पड़े, क्योंकि समुद्र-यात्रा में दो नाविक एक बिस्तर पर उसी तरह कभी नहीं सोते, जैसे सूखी जमीन पर अविवाहित शाह। यह तो ठीक है कि वे एक ही कमरे में सोते हैं किन्तु सबका अलग हैमक[1] होता है, अलग कम्बल और प्रत्येक व्यक्ति अलग ही सोता है।

---

१. जहाज़ियों के लिए झूलने वाला पलंग।

जितना ही मैं इस 'हारपूनर' के सम्बन्ध में सोचता जाता था, उतना ही उसके साथ सोने की बात का ध्यान कर मुझमें घृणा भरती जा रही थी। यह सोच लेना उचित ही था कि मल्लाह होने के कारण उसके कपड़े सूती हों या ऊनी—कभी साफ़-सुथरे और अच्छे हो ही नहीं सकते। मेरे सारे शरीर में झटके-से लगने लगे। साथ ही बहुत रात हो रही थी और अब तक उस भले 'हारपूनर' को वापस लौटकर बिस्तर की शरण लेनी चाहिए थी। और कहीं आधी रात गए वह मेरे पलंग पर आ टपके तो? मैं भला उस अंधेरे कमरे में उसका आना कैसे जान सकूंगा?

"मकान मालिक साहब! मैंने 'हारपूनर' के साथ सोने के सम्बन्ध में अपना विचार बदल दिया है। मैं उसके साथ नहीं सोऊंगा। मैं यहां इस बेंच पर सो लूंगा।"

"जैसी तुम्हारी इच्छा! मुझे खेद है कि बिस्तर के लिए मैं तुम्हें एक मेज-पोश भी न दे पाऊंगा। यह तो वैसे ही दुःखदायी और खुरदरा तख्ता है।" उस बेंच की गांठों और दरारों को हाथ से टटोलते हुए वह बोल पड़ा—"जरा ठहरो। उस शराबखाने में मेरे पास बढ़ई का एक रन्दा रखा हुआ है—ठहरो! मैं इसे काफी ठीक कर दूंगा।"—यह कहने के बाद वह रन्दा उठा लाया। अपने पुराने रेशमी रूमाल से उसने बेंच की धूल साफ की और मेरे बिस्तर के लिए बेंच संभालने तथा उसे चौरस करते समय बन्दर की तरह गुर्राने लगा। लकड़ी की छीलन बाएं-दाहिने गिरने लगी और तभी एक गांठ से रन्दा जा टकराया और उसकी कलाई में खरोंच आते-आते बची। मैंने उससे कहा—"भगवान के लिए अब हट जाइए।" तख्ता मेरे सोने के लिए अब काफी ठीक हो गया था और मैं समझ नहीं पा रहा था कि इतना बराबर करने-कराने से क्या वह देवदार का पलंग बन जाता। तब एक गुर्राहट के साथ उस छीलन को समेटते हुए उसने कमरे के बीचोंबीच रखी एक बड़ी-सी अंगीठी में उसे डाल दिया और मुझे सोच-विचार में छोड़कर अपने काम में लग गया।

तब मैंने बेंच को नापा और देखा कि वह लगभग एक फुट छोटी थी, किन्तु कुर्सी घसीटकर उस कठिनाई को दूर किया जा सकता था लेकिन वह कम से कम एक फुट संकरी भी थी और जो दूसरी बेंच कमरे में रखी थी वह

उससे चार इंच ऊंची थी इसलिए दोनों को मिलाकर रखने का कोई सवाल ही नहीं उठता था। अस्तु, दीवाल के सामने थोड़ी जगह खाली छोड़कर मैंने बेंच को लम्बा रख दिया जिससे वहां मेरी पीठ ठीक से जम सके। तभी मैंने फौरन अनुभव किया कि खिड़की की चौखट से लेकर सर्द हवा का झोंका इतना तेज़ आ रहा है और सामने के दरवाज़े की सन्धों से आने वाली ठंडी हवा से मिलकर कमरे में सर्दी की एक ऐसी भंवर पैदा कर रहा है कि उस स्थान पर मुझे रात बिताना कठिन प्रतीत हो रहा था।

उस 'हारपूनर' का नाश हो ला,' मैं सोचने लगा। 'क्या मैं उसे धत्ता नहीं सकता कि अन्दर से दरवाज़ा बन्द करके उसके पलंग पर सो जाऊं? और फिर बाहर से चाहे जितनी आवाजें होती रहें, मैं न जागूं?' विचार कुछ बुरा तो नहीं था। लेकिन आगे सोचने पर मैंने उसे त्याग दिया। कौन जाने अगली सुबह कमरे के बाहर दरवाज़े पर वह मुझे मारने को तैयार खड़ा मिल जाए?

अब भी अपने चारों ओर निगाह दौड़ाते हुए और बिना किसी के पलंग पर साझा किए इस कष्टप्रद रात्रि को काटने का दूसरा तरीका न देखकर मैं सोचने लगा कि व्यर्थ ही उस बेचारे अपरिचित 'हारपूनर' के विरुद्ध दोषारोपण करने का आनन्द ले रहा हूं। मैंने सोचा कि थोड़ी प्रतीक्षा करनी चाहिए। वह जल्दी ही आएगा। तब मैं उसे ज़रा गौर से देखूंगा और हो सकता है कि हम दोनों ही दो अच्छे दोस्तों की तरह एक बिस्तर पर सो जाएं।

तब एक-एक, दो-दो और तीन-तीन करके दूसरे सोने वालों ने आना आरंभ कर दिया किन्तु उस 'हारपूनर' का कोई पता नहीं था।

"मकान मालिक साहब!" मैंने कहा—"कैसा अजीब आदमी है यह? क्या वह हमेशा इतनी रात गए आता है?" उस समय बारह बज रहे थे।

मकान मालिक ने अपने दुबले-पतले जबड़ों से जुगाली करना प्रारम्भ कर दिया और मुझे लगा जैसे मेरी समझ से बाहर किसी कारण से उसे बड़ा मजा आ रहा हो। वह बोला—"नहीं। साधारणतः वह जल्द लौट के आता है। जल्दी सोने-उठने वाला है। वह वैसी चिड़िया है जो कीड़े पकड़ लेती है। लेकिन आज वह फेरी लगाने गया था और मैं कह नहीं सकता कि उसे इतनी देर क्यों लग गई? शायद वह अपनी खोपड़ी नहीं बेच पाया?"

"खोपड़ी नहीं बेच पाया ?—यह कैसी बेवकूफी भरी बात है ?" तब एक-दम क्रोध में भरकर मैंने कहा "मकान मालिक साहब ! क्या तुम यह कहना चाहते हो कि इस शनिवार की रात को या यों कहो कि रविवार की सुबह वह शहर में अपना सर बेचने गया हुआ है ?"

"बिलकुल यही" मकान मालिक बोला—"और मैंने उससे कहा कि वह खोपड़ी यहां नहीं बेच सकता क्योंकि वैसे ही बाजार में माल बहुत है।"

"कौन-सा माल ?" मैं चीखा।

"खोपड़ियां। क्या संसार में जरूरत से ज्यादा खोपड़ियां नहीं हैं ?"

तब मैंने बहुत शान्तिपूर्वक कहा—"मकान मालिक साहब ! मेरे सामने अब ये बातें बन्द करो। मैं कोई मूर्ख आदमी नहीं हूं।"

तब एक लकड़ी खींचकर उसमें से दांत कुरेदने की सींक निकालते हुए वह बोला—"न होगे। लेकिन मैं यह समझता हूं कि जब वह 'हारपूनर' आकर यह सुनेगा कि तुम उसकी खोपड़ी की निन्दा कर रहे थे तो वह तुम्हारी पिटाई जरूर करेगा।"

मकान मालिक की उस व्यर्थ बकवास को सुनकर मुझे फिर क्रोध आ गया। मैंने कहा—"मैं उसकी खोपड़ी तोड़ दूंगा।"

"वह तो पहले ही से टूटी हुई है" वह बोला।

"टूटी हुई है ?" मैंने प्रश्न किया—"क्या तुम कहना चाहते हो कि उसकी खोपड़ी तोड़ी गई है ?"

"निश्चित। और तभी तो मैं सोचता हूं कि वह बिक नहीं पाती।"

किसी बर्फीले तूफ़ान में हेकला पर्वत की तरह बिलकुल शान्त होते हुए, उसके निकट जाकर मैंने कहा—"मकान मालिक साहब ! यह बकवास बन्द करो। तुम्हें और मुझे बिना देर किए, एक दूसरे को फौरन समझ लेना चाहिए। मैं तुम्हारे घर आया हूं और एक बिस्तर चाहता हूं। तुम मुझसे केवल इतना कहो कि मुझे वह आधा मिल सकता है और आधा किसी 'हारपूनर' के लिए तय है। और इस 'हारपूनर' के सम्बन्ध में तुम न जाने कैसी विलक्षण और उत्तेजित करने वाली कहानियां सुना रहे हो जिससे उस बेचारे के सम्बन्ध में मैं न जाने क्या-क्या सोचता चला जा रहा हूं जब कि मुझसे तुम कहते हो कि मुझे उसके साथ पलंग पर सोना है। तुम यह भी नहीं सोच रहे हो, मकान-

मालिक साहब, कि एक बिस्तर पर सोने वालों का रिश्ता बहुत नजदीकी और गुप्त तथा संसार में सबसे ज्यादा घनिष्ठता का होता है। अब मैं तुमसे कहता हूं कि तुम मुझे बताओ, कि यह 'हारपूनर' कौन है और क्या मैं उसके साथ सुरक्षित रूप से रात बिता सकता हूं ? साथ ही सबसे पहले जनाब ! यह कहिए कि उसकी सिर बेचने वाली कहानी गलत है क्योंकि अगर कहानी ठीक हुई तो मैं समझूंगा कि 'हारपूनर' सचमुच ही एक पागल आदमी है और मैं किसी पागल आदमी के साथ कभी नहीं सो सकता और आप जनाब ! आप ! मकान-मालिक साहब ! जानबूझकर मुझको वैसा करने के लिए बरगलाने के कारण आप पर फौजदारी मुकदमा चलाया जा सकता है।"

"वाह !" एक लम्बी सांस खींचते हुए मकान मालिक बोला—"एक अनुभवहीन छोकरे के लिए यह सब कहना बहुत बड़ी बात है। लेकिन शान्त होओ, शान्त होओ। यह 'हारपूनर' जिसके सम्बन्ध में मैं अभी-अभी तुमसे कह रहा था—दक्षिणी सागर से अभी ही आया है जहां न्यूजीलैण्ड की कुछ खोपड़ियां उसने खरीदी थीं (तुमको मालूम होना चाहिए कि वे विचित्र चीजें हैं) और उसने वे सब बेच दी हैं, केवल एक रह गई है जिसे वह आज रात में ही बेचना चाहता है क्योंकि कल इतवार होगा और लोगों के गिरजा जाते समय आदमी की खोपड़ी सड़क पर बेचना बहुत भद्दी बात होगी। पिछले रविवार को वह चार खोपड़ियां एक डोर में बांधकर—जैसे प्याज की गाठें बांधी जाती हैं—बाजार जाने वाला ही था कि मैंने रोक दिया।"

इस विवरण ने उस अनजाने भेद को खोल दिया और लगा जैसे मकान-मालिक के हृदय में मुझे मूर्ख बनाने का कोई इरादा नहीं था। साथ ही अब मैं उस हारपूनर के सम्बन्ध में क्या सोच सकता था जो उस पवित्र रविवार में बदलने वाली उस शनिवार की रात को बाहर घूम रहा था, सो भी मृत मूर्ति-पूजकों की खोपड़ियों को बेचने जैसे जंगली व्यापार में।

"मकान मालिक साहब ! लगता है कि वह हारपूनर बहुत खतरनाक आदमी है।

"वह पैसा बराबर देता जाता है," स्पष्ट उत्तर मिला। "लेकिन, सुनो, पलंग अच्छा है। जब हमारी शादी हुई थी तब 'साल' और मैं इसी पलंग पर सोए थे। दो व्यक्तियों के सोने के लिए उसमें काफी जगह है। वह एक भारी-

भरकम पलंग है। उस पर सोना छोड़ने से पहले 'साम' और छोटे 'जानी' को 'साल' पायताने की ओर सुला देती थी। पर एक रात मुझे स्वप्न दिखाई दिया और मैंने लुढ़कते-पुढ़कते 'साम' को जमीन पर गिरा दिया और उसका हाथ टूटने-टूटते बचा। इसके बाद 'साल' ने कहा कि पलंग ठीक नहीं है। मेरे साथ आओ। मैं फौरन रोशनी करता हूं।" कहते-कहते उसने एक मोमबत्ती जलाई और मेरी ओर दिखाते हुए उसने रास्ता बताया। किन्तु मैं खामोश खड़ा रहा और जब कोने में लगी एक घड़ी की ओर देखा तो वह बोल पड़ा—"मैं कसम खाकर कहता हूं कि अब इतवार है। इसलिए वह हारपूनर आज नहीं आएगा। वह कहीं आराम करने लगा होगा। इधर आओ, इधर आओ, नहीं आओगे?"

मैं एक मिनट तक सोचता रहा तब हम दोनों ऊपर गए। मुझे एक छोटे कमरे में ले जाया गया जो बहुत ठंडा था और जिसमें एक अद्भुत पलंग पड़ा था—इतना बड़ा कि उसपर चार 'हारपूनर' एक साथ बराबर-बराबर सो सकते थे।

"वह देखो" एक पुरानी मेज़ पर मोमबत्ती रखते हुए मकान मालिक बोला। मेज हाथ धोने के स्टैंड और बीच की मेज़ दोनों के काम आती थी। "अब तुम वहां आराम करो और गुडनाइट जनाब!"

मैंने पलंग से एक दृष्टि देखना चाहा पर तब तक वह वहां से जा चुका था।

चादर को उलटकर मैं पलंग पर झुक गया। यों वह कुछ बहुत अच्छा तो नहीं था किन्तु घूम-फिरकर देखने पर ठीक ही जंच रहा था। तब मैंने कमरे में चारों ओर नजर दौड़ाई। उस पलंग और बीच की मेज के अतिरिक्त वहां कुछ और फर्नीचर नहीं था सिवाय एक बेहूदी दराज़, मेज और चार दीवालों के। इसके अतिरिक्त वहां एक 'फायरबोर्ड'[1] रखा था जिसपर कागज़ मढ़ा हुआ था। वह एक आदमी-सा दिख रहा था जो एक व्हेल पर हमला कर रहा था। कुछ चीजें और थीं जो उस कमरे की नहीं थीं। एक तो जहाजियों के झूलने का पलंग था जो एक कोने में पड़ा हुआ था, जहाजी का एक बड़ा झोला जो एक सन्दूक के स्थान पर किसी 'हारपूनर' के 'वारड्रोब'[2] का-सा काम करता

१. दफ्ती की बनी तस्वीर।

२. बड़ी आलमारी।

था। इसी तरह एक अजीब तरह का पार्सल था जिसमें विलक्षण मछली के कांटे थे जो 'फायर प्लेस' के ऊपर की दराज पर रखे थे और एक बड़ा हारपून (बर्छी) पलंग के सिरहाने टिकी खड़ी थी।

किन्तु, यह सन्दूक पर क्या रखा है ? मैंने उसे उठाया, उसे रोशनी के पास ले गया, उसे टटोला, सूंघा और हर प्रकार से यह जानने की चेष्टा की कि आखिर वह चीज है क्या ? मैं इसको दरवाजे की एक बड़ी चटाई ही कह सकता हूं जिसमें किनारे पर गोट का-सा काम हो रहा था जो किसी 'इंडियन' सांप के ऊपर साही के कांटों के धब्बों की तरह दिखाई दे रहा था। इस चटाई के बीचोंबीच एक छेद या दरार-सी दिखाई दे रही थी जैसी किसी दक्षिणी अमेरिकनों के पानको[1] में दिखाई देती है। लेकिन क्या यह सम्भव था कि कोई समझदार 'हारपूनर' इस चटाई में घुसकर इस पोशाक में किसी क्रिश्चियन शहर की सड़कों पर घूमे ? मैंने उसे पहना लेकिन वह एक लोहे की जंजीर की तरह वजनी मालूम पड़ी क्योंकि वह बड़ी मोटी व भारी थी। मुझे वह कुछ भीगी हुई भी दिखाई दी जैसे वह रहस्यमय हारपूनर उसे पानी बरसते में पहने रहा हो। उसे पहने-पहने दीवाल पर लगे एक छोटे शीशे के पास गया किन्तु ऐसी डरावनी तस्वीर मैंने जीवन में कभी नहीं देखी थी। मैंने इतनी जल्दी-जल्दी पोशाक को उतारा कि मेरी गर्दन ऐंठ कर रह गई।

मैं बिस्तर के किनारे पर बैठ गया और उस फेरी लगाकर खोपड़ी बेचने वाले 'हारपूनर' और उसकी इस चटाई के सम्बन्ध में सोचने लगा। वहीं बैठे कुछ समय तक सोचते रहने के बाद मैंने उठकर अपनी जैकेट उतार डाली और फिर सोचता हुआ ही कमरे के बीचोंबीच खड़ा हो गया। मैंने अपना कोट उतारा और तब मैं कमीज पहने ही कुछ देर तक और सोचता रहा। आधे कपड़े उतार डालने पर अब मुझे सर्दी लगनी आरम्भ हो गई और तभी मैंने मकान मालिक की उस बात का स्मरण किया कि वह 'हारपूनर' आज समूची रात नहीं आएगा क्योंकि काफी देर हो चुकी है। इसलिए मैंने सब चिन्ताएं त्याग कर पतलून व जूते उतारे तथा रोशनी बुझाकर पलंग पर लेट गया और सोने की कोशिश करने लगा।

---

१. एक कम्बल जिसमें सर डालने के लिए बीच में छेद होता है।

पता नहीं उस चटाई में मकई भरी थी या टूटे प्लेट-प्याले किन्तु मैं काफी देर तक करवटें बदलता रहा और सो नहीं पाया। अन्त में मुझे झपकी आई और मैं सोने वाला ही था कि गलियारे में भारी जूते की आवाज़ सुनाई दी और दरवाज़े के नीचे से रोशनी की किरणों ने कमरे में प्रवेश किया।

भगवान ही मेरी रक्षा कर सकता है। मैंने सोचा—यह निश्चित ही 'हारपूनर' होगा—नारकीय खोपड़ी बेचने वाला। किन्तु मैं सांस खींचकर पड़ रहा और मैंने संकल्प किया कि जब तक मुझे कोई पुकारेगा नहीं मैं एक शब्द भी नहीं बोलूंगा। एक हाथ में बत्ती व दूसरे में न्यूजीलैण्ड की खोपड़ी लिए—उस अजनबी ने कमरे में प्रवेश किया और बिस्तर की ओर बिना देखे हुए उसने बत्ती को फर्श पर, एक कोने में, मुझसे काफी दूर रख दिया और तब उस झोले की गांठ खोलने में जुट गया जिसके बारे में मैं पहले बता चुका हूं। उसका मुंह देखने की मेरी बहुत इच्छा हो रही थी किन्तु वह झोले के मुंह की रस्सी खोलने में जुटा हुआ था। इतना काम कर लेने पर उसने किसी प्रकार अपना मुंह घुमाया। हे भगवान! कैसा दृश्य था! ऐसा चेहरा! वह बैंगनी मिले गहरे पीले रंग का था जिसमें स्थान-स्थान पर काले रंग के चकत्ते पड़े हुए थे। हां, बिल्कुल वही जैसा मैं सोचता था, वह निश्चय ही डरावना बिस्तर का साथी है। उसने कहीं झगड़ा किया था, उसके तेज़ घाव भी हुआ था और अब वह सीधा सर्जन के पास से चला आ रहा था। उसी क्षण उसने अपना सम्पूर्ण चेहरा रोशनी की ओर किया और मैंने साफ देखा कि उसके गालों में लगे वे काले चौकोर टुकड़े स्टिकिंग-प्लास्टर[1] के नहीं हैं। वे किसी प्रकार के चकत्ते ही थे। पहले तो मैं यह न सोच पाया कि वे क्या हो सकते हैं, किन्तु फिर एकाएक सच्चाई जैसे मेरे मन में कौंध गई। मुझे एक व्हेल मारने वाले गोरे आदमी की कहानी याद आई जो नरभक्षकों के बीच में जा पहुंचा था और वहां उन्होंने उसका सारा शरीर गोद दिया था। तब मैंने यह नतीजा निकाला कि दूर समुद्र में यात्रा करते समय इसको भी कुछ ऐसा ही अनुभव हुआ होगा। लेकिन इससे क्या होता है? मैंने सोचा यह तो सिर्फ उसका बाहरी भाग है। आदमी किसी भी रंग की चमड़ी में ईमानदार हो सकता है। लेकिन काले धब्बों

---

१. चिपकने वाला प्लास्टर।

को छोड़कर उसकी देह पीली क्यों है ? हो सकता है कि उष्णकटिबन्ध के निवासियों के समान उसकी त्वचा झुलस जाने के कारण ये धब्बे पड़ गए हों। परन्तु मैंने यह तो कहीं नहीं सुना कि तेज धूप आदमी की त्वचा का रंग सफेद से पीला कर दे। जो भी हो मैं कभी दक्षिण-समुद्रों में नहीं गया था। हो सकता है वहां धूप कुछ इसी प्रकार के विचित्र रंग खाल में उत्पन्न कर देती हो। अब जब बिजली की कौंध की तरह ये सब विचार मेरे मस्तिष्क में आ-आकर विलीन हो रहे थे, उस समय उस 'हारपूनर' ने मुझे एक बार भी नहीं देखा। तब कुछ दिक्कत के बाद अपना झोला खोलने के बाद उसने उसे खखोलना शुरू किया और न जाने किस तरह का टामाहाक[1] और एक सील-स्किन-वैलट[2], जिसके बाल उठे हुए थे बाहर निकला। उनको कमरे के बीचों-बीच रखे सन्दूक पर रखते हुए उसने तब उस न्यूजीलैण्ड वाली खोपड़ी को उठाया, जो काफी डरावनी चीज़ थी और बाद में उसे झोले में सरका दिया। उसने ऊदबिलाव की खाल का बना हुआ अपना टोप उतारा। इस पर तो ताज्जुब में मेरी आवाज़ निकलने को हो आई। उसके सर पर एक भी बाल नहीं था। कहने को भी एक नहीं, केवल बालों की एक गांठ-सी बंधी थी जो माथे पर लटक रही थी। अब उसकी वह गंजी और पीली खोपड़ी रोगीली-सी लग रही थी। अगर वह अजनबी मेरे और दरवाज़े के बीच न खड़ा होता तो मैं लपककर तेजी से दरवाज़े से बाहर भाग खड़ा होता, जैसे कभी खाने के लिए भी न भागा होऊंगा।

तभी मैंने अनुभव किया कि जैसे कोई चीज़ खिड़की से सरक रही है किन्तु वह तो बीच की मंजिल का पिछवाड़ा था। मैं डरपोक नहीं हूं किन्तु उस खोपड़ी बेचने वाले पीले शैतान के बारे में मैं क्या निश्चय करूं, यह मेरी समझ में न आ रहा था। अज्ञान से ही भय उत्पन्न होता है और फिर मैं तो उस अजनबी को बिल्कुल नहीं जानता था। मैं सच कहता हूं कि मैं डर रहा था, मुझे लग रहा था मानो कोई राक्षस उस रात के अंधियारे में दरवाजा तोड़कर घुस आया है। सचाई यह थी कि उससे मैं इतना डर गया था कि उसकी विलक्षणता के

---

१. गंडासा या एक प्रकार की कुल्हाड़ी।

२. मछली की खाल का झोला।

सम्बन्ध में सीधे उससे जानकारी प्राप्त करने का साहस भी नहीं रह गया था।

इसी बीच उसने अपने कपड़े उतारने का कार्य प्रारम्भ कर दिया था और उसकी छाती तथा खुली बाहें दिखाई देने लगीं। जैसा मुझे याद है उसके इन ढके हुए अंगों पर भी उसी प्रकार के दाग दिखाई दे रहे थे जैसे उसके चेहरे पर थे। उसकी पीठ पर भी वैसे ही चकत्ते थे। ऐसा लग रहा था मानो वह तीस-साला लड़ाई में अभी-अभी चिपकने वाले प्लास्टर की कमीज पहने हुए भागकर आया हो। सर्वाधिक उसके पैरों पर ऐसे निशान थे जैसे गहरे हरे रंग के मेढकों का कोई झुंड ताड़ के नए पेड़ों पर चढ़ रहा हो। अब इतना तो स्पष्ट ही था कि वह कोई दुष्ट जंगली आदमी था और दक्षिणी सागरों में व्हेल का शिकार करते-करते जहाज पर चढ़कर ईसामसीह को मानने वाले इस नगर में आ गया था। सोचकर मैं कांप उठा। खोपड़ी बेचने वाला—शायद अपने ही भाइयों की खोपड़ियां बेचने वाला। कहीं, उसे मेरी ही खोपड़ी पसन्द आ गई तो? हे भगवान! जरा उस गंडासे को तो देखो!

लेकिन अब कांपने का भी समय नहीं था क्योंकि अब वह ऐसा कार्य-व्यापार करने लगा कि मेरा ध्यान पूर्णतया उस पर केन्द्रित हो गया और मुझे विश्वास हो गया कि वह बर्बर मूर्तिपूजक है। अपने उस ओवरकोट, या उस मोटे और लद्दड़ कोट जो उसने पहले निकालकर कुर्सी पर रखा था, उसकी जेबों को खखोला और अन्त में एक अजीब तरह की मूर्ति बाहर निकाली जिसकी पीठ पर कूबड़ निकला हुआ था और जिसका रंग बिल्कुल ही तीन दिन के पैदा हुए कांगो[1] के बच्चे का-सा था। अब उन खुशबूदार खोपड़ियों की बात याद करके मैंने तुरन्त सोचा कि यह काला और बौने पुतले-सा बच्चा अवश्य ही आदमी का बच्चा होगा और उसे किसी प्रकार इस दशा में सम्हालकर रखा गया होगा। किन्तु यह देखकर कि उसमें हिलने-डुलने की शक्ति बिल्कुल भी नहीं है और वह एक पालिश किए हुए आबनूस की तरह चमक रही है, मैंने निर्णय किया कि वह एक लकड़ी की मूर्ति से अधिक कुछ नहीं है और वह वही थी भी। अब उस खाली फायरप्लेस के पास जाकर उसने उस कागज लगे फायरबोर्ड को हटाया और अंगीठी में लगी जाली में टेनपिन[2] की

---

१. मजदूर, जो चीन के चाय के खेतों में काम करते हैं।

२. एक खेल, जिसमें दस पिनें लगाई जाती हैं।

तरह उस कूबड़ निकली मूर्ति को टिका दिया। उसकी चिमनी के किनारे और अन्दर की ईंट कांगो मूर्ति समेत सचमुच एक छोटे पूजागृह या गिरजे की तरह ही लग रही थी।

अब अत्यधिक आगे क्या होने वाला है—मैंने अपनी आंखें उस छिपी हुई मूर्ति पर गड़ा दीं। पहले तो दो मुट्ठी भरकर उसने लकड़ी का छीलन अपने उस ओवरकोट की जेबों से निकाला और संभालकर उसने मूर्ति के सामने रखा, तब थोड़ा जहाजी बिस्कुट उसने उसके ऊपर रखा, लैम्प से थोड़ी आग ली और उस छीलन के ढेर में मानो पूजा की आग जला दी। तब जल्दी-जल्दी अग्नि को उलट-पुलटकर और तब तेजी से अपनी उंगलियों को हटाते हुए (क्योंकि देखने में लगा कि वह उंगलियों की जलन के कारण मुंह बना रहा था।) अन्त में उसने उस बिस्कुट को आग से हटा लिया तब आग की लौ को थोड़ा अधिक जलाकर उसने उस छोटे नीग्रो-मूर्ति के आगे आग की लपटें बढ़ा दीं। किन्तु लग रहा था कि उस छोटे राक्षस को वह सूखा-सा उत्सव पसन्द नहीं आ रहा था क्योंकि उसने अपने ओठ तनिक भी नहीं हिलाए। इससे अधिक आश्चर्यजनक वह विचित्र स्वर था जो उसके गले से निकल रहा था और वह पुजारी पता नहीं कुछ गाकर पूजा कर रहा था अथवा कोई पैगन[1] भजन सुना रहा था। इस सबमें वह अपने मुंह को अजीब ढंग से भींच लेता था जो देखने में बड़ा अप्राकृतिक लग रहा था। अन्त में आग बुझाकर बहुत साधारण ढंग से उसने मूर्ति को अपने उस ओवरकोट की जेब में लापरवाही से रख लिया जैसे कोई खिलाड़ी किसी मरी चिड़िया को जेब में डाल लेता है।

ये विचित्र कार्य मेरी उलझन को और बढ़ा रहे थे और अब उन अन्तिम क्रियाओं को देखकर मुझे लग रहा था कि उसका सब काम समाप्त हो चुका है और वह अब बत्ती बुझाकर मेरे साथ सोने के लिए पलंग पर कूदने ही वाला है तो मैंने सोचा कि यही वह समय है—या फिर कभी नहीं आएगा कि मैं इस मंत्रमोह को तत्काल भंग कर दूं जिसमें मैं काफी देर से बंधा था।

किन्तु—क्या करना चाहिए—इतना सोचने में जो समय नष्ट हो गया, वही खतरनाक था। अपने गंडासे को मेज से उठाकर एक पल को उसने उसकी

१. मूर्तिपूजक—जो ईसा अथवा मोहम्मद के धर्म को नहीं मानता।

धार को रोशनी के सामने रखकर देखा और अपने मुंह को हैंडिल के पास बढ़ाते हुए उसने तम्बाकू के लम्बे गुबार छोड़ने आरम्भ किए। अगले ही मिनट बत्ती बुझ चुकी थी और वह भयानक राक्षस उस गंडासे को दांतों में दाबे हुए मेरे बगल में, पलंग पर आ गया। मैं चीख पड़ा। मैं अपने को रोक ही न पाया। तब आश्चर्य से बड़बड़ाते हुए उसने मुझे टटोलना प्रारम्भ किया।

कुछ बड़बड़ाते हुए मैं (क्या, मुझे नहीं मालूम) कांपते हुए उससे सरककर दीवार की ओर लुढ़क गया। मैंने जैसे अनुरोध किया कि वह कुछ भी हो कोई भी हो कम से कम मुझे मेहरबानी करके उठ जाने दे और दुबारा बत्ती जला लेने दे। किन्तु उसके कंठ की वाणी से मैं सन्तुष्ट हो गया कि वह मेरी बात ठीक से नहीं समझ पाया।

'तू शैतान कौन है ?" अन्त में उसने कहा—"तू बोला नेई, दुष्ट, मैं मार डालूं'''तुझको।" इसके साथ ही वह चमकदार गंडासा उस अन्धेरे में मेरे सामने झूमने लगा।

"मकान मालिक साहब, भगवान के लिए, पीटर काफिन ?" मैं एकदम चिल्लाया "मकान मालिक ! देखो ! बचाओ ! काफिन ! फरिश्ते ! बचाओ !"

"बोल रे'''! तू बोल, तू कौन है ? या भाड़ में जा, मैं तुझे जान से मार डालूंगा।" वह राक्षस फिर बड़बड़ाया और तब उसके उस झूमते हुए और डरावने गंडासे को नचाते हुए उसने गरम तम्बाकू का धूआं फेंका जो चारों ओर भर गया और मुझे लगा कि मेरे कपड़ों में आग लग जाएगी। किन्तु भगवान को धन्यवाद है कि उसी क्षण उस मकान मालिक ने हाथ में बत्ती लिए हुए कमरे में प्रवेश किया। उसे देखते ही मैं पलंग पर से उछला और उस की ओर लपका।

"डरो मत," फिर दांत निकालते हुए वह बोला—"यहां यह 'क्वीकेग' तुम्हारा एक बाल भी नहीं छूएगा।"

"अपने ये दांत निकालना बन्द करो," मैं चिल्लाया—"और तुमने मुझे बताया क्यों नहीं कि वह पापी 'हारपूनर' नरभक्षी है।"

"मैंने सोचा कि तुम जान गए होगे। क्या मैंने नहीं कहा था कि वह शहर भर में खोपड़ियों की फेरी लगाता है ? लेकिन अपने लंगर घुमाओ और

चुपचाप सो जाओ। क्वीकेग ! इधर देखो—तुमने मुझसे वायदा किया था, मैंने तुमसे वायदा किया था। वह आदमी तुम्हारे पास सोएगा, तुम वायदा करते हो ?"

"मैं बहुत वायदा करता हूं"—तम्बाकू का धुआं छोड़ते हुए और बिस्तर पर सीधे बैठकर 'क्वीकेग' गुर्राया।

"चलो सोओ" अपने गंडासे से मेरी ओर संकेत करते हुए और बिस्तर को एक ओर हटाते हुए उसने कहा। यह उसने अत्यधिक नागरिक एवं सरल ढंग से कहा। मैं एक मिनट तक उसे खड़ा देखता रहा। उस सब उत्पात के बाद भी वह एक साफ और सीधा-सा नरभक्षी दिखाई दे रहा था। तब मैंने पलभर में सोचा कि मैंने स्वयं ही इस सबका स्वांग क्यों बनाया ? मेरी ही तरह यह भी एक इन्सान है। जैसे मैं उससे डर रहा हूं, उसी प्रकार वह मुझसे भी डर सकता है। नशे में धुत् किसी क्रिश्चियन के साथ सोने से तो एक सीधे-सादे नरभक्षी के साथ सोना कहीं अच्छा है।

"मकान मालिक साहब !" मैंने कहा—"उससे कहो कि वह गंडासा, या पाइप—या तुम उसे क्या कहते हो—उसको उस किनारे पर रखे। संक्षेप में उससे कहो कि तम्बाकू पीकर धुआं उड़ाना बन्द करे और मैं उसके पास सो जाऊंगा। किन्तु कोई आदमी मेरे पास लेटकर बिस्तर में तम्बाकू पिए इसे मैं नहीं सहन कर सकता। यह खतरनाक है। साथ ही मेरा बीमा भी नहीं हुआ है।"

जब यह बात क्वीकेग से कही गई तो उसने तुरन्त वैसा ही किया और पुनः बड़े सरल भाव से मेरी ओर संकेत करते हुए उसने मुझे बिस्तर पर बुलाया और पलंग पर एकदम किनारे लुढ़क गया जैसे कह रहा हो—मैं तुमको बिल्कुल नहीं छुऊंगा।

"गुडनाइट, मकान मालिक साहब !" मैंने कहा—"अब तुम जा सकते हो।"

"मैं बिस्तर पर जा लेटा और वैसी सुख की नींद मुझे जीवन में कभी नहीं आई।

## ४

दूसरे दिन जब मैं सोकर उठा तो धूप निकल आई थी और मैंने देखा कि क्वीक्वेग की बांह, बड़े प्रेम से, मेरे ऊपर रखी हुई है, जैसे मैं उसकी बीवी होऊं। वह बिछावन एक प्रकार की कथरी थी जिसमें तरह-तरह के रंग के चौकोर और तिकोने कपड़े जुड़े हुए थे और उसकी वह बांह भी ऊपर से नीचे तक ऐसे गुदी हुई थी जैसे क्रीट नगर की कोई टेढ़ी-मेढ़ी घुमावदार सड़क अनंत की ओर चली जा रही हो अथवा कोई रंगीन छींट छपी हुई हो। उसके हाथ के रंग का थोड़ा भी भाग दूसरे से नहीं मिलता था जिस पर मैंने ध्यान किया कि समुद्रयात्रा की धूप-छाया में ऊटपटांग ढंग से अपने हाथों का प्रयोग करने से और अपनी कमीज़ की बांहें अलग-अलग समय में अलग-अलग ढंग से चढ़ाने-उतारने से वही एक बांह इस बिछाने वाली कथरी में सिले टुकड़ों की तरह दूसरे-दूसरे रंग की हो गई है। सचमुच ही उस कथरी और बांह का रंग ऐसा मिलता-जुलता था कि उठते ही पहले तो मुझे यह समझ में ही नहीं आया कि वह बिछाने वाला कपड़ा है या हाथ किन्तु बांह के भारीपन का अनुभव करके ही मैंने समझा कि क्वीक्वेग मुझे सटाये हुए था।

मेरी उत्तेजनाए कुछ विचित्र थीं। मैं उन्हें प्रकट करने का प्रयत्न करूंगा। जब मैं निरा बच्चा था तब भी इस प्रकार का संकट मुझ पर आया था। वह एक स्वप्न था अथवा सत्य था—इसका निर्णय तो मैं कर ही नहीं पाया। कहानी इस तरह है—एक दिन मैं केपर काट रहा था क्योंकि मैं चिमनी के अन्दर रेंगने की तदबीर कर रहा था। जैसा मैंने एक सफाई करने वाले आदमी को कुछ दिन पहले करते देखा था। तभी मेरी सौतेली मां ने मेरी टांगें—पकड़कर मुझे चिमनी के बाहर खींचा और बिस्तर पर ला पटका। मेरी सौतेली मां मुझे हमेशा ही मारती-पीटती रहती थी और रात में बिना खाने के ही सोने को मजबूर करती थी। उस समय केवल दोपहर के दो बज रहे थे और वह इक्कीसवीं जून की दोपहर थी। हमारी उस भूखंड में वह दिन वर्ष भर में सबसे बड़ा माना जाता है। मैं घबड़ा गया। किन्तु कोई वश भी

नहीं था। अस्तु, मैं जीने पर चढ़ा और तीसरी मंजिल पर पहुंचकर अपने छोटे-से कमरे में केवल समय नष्ट करने के लिए धीरे-धीरे कपड़े उतारता रहा। तभी मैंने एक गहरी सांस खींची और पलंग की चादर में लिपट गया।

पलंग पर पड़े-पड़े मैं सोच रहा था कि अपनी मुक्ति के पहले कम से कम सोलह घण्टे निकलने बाकी हैं। बिस्तर पर सोलह घण्टे! सिर्फ सोचकर ही मेरी नन्हीं पीठ दर्द करने लगी। चारों तरफ धूप फैली हुई थी। सूर्य खिड़की में चमक रहा था। गाड़ियों की खड़खड़ के स्वर सड़क से तथा घर के अन्दर से मधुर बोलियां मेरे कानों में निरन्तर गूंजती रहीं। मेरी हालत बिगड़ती ही जा रही थी। अन्त में मैं उठा, कपड़े पहने और पैरों में मोजे पहने हुए मैं धीमे से नीचे उतरा और मां को तलाश कर मैं अचानक उसके पैरों पर गिरा। मैंने उससे विनम्र अनुरोध किया कि वह चाहे मुझे भले ही पीट ले लेकिन इतने असहनीय समय तक मुझे बिस्तर पर पड़े रहने की सजा न दे। लेकिन सौतेली माताओं में सम्भवत: वह सर्वाधिक तेज और असद्व्यवहार करने वाली स्त्री थीं अत: मुझे दुबारा कमरे में जाना पड़ा। कई घण्टों तक मैं यों ही आंखें फाड़े जगा पड़ा रहा और इतना व्यथित रहा कि उतना उसके बाद के बड़े-बड़े दुर्भाग्य पर भी दुखी नहीं हुआ। अन्त में मुझे लगा जैसे मैं किसी भयानक स्वप्न में डूब रहा हूं किन्तु कुछ स्वप्न में खोया-सा, कुछ जागा-सा—मैंने अपनी आंखें खोलीं। तभी वह प्रकाशित कमरा सांझ के अंधियारे में घिर गया। अचानक ही मैंने अपने समूचे शरीर में एक झटके का अनुभव किया। कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, न कुछ सुनाई दे रहा था किन्तु जैसे कोई दैवी हाथ मेरे हाथों में आ गया। मेरी बांह बिछौने पर झूल गई और कोई बेनाम—कल्पना के बाहर की-सी शान्त—तस्वीर या भूत की-सी छाया जिसका वह हाथ था, मेरे बिस्तर पर बराबर आकर बैठ गई। मैं एक भारी डर के साथ सुन्न-सा वहां बैठा रह गया और मैंने अपना हाथ खींचने का प्रयत्न नहीं किया क्योंकि मैं सोच रहा था कि यदि मैं एक इंच भी हिला तो वह सन्नाटा टूट जाएगा और वह मुझ पर चढ़ जाएगी। मैं कह नहीं सकता कि अपने आप ही मेरे मन की वह अदृश्य तस्वीर कैसे दूर हुई किन्तु सुबह जब मैं जागा तो कांपते हुए मुझे वह स्मरण थी और तब अनेक दिनों, हफ्तों और महीनों तक मैं उस रहस्य को प्रकट करने में अपने को असमर्थ पाता रहा। यहां तक कि इस मिनट भी मैं

उसे समझाते समय उलझन में पड़ जाता हूं।

सुबह जब मैं उठा और क्वीकेग का हाथ अपने गले में पाया तो, भय को छोड़कर, मेरे मन की बिल्कुल वैसी ही स्थिति थी जैसी उस हाथ की छाया का अनुभव करके हुई थी। एक-एक करके अब वे सब चित्र मेरी आंखों के सामने उपस्थित हो गए जो विगत रात्रि मैंने देखे थे किन्तु उनका मनोरंजक भाग ही अब शेष रह गया था। यों मैंने उस हाथ को हटाने की चेष्टा की—उस दूल्हे के-से आलिंगन को मैंने ढीला करना चाहा किन्तु अपनी भरपूर नींद में वह मुझे कसकर खींचता रहा। जैसे अब केवल मृत्यु ही हमको पृथक् कर सकती है। अब मैंने पुकारना शुरू किया—"क्वीकेग !" किन्तु एक खर्राटे की तेज आवाज़ के अतिरिक्त कोई उत्तर नहीं मिला। तब मैं धीरे से घूमा। उस समय मुझे लग रहा था जैसे मैं किसी घोड़े की गर्दन से बंधा होऊं। मेरी गर्दन में एक खरोंच भी आया। तब बिछौने को एक किनारे करते हुए मैंने देखा कि उसका वह गंडासा भी उस नरभक्षी के बगल में ही पड़ा है, जैसे वह कोई मुंह पर नक्काशी किया हुआ बच्चा हो। एक शैतान—लेकिन देखने में कोई सलोना बच्चा इस अजनबी मकान में दिन दोपहरी, एक राक्षस और गंडासे के पास जैसे पड़ा सो रहा हो। "क्वीकेग ! भले आदमी, क्वीकेग—उठो।"

अन्त में, बहुत देर बाद, जोर-जोर से आवाजें देने और झकझोरने पर, मैं उस विवाहित ढंग पर होने वाली मोहब्बत से भरपूर उस पुरुष के हाथ को अलग करने के प्रयत्न में उसके मुंह से एक सुअर की-सी आवाज़ भर सुन पाया। किन्तु जल्दी ही उसने अपना हाथ खींचा और जैसे कोई न्यूफाउन्डलैण्ड का कुत्ता पानी से निकलकर फड़फड़ाए इस तरह उसने अपने को हिलाया, बिस्तर पर सीधा होकर बैठ गया जैसे किसी बर्छे की लाठी की तरह तना हुआ और कठोर हो। वह मेरी ओर आंखें फाड़कर देखता रहा और इस ढंग से आंखें मलता रहा जैसे सोच रहा हो कि मैं वहां कहां से आ टपका, लेकिन जैसे धीरे-धीरे मेरे सम्बन्ध में उसे कुछ स्मरण होने लगा। इस बीच मैं उसे केवल देखता भर रहा क्योंकि अब मेरे मन में उसके प्रति कुछ बुरी धारणाएं नहीं थीं, फिर भी उस विलक्षण जन्तु का निरीक्षण करने में मैं नहीं चूक रहा था। तब, अन्त में, प्रतीत हो रहा था कि जैसे वह अपने साथ सोने वाले मुझ बिस्तर के साथी के व्यवहार के सम्बन्ध में सुनिश्चित हो चुका है। इसके बाद ही वह पलंग पर से

फर्श पर कूदा और किन्हीं विशेष इशारों तथा आवाजों से उसने मुझे समझाने की चेष्टा की कि यदि मुझे रुचिकर हो तो वह पहले कपड़े पहन ले और तब बाद में मैं पहनूं जिससे कि उसके बाद मैं उस पूरे कमरे का एकमात्र अधिकारी बन सकूं। क्वीकेग ! मैं सोच रहा था कि इन परिस्थितियों में यह सम्पूर्ण प्रसंग बहुत सभ्यतापूर्ण है। लेकिन वास्तविकता यह है कि इन बर्बर लोगों में कोमलता की एक आन्तरिक मर्यादा भी होती है और यह कितने आश्चर्य की बात है कि वे व्यवहार के इतने सरल होते हैं। कम से कम मैं इतनी प्रशंसा क्वीकेग की अवश्य करूंगा कि उसने बहुत सरल और सभ्य व्यवहार किया जब कि मैं उस बेहूदगी का दोषी हूं जो मैंने बिस्तर पर पड़े-पड़े चुपके से की और उसके कपड़े उतारने आदि के सम्पूर्ण कृत्य को छिपकर देखता रहा क्योंकि इस समय वह कौतूहल अच्छे व्यवहार का स्थान पा रहा था। इतना ही नहीं—क्वीकेग की तरह के लोग कभी-कभी ही देखने को मिलते हैं साथ ही उनका रंग-ढंग भी कैसा विचित्र होता है, जिसे जरूर देखना चाहिए।

उसने सबसे पहले ऊंचे सर पर से टोप पहनते हुए कपड़े धारण करना प्रारम्भ किया, उसका वह ऊदबिलाव की खाल का बना टोप काफी लम्बा-चौड़ा था, तब बिना पाजामा पहने उसने अपने जूते ढूंढ़ना प्रारम्भ किया। भगवान जाने क्यों उसने ऐसा किया, मैं नहीं कह सकता किन्तु सर पर टोप पहनकर और हाथ में जूते लेकर उसका अगला काम था अपने आपको बिस्तर में भींच लेना। उसकी गहरी-गहरी सांसों और कांख-कूंख से मैंने समझा कि जनाब काफी मेहनत के काम में जुटे हुए हैं और जूते पहन रहे हैं। किन्तु मैंने दुनिया में अधिकार के किसी कानून में यह नहीं सुना है कि जूते पहनते हुए भी आदमी को प्राइवेट होना चाहिए। किन्तु आप देख रहे हैं कि क्वीकेग एक ऐसा जन्तु है जो काल परिवर्तन में चल रहा है—न वह तितली है न कैटरपिलर। अपने विदेशीपन को दिखाने के लिए वह काफी सभ्य और समझदार था, जिसको उसने विलक्षण रूप में प्रकट किया। उसकी शिक्षा अभी पूरी नहीं हुई थी। वह अभी ग्रेजुएट नहीं हुआ है। यदि वह कुछ कम मात्रा में सभ्य न होता तो सम्भव था वह जूतों की परवाह ही न करता। साथ ही यदि वह अभी भी बर्बर न होता तो वह कभी यह कल्पना भी न करता कि जूते पहनने के लिए वह बिस्तर में घुस जाये। अन्त में वह बाहर आया। उसका टोप दब-पिचकर

आँखों के पास तक आ गया था। तब वह कुछ कराहते, कुछ लंगड़ाते कमरे में टहला जैसे जूते पहनने का बहुत आदी न हो क्योंकि उसके वे गाय की खाल के बने, दबे हुए और नम जूते जैसे उसके उपयुक्त नहीं थे और लग रहा था कि उस बेहद सर्द सुबह को जूतों ने उसे काट लिया था जिससे उसे तकलीफ हो रही थी।

अब यह देखकर कि खिड़की पर पर्दा नहीं है और सड़क भी बहुत कम चौड़ी है और सामने से कमरे की हर वस्तु साफ दिखाई देती है, मैंने क्वीकेग से निवेदन किया कि वह अपनी उस बेहूदी तस्वीर को फौरन ढक ले क्योंकि वह टोप और जूते—दो चीजें ही पहने हुए था। मैंने चाहा कि बहुत अधिक झूपने और सफाई दिखाने से अच्छा हो जनाब जल्द कम से कम अपनी पतलून तो चढ़ा ही लें। उसने वैसा ही किया और तब हाथ-मुंह धोने चला गया। सुबह के उस समय कोई और क्रिश्चियन होता तो वह अपना मुंह ही धोता किन्तु मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब मैंने देखा कि क्वीकेग ने अपनी छाती, बांहों और हाथ को धोकर ही तसल्ली की। तब उसने अपनी वास्कट पहनी और हाथ धोने वाली बीच की मेज़ पर साबुन का एक सख्त टुकड़ा लेकर अपना चेहरा रगड़ना शुरू किया। मैं उत्सुकतापूर्वक देख रहा था कि उसने अपना हजामत का उस्तरा कहां रखा है किन्तु यह देखिए! उसने पलंग के कोने से हारपून उठाया, उसकी लम्बी लाठी अलग की, उसके ऊपर की म्यान हटाई, अपने जूते से उसको दो-चार बार रगड़ा और तब शीशे के सामने खड़े होकर उसने जोर से अपने गालों की छिलाई-रगड़ाई शुरू की। मैं सोचता हूं—क्वीकेग! यह रोजर की सबसे बढ़िया कटलरी[1] को इस्तेमाल करके एक प्रकार का बदला लेना है। इसके बाद तो मुझे कम ताज्जुब हुआ जब मैंने देखा कि वह हारपून कितने बढ़िया लोहे का था और उसकी धार कितनी तेज़ और ठीक से रखी गई थी।

उसकी तैयारी जल्दी ही समाप्त हो गई और वह बड़ी ठसक में वास्कट पहने किसी मार्शल की बन्दूक की तरह अपने हारपून को लेकर कमरे से बाहर चला गया।

---

१. खाने-पीने के बर्तन, छुरी-कांटे इत्यादि।

## ५

मैंने भी उसका पीछा किया और सीढ़ियों से उतरकर शराब के कमरे तक गया। वहां उस मकान मालिक से मैं बहुत खुशमिजाजी से मिला। मेरे मन में उसके प्रति कोई दुर्भावना नहीं थी, यों मेरे बिस्तर के साथी की बात के अलावा वह भी मुझसे हंसी-मजाक कर रहा था।

जो भी हो, हंसना तो बहुत ही उपयोगी चीज़ है जिसका प्राप्त होना भी उतना सरल नहीं है। जीवन में दुःख ही अधिक हैं। और यदि कोई आदमी अपने ढंग से ही सही, अच्छे मजाक करता है तो उसे हतोत्साहित नहीं करना चाहिए, बल्कि अपने को भी उसमें सम्मिलित कर लेना चाहिए। साथ ही यदि किसी आदमी में यह गुण है कि वह खूब हंसा सकता है तो उसमें उससे कुछ अधिक अवश्य है जितना उसके सम्बन्ध में आपने सोच रखा है।

शराब का कमरा यात्रियों से भरा हुआ था जो विगत रात्रि सराय में एकत्र हुए थे और जिनको मैं ठीक से नहीं देख पाया था। वे सभी करीब-करीब व्हेल के शिकारी थे, मुख्य-मेट, सेकन्ड मेट, थर्ड मेट, जहाज़ के बढ़ई, लोहार, टीन की मरम्मत करने वाले, हारपूनर लोग, जहाज़ की संभाल करने वाले—इन सबसे मिली-जुली वह भीड़ भूरे-से रंग की और हृष्ट-पुष्ट लोगों की थी जिनके भरीपूरी दाढ़ियां थीं, जो ऊटपटांग और अव्यवस्थित लोगों का एक समूह था जिनमें सभी लोग सुबह के गाउन की जगह चिपटी हुई वास्कटें पहने हुए थे।

उन्हें देखकर कोई भी यह कह सकता था कि वे कितने दिनों से समुद्रयात्रा कर रहे होंगे। इस नौजवान के भरे हुए गालों को देखकर यह कहा जा सकता है कि जैसे धूप में सेंकी हुई कोई रंगीन नासपाती हो और अवश्य ही कस्तूरी की गन्ध उनमें से आ रही होगी। उसे अपनी भारत महासागर की यात्रा में बन्दरगाह पर उतरे तीन दिन से अधिक नहीं हुआ होगा। उसके आगे जो आदमी खड़ा है उसकी रंग-छाया कुछ हल्की है। उसमें जैसे शीशम की लकड़ी का-सा वर्ण चमक रहा है। तीसरे आदमी का वर्ण जैसे किसी गर्म प्रदेश के नागरिक का-सा है। उस पर भी वह कुछ ज्यादा साफ हो गया है। इन महाशय

ने अपनी मटरगश्ती में किनारे पर एक हफ्ता अवश्य लगा दिया है। लेकिन क्वीकेग के गालों का कौन मुकाबला कर सकता है? जो तरह-तरह के रंगों की छाया झलकाते हुए ऐसे लग रहे हैं जैसे एन्डीज़ का पश्चिमी ढाल हो और जो एक ही दिशा व स्थान में भांति-भांति के मौसमी रंग-रूप दिखला रहा हो।

"हां-हां उधर चलिए।" एक दरवाजा खोलते हुए मकान-मालिक चीखा और हम जलपान के लिए भीतर चल दिए।

यह कहा जाता है कि जिन्होंने दुनिया देख ली है वे बहुत सरल स्वभाव के तथा समह में गम्भीर हो जाते हैं। लेकिन सदैव तो नहीं! 'न्यू इंग्लैण्ड' का घुमक्कड़ यात्री 'लेडयार्ड' और 'स्काटलैण्ड' का मुंगो पार्क बातचीत में बहुत हल्के रहते थे। केवल स्लेजगाड़ी[1] पर चढ़कर जिसमें कुत्ते जुते रहते थे—साइबेरिया पार कर लेने से, जैसा कि लेडयार्ड ने किया था और अफ्रीका के मध्य में निग्रो प्रान्त में, भूखे-प्यासे अकेले पैर तोड़ने से जैसा कि ग़रीब मुंगो का अपना ढंग था—इस प्रकार की यात्राओं से कोई बहुत बेहतर तरीके का सामाजिक मनुष्य तो नहीं बन सकता। इस पर भी, अधिकांशतः उस प्रकार के नमूने कहीं न कहीं तो मिल ही जाएंगे।

इस प्रकार की तात्कालिक परिस्थिति के कारण ही मैं ये उदाहरण इस लिए दे रहा हूं कि जब हम सब मेज़ पर बैठ गए तो मैं अनुमान लगा रहा था कि व्हेल के शिकार से सम्बन्धित अनेक कहानियां मुझे सुनने को मिलेंगी किन्तु यह देखकर मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा कि सब लोगों ने गहरी चुप्पी लगा रखी थी। केवल इतना ही नहीं बल्कि सभी कुछ परेशान-से दिखाई दे रहे थे। हम सब जैसे जहाज के कुत्तों का एक समूह थे जिनमें से बहुतों ने बिना किसी हिचक-झिझक के भारी समुद्रों से व्हेल मछलियों को जहाजों पर लादा था, जो उनके लिए बिल्कुल अजनबी थे और उनको पलक मारते न मारते जैसे एक झपट्टे में उन्होंने मार डाला था और अब वे सामाजिक प्राणी की तरह नाश्ते की मेज पर आ डटे थे। सब एक-से, एक समान कौटुम्बिक स्वभाव के और अपने चारों ओर भेड़ों की तरह ऐसे शर्माए से देख रहे थे जैसे ग्रीन पहाड़ी के किसी चरागाह में कभी झुंड से दूर न हुए हों। विचित्र दृश्य है, ये

---

१. बर्फ पर चलने वाली गाड़ी।

शर्माए भालू, ये डरपोक लड़ाकू सिपाही जो व्हेल का शिकार करते हैं।

लेकिन क्वीकेग को देखो। वह सबका सभापति बना, उनके बीच में क्यों बैठ गया ? मौके की बात है। लेकिन वह ऐसा चुप और शीतल बैठा है जैसे बर्फ की नोकीली चट्टान। वह किस जाति का है मैं कुछ कह नहीं सकता। उसका बड़े से बड़ा प्रशंसक भी उसकी इस बात में प्रशंसा नहीं कर सकता कि वह नाश्ते की मेज पर अपनी बर्छी लेकर बैठा है और बिना किसी औपचारिकता के उसका वहां इस्तेमाल कर रहा है और बहुत-सी खोपड़ियों के भय-शंका के बीच बोटी के टुकडों को उसकी नोक से अपनी ओर खींच रहा है। किन्तु उस कार्य को वह बहुत शान्तिपूर्वक कर रहा है और हरेक यह जानता है कि बहुतों की मान्यता में, जो कार्य शान्तिपूर्वक किया जाता है उसमें विनम्रता की भावना रहती है।

क्वीकेग की प्रत्येक विलक्षणता का हम यहां कहां तक वर्णन करेंगे कि कैसे उसने गरम काफी पी और कैसे गरम 'रोल' खाए और कैसे एकाग्र होकर वह मांस की बोटी चबाता रहा ? ऐसा कम ही देखने में आता है। बहुत कुछ निबट जाने पर और नाश्ता समाप्त होने पर वह औरों की ही भांति पब्लिक-रूम में आ गया, अपना वही हंसिए की शक्ल का पाइप सुलगाया, अपने भोजन को पचाता रहा और तम्बाकू का धुआं उड़ाता रहा तथा कभी न दूर करने वाले टोप को निरन्तर पहने रहा। तभी मैं थोड़ा टहलने के लिए बाहर चला गया।

## ६

उस अनोखे व्यक्ति क्वीकेग को पहली बार देखने पर जो आश्चर्य मुझको हुआ था कि कैसे वह सरल और सभ्य समाज और नगर में घूमता होगा वह न्यू बेडफोर्ड की सड़क पर पहली बार, सुबह की धूप में टहलने पर दूर हो गया।

डॉक[1] के पास की सड़कों पर टहलते समय किसी भी बन्दरगाह में भांति-

---

१. जलपोत के ठहरने का घाट जो समुद्र के किनारे बना होता है।

भांति की विदेशी शक्लें और विचित्र तथा अकथनीय दृश्य देखने को मिलेंगे। 'ब्राडवे' और 'चेस्टनट स्ट्रीट' में भूमध्यसागर के नाविक कभी-कभी भयभीत महिलाओं से हंसी-मजाक करते हुए दिखाई देंगे। 'लास्कर' और 'मलाया' के लोगों से 'रीजेन्ट स्ट्रीट' अपरिचित नहीं है। बम्बई की 'अपोलो ग्रीन' के जिन्दा 'यान्की' लोग वहां के रहने वालों को अक्सर डरा देते हैं। लेकिन न्यू बेडफोर्ड ने सभी वाटर स्ट्रीट और 'वैपिंग' स्थानों को मात दे रखी है। इन अन्तिम कहे गए स्थानों पर तो व्हेल-मल्लाह ही मिलेंगे लेकिन न्यू बेडफोर्ड में सचमुच नरभक्षी दिखाई देंगे जो सड़कों के कोनों पर हंसी-मजाक कर रहे होंगे, सीधे-सीधे जंगली, जिनकी हड्डियों पर अब भी अपवित्र गोश्त चढ़ा हुआ होगा। वह कैसा अजीब दृश्य होता है।

लेकिन 'फीगीन्स'[१] 'तोंगातोबुआर्स'[२] 'ऐरोमंगोअन्स'[३] 'पन्नानगियन्स'[४] और 'ब्रिगियन्स'[५] तथा दूसरे व्हेल मछली के शिकारियों—जो सड़कों पर बिना देखे बढ़ते-लुढ़कते दिखाई देंगे—के अतिरिक्त ऐसे मनोरंजक दृश्य दिखाई देंगे जो बड़े अनोखे और सचमुच बड़े मजेदार होंगे। मछली के व्यापार में धन और नाम कमाने के इच्छुक 'वर्मोन्टर्स' तथा 'न्यू हैम्पशायर' के बहुत-से लोग हर हफ्ते इस बन्दरगाह में उतरते हैं। ये सब नौजवान होते हैं, हट्टे-कट्टे तन्दुरुस्त, वे लोग जिन्होंने जंगल के जंगल धराशायी कर दिए हैं और अब कुल्हाड़ी फेंककर व्हेल-लान्स[६] पकड़ने को लालायित हैं। बहुतेरे तो वैसे ही अपरिपक्व हैं जैसे 'ग्रीन माउन्टेन' जहां से वे आ रहे हैं। कुछ बातों में तो आप कह उठेंगे कि उनकी उम्र केवल कुछ घंटे हैं। वह देखिए! वह छोकरा कोने में अकड़ा खड़ा है। वह ऊदबिलाव की खाल का बना टोप पहने है और पतली पूंछ वाला कोट जिस पर मल्लाह की बेल्ट बांधे है तथा मियान में लगा चाकू लिए है। दूसरा आ रहा है जो बम्बाजाइन क्लोक[७] पहने है और साउवेस्टर लिए हुए है।

शहर के रहने वाले तड़कीले-भड़कीले नौजवान का गाँव में पले नौजवान

---

१,२,३,४,५. विभिन्न जातियां।

६. व्हेल मारने की बर्छी।

७. फीते लगा जरी के काम का रेशमी वस्त्र।

से कोई मुकाबला नहीं है—मेरा मतलब है गंवार उजड्ड से—वह आदमी जो 'डागडेज'[1] में अपना हाथ न छिल जाए, इस डर से अपनी दो एकड़ जमीन की घास हिरण की खाल के दस्ताने पहनकर छीलता है। अब देखिए, जब किसी देहाती छैले के दिमाग़ में यह आता है कि वह कुछ नाम कमाए और उस इरादे से वह व्हेल के शिकार को चलता है तथा बन्दरगाह पर पहुंचता है, तब आप देखिए वह कैसे-कैसे तमाशे करता है। जब वह समुद्रयात्रा के कपड़ों की तैयारी करता है तो अपनी वास्कट में ढेरों बटन लगवाता है, कैनवास के पेन्ट में बहुत-से फीते लगवाता है। आह, बेचारा हे-सीड[2]! हू-हू करके आने वाली उस तूफानी हवा के एक झोंके में बेचारे के सारे फीते टूट जाएंगे। वह जब झटके देगी तो फीते, बटन और सब कुछ उस तूफान के गले के नीचे उतर जाएंगे।

लेकिन यह मत सोचिए कि इस शहर में केवल हारपूनर नरभक्षी बांके-छैले ही यात्रियों को दिखाई देंगे। ऐसा नहीं है। फिर भी न्यू बेडफोर्ड विचित्र जगह है। अगर हम व्हेल के शिकारियों ने इस स्थान का व्यवहार न किया होता तो यह आज भी 'लैब्रेडर' के किनारे की तरह ही डरावना दिखाई देता। फिर भी उसके पीछे के भूभाग में अब भी कुछ जगहें ऐसी हैं, जो इतनी उजाड हैं कि किसी को भी डराने को काफी हैं। सारे न्यू इंगलैंड में न्यू बेडफोर्ड ही एक रहने योग्य शहर है। सचाई यह है कि वह तेल का देश है, किन्तु 'कैनन' की तरह नहीं, साथ ही वह अनाज-शराब का देश भी है। सड़कों पर दूध नहीं बहता न ही वसन्त-ऋतु में उसके फर्शों पर ताज़े अण्डों का अम्बार लग जाता है। किन्तु न्यू बेडफोर्ड में भले व कुलीन लोगों के जैसे सम्पन्न मकान हैं, पार्क हैं, बगीचे हैं, वैसे समूचे अमेरिका में कहीं नहीं मिलेंगे। ये कहां से आए? इस ऊबड़-खाबड़ और गन्दे-से देश में यह सब कैसे उत्पन्न किया गया?

बड़ी-बड़ी इमारतों में लगे उन लोहे के निशान की तरह बने हुए हारपूनों को देखिए तो आपके प्रश्न का उत्तर मिल जायेगा। हां, ये सब बहादुर मकान

---

१. वह समय जब सूर्य के साथ 'डागस्टार' (कुत्ता नक्षत्र) उगता व अस्त होता है। साधारणतः जुलाई ३ से अगस्त ११ तक। कुछ ऐसा माना जाता है कि उन दिनों कुत्तों में पानी का डर बढ़ जाता है।
२. सूखी घास से निकला हुआ बीज।

और फूलों भरे बगीचे 'अटलान्टिक', प्रशान्त और भारत महासागर से आए हैं। एक-एक करके ये सब समुद्र की तलहटी से हारपून के द्वारा निकालकर यहां ले आए गए हैं। क्या 'हेर एलेग्जेन्डर' कभी ऐसा कारनामा दिखा सकता था ?

जैसा कहा जाता है—'न्यू बेडफोर्ड' में पिता अपनी पुत्री को दहेज में व्हेल मछलियां देते हैं और अपने भतीजे-भतीजियों को उसके टुकड़े। शानदार शादी आपको 'न्यू बेडफोर्ड' में ही देखने को मिल सकती है क्योंकि कहा जाता है कि वहां हर घर में तेल के पीपे भरे हैं और हर रात वहां मछली की चर्बी की मोमबत्तियां बेरोक जलाई जाती है।

गर्मियों में शहर बड़ा सुहाना दिखाई देता है, जिसमें बड़े सुन्दर छायादार 'मेपल' वृक्ष झूमते हैं। लम्बी-लम्बी सड़कें हरी और सुनहरी चमकती दीखती हैं। अगस्त के महीने में फरफराती हवा, सुन्दर और भरपूर अखरोट, चमकते हुए सुनहले पुष्पों की वे सुहानी पंखुरियां मुस्कराकर राही को आकर्षित करती हैं। ऐसी सशक्त है वह कला, जिससे 'न्यू बेडफोर्ड' के बहुत-से स्थानों की उन सुनसान और अकेली पड़ी हुई पहाड़ियों पर—जो सृष्टि के प्रारम्भ के अन्तिम दिन जैसे एक किनारे फेंक दी गई थी—फूलों और हरियाली के भव्यतापूर्ण चित्र बनाए गए हैं।

और 'न्यू बेडफोर्ड' की स्त्रियां जैसे अपने लाल गुलाबों के समान ही मिलती हैं। किन्तु गुलाब केवल गर्मियों में पैदा होता है जब कि सातवें स्वर्ग पर सूरज की रोशनी-सी उनके गालों की आभा बारहमासी है। उनकी-सी जवानी कहीं नहीं मिलेगी। शायद 'सलेम' को छोड़कर, जहां सुना जाता है कि जवान लड़कियों की सांसों से कस्तूरी की महक झरती है और उनके मल्लाह प्रेमी उस सुगन्धि को किनारे से मीलों दूर समुद्र में भी सूंघते रहते है जैसे वे 'प्यूरीटैनिक' के रेगिस्तान में नहीं बल्कि खुशबूदार 'मोलक्काज द्वीप' में हों।

## ७

इसी न्यू बेडफोर्ड में एक गिर्जा है जिसका नाम व्हेलमैन्स चैपल है। इसमें कुछ मौजी मछुओं को छोड़कर जल्दी ही भारत अथवा प्रशान्त महासागर की यात्रा पर जाने वाले सभी मछुए इतवार को गिर्जा जरूर जाते हैं। मैंने भी यही किया।

सुबह की चहलकदमी से लौटने पर मैं एक बार फिर उस विशेष लक्ष्य की ओर चल पड़ा। आसमान जो अब तक साफ, धूप से भरा और हलका सर्द था, अब बदल गया था, और बर्फ तथा कुहरा पड़ने लगा था। बियरस्किन नामक कपड़े की बनी अपनी चुस्त वास्कट पहनकर मैं उस भीषण तूफान में चल पड़ा। प्रवेश करने पर मैंने वहां मल्लाहों, उनकी स्त्रियों तथा विधवाओं की छितरी हुई भीड़ पाई। सब तरफ सन्नाटा छाया हुआ था, सिर्फ बीच में कभी-कभी उस तेज अंधड़ की आवाजें उभर आती थीं। हरेक मौन प्रार्थी दूसरे से जान-बूझकर दूर बैठा हुआ था जैसे प्रत्येक मौन पीड़ा अलग-अलग थी और उन्हें मिलाने वाला कोई सूत्र न था। चैपलेन[1] अभी नहीं आया था और स्त्री-पुरुषों के शान्त द्वीपों-से बैठे लोग पूजामंत्र के इधर-उधर दीवारों पर लगे संगमरमर के कुछ पत्थरों पर दृष्टियां टिकाए हुए थे, जिनके किनारे काली धारियां थीं। उनमें से तीन कुछ इस प्रकार थे, लेकिन मैं यह दावा नहीं करता कि मैं अक्षरशः सही लिख रहा हूं।

| जान तालबट की पवित्र यादगार में जो अट्ठारह साल की अवस्था में पैटागोनिया से कुछ दूर—आइलस आफ डिसोलेशन के निकट १ नवम्बर, १८३६ को जहाज से गिरकर खो गए। यह स्मृति-शिला उनकी याद में उनकी बहन ने लगवाई। |
|---|

---

१. गिर्जा का अधिकारी।

राबर्ट लांग, विलिस एलेरी, नाथन कोलमैन, वाल्टर कैनी, सेथ मैसी और सेमुअल ग्लीग की पवित्र यादगार में जिन्होंने ऐलिजा नामक जहाज के कर्मचारियों का एक नाविक दल बनाया था, पैसिफिक सागर में किनारे से कुछ दूर एक व्हेल के द्वारा खींचकर दृष्टि से ओझल कर दिए गए। ३१ दिसम्बर, १८३६ को उनकी स्मृति में यह संगमरमर उनके बचे हुए जहाजी साथियों ने लगवाया।

स्वर्गीय कैप्टेन ऐजेकील हार्डी की पवित्र यादगार में जो ३ अगस्त, १८३३ को जापान के किनारे एक स्पर्म व्हेल के द्वारा अपनी नौका पर मार डाले गए। उनकी याद में यह पत्थर उनकी विधवा पत्नी ने लगवाया।

बर्फ़ से चमकते अपने टोप व वास्कट से बर्फ़ की फुहार को झाड़ते हुए मैं दरवाज़े के पास आ बैठा और जब घूमा तो ताज्जुब में रह गया कि क्वीकेग मेरे बराबर में था। दृश्य की उस गम्भीरता के कारण उसके चेहरे पर अविश्वसनीय उत्सुकता का कौतुक खेल रहा था। यह बर्बर आदमी ही एक ऐसा था जिसने मेरे प्रवेश को देखा था क्योंकि वही एक अपढ़ था और इसीलिए दीवाल में लगे उन पत्थरों के अक्षरों को पढ़ने में व्यस्त नहीं था। मैं कह नहीं सकता कि पत्थरों में खुदे नामों वाले स्वर्गीय व्यक्तियों के कोई नाते-रिश्तेदार उस भीड़ में थे या नहीं किन्तु इतना मैं अवश्य कहूंगा कि मछलियों के शिकार में अक्सर ऐसी घटनाएं होती रहती हैं, जिनका कोई नाम भी लेने वाला नहीं होता और वहां उपस्थित कई स्त्रियों के चेहरों को देखकर लग रहा था कि उनमें असीम वेदना थी और मुझे विश्वास था कि जो लोग वहां एकत्र थे उनके कभी न पुरने वाले घाव उन प्राणहीन पत्थरों को देखकर फिर से हरे हो गए थे।

ओह, तुम्हारा कोई सगा इस हरी घास के नीचे दफनाया गया है और तुम उन फूलों के बीच खड़े होकर कह सकते हो कि---यहां, यहां मेरा प्यारा दफ़न है। तुमको पता नहीं है कि कैसा दुःख इस वक्षस्थल में मौजूद है? इन संगमरमर के पत्थरों के चारों ओर खिंची काली धारियों में कैसी तेजी--कैसी कड़वाहट है? यद्यपि इन पत्थरों के नीचे किसी का शरीर दफ़न नहीं है। उन जड़ अक्षरों में कैसी निराशाभरी हुई है? इन लाइनों में कैसी मौत की-सी झनझनाहट है और कैसी अनीश्वरवादिता छाई हुई है कि वह हर प्रकार के विश्वास पर किटकिटाती है। ऐसा लगता है जैसे उस मृतात्मा के लिए मुक्ति

है ही नहीं, जो यों ही बिना किसी कब्र के, संसार से विदा हो गए। ये पत्थर जैसे यहां जड़े हैं, उसी तरह एलीफैन्टा की गुफाओं में जड़े होते, तो भी कोई अन्तर न पड़ता।

जीवित प्राणियों की किस गणना में मृत प्राणियों को शामिल किया जाता है? क्यों यह कहावत विश्व-विख्यात है कि जाने वाला कुछ भी नहीं कहता है जबकि उसके पास कहने को 'गुडविन सैन्ड्स' से भी अधिक रहस्य रहते हैं। ऐसा क्यों होता है कि जो दूसरी दुनिया में चला गया है उसके लिए तो हम तरह-तरह के महत्वपूर्ण शब्दों का प्रयोग करते हैं पर अगर कोई इस जीवित संसार के दूर कोने जैसे इन्डीज प्रदेशों में चला जाता है तो हम उसकी याद तक नहीं करते? बीमा-कम्पनियां तो उन लोगों को रुपया देती हैं जो अमर हैं? पता नहीं साठ शताब्दी पहले मरने वाला दुनिया के किस कोने में, किस स्थिति में अथवा अनन्त के शून्य मे कहां अपाहिज पड़ा है? ऐसा क्यों है कि जिनके बारे में हम जानते हैं कि वे परमानन्द स्थिति में हैं, उनके लिए भी हम सन्तोष नहीं करते? क्यों सारे जीवित लोग मृत लोगों को दबाए रखने की कोशिश में रहते हैं? क्यों किसी मकबरे मे सुनाई पड़ने वाली तनिक-सी खट-खटाहट की अफवाह भी समूचे शहर में भय फैला देती है? ये सब बातें निरर्थक नहीं हैं।

किन्तु विश्वास—सियार की तरह कब्रिस्तान मे ही जिन्दा रहता है और मृत्यु के सन्देहों से ही उसकी गहरी आशाएं जाग्रत होती हैं।

यह बतलाने की जरूरत नहीं कि मैंने नन्तुकेत की समुद्र-यात्रा प्रारम्भ करने से पहले किन भावनाओं से इन संगमरमर के पत्थरों को देखा होगा और उस अंधियारे तथा सर्द दिन में अपने से पहले यात्रा पर जाने वाले मछुओं के दुर्भाग्य को जाना होगा।

'हां—इस्माइल साहब! यही भाग्य आपका भी हो सकता है।' लेकिन कोशिश करके मैं फिर प्रसन्न हो उठा। समुद्रयात्रा करने का सुन्दर मोह, तरक्की का अच्छा अवसर—अहा! एक स्टोव-बोट[1] मुझे ब्रेवेट[2] का पद

१. एक प्रकार की नौका।
२. सेना में एक अवैतनिक पद जिससे उपाधि बढ़ जाती है किन्तु वेतन नहीं मिलता।

देकर अमर बना देगा। हां, इस व्हेल के शिकार के काम में फौरन मौत है। तत्काल कोई भी आदमी महान कष्ट सहित बन्डल बनाकर अनन्त की ओर भेज दिया जा सकता है। लेकिन इससे क्या ? मैं सोचता हूं कि जीवन और मरण के प्रश्न को हमने बहुत गलत ढंग से सोच रखा है। मेरा ख्याल है कि लोग जिसे इस संसार में मेरी यह चलती-फिरती छाया कहते हैं वे गलत हैं, वास्तव में यही तो मेरा अस्तित्व है—जीवतत्व। मैं सोचता हूं कि वस्तुओं के आध्यात्मिक रूप को हम लोग बहुत कुछ उसी तरह देखते हैं जैसे पौधे पानी के भीतर से सूर्य को देखते हैं और पानी को हवा से भी पतला समझते हैं। मैं सोचता हूं कि मेरे जीवन का अच्छा भाग किराए पर मेरे शरीर में रहता है। जो भी चाहे मेरे शरीर को ले-ले, मैं जोर देकर कहता हूं ले-ले—शरीर ही मैं नहीं हूं। इसलिए नन्तुकेत के लिए तीन हुर्रे। स्टोव-बोट आ जाओ और जब इच्छा हो मेरे शरीर को जला डालो क्योंकि मेरी आत्मा तो कभी न समाप्त होने वाली सीढ़ी है। विधाता स्वयं मेरी आत्मा को नष्ट नहीं कर सकता।

## ८

मैं बहुत देर नहीं बैठा होऊंगा कि एक सुन्दर और स्वस्थ व्यक्ति ने वहां प्रवेश किया। ज्योंही बर्फीले तूफान में डूबा हुआ दरवाज़ा खुला और वह व्यक्ति अन्दर आया वैसे ही वहां एकत्रित समुदाय का ध्यान, श्रद्धासहित उधर घूम गया जिससे तुरन्त यह प्रकट हो गया कि वह ही वहां का चैपलेन है। हां, वह ही वहां के प्रसिद्ध फादर मैपिल थे जो व्हेल के शिकारियों के बहुत प्रिय थे और उन्होंने ही उनका यह नाम रखा था। अपनी जवानी मे वह एक हारपूनर और एक मल्लाह रहे थे किन्तु इधर एक जमाने से उन्होंने अपना जीवन धर्म को अर्पित कर दिया था। जिस समय मैं यह लिख रहा हूं, उस समय वह स्वस्थ वृद्ध थे। वैसी वृद्धावस्था जिसमें एक प्रकार से दूसरी जवानी फूटती है क्योंकि उनके चेहरे की हरेक झुर्री और सलवट पर नई उमंग की ज्योति-किरणों-सी झिलमिला रही थीं। जैसे नव वसन्त की मुस्कराहट फरवरी के बर्फ के अन्दर से झांक रही हो। जिसने फादर मैपिल के जीवन के सम्बन्ध में कुछ भी जान-

सुन रखा होगा वह पहली बार उन्हें बड़े ध्यान से देखेगा क्योंकि उनके धार्मिक व्यक्तित्व में कुछ विचित्रताएं हैं जो उनके पुराने नाविक-जीवन के कारण पैदा हुई हैं।

जब वह अन्दर आए तब मैंने देखा कि उनके पास छाता नहीं था और निश्चित ही वह अपनी गाड़ी में भी नहीं आए थे क्योंकि उनके अलकतरा पुते हैट पर बर्फ पिघल रही थी और उनकी पाइलट-क्लाक-वास्कट पानी में भीगकर इतनी भारी हो गई थी कि उन्हें लिए-दिए ज़मीन में धसी जा रही थी। जो हो, टोप, कोट, और बड़े जूते एक-एक करके उतारकर बगल के कोने में एक जगह टांग दिए गए। फिर उन्होंने एक अच्छा-सा सूट धारण किया और शान्तिपूर्वक मंच पर जा पहुंचे।

पुराने मंचों की भांति वह मंच भी काफी ऊंचा, लम्बा-चौड़ा था और अगर सीढ़ियां बनाई जातीं तो वे इतनी दूर तक फैल जातीं कि गिर्जे के पहले से ही छोटे स्थान को और छोटा कर देतीं, इसलिए ऐसा लग रहा था कि बनाने वाले ने फादर मैपिल के निर्देश पर उस मंच के आगे सीढ़ियां नहीं बनाई थीं तथा बगल में लकड़ी की एक सीधी सीढ़ी रख दी गई थी, जैसी किसी नाव से जहाज़ पर चढ़ने के लिए लगाई जाती है। किसी व्हेल के शिकारी जहाज़ के कप्तान की बीवी ने लाल रंग के सूत के मोटे रस्सों का एक जोड़ा इस सीढ़ी के लिए दिया था जिसके किनारों पर फूलदार गुच्छे-से लटक रहे थे और उसमें स्थान-स्थान पर काले रंग की छींट-सी बूंदें उसे अधिक सुन्दर बना रही थीं। गिरजे की स्थिति को देखते हुए यह सीढ़ी वहां बुरी नहीं लग रही थी। सीढ़ी के पहले डंडे पर एक क्षण के लिए रुकते हुए तथा उन मोटे रस्सों को दोनों हाथों से पकड़ते हुए फादर मैपिल ने एक दृष्टि ऊपर की ओर फेंकी और तब किसी मल्लाह की-सी चुस्ती से एक के ऊपर एक हाथ टिकाते तथा एक-एक पग स्थिरतापूर्वक जमाते हुए वह जैसे अपने जहाज़ की ऊंचाई पर पहुंच गए।

जैसा कि इस प्रकार की झूलने वाली सीढ़ियों में होता है—इस सीढ़ी के आड़े हिस्से भी कपड़े से मढ़े थे और उसके आगे के गोले ही केवल लकड़ी के थे, इसलिए हर सीढ़ी पर एक जोड़ था। मंच को एक झलक देखते ही मुझे मालूम हो गया था कि जहाज़ के लिए भले ही ऐसी सीढ़ी सुविधाजनक हो लेकिन यहां तो यह बेकार है। बात यह थी कि मैं नहीं देखना चाहता था कि

फादर मैपिल इतनी ऊंचाई पर चढ़ने के बाद मंच पर झुकें और सीढ़ी के एक-एक डंडे को घसीटते हुए पूरी सीढ़ी को एक जगह जमा करें और तब अपनी उस छोटी-सी चौकोर जगह में पहुंच से बाहर खड़े हो जाएं।

बिना उस बात का पूरा मतलब समझे हुए मैं कुछ समय तक कारण में उलझा खड़ा रहा क्योंकि फादर मैपिल अपनी ईमानदारी और गम्भीरता के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके थे और किसी रंग-मंच की चालाकी की उनसे आशा नहीं की जा सकती थी। किन्तु मैं सोच रहा था कि इसका कोई गम्भीर कारण अवश्य होगा। यह कार्य ज़रूर किसी प्रच्छन्न बात का प्रतीक होगा। क्या यह हो सकता है कि इस प्रकार बाकी सबसे अपने शरीर को अलग कर लेने से वह यह प्रदर्शित करना चाहते हैं कि उन्होंने अपनी आत्मा को भी, थोड़े समय के लिए, दुनिया के सब नाते-सम्बन्धों से दूर कर लिया है? हां, मैं देखता हूं कि परमात्मा की प्रशंसा और भक्ति से भरपूर उस ईमानदार इन्सान के लिए वह मंच अपने आपमें जैसे एक सुदृढ़ किला था—एक ऊंचा एहरेनब्रीटस्टीन जिसकी दीवालों के अन्दर अनन्त पानी का एक कुआं है।

चैपलेन के प्राचीन जहाज़ी जीवन की झलक दिखाने वाली वह सीढ़ी ही उस स्थान की केवल एक विलक्षणता नहीं थी। दोनों ओर संगमरमर के स्मारकों के बीच की मंच की पिछली दीवार पर एक भारी जहाज का चित्र अंकित किया गया था जो सुरक्षित किनारे से दूर एक भारी तूफ़ान में फंसा हुआ और काले पहाड़ों, लुढ़कने वाली बर्फीली लहरों से घिरा हुआ था। उस पानी की उछाल और चक्कर खाते हुए काले बादलों से बहुत ऊंचे पर सूर्य के प्रकाश का एक छोटा-सा द्वीप दिखाई दे रहा था जहां से एक फरिश्ते का चेहरा नीचे झांक रहा था और यह चमकदार चेहरा उस उछलते जहाज के टेक पर प्रकाश का एक स्पष्ट गोला डाल रहा था जो बिल्कुल उस चांदी की तख्ती-सा लग रहा था जो विजय के तख्ते के उस स्थान पर लगाई गई थी जहां 'नेलसन' की मृत्यु हुई थी।

'आह—बहादुर जहाज' वह फरिश्ता जैसे कह रहा था—'बढ़े चलो, ऐ बहादुर जहाज! मजबूती से चले चलो। वह देखो! वह सामने सूर्य का प्रकाश झांक रहा है। ये काले बादल छट रहे हैं और एक गम्भीर लाली आने वाली है।'

उस सीढ़ी और चित्र की भांति ही वह मंच भी जहाजी रुचि का एक नमूना था। उसके सामने का हिस्सा भी एक जहाज के सामने के खुरदरे हिस्से-सा था और पवित्र बाइबिल—जहाज की लहरदार चहारदीवारी की तरह के ही एक स्थान पर रखी हुई थी जैसे वह किसी जहाज के घूमने वाले सर की चोंच हो।

इससे अधिक अर्थयुक्त और क्या हो सकता था? मंच जैसे इस धरती का सबसे आगे का भाग है। और सब उसके बाद हैं। मंच ही संसार में अग्रगामी है। वहीं से परमात्मा के क्रोध से उत्पन्न तूफान सबसे पहले दीखता है और अग्रभाग को ही पहला धक्का सहन करना पड़ता है। वहीं से भलाई या बुराई के देवता की अर्चना की जाती है कि वक्त अनुकूल हवाएं चलाए। हां, संसार यात्रा शुरू करने वाला जहाज है, यात्रा समाप्त कर लेने वाला जहाज नहीं, और मंच उसका अग्रभाग है।

## ९

फादर मैपिल उठे और बिना किसी अधिकार भावना सहित, धीमी आवाज में, फैले हुए लोगों को इकट्ठा हो जाने का निर्देश देने लगे—"बीच रास्ते से दाहिनी ओर हो जाओ, बाएं से कुछ हटकर—बाएं ओर के रास्ते से कुछ दाहिने हट-कर! बीच में! बीच में!"

बेंचों के बीच भारी जहाजी जूतों की हलकी खटखटाहट उभरी और उससे कुछ धीमी आवाज में स्त्रियों के जूते सरके और तब सब शान्त हो गया और हर दृष्टि उपदेशक पर जा टिकी।

कुछ मिनट तक वे खामोश खड़े रहे। तब मंच के आगे के किनारे की ओर झुकते हुए उन्होंने अपने लम्बे-से भूरे रंग के दोनों हाथ छाती पर 'क्रास' कर लिए। अपनी मुंदी आंखें ऊपर उठाईं और इतनी तल्लीनता से एक प्रार्थना की, मानो वह किसी समुद्र की तलहटी में घुटनों के बल बैठ प्रार्थना कर रहे हों।

प्रार्थना समाप्त करने के बाद गम्भीर स्वर में जैसे किसी स ' तूफ़ान में घिरने वाले जहाज की घंटियां बज रही हों—उन्होंने निम्न प्रार्थना-गीत पढ़ा,

किन्तु अन्तिम पंक्तियों तक पहुंचकर अपना ढंग बदलते हुए वह श्रद्धा और आनन्द से गा उठे :

"व्हेल की डरावनी आतें और उसका भय—
एक दुःख-सा मुझ पर छाया है,
और सूर्य की किरणों सी चमकदार वे लहरें,
मुझे गहरे अन्धकार में डूबने से बचाती हैं।

"मैंने नरक का वह खुला द्वार देखा,
असीम दुखों-व्यथाओं से भरपूर,
ज्यों घायल की गति घायल जाने—और न जाने कोय,
मैं हूं निराशा में चूर।

"अत्यधिक निराशा से मैंने अपने परमात्मा को पुकारा,
जब मैं विश्वास नहीं कर पाता था कि वह मेरा है,
उसने मेरी शिकायतों को ध्यान से सुना—
और व्हेल मुझे आत्मसात् नहीं कर सकी।

"तेजी से वह मेरी मदद को आया,
लालिमा लिए हुए ज्यों कोई एक डालफिन[1]
डरावनी ज्यों बिजली, किन्तु चमकदार—
उस मेरे रक्षक परमात्मा का रूप।

"मेरा वह गीत सदा गाएगा—
उस डरावने किन्तु आनन्दमय क्षण को गाएगा,
अपने उस भगवान की भव्यता-दया—
और शक्ति के सामने मैं श्रद्धावनत हूं।"

क़रीब-क़रीब सभी ने उनके इस पूजा-गीत को गाया जिसकी आवाज़ तूफान की चत्कार से भी ऊपर उठ गई। तब एक संक्षिप्त मौन छा गया। उपदेशक

१. व्हेल मछली।

ने धीरे से बाइबिल के पन्ने पलटने शुरू किए और अन्त में एक खास पन्ने पर अपना हाथ रखकर उन्होंने धीमे से कहा—"मेरे प्यारे जहाजियो ! जोना के पहले अध्याय की आखिरी कविता सुनिए···और परमात्मा ने जोना को निगल जाने के लिए एक बड़ी मछली बनाई।"

"जहाजियो ! इस पुस्तक में केवल चार अध्याय हैं। चार कहानियां। यह प्राचीन ग्रन्थों में सबसे छोटी किन्तु बहुत सशक्त है। उस पापी जोना की आत्मा की गहराई उस गहरे और अथाह सागर में क्या पुकारती है ? इस पवित्र पुस्तक में हमारे लिए कैसी सुन्दर शिक्षा दी गई है ? उस मछली के पेट का वह गीत कितनी ऊंची चीज है ? कितना विराट् ? कैसा तरंगमय, मौजवाला। हम अनुभव करते हैं कि जैसे पानी की लहरों की बाढ़ हमारे ऊपर बढ़ती चली आ रही है और उसके साथ पानी की गहराई तक हम जा रहे हैं। समुद्री घास और अन्य सारी चीजें हमारे चारों ओर हैं। किन्तु जोना की इस पुस्तक का यह अध्याय हमें क्या शिक्षा देता है ? जहाजियो ! यह हमें दो बातें बताता है। एक हम पापियों के लिए और दूसरा परमात्मा की ओर ले जाने वाले मुझ संदेश-वाहक के लिए। हम सब पापियों के लिए यह एक शिक्षा है, क्योंकि यह पाप की, हृदय की कठोरता की, अचानक उठने वाले डर की, शीघ्रता में दिए गए दंड की, पश्चात्ताप की, प्रार्थना और अन्त में जोना की मुक्ति और आनन्द की कहानी है। मनुष्यों में सब पापियों की ही भांति 'अमित्तई' के इस बेटे का भी पाप यही था कि भगवान के निर्देशों को वह जानबूझ कर तोड़ता था। छोड़िए कि भगवान के वे निर्देश क्या थे और कैसे दिए गए थे। ये निर्देश उसे बड़े कठिन मालूम पड़े। भगवान के सब आदेश जिन्हें करने के लिए वह हमसे कहता है भले ही कठोर हों किन्तु इतना याद रखो, वह हम पर कठोरता नहीं करता। सब काम प्यार से ही करने को कहता है। और भगवान की आज्ञा का पालन करने का अर्थ है हम अपने मन की आज्ञा को न मानें। अपनी अनिच्छा में ही भगवान की आज्ञा पालने की कठोरता सम्मिलित है।

"वह भगवान की आज्ञा मानने का अपराध तो करता ही है, साथ ही चाहता है कि वह उससे दूर भाग जाए। वह सोचता है कि संसारी मनुष्यों द्वारा बनाए गए जहाज के द्वारा वह ऐसे देश में भाग जाएगा जहां भगवान का साम्राज्य नहीं होगा, बल्कि संसारी शासक ही रहते होंगे। वह जोप्पा के समुद्र

के किनारे आता है और तारशीश जाने वाले जहाज पर चढ़ता है। इस स्थान पर कोई प्रच्छन्न अर्थ निहित है। सब विवरण से पता लगता है कि तारशीश और कुछ नहीं आधुनिक काडिज़ ही है। यही विद्वानों का मत है। और जहाज़ियो! यह काडिज़ कहां है? काडिज़ स्पेन में है और पानी के रास्ते से जोप्पा से इतनी दूर है जितना उन पुराने दिनों मे बेचारा जोना जा सकता था, क्योंकि अतलांतक महासागर तो उन दिनों लगभग अज्ञात सागर था। क्योंकि जहाज़ियो! यह जोप्पा आधुनिक जापफा, भूमध्य सागर के पूर्वी भाग में सीरियन तट पर है और तारशीश या काडिज़ उससे पश्चिम की ओर लगभग दो हज़ार मील जिब्राल्टर जलडमरूमध्य के पास। जहाज़ियो! तब क्या आप नहीं देखते कि भगवान से भागने के लिए जोना ने समूचे संसार का चक्कर लगाया? बेचारा दयनीय आदमी! ओह! अत्यन्त घृणित! उसका जितना तिरस्कार किया जाए थोड़ा है। अपनी पिचकी खोपड़ी और अपराधी नेत्रों सहित, भगवान से दूर भागने वाला, जहाज पर लुढ़कते और लुटेरों की तरह जल्दी से समुद्र को पार करके भागने वाला आदमी। इतनी घबड़ाई हुई और जैसे अपने आप अपने अपराध को स्वीकार करने वाली उसकी दृष्टि थी कि यदि उस जमाने में पुलिस होती तो डेक पर पहुंचने के पहले ही, संदेह में, वह पकड़ लिया जाता—इसलिए कि शायद उसने कोई कसूर किया है। वह साफ-साफ भगोड़ा मालूम पड़ रहा था—न कोई सामान, न हैट-बाक्स, न सामान का थैला, कोई ऐसा दोस्त भी नहीं जो उसको विदा करने समुद्र तक आया होता। अन्त में बहुतेरी मिथ्या खोजों के पश्चात् उसने देखा कि तारशीश जाने वाले जहाज में आखिरी सामान भरा जा रहा है। वह कैप्टेन से मिलने के लिए उसके केबिन की ओर बढ़ा कि उसकी अपराधी आंखों को देखने भर के लिए मजदूरों ने अपना माल ढोना रोक दिया। जोना ने बात समझी और चेहरे पर शान्ति तथा विश्वास लाने की तथा मुस्कराने की निरर्थक चेष्टा की। उन मल्लाहों के मन में यह बात पैठती चली जा रही थी कि वह आदमी बेकसूर नहीं हो सकता। अपनी उस उछल-कूद में भी वे गम्भीरतापूर्वक एक दूसरे से फुस-फुसाते रहे—'जैक! इसने एक विधवा को लूटा है,' या—'जो! तुमने गौर किया इसके एक से अधिक बीवियां हैं?' या—'हैरी! यह गोमोराह जेल से भागने वाला क़ैदी है, या 'सोडोम' के क़ातिलों में से एक है।' उनमें से एक

भागकर उस पोस्टर को देखने चला गया जो उस लंगर पर लगा था जहां जहाज़ खड़ा था। पोस्टर में लिखा था कि अमुक अपराधी को, जिसकी हुलिया इस प्रकार है, पकड़ाने वाले आदमी को पांच सौ सोने की मोहरें दी जाएंगी। उसने पढ़ा और पोस्टर से जोना की शकल मिलाई। उसके सब जहाज़ी साथी जोना को पकड़ने के लिए चारों ओर इकट्ठे हो गए। भयभीत जोना कांपता रहा तथा अपनी समूची शक्ति चेहरे पर लाने के बावजूद वह एक डरपोक ही लगता रहा। वह अपने आपको संदेहपूर्ण नहीं दिखाना चाहता था और यही उसके संदेह को सिद्ध कर रहा था। उसने अपने को व्यवस्थित रखने की बहुत कुछ चेष्टा की और जब मल्लाहों ने यह समझ लिया कि यह वह व्यक्ति नहीं है जिसके लिए पोस्टर लगा है, तो उन्होंने उसका रास्ता छोड़ दिया और वह केबिन की ओर बढ़ गया।

"डेस्क पर अपने काम में व्यस्त कैप्टेन ने चुंगी के कागजों को ठीक करते हुए चिल्लाकर पूछा—'कौन है ?' 'कौन है ?' ओह ! लेकिन ऐसे सरल प्रश्न पर भी जोना कितना घबड़ा गया था। एक मिनट को जैसे फिर वह भाग खड़े होने की स्थिति में था। किन्तु उसने अपने आपको संभाला।

" 'मैं तारशीश जाने के लिए इस जहाज़ पर चढ़ना चाहता हूं। महाशय ! आप इस जहाज़ को कब चलाएंगे ?'

'जोना सामने ही खड़ा था किन्तु जैसे व्यस्त कैप्टेन ने उसे देखा ही नहीं। फिर बहुत देर बाद उस खोखली आवाज़ को अनसुनी कर कैप्टेन ने संदेहपूर्वक उसकी ओर देखा। 'हम अगले ज्वार के साथ चलेंगे।' अन्त में उसने उसकी ओर गौर से देखते हुए कहा—'महाशय ! इससे जल्दी नहीं। किसी ईमानदार आदमी के लिए जो सिर्फ मुसाफिर की तरह सफर कर रहा हो यही जल्दी है।' आह ! उस पर वह एक दूसरी चोट थी किन्तु उसने फुर्ती से कैप्टेन से कहा—'मैं आपके साथ ही चलूंगा—टिकट कितने का है ? मैं अभी दे दूं।' जहाज़ियो! यह बात यहां खास तौर पर लिखी हुई है, जैसे इस कहानी के इस स्थल को हलकेपन से नहीं देखना चाहिए। सुनिए ! उसने जहाज़ चलने के पहले ही किराया दे दिया। संदर्भ में देखिए तो इसके बहुत कुछ अर्थ हैं।

"जहाज़ियो ! जोना का कैप्टेन ऐसा आदमी था कि वह किसी में भी दोष देख सकता था और जिसके पास पैसा न हो उसका पाप तो और भी जल्दी

खुल सकता था। मेरे जहाजियो! धन खर्च कर सकने वाला पाप इस संसार में बे रोक-टोक और बिना किसी 'पासपोर्ट' के आनन्द से हर जगह घूम सकता है किन्तु शराफत अगर गरीब है तो हर सरहद पर रोकी जाती है। अस्तु, जोना के कैप्टेन ने जोना की जेब टटोलनी चाही जिससे वह उसको ठीक से समझ सके। किराए से तिगना रुपया कैप्टेन ने उससे वसूल किया और उसने दे भी दिया। तब यह जानते हुए भी कि जोना एक भगोड़ा है, कैप्टेन ने उसकी मदद करने का इरादा किया और उसके भागने में उसने उसका साथ दिया क्योंकि उस कार्य की गहराई में सोने की तह जमी हुई दिखाई दे रही थी। अब उदारता-पूर्वक जोना के जेब खोल देने पर भी कैप्टेन को सन्देह ही बना रहा! उसने हर सिक्के को खनकाया कि वह जाली तो नहीं है। 'कुछ भी हो,—जालसाज नहीं है' वह बुदबुदाया। जोना की यात्रा प्रारम्भ हो गई। 'महाशय! मेरा कमरा मुझे बता दीजिए। मैं बहुत थका हुआ हूं और सोना चाहता हूं।' जोना ने कैप्टेन से कहा। जोना कमरे में गया और वह उसे अन्दर से बन्द करना चाहता था किन्तु दरवाज़े में कुंडी-ताला ही नहीं था। तब यह सुनकर कि जोना बेव-कूफ की तरह कमरे मे खड़ा लड़खड़ा रहा है, कैप्टेन खामोशी से अपने आप हंसा। वह फुसफुसाया—'कैदियों के दरवाज़े अन्दर से बन्द नहीं होते।' लबादे मे लदा और गंदा जोना यों ही अपनी बेंच पर सीधा हो गया लेकिन उसके छोटे कमरे की छत इतनी नीची थी कि वह क़रीब-क़रीब उसके सर को ही छू रही थी। वहां एक घुटन-सी थी और जोना सांस भी नहीं ले पा रहा था। तब उस घिरे हुए कमरे में बन्द और जहाज़ के अन्दर सबसे नीचे के हिस्से में—जो पानी के अन्दर था—लेटा हुआ जोना उस क्षण की कल्पना कर रहा था जब एक ही चपेट में व्हेल के द्वारा वह खींच लिया जाएगा।

"जोना के कमरे में एक लैम्प टंगा था जो अपनी धुरी पर चक्कर खा रहा था। कपड़े और सामान की जो आखिरी गांठें ली गई थीं उनके बोझ से जहाज़ झूलता जाता था इसी कारण लैम्प भी हिल रहा था। अपनी बेंच पर लेटे-लेटे जोना की दुखी आंखें अपने चारों ओर घूम रही थीं। अब वह सफल भगोड़ा कहीं भी सन्तोष नहीं पा रहा था। फर्श, छत, अगल-बगल सभी कष्ट दे रही थीं। 'ओह! अब मेरी आत्मा मुझे दुखी कर रही है।' वह व्यथित

होता है—'सीधे-सीधे वह मुझे भस्म कर रही है। इस पर भी मेरी आत्मा में कठोरता है।'

"जैसे कोई व्यक्ति समूची रात नशे में धुत् तथा आनन्दोत्सव मनाने के बाद बिस्तर पर आ लेटा हो किन्तु अब भी उसकी आत्मा की कचोटन उसे कष्ट दे रही हो; उसी तरह जोना भी बिस्तर पर लेटकर करवटें बदल रहा था। साथ ही रोम के उस घुडदौड़ के घोड़े की भांति जिसकी कांटेदार लगाम हो जो उसके जबड़ों को खींच रही हो, जोना की भी दशा थी। जैसे उसे कष्टकर दौड़ में तकलीफ के कारण बार-बार घूमना पड़ रहा हो और भगवान से प्रार्थना करनी पड रही हो कि किसी प्रकार उस दशा से मुक्ति मिले। अन्त में कथा थी, वे घुमेडें जो मन पैठती चली जा रही थीं जैसे एक गहरी बेहोशी पैदा कर रही थीं। वह बेहोशी उस आदमी की तरह थी जिसके इतना खून निकल गया हो कि वह मर रहा हो किन्तु उसका घाव तब भी हरा बना हो; किन्तु वहां कोई भी ऐसा नहीं था जो उसकी देख-भाल कर सके। इस प्रकार उस तकलीफ और दुःखों की रस्साकसी में जोना थककर सोने लगा।

"और अब ज्वार आया। जहाज ने अपने सब रस्से खोल दिए और उस सुनसान किनारे से वह उदास जहाज़ तारशीश की ओर चलने के लिए समुद्र में तैर गया। मेरे दोस्तो! उस जहाज में चुने हुए बदमाशों और माल की चोरी करने वालों का गिरोह चल रहा था। जोना के रूप में भी चोरी किया हुआ एक माल जा रहा था किन्तु समुद्र ने विद्रोह कर दिया। वह उस पापमय बोझ को सहन नहीं कर रहा था। एक भयानक तूफान उठा। लगा जैसे जहाज चूर-चूर हो जाएगा। जब नावों का अधिकारी सबको पुकारने लगा, सन्दूक, गांठे बर्तन एक दूसरे से टकराने लगे, जब हवा किटकिटा रही थी, लोग चीख रहे थे, जहाज़ का एक-एक तख्ता जोना के सर पर ही लड़खड़ाते पैरों से हिल रहा था—तब उन दुःखों से भरी हुई किन्तु शैतान नींद में जोना सो रहा था। वह न काले बादलों को देख रहा था, न चरचराती लकड़ी का अनुभव कर रहा था, न ही उफनते समुद्र को देख पा रहा था और सामने से मुंह फैलाए आती हुई उस डरावनी व्हेल को भी वह नहीं सुन-समझ रहा था जो अब भी अपने खुले जबड़ों से उसके पीछे समुद्र को चीरती चली आ रही थी। जहाजियो! जैसा मैंने कहा था—जोना ने नीचे की बर्थ ले ली थी और अपने केबिन में गहरी

नींद में सो रहा था तभी घबराया हुआ कैप्टेन उसके पास आया और चीखकर बोला—'ऐ सोनेवाले, कितना नीच है तू ! उठ !' उसकी उस डांट और चीख-चिल्लाहट से जोना अपने पैरों पर लड़खड़ाते हुए खड़ा हुआ और उसी हालत में डेक पर चढ़ा तथा एक सांस में उस तूफानी समुद्र को देख गया। लेकिन उसी समय उसने देखा कि उस जहाज़ी किलेबंदी के ऊपर तूफानी लहरें घुमेड़ें ले रही हैं। एक के बाद एक भारी लहर जहाज़ को टक्कर दे रही थी लेकिन कोई स्थान न पाकर शोर करते हुए इधर-उधर लौट रही थीं। मल्लाह डूबने-डूबने पर थे लेकिन अब भी तैर रहे थे। किन्तु जैसे घबड़ाया हुआ चन्द्रमा अपने कांपते हुए गोरे मुख से घाटियों और तलहटियों के कालेपन को देखता है, उसी प्रकार जोना ने देखा कि जहाज़ का मस्तूल एकदम ऊपर उठकर पानी की डरावनी गहराई में नीचे घुसता चला जा रहा है।

एक से एक भयानक डर चीखकर उसकी आत्मा में घुसता चला जा रहा था। अपने प्रत्येक दब्बू ढंग-व्यवहार से भगवान के भगोड़े जोना की तस्वीर अब साफ होती चली जा रही थी। जहाज़ी लोग उस पर निगाह किए हुए थे। उनका संदेह अधिकाधिक गहरा होता चला जा रहा था और अन्त में अपने सम्पूर्ण भाग्य को भगवान पर लगाकर और यह देखने के लिए कि किसके कारण उन पर विपत्ति का इतना बड़ा तूफान सामने आया है, उन्होंने कारण का पता लगाना चाहा। वह दुर्भाग्य जोना के कारण था। उन्होंने ढूंढ लेने पर उसे घेर लिया और वह उत्तेजित भीड़ अपने प्रश्नों सहित उस पर टूट पड़ी। 'तू अब तक क्या करता रहा था ? तू कहां से आ रहा है ? तू कौन-से देश का है ? तू किस जाति का है ?'—और मेरे जहाज़ियो ! अब उस ग़रीब जोना के व्यवहार पर गौर कीजिए। उन परेशान मल्लाहों ने केवल इतना पूछा था कि वह कौन है और कहां से आ रहा है किन्तु उनको केवल अपने प्रश्नों का उत्तर ही नहीं मिला बल्कि ऐसा उत्तर भी मिला जिसका प्रश्न ही उन्होंने नहीं किया था और जो भगवान की कठोर देखरेख के कारण जोना से अपने आप बाहर आ गया था।

"'मैं एक हिब्रू हूं' वह चिल्लाया—'मैं उस परम शक्तिमान स्वर्ग के भगवान से डरता हूं जिसने यह समुद्र और सूखी पृथ्वी बनाई है।'—ओ जोना, तू उससे डरता है ? वाह ! हो सकता है तू उस समय ईमानदारी से उस परम

शक्तिमान को डरा रहा हो ! तब उसने अपना सब भेद खोलना प्रारम्भ किया। इस पर मल्लाह अधिक गरम होते चले गए फिर भी उनमें उसके प्रति दया उमड़ रही थी। भगवान से दया की भीख उसने अभी भी नहीं मांगी क्योंकि जोना भगवान के काले रेगिस्तान के अंधियारे को जानता था और जब जोना ने चिल्लाकर कहा कि वे उसे पकड़कर समुद्र में फेंक दें क्योंकि उसके कारण ही वे इतने बड़े तूफान में घिरे हैं, तब उन लोगों ने उसकी ओर से अपनी पीठ मोड़ी तथा जहाज को बचाने के अन्य उपायों की ओर ध्यान किया। किन्तु सब बेकार था, वह क्रोधित हुआ और तूफान तेज ही होता गया। तब एक हाथ से भगवान को पुकारा जा रहा था और दूसरा इच्छासहित जोना पर टिका हुआ था।

"और तब लंगर की तरह पकड़कर जोना को समुद्र में फेंक दिया गया। तुरन्त ही तेल की तरह की तरल शान्ति पूर्व की ओर से तैर आई। समुद्र शान्त हो गया जैसे जोना उस तूफान को साथ ले गया और अपने पीछे शान्त एवं स्थिर सागर को छोड़ गया। तब उन क्षणों में, उस घुमड़ते सागर के चीखते हृदय के बीच, वह घिर गया और उसे यह सोचने का अवकाश भी न मिला कि अपने जबड़े फाड़कर आगे कोई उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। तब व्हेल अपने चमकते दांतों को खोलकर तेजी से लपकी जैसे उसके कैदखाने के दरवाज़ों पर सफेद बोल्ट लगे हों। और तब जोना ने व्हेल के पेट में पहुंचकर भगवान को याद किया।

"अस्तु, अब उसकी प्रार्थना को समझिए और एक गम्भीर शिक्षा की ओर ध्यान दीजिए। जैसा पापी वह था—जोना रोया नहीं, न ही खेद सहित उसने सीधी प्रार्थना की। वह सोचता रहा कि वह भयानक दंड उसके लिए उपयुक्त ही था। यह सन्तोष करके कि अपनी उन तकलीफों और विपत्तियों के होते हुए भी वह उस परमात्मा के पवित्र मंदिर की ओर देखेगा—उसने अपनी सब प्रार्थना भगवान के चरणों में अर्पित कर दी। जहाज़ियो ! यही उसका सच्चा प्रायश्चित्त है। वह दया की भीख नहीं मांग रहा है बल्कि दंड पाने के लिए हिम्मत के साथ तत्पर है। और तब उस समुद्र और व्हेल मछली के पेट में पड़े हुए जोना की उस प्रार्थना से भगवान कितना प्रसन्न हुआ कि जैसे सचमुच उसका वह प्रायश्चित्त उसके अन्तर्मन का था। जहाज़ियो ! मैं जोना को आपके

सामने इसलिए उपस्थित नहीं कर रहा हूं कि आप उसके पाप का अनुकरण करें बल्कि मैं उसे आपके सामने इसलिए लाया हूं कि आप देखें कि उसने किस प्रकार प्रायश्चित्त किया। पाप मत करो और यदि कर लिया तो जोना की ही तरह उसके प्रायश्चित्त के लिए भी सतर्क रहो।"

जब वह बोल रहे थे तो जैसे जोना का विवरण देते हुए उनमें स्वयं एक तूफान चीत्कार कर रहा था। जैसे धरती विलाप कर रही हो वैसे उनके वक्षस्थल से गहरी सांसें उभर रही थीं। उनके हिलते-डुलते हाथों से ऐसा लग रहा था जैसे उनके हृदय में कोई द्वन्द्वयुद्ध हो रहा हो। वह चीखता तूफान जो उनकी भौंहों को छूकर लौट रहा था और उसके कारण नेत्रों से एक विलक्षण प्रकाश बाहर आ रहा था— उसकी चमक से जैसे उन सुनने वाले जहाजियों के हृदय एक अनोखे डर से भर रहे थे।

वहीं उनकी दृष्टि में एक स्थिरता आ गई। उन्होंने एक बार फिर उस पुस्तक के पन्नों को पलटा और तब खामोशी में बिना हिले-डुले और चुपचाप आंखें मूंदे वे खड़े रहे जैसे एक क्षण को वे परमात्मा में लीन हो रही हों।

तब एक बार फिर वह लोगों की ओर बढ़े और अपना सर झुकाते हुए अपनी पूर्ण शान्ति सहित उन्होंने ये शब्द कहे :

"जहाजियो! परमात्मा ने अपना केवल एक हाथ आप पर रखा है किन्तु उसके दोनों हाथ मुझ पर अधिक प्रभाव डाल रहे हैं। जोना के विवरण से जो शिक्षा प्राप्त होती है वह दुधिया प्रकाश की तरह चमकदार है और इसलिए आप और उससे अधिक मैं, उससे प्रभावित हूं क्योंकि मैं आपसे अधिक पापी हूं। और अब मैं प्रसन्नतापूर्वक इस मस्तूल की-सी ऊंचाई से उतरकर उस स्थान पर बैठूंगा जहां आप लोग बैठे हैं और वैसे ही सुनूंगा जैसे आप सुन रहे हैं कि जैसे आपमें से कोई उससे भी अधिक भयंकर कहानी मुझे सुना रहा है जैसी जोना की थी और मेरे लिए वह भी उसी प्रकार मुझे परमात्मा की ओर ले जाने वाला सिद्ध होगा। कैसे भगवान की ओर ले जाने वाला फरिश्ता होते हुए भी और सत्य बातों को प्रकट करने वाला वह चालाक जोना अपनी सब मनुष्यता को खो बैठा तथा अपने कर्तव्य से भाग खड़ा हुआ और भगवान को भुलाकर जोप्पा में एक जहाज पर चढ़ा। लेकिन भगवान तो हर जगह है। तारशीश तो वह कभी पहुंच ही नहीं पाया। जैसा हमने देखा व्हेल के रूप में

भगवान उसके सामने आया और जलरूपी जीवित दुर्भाग्यों की भांति उसे निगल गया और समुद्र के बीच उसे तेजी से विनष्ट कर दिया और दुःखों की गहराई उसे हजारों फीट नीचे खींच ले गई, कष्टों की लहरें उसके सर के ऊपर से होकर बह चलीं और वेदनाओं का समूचा संसार जलाशय के रूप में उसे डुबाने लगा। इस पर भी किसी प्लमेट[1] की पहुंच के परे नर्क के उस पेट में—जबकि व्हेल समुद्र के जबड़ों और हड्डियों के बीच जा बैठी थी—तब भी भगवान ने अपने उस घिरे हुए, प्रायश्चित्त करने वाले फरिश्ते की चीत्कार को सुना। तब भगवान ने व्हेल से कहा और उस किटकिटाती सर्दी और समुद्र की उस काली तलहटी से निकलकर व्हेल गरम और चमकते हुए सूर्य के सामने आई। पृथ्वी और वायु के सब आनन्द का अनुभव किया। और तब जोना को सूखी ज़मीन पर उगल दिया। तब भगवान के शब्द दुबारा बाहर आए। खरोंचे खाए और मिटे से जोना ने—जिसके कान समुद्र की दो कौड़ी की तरह दिखाई दे रहे थे और जिनमें अभी भी समुद्र की आवाज़ की झनझनाहट गूंज रही थी, उस परमशक्तिमान परमात्मा की प्रार्थना की। और जहाजियो! वह क्या था? झूठ के सामने सचाई की शिक्षा। वही थी वह उपदेश।

"जहाजियो! यह एक दूसरी शिक्षा है। उसके लिए शोक कीजिए जो जीवित भगवान की ओर आपको ले जाता है। उसके लिए शोक कीजिए जिसको यह संसार फरिश्ते के कर्तव्यों की ओर झुकाता है। उसके लिए शोक कीजिए जो उस समय पानी में तेल घोलता है जब भगवान उसे तूफान में घेरता है। उसके लिए विलाप कीजिए जो दुखी होने के बजाय प्रसन्नता चाहता है। उसके लिए शोक कीजिए जिसको अच्छाई से अपना अच्छा नाम अधिक पसन्द है। उसके लिए विलाप कीजिए जो इस संसार में बेइज्जती से दूर रहता है। उसके लिए रोइए जो कभी सच्चा नहीं रहता—भले ही उसे झूठ से मुक्ति सामने दिखाई दे रही हो। आप लोग उसके लिए शोक कीजिए जो महान 'पाइलट-पॉल' की तरह दूसरों को उपदेश देते हुए स्वयं बहाव में बह जाता है।"

एक क्षण को जैसे अपने आप में डूबकर वह गिर पड़े। तब अपने मुख को उन सबके सामने करते हुए अपने नेत्रों मे एक महान प्रसन्नता प्रकट की और

१. जल की गहराई नापने वाला शीशे का लंगर।

एक स्वर्गीय उत्साह की तरह वह पुकार उठे—"किन्तु ओह, जहाज़ियो ! जहां दुःख का हाथ है वहां निश्चित सुख भी है। जैसा दुःख का सागर गहरा है, वैसा ही सुख का आनन्द ऊंचा है। क्या जितना लंगर नीचे रहता है उतना ही जहाज़ का मुख्य भाग ऊपर नहीं रहता है ? आनन्द उसका है—बहुत-बहुत ऊंचा और उसके अंतर का सन्तोष है जो इस संसार के मिथ्याभिमानी खुदाओं और नेताओं के सामने अपने स्वाभिमान को नहीं झुकाता है। प्रसन्नता उसको मिलती है जिसकी बलशाली बाहें उसकी मदद करती हैं, जिसका संसार रूपी धोखेबाज और चालाक जहाज़ डूब जाता है। प्रसन्नता उसकी है जो सत्यता में कोई कसर नहीं रखता और सब पापों को मार डालता है, भस्म कर देता है, नष्ट कर देता है, भले ही सेनेटर और जजों की पोशाकों के सामने उसे सत्य चुनना पड़े। सबसे ऊंची प्रसन्नता उसकी है जो किसी कानून, किसी मालिक को नहीं मानता है बल्कि केवल अपने मालिक खुदा को मानता है और केवल स्वर्ग का भक्त है। प्रसन्नता उसकी है जिसे इस संसार रूपी समुद्र की दुःख-पूर्ण लहरें हिला नहीं सकतीं और जिसे समय तथा परिस्थितियों का बवंडर चंचल नहीं बनाता है। और उसीकी प्रसन्नता और आनन्द असीम है जो अपनी अन्तिम सांस लेते हुए भी उसके सामने यह कह सके जो उसे मारने आया है—'ओ परमपिता ! तेरे उस अदृश्य अंकुश को मैं जानता हूं, मृत अथवा अमर, यह देख, मैं मृत्यु को प्राप्त कर रहा हूं। इस संसार का अथवा अपने आपका होने से अधिक मैं तेरा होना चाहता हूं। इस पर भी यह कुछ नहीं है। मैं अपना अन्त तो तुझ पर छोड़ता हूं। मनुष्यता इसी में है कि मनुष्य परमात्मा का होकर रहे।"

वह आगे और कुछ नहीं बोले और आशीर्वाद देते हुए उन्होंने अपना मुंह ढांप लिया और उसी प्रकार झुके रहे जब तक कि सब लोग चले नहीं गए। तब वह उस स्थान पर अकेले रह गए।

## १०

गिर्जे से लौटकर 'स्पाउटर इन' आने पर मैंने देखा कि 'क्वीकेग' बिल्कुल अकेला है। जब आशीर्वाद दिया गया था इससे पहले ही वह वहां से चला आया था। आग के सामने वह एक बेंच पर बैठा था और उसके पैर अंगीठी पर टिके हुए थे। वह अपने एक हाथ में वही नीग्रो की मूर्ति अपने चेहरे के पास लिए हुए था। वह मूर्ति के मुख को बहुत गौर से देख रहा था, अपना चाकू कोमलतापूर्वक उसकी नाक पर फिरा रहा था और अपनी भाषा में कुछ बुदबुदाता जा रहा था।

लेकिन अब टोक दिए जाने पर उसने मूर्ति को एक ओर रख दिया और जल्दी ही उठकर वह बीच की मेज तक गया। मेज से उसने एक किताब उठाई और उसे अपनी गोद में रखकर उसके पन्ने गिनने शुरू किए। मेरा अनुमान है कि हर पचासवें पृष्ठ पर वह ठहरकर अपने चारों ओर यों ही देख लेता था। साथ ही न जाने कैसे ताज्जुब भरे शब्द बड़बड़ा लेता था। लग रहा था जैसे उसे पचास से अधिक गिनती नहीं आती थी और इतने अधिक पचास पृष्ठ देखकर ही उसे आश्चर्य हो रहा था।

अत्यन्त रुचि से मैं उसे देखता रहा। यों वह एक जंगली था और उसका चेहरा भी बड़ा भद्दा था, कम से कम मेरी दृष्टि में किन्तु उसके चेहरे मे कुछ ऐसा अवश्य था जो अरुचिकर नहीं था। किसी की आत्मा को नहीं छिपाया जा सकता। उसके उस सारे भद्देपन में भी मैं एक सरल और ईमानदार हृदय देख रहा था और उसकी बड़ी काली, चमकदार तथा गहरी आंखों में—एक ऐसी आत्मा झिलमिला रही थी जो हजार शैतानों से लोहा ले सकती थी। वह एक ऐसा आदमी दिखाई दे रहा था जिसे किसी का कुछ देना नहीं था। अनेक चित्रों में जैसा सर जनरल वाशिंगटन का दिखलाई पड़ता है वैसा ही 'क्वीकेग' का भी था—कम से कम उसके सर को देखकर मुझे जनरल वाशिंगटन के सर की ही याद आई। बात तो यह बड़े मसखरेपन की है। उसमें उसी तरह का बराबर व भौंहों के पास तक ढाल था जो उसी तरह ऊंचा व फैला हुआ था। सचमुच

ही 'क्वीकेग' जार्ज वाशिंगटन था जो नरभक्षकों के ढंग से पुनः विकसित हुआ था।

मैं इस प्रकार उसे देख रहा था और बहाना यह किए था कि बाहर तूफान को देख रहा हूं और 'क्वीकेग' भी पुस्तक में इतना लीन था कि मेरी उपस्थिति के सम्बन्ध मे अनजान बना था। उस समय अपने प्रति उसके उस उदासीन व्यवहार को देखकर मैं आश्चर्य में था जबकि एक समूची रात मै बड़े अपनेपन के ढंग से उसके साथ सो चुका था और वह अपना स्नेहपूर्ण हाथ मुझ पर टिकाए रहा था। किन्तु ये जगली लोग बड़े विचित्र होते है और आप उन्हे ठीक से समझ ही नही सकते कि वे किस समय क्या ढग अपनाएगे ? पहले तो वे बहुत डरावने दिखाई देगे और फिर उनकी शान्तिप्रियता और सादगी 'सुकरात'[1] की समझदारी की तरह लगेगी। मैने यह भी देखा कि 'क्वीकेग' सराय मे अधिक लोगों से घुलता-मिलता नही था। मैं सोच रहा था कि यह आदमी अपने घर से बीस हजार मील दूर हार्न अन्तरीप होता हुआ आया है क्योंकि वह केवल उसी रास्ते से आ सकता था। वह एक अजनबी की तरह उन लोगों के बीच जैसे वृहस्पति ग्रह के देश मे आ गया था, किन्तु फिर भी अपने मे ही मगन था। निश्चित ही यह एक प्रकार की दार्शनिकता थी, भले ही उसका नाम उसने कभी न जाना हो। सही मानों मे दार्शनिक होने के लिए हम नश्वर प्राणियों के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने जीवन के प्रति न विशेष सजग रहे, न कर्मशील। जब मैं कभी सुन पाता हूं कि अमुक व्यक्ति दार्शनिक है तो मैं समझ लेता हूं कि एक मंदाग्नि और अजीर्ण रोग से पीड़ित बुढ़िया की भांति उसने भी अपने हाजमे को जरूर बिगाड़ रखा होगा।

उस एकान्त कमरे मे मैं बैठा था। धीमी आग वहां जल रही थी क्योंकि अपनी पहली तेजी में उसने हवा को गरम कर दिया था और अब केवल देखने भर के लिए धीरे-धीरे सुलग रही थी। शाम की छाया और खामोशी जैसे सन्नाटे मे चुपचाप झाक रही थी और बाहर तूफ़ान अपनी गति में फैल रहा था तथा मुझमें अनेक अनोखे उद्गार प्रकट हो रह थे। मैं अनुभव कर रहा था, जैसे मुझमें कुछ गल रहा है। मेरा वह घायल मन और पागलों के-से हाथ इस

---

१. प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक।

भेड़िए की तरह की खूंख्वार दुनिया का विरोध नहीं करना चाहते थे बल्कि यह जंगली असभ्य एक प्रकार से शान्ति देने वाला है। वह वहां बैठा है और उसकी वह उदासीनता ही यह बताती है कि सभ्य समाज का-सा पाखंड और छल-फरेब उसमें नहीं है। यों वह भयानक है, देखने में ही तुरन्त वैसा प्रतीत होता है किन्तु मैं धीरे-धीरे उसकी ओर आकर्षित हो रहा था। मैं एक मूर्तिपूजक मित्र की मित्रता को समझने की चेष्टा करूंगा क्योंकि ईसाई लोगों की उदारता तो खोखली दया की तरह है।—अस्तु, मैंने अपनी बेंच उसके पास खींची और कुछ संकेतों से उससे बातचीत करने का प्रयत्न किया। पहले तो उसने कोई गौर नहीं किया किन्तु बाद में जब मैंने विगत रात्रि के भले व्यवहार का हवाला दिया तो उसने भी उत्सुकता दिखाई कि क्या मैं आज रात्रि को भी उसके बिस्तर का साथी बनूंगा? मैंने उसको स्वीकारात्मक उत्तर दिया जिससे लगा कि वह खुश हुआ है।

तब हम दोनों ने मिलकर उस किताब को देखा और मैंने उसकी छपाई तथा कुछ तस्वीरें उसे समझाईं और इस प्रकार शीघ्र ही उसका मन उसमें लगा दिया। इसके बाद ही हम दोनों बाहर के प्रसिद्ध व दर्शनीय स्थानों को देखने चले गए। मैंने सिगरेट पीने का प्रस्ताव किया तो उसने अपनी तम्बाकू और वही गंडासे की शक्ल का पाइप चुपचाप मेरी ओर बढ़ा दिया। इस प्रकार हम दोनों ही एक स्थान पर बैठ गए और बारी-बारी से पाइप पीने और धुआं उड़ाने लगे।

अगर हमारे बीच में कहीं कोई उदासीनता थी भी तो इस प्रकार तम्बाकू पीकर वह जल्दी ही समाप्त हो गई और हम प्रसन्नतापूर्वक दोस्त बन गए। जिस प्रकार मैं उसके प्रति प्रभावित हो रहा था ऐसे ही वह भी मेरी ओर आकर्षित था। तभी उसने अपने माथे को मेरे मस्तक पर लगाया, मेरी कमर में हाथ डालकर मुझे भींचने लगा और कहा कि आज से हम दोनों की शादी हो गई है—उसके अपने देश में जिसका अर्थ होता है कि हम दोनों बड़े गहरे दोस्त हैं और ज़रूरत पड़ने पर वह मेरे लिए जान भी दे सकता है। किसी देहाती आदमी में एकाएक जन्मी इस प्रकार की दोस्ती बड़ी कमजोर मानी जा सकती थी और सन्देह की दृष्टि से देखी जा सकती थी किन्तु उस जंगली में वह बहुत सरल व स्वाभाविक थी।

खाने के बाद गपशप करते तथा तम्बाकू पीते हुए हम दोनों अपने सोने वाले कमरे में गए। उसने अपनी उसी खुशबूदार खोपड़ी मुझे भेंट की और अपने तम्बाकू वाले झोले से, तम्बाकू में खखोलकर, चांदी के तीस डालर बाहर निकाले। तब उनको मेज़ पर फैलाकर उसने उनको दो हिस्सों में बांट दिया और एक मेरी ओर बढ़ाते हुए उसने कहा कि वे मेरे हैं। मैं मना करने ही वाला था कि उसने मुझे चुप करते हुए मेरी पाजामे की जेब में वे सिक्के डाल दिए। मैंने उन्हें स्वीकार किया। तब वह अपनी शाम की प्रार्थना में लग गया और उसके कुछ संकेतों से मैंने समझा कि वह चाहता है कि मैं भी उसका साथ दूं किन्तु मैं नहीं समझ पा रहा था कि मुझे क्या करना होगा।

मैं एक अच्छा ईसाई था और प्रेस्बीटेरियन चर्च की छत्रछाया में पला था। तब कैसे उस मूर्तिपूजक की लकड़ी की मूर्ति की पूजा करने के लिए उसके साथ शामिल हो सकता था? 'लेकिन पूजा क्या है?' मैंने सोचा।

'तब जनाब इस्माइल साहब! क्या आप सोचते हैं कि स्वर्ग का वह महान भगवान और पृथ्वी का ईश्वर मूर्तिपूजक और सभी लोग—क्या एक महत्वहीन लकड़ी के प्रति ईर्षालु हो सकते हैं? असम्भव! लेकिन पूजा है क्या?'—भगवान की इच्छा को पूरा करना। यही पूजा है। और भगवान की इच्छा क्या है? अपने साथी की इच्छा की पूर्ति ही भगवान की इच्छा है। अब क्वीकेग मेरा साथी है और मैं क्या चाहता हूं कि यह क्वीकेग मेरे लिए क्या करे? क्यों, वह उस प्रेस्बीटेरियन ढंग की प्रार्थना में सम्मिलित हो? अतः मुझे भी उसके साथ शामिल होना चाहिए। इसके मतलब यह हैं कि मैं एक मूर्तिपूजक हो जाऊं।' तब मैंने भी लकड़ी का छींलन जलाया, उस भोली-सी छोटी मूर्ति को मैंने स्थापित किया, क्वीकेग के साथ मैंने भी उसके सामने बिस्कुट का भोग लगाया, उसके सामने दो-तीन बार 'सलाम' किया, उसकी नाक चूमी और उतना सब करने के बाद हमने कपड़े उतारे और बिस्तर पर चले गए। उस समय हमें संतोष था। किन्तु कुछ गपशप के पहले हमें नींद नहीं आई।

ऐसा क्यों है मैं नहीं जानता, किन्तु आपस में मित्रों में गहरीसे गहरी बातें करने और पलंग पर सोने से बडी बात दुनिया में कोई नहीं है। पति और पत्नी—जैसा कहा जाता है—अपनी सम्पूर्ण आत्मा एक दूसरे के सामने प्रकट कर देते हैं और कुछ पुराने जोड़े सारी रात लेटे और गुज़रे ज़माने की बातें करते हुए सवेरा कर

देते हैं। अस्तु, अपनी उस हार्दिक 'हनीमून'[1] में, मैं और क्वीकेग एक अच्छे जोड़े की तरह स्नेह सहित लेटे रहे।

## ११

अब हम बिस्तर पर लेटे थे और थोड़ी-थोड़ी देर में गपशप करते और झपकियां लेते जाते थे। 'क्वीकेग' बड़े प्यार से कभी हाथ और कभी अपना पैर मेरे ऊपर रख लेता था। हम लोग बड़े आराम से लेटे हुए थे। धीरे-धीरे हमारी बातचीत बढ़ती गई। बाहर तेज़ सर्दी थी और उस कमरे में आग भी नहीं थी। अस्तु, इस प्रकार लेटे हुए दो शरीरों से जो गर्मी उभर रही थी उससे बड़ा सुख मिल रहा था। इस पर भी मेरी व 'क्वीकेग' की नाक सर्द हो रही थी।

होता यह है कि सम्पूर्ण आनन्द लेते हुए भी जब कहीं थोड़ी भी टोक या कमी रह जाती है तो उसका भी एक विशेष आनन्द होता है। संसार में विपरीत वस्तुओं का महत्व तो है ही। शरीर की गर्मी पाते हुए मेरी व 'क्वीकेग' की नाक व माथों पर जो थोड़ी सर्दी भर रही थी वह भी अलग मजा पैदा कर रही थी। और इसीलिए मेरा कहना है कि भले ही मालदारों का एक बड़ा खर्चीला सुख हो, किन्तु सोने वाले कमरे में अंगीठी नहीं होनी चाहिए। वह तो एक वैसे कमाल का काम करती है जो आपके सुख, सर्दी और बाहर की ताजी हवा को दीवाल की तरह रोक ले। और तब वह गर्माहट वैसी होती है जैसे ध्रुवप्रदेश के बर्फीले कणों के बीच एक गरम चिनगारी।

मैं चुपचाप आंखें मूंदे पड़ा था। अब मैंने चाहा कि आंखें खोलूं, क्योंकि वैसे बिस्तर पर, दिन हो या रात, मैं जागता रहूं या सोता रहूं, मेरा यह स्वभाव है कि मैं पलक मूंद लेता हूं क्योंकि उससे बिस्तर पर लेटने का सम्पूर्ण सुख प्राप्त होता है। वास्तविकता यह है कि कोई भी व्यक्ति अपने आपके सम्बन्ध में तब तक ठीक-ठीक नहीं सोच सकता जब तक वह पलक मूंदकर न सोचे। वैसे

---

१. शुभ मधु-रात्रि।

रोशनी भी हमारे मिट्टी के शरीर के लिए अधिक उपयुक्त है लेकिन अन्धकार हमारी वास्तविकता का महत्वपूर्ण तथ्य है। उस समय रात के बारह बज रहे होंगे और अंधेरे में, लेटे-लेटे, जैसे मुझे उलझन-सी होने लगी। मैं चाह रहा था कि रोशनी कर दूं। 'क्वीकेग' ने भी वैसा संकेत किया। सम्भवतः वह सोच रहा था कि हम लोग सो नहीं पा रहे हैं, साथ ही उसे तम्बाकू की भी तलब हो आई थी।

यों कल रात मैंने 'क्वीकेग' से बिस्तर पर तम्बाकू पीने पर आपत्ति की थी किन्तु आज मुझे वह अच्छा लग रहा था। देखिए, प्रेम जब एक बार किसी को झुका लेता है तो कैसे आपस के मतभेद समाप्त हो जाते हैं? इस समय मुझे मकान मालिक का भी होश नहीं था। मुझे इस बात में आनन्द मिल रहा था कि एक घनिष्ठ मित्र के साथ मैं बिस्तर पर सोता रहूं और गपशप करता हुआ उसका पाइप पिऊं। अब कमरे में प्रकाश था और उस गंडासेनुमा पाइप का धुआं कमरे में अजीब वातावरण उत्पन्न कर रहा था।

उस धुंए के कारण या किसी कल्पनालोक में डूबकर वह जंगली आदमी कहीं दूर पहुंच गया। वह अपने देश की बातें करने लगा। उसकी कहानी सुनने के लिए मैं भी बहुत उत्सुक था। तभी मैंने उससे कहानी कहते रहने का अनुरोध किया। वैसे मैं पहले उसकी बातें नहीं समझ पाता था किन्तु धीरे-धीरे उसकी वह टूटी-फूटी भाषा मेरी समझ में आने लगी और मैं पूरी कहानी समझ गया जिसका ढांचा मैं आपके सामने भी रख रहा हूं।

# १२

'क्वीकेग' 'रोकोवोको' नामक एक द्वीप का रहने वाला था, जो पश्चिम और दक्षिण दिशा में काफ़ी दूर था। नक़्शे में वह कहीं नहीं दिखाया गया है। सच्ची जगहें कभी दिखाई भी नहीं जातीं।

जब ताज़े-ताज़े जंगली छोकरे के रूप में 'क्वीकेग' एक पूर्ण पिल्ले की तरह घास के किसी टुकड़े पर, घास कुतरती हुई भेड़-बकरियों के साथ चलता था तब भी उसके मन में यह लालसा बनी रहती थी कि व्हेल के एक-दो शिकारियों

को देखने के बजाय वह उन स्थानों को देखे जहां ईसाई लोग रहते हैं। उसका पिता एक बड़ा आदमी था—बादशाह। उसका चाचा एक बड़ा पुजारी था और अपने मामा के कुटुम्ब के सम्बन्ध में वह गप हांक रहा था कि उसकी सभी मामियां दुर्जेय योद्धाओं की पत्नियां थीं। उसकी नसों में शाही खून दौड़ रहा था। वैसे अपनी जवानी में शिक्षित न होने के कारण उसमें नरभक्षी स्वभाव अधिक था।

एक बार एक 'सैग हारबर' का जहाज उसके पिता की खाड़ी में आया और 'क्वीकेग' ने चाहा कि वह ईसाई देशों में जाने के लिए उस पर सवार हो जाए। किन्तु जहाज पर सवारियां पूरी थीं, इसलिए उसके पिता के अधिकार ने भी कोई प्रभाव नहीं दिखाया। इस पर 'क्वीकेग' ने एक कसम खाई। अकेले आपनी छोटी नाव में वह दूर किनारे तक चला गया और वह सोचता रहा कि द्वीप छोड़ने के बाद जहाज इधर जरूर आएगा। उस स्थान में एक तरफ 'मूंगे' की चट्टानें थीं और दूसरी तरफ ढलवां जमीन, जिसमें पानी में अपने आप उग आने वाली घास फैली हुई थी। इस घिरी जगह में अपनी तैरती हुई नाव छिपाकर वह चुपचाप बैठ गया और ज्योंही जहाज सामने चमका वह एक झटके में सतर्क हो गया। उसने अपनी नाव तुरन्त डुबो दी और धीरे-से जहाज की जंजीरों पर चढ़ गया। वह डेक पर चढ़कर लम्बा लेट गया, एक 'रिंग-बाल' पकड़ ली और कसम खाई कि चाहे उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएं, वह उसे छोड़ेगा नहीं।

कैप्टेन ने उसे डराया कि वह उसे पानी में फेंक देगा, किन्तु व्यर्थ। उसकी नंगी कलाई पर उसने एक मुक्का भी मारा किन्तु 'क्वीकेग' एक बादशाह का लड़का था, वह एक इंच भी नहीं हिला। 'क्वीकेग' की दृढ़ता और ईसाइयों के देशों को देखने की अत्यधिक उत्कंठा देखकर कैप्टेन विनम्र हो गया और अन्त में उसे जगह दे दी गई। किन्तु यह बढ़िया किस्म का जंगली—यह पानी का 'प्रिन्स आफ वेल्स[1]' कभी कैप्टेन के केबिन को देखने का सौभाग्य न पा सका। उसको मल्लाहों में रख दिया गया और तब वह एक व्हेल-शिकारी बन गया। विदेशी नगरों के बन्दरगाहों में काम करने वाले 'जार पीटर' की तरह

---

१. इंगलैण्ड के युवराज का नाम।

क्वीकेग ने कोई विशेष दिलचस्पी नहीं दिखाई अन्यथा अपने पिछड़े हुए देश-वासियों की उन्नति करने में वह भी सफल हो सकता था। उसने बताया कि मन में वह केवल यही सोचता रहा था कि वह ईसाइयों के निकट जाकर वह कौशल सीखे जिससे वह भी अपने लोगों को अधिक सुखी और अधिक प्रगतिशील बना सके। किन्तु अफ़सोस, व्हेल-शिकारियों के क्रियाकलापों से उसे जल्दी ही मालूम हो गया कि ईसाई लोग भी दुखी और बदमाश हैं। उसके पिता के प्रजाजन से कहीं अधिक दुखी और बदमाश। वह 'सैग हारबर' आया और वहां उसने देखा कि मल्लाह क्या करते हैं? तब वह 'नन्तुकेत' पहुंचा और देखा कि वे अपनी तनख्वाहें किस प्रकार खर्च करते हैं। और उसने सारी आशा छोड़ दी। अपने इतने तजुर्बे से उसने समझ लिया कि दुनिया सब तरफ़ बड़ी चालाक है इसलिए वह जीवन भर मूर्तिपूजक ही रहेगा।

इस प्रकार मन से एक पुराना मूर्तिपूजक होते हुए भी वह ईसाइयों के बीच रहता रहा, उनके कपड़े पहनता और उनकी बोली बोलने की कोशिश करता रहा। यही कारण है कि हालांकि घर से निकले उसे काफी समय हो गया था, फिर भी उसके कुछ व्यवहार विचित्र होते थे।

संकेत से, मैंने उससे पूछा कि क्या वह घर लौटने की नहीं सोचता अथवा वहां जाकर अपना राजतिलक नहीं कराएगा? उसके विवरण के अनुसार उसका पिता मर चुका होगा क्योंकि वह बहुत कमजोर और बूढ़ा था। इस पर उसने उत्तर दिया कि वह अभी नहीं जाना चाहता क्योंकि इस ईसाइयत या ईसाइयों ने उसे उस सिंहासन पर चढ़ने के अयोग्य बना दिया है जिस पर उससे पहले तीस मूर्तिपूजक बादशाह बैठ चुके थे, लेकिन ज्यों ही वह अपने को फिर पवित्र समझने लगेगा, वापस लौट जाएगा। फिलहाल तो उसका इरादा यही था कि वह समुद्रयात्रा करे और समुद्रों की पैदावार बटोरे। ईसाइयों ने उसे हारपूनर बना दिया था और अब उसके हाथ में राजदंड के स्थान पर वह हारपूनर था।

मैंने उससे पूछा कि अब आगे उसका क्या इरादा है। "अपने पुराने पेशे के अनुसार ही मैं फिर समुद्र यात्रा करूंगा," यही उसका उत्तर था। इस पर मैंने उससे कहा कि व्हेल पकड़ने की मेरी भी बहुत इच्छा है और मैं 'नन्तुकेत' से जहाज पर चढ़ना चाहता हूं क्योंकि नौसिखए व्हेल के शिकारियों के लिए यह

बहुत अच्छा बन्दरगाह है। उसने फौरन ही कहा, "मैं भी उसी द्वीप में जाऊंगा, उसी जहाज पर चढ़ूंगा, उसी पहरे पर रहूंगा, वही नाव लूंगा, उसी रसोई में खाना खाऊंगा, मतलब यह कि बिल्कुल तुम्हारे ही साथ रहूंगा।" इसे मैंने खुशी-खुशी स्वीकार कर लिया। 'क्वीकेग' के प्रति स्नेह के अतिरिक्त मैं यह भी सोचता था कि वह एक तजुर्बेकार हारपूनर है और मेरी तरह के अनजान आदमी के लिए बड़े काम का सिद्ध हो सकता है, जो मेरी तरह व्हेल के शिकार की बारीकियों से अपरिचित नहीं है। वैसे व्यापारी जहाजों और उन यात्राओं का मुझे अच्छा अनुभव था।

उसके पाइप के आखिरी धुंए के साथ ही उसकी कहानी समाप्त हो गई। तब 'क्वीकेग' ने मुझे अपनी बाहों में बांध लिया, अपने माथे से मेरे मस्तक को दबाया और बत्ती बुझाकर हम अलग-अलग घूमकर पलंग पर लुढ़क गए और जल्दी ही हमें नींद ने घेर लिया।

## १३

उस खुशबूदार खोपड़ी को एक नाई के हाथ बेच देने के बाद अगले दिन सुबह सोमवार को अपने साथी के रुपए से मैंने अपना और अपने साथी का बिल चुकाया। मकान मालिक तथा दूसरे मुसाफिर बड़े ताज्जुब में थे कि मेरी व 'क्वीकेग' की ऐसी घनिष्ठता एकाएक कैसे हो गई—खासतौर पर जब मैं उस आदमी के सम्बन्ध में पीटर काफ़िन द्वारा प्रचारित अनेक बेपर की कहानियों से इतना आतंकित था।

तब हम एक ठेला लाए और उसपर अपना सब सामान लादकर किनारे पर खड़े 'मास' नामक नन्तुकेत वाले छोटे जहाज की ओर चल दिए। जब हम लोग सड़क पर चल रहे थे तो लोग हमें बड़े ग़ौर से देख रहे थे—इसलिए नहीं कि 'क्वीकेग' जा रहा था क्योंकि इस प्रकार के असभ्यों को देखने के वे आदि हो गए थे किन्तु उसकी और मेरी दोस्ती सभी को आश्चर्य में डाल रही थी। हम बिना उनकी परवाह किए बारी-बारी से ठेले को घसीट रहे थे। 'क्वीकेग' को बार-बार 'हारपून' की म्यान संभालनी पड़ती थी। मेरे यह पूछने पर कि

वह ऐसी तकलीफ देनेवाली चीज़ साथ क्यों रखता है और क्या 'हारपून' व्हेल के शिकार पर जाने वाले सब जहाजों पर नहीं रहते, तो उसने उत्तर दिया कि 'हारपून' सभी जहाजों पर रहते हैं, फिर भी यह बर्छा उसका बहुत प्रिय है तथा अनेक मौकों पर बड़े काम का सिद्ध हो चुका है, साथ ही व्हेल मछलियों के हृदय भाग से इसका विशेष ममत्व है।

ठेले को मेरे हाथ से अपने में लेते हुए उसने एक मज़ेदार कहानी सुनाई, जब उसने पहली बार ठेला देखा था। वह 'सैग हारबर' में था। जहाज़ के मालिक ने ही, लगता है, उसके भारी सामान को ठहरने की जगह तक ले जाने के लिए उसे एक ठेला दिया था। ठेला कैसे चलाया जाता है इसको न जानने पर भी यह दिखलाने के लिए कि वह ठेला चलाना जानता है, उसने अपना सामान उस पर लादा और रस्सी से कसते हुए ठेले को कन्धों पर रखकर घसीटना शुरू किया। " 'क्वीकेग' तुमने ऐसा क्यों किया ? मैंने कहा, क्या तुम उसका तरीका नहीं जानते थे ? क्या देखने वाले लोग हंसे नहीं ?"

इस पर उसने मुझे एक और कहानी सुनाई। ऐसा लगता है कि 'रोको-वोको' द्वीप के लोग अपने यहां शादी की दावत में शराब के बर्तन की तरह 'कैलाबाश[1]' में ताज़े ताड़ का रस ढालते थे। और यही शराब का बर्तन दावत में एक ख़ास चीज दिखाई देता था जो उस किनारीदार चटाई पर सजाकर रखा जाता था जिसपर दावत होती थी। तभी कोई भारी व्यापारी जहाज 'रोकोवोको' द्वीप में आया और उसका कैप्टेन—जो बहुत ठाठदार और देखने में शाहाना आदमी दिखाई देता था—'क्वीकेग' की छोटी-सी सुन्दर बहन की शादी में, जिसने अभी ही अपनी उम्र का दसवां साल पूरा किया था, निमन्त्रित किया गया। अब जनाब ! जब सभी मेहमान दुल्हिन के बांस के बने 'काटेज' में इकट्ठा थे तभी यह कप्तान वहां आए जिनको ख़ास मेहमान की पदवी दी गई थी। यह उस शराब के बर्तन के निकट, मुख्य पुजारी और माननीय बादशाह बहादुर—'क्वीकेग' के पिता—के बीच में बैठ गए। जैसा 'क्वीकेग' ने बताया कि ऐसे उत्सवों में, जैसे हम लोगों के ठाठ रहते हैं, वैसे ही अपने ढंग से उन लोगों की अपनी सजावट थी। ऐसे मौकों पर हम लोग तो सामने रखी

---

१. कद्दू को सुखाकर बनाया गया बर्तन।

रकाबियों तथा थालों की ओर नीचे देखते हैं परन्तु वे लोग उन दावतों को देने वाले देवताओं की ओर ऊपर आकाश में देखते हैं। हां, तो उस निराले ठाठ में मुख्य पुजारी ने उस द्वीप के रिवाज के अनुसार दावत शुरू करने के लिए उस पेय को पवित्र करते हुए अपनी आशीर्वादात्मक उंगलियां बर्तन में डालीं। पुजारी के ठीक बराबर में बैठे होने के कारण तथा यह सोचकर कि वह तो एक जहाज़ का कैप्टेन है और बराबर में बैठा आदमी तो एक छोटे-से द्वीप का मामूली राजा है इसलिए अपने को ऊंचा मानते हुए उसने सोचा कि रिवाज के अनुसार भी वही करना चाहिए जो यहां का पुजारी कर रहा है, अतएव अपने हाथ धोने के इरादे से उसने भी बर्तन में हाथ डबो दिया जैसे वह कोई हाथ धोने का बर्तन हो। "अब"—'क्वीकेग' बोला—"अब क्या सोचते हो? क्या हम लोग उस समय नहीं हंसे?"

अन्त में किराया देकर और सामान को सुरक्षित रखकर हम लोग जहाज पर चढ़ गए। पाल हिला और जहाज़ 'अकुशनेट' नदी में तैरने लगा। एक ओर, 'न्यू बेडफोर्ड' की सड़कें दिखाई दे रही थीं जिनके किनारे के पेड़ बर्फ से आच्छादित थे और अपनी चमक के साथ मन्द शीतल वायु को डुला रहे थे। लहरों के नजदीक ऊंचे पहाड़ों की चोटियां थीं और बराबर में ही संसार का चक्कर काटकर व्हेल मछलियों का शिकार करने वाले जहाज़ खड़े हुए थे। कहीं से बढ़इयों की खटपट की आवाज़ आ रही थी तो कहीं से लोहारों की। वे आग जलाकर जहाज़ के पेंदों को ठीक कर रहे थे या कुछ गला रहे थे। पता चलता था कि नए जहाज चलने वाले हैं। जैसे कोई लम्बी और खतरनाक यात्रा समाप्त हो चुकी है और दूसरी शुरू होने वाली है, उसके बाद तीसरी और फिर चौथी। इस प्रकार संसार-चक्र अनन्तरूप से चलता चला जा रहा है।

और खुलासा समुद्र मिलने पर ताज़ी हवा के झोंके आने लगे। वह छोटा जहाज़ 'मास' अपने आगे की नोक से पानी के झाग उछाल रहा था जैसे कोई बछेड़ा जल्दी सांस निकालकर झाग फेंक रहा हो। उसके नथुने फूल रहे थे और वह अपने नोकदार और पैने दांत बाहर निकाल रहा था। उसके—उसके ऊपर ही हम उड़े चले जा रहे थे। किनारे से हमारी दूरी बढ़ती जा रही थी। मास के चलने से छपाके की आवाज़ें उठ रही थीं। अपने आगे की नोक को वह कभी दाब और कभी उछाल रहा था जैसे किसी सुल्तान के सामने कोई

गुलाम झुककर सलाम कर रहा हो। किसी ओर उसके झुकने पर हम भी उधर झुक जाते थे। हरेक रस्सा तार की तरह खिंचा हुआ और चमकदार दिखाई दे रहा था। उसके दो ऊंचे मस्तूल हिन्दोस्तान के मैदानी तूफान में दो गन्नों की तरह सीधे खड़े थे। इस प्रकार के शोर और हिलते-डुलते दृश्य के बीच हम ऐसे डूबे खड़े थे कि हमें होश ही न था कि दूसरे यात्री हमें देखकर ताज्जुब कर रहे हैं, कि मेरी तथा 'क्वीकेग' की जोड़ी कैसी लग रही है। लग रहा था जैसे एक सफेद आदमी किसी धुले हुए तथा कलई किए साफ निग्रो से ज्यादा खूबसूरत दिखाई दे रहा है। वहां कुछ बेवकूफ और उजड्ड लोग भी थे जो अपनी ताजी हरियाली में ऐसे दिखाई दे रहे थे जैसे सीधे किसी हरे जंगल से चले आ रहे हों। 'क्वीकेग' ने इस प्रकार के एक जवान पिल्ले को पकड़ लिया जो उसकी पीठ के पीछे चीं-चीं कर रहा था। मैंने सोचा जैसे उस देहाती उजड्ड का बुरा वक्त आ गया। अपने बर्छे को एक किनारे रखते हुए उस हट्टे-कट्टे राक्षस ने उस छोकरे की बाहें पकड़ लीं और बड़े अनोखे ढंग से अपनी पूरी शक्ति भर, उसे ऊपर हवा में उछाल दिया। वह बेचारा उखड़ी दम लिए 'क्वीकेग' के पैरों पर आ गिरा। इस पर 'क्वीकेग' ने बड़ी लापरवाही से अपना वही गंडासे वाला पाइप जलाया और दो-तीन कश में धुआं उड़ाकर उसे मेरी ओर बढ़ाते हुए उसने अपनी पीठ घुमा ली।

"कैप्टेन ! कैप्टेन !" अफसर की ओर भागते हुए छोकरा चिल्लाया—"कैप्टेन ! कैप्टेन ! यहां तो कोई शैतान आ गया है।"

"हल्लो ! जनाब," कैप्टेन ने 'क्वीकेग' को सम्बोधित कर कहा—"क्या गजब कर रहे थे ? तुमने तो उस लड़के को मार ही डाला था।"

"वह क्या कहता है" 'क्वीकेग' ने हौले से मेरी ओर घूमकर पूछा।

मैंने कहा, "वह कहता है कि तुमने तो उस लड़के को मार ही डाला था।" 'क्वीकेग' से बात करते हुए जब मैंने सामने देखा तो मूर्ख छोकरा तब भी डर से कांप रहा था।

"इसको मारना हुः !" अपने दगीले चेहरे को सिकोड़ते हुए विचित्र ढंग की घृणा से वह बोला—"आहा ! हः, उस बच्चा मछली को हम नेई मारता, 'क्वीकेग' ऐशा माफिक छोटा मछली को मारता नेई, 'क्वीकेग' भारी व्हेल मारता—व्हेल।"

"ऐ उधर देखो !" कैप्टेन चिल्लाया—"ऐ नरभक्षी ! अगर अब कभी तुमने जहाज़ पर अपनी शैतानी दिखाई तो समझ लेना मैं तुझको जान से मार डालूंगा।"

किन्तु कुछ ऐसा हुआ कि थोड़े समय बाद कैप्टेन को अपनी ही संभाल करनी पड़ी। सामने के बहाव पर कुछ ऐसा झोंका आया कि आगे का पाल टेढ़ा हो गया और भयानक खतरा इधर-उधर नाचने लगा। ऊपर का डेक थर्राने लगा। वह बेचारा ग़रीब जिसे 'क्वीकेग' ने इस बुरी तरह दुखी किया था—सामने ही बह गया। सभी घबड़ाए हुए थे। उस खतरे से उसे खींचना जैसे पागलपन दिखाई दे रहा था। वह इधर से उधर और उधर से इधर—मिनट-मिनट में हिल-डुल रहा था और लग रहा था जैसे अब वह चूर-चूर हुआ। न कुछ हो सका न कुछ होना सम्भव ही था। जो ऊपर डेक पर थे वे आगे की ओर बढ़ गए और उस खतरे को नजर गड़ाकर देखने लगे कि कहीं वह किसी व्हेल का फैला हुआ निचला जबड़ा तो नहीं है। उस घबड़ाहट के बीच बड़ी कुशलतापूर्वक 'क्वीकेग' अपने घुटनों के बल बैठ गया और उस पानी के बहाव के आगे रेंगते हुए उसने एक रस्से को खींचा और रस्सों की उस किलेबन्दी के एक सिरे को संभाला और दूसरे सिरे को एक फंदा-सा डालकर संभालते हुए उसने अगले झटके में ही मस्तूल को सीधा कर दिया। फौरन सब कुछ संभल गया और वह घुमेड़ लेता हुआ पानी उसके सर पर से बहकर पार हो गया। जहाज़ हवा में बहने लगा और सब लोग उसको साफ़ करने लगे। 'क्वीकेग' कमर तक नंगा हो गया था और कमान की तरह एक तरफ से छलांग मार गया। तीन मिनट तक वह एक कुत्ते की तरह तैरता रहा और अपने लम्बे हाथ सामने की ओर फेंकता रहा और उसका कभी दायां, कभी बायां कंधा—पानी के झागों के बीच चमकता रहा। मैं उस बहादुर और तूफ़ानी आदमी को देख रहा था लेकिन यह नहीं देख पाया कि कोई बचाया भी गया है। वह मूर्ख छोकरा सीधा पानी में घुस गया था। तीर की तरह पानी में घुसते हुए अब 'क्वीकेग' ने अपने चारों ओर देखा और कुछ समझते हुए एक डुबकी में गायब हो गया। दो-चार मिनट बाद वह फिर चमका। उसका एक हाथ बाहर था और दूसरे में एक निर्जीव शरीर सधा हुआ था जिसे वह खींच रहा था। जहाज़ के आदमियों ने फौरन ही उन दोनों को उठा लिया। ग़रीब छोकरा

बच आया। हर व्यक्ति ने 'क्वीकेग' की तारीफ़ की और कैप्टेन ने उससे क्षमा मांगी। उस समय से मैं 'क्वीकेग' से कंटिये की तरह चिपक गया और तबतक चिपका रहा जब तक उसने समुद्र में अपनी अन्तिम डुबकी नहीं ले ली।

क्या ऐसी बेहोशी भी कभी देखी गई थी? उसने यह कभी नहीं सोचा कि उसे 'ह्यूमैन एण्ड मैगनेनिमस सोसाइटी' से कोई मेडल या तमगा मिलना चाहिए। उसने केवल पानी मांगा—ताजा पानी, जिससे कि समुद्र का खारापन किसी प्रकार दूर हो जाए। वह हुआ। उसने सूखे कपड़े पहने, अपना पाइप सुलगाया और तब रस्से से बनी जहाज की उस किलेबन्दी के सामने खड़े होकर, सरलता सहित उसकी ओर देखते हुए जैसे वह बुदबुदाता रहा—'यह तो सब देशों का मिला-जुला एक संसार है जिसमें पारस्परिक व्यवहार की यह मांग है कि हम बर्बर लोग ईसाइयों की मदद करें।'

## १४

रास्ते में फिर और कुछ ऐसा नहीं घटित हुआ जिसको कहा जाए, इसलिए एक अच्छी तरह यात्रा करने के बाद हम लोग 'नन्तुकेत' पहुंच गए।

नन्तुकेत! अपना नक्शा निकालिए और देखिए। देखिए कि सचमुच दुनिया के किस कोने में यह है? वहां कैसे टिका है और समुद्री किनारे से दूर 'ऐडीस्टोन' के प्रकाश-स्तम्भ की तरह कैसे एकदम अकेला दिखाई देता है। इसको देखिए—जैसे एक पहाड़ी चोटी जैसे बालू का ऊंचा ढेर, सब कुछ एक झील-सा—जिसके पिछवाड़े कुछ न हो। यहां इतनी बालू है कि बीस साल तक ब्लाटिंग-पेपर की जगह आप उसे इस्तेमाल कर सकते हैं। दूसरी दुनिया का कोई मस-खरा आदमी आपको बता सकता है कि उन्होंने ही वहां की बेकार घास-पात को उगाया है, वह सब अपने आप नहीं उग आया है। यह कि वे कनाडा का गोखरू मंगाते थे। यह कि उन्हें दूर समुद्रों में ऐसे कार्क भेजने पड़ते थे जो तेल के पीपों के छेदों को बन्द कर सकें। यह कि रोम के असली 'क्रास' की तरह नन्तुकेत में लकड़ी के टुकड़े इधर-उधर ले जाए जाते हैं। गर्मी में छाया पाने के

लिए यहां के आदमी अपने घरों के सामने कुकुरमुत्ता उगाते हैं। यह कि घास की एक पत्ती नखलिस्तान बनाती है और एक दिन की चहलकदमी में घास की तीन पत्तियां एक बिना पेड़-पत्ती का फैला मैदान बना देती हैं। यह कि वहां के लोग बालू में जल्दी चलने वाले जूते पहनते हैं, उसी प्रकार के जैसे बरफ में चलने वाले 'लैपलैन्डर' जूते होते हैं। जैसे वे सब तरफ से बन्द रहते हैं, अन्दर से दरवाजे बन्द किए हुए हर तरह से बन्द, घिरे हुए और समुद्र में एक द्वीप बनाए हुए यहां तक कि उनकी कुर्सियों और मेजों में भी उसी प्रकार की ईंटों की दीवालें बनी मिलेंगी जैसे समुद्री कछुए की कड़ी पीठ। किन्तु इस सारे विवरण से केवल इतना ही पता चल सकता है कि नन्तुकेत कोई इलिन्वायस[1] नहीं है।

अब यहीं की ताज्जुब वाली पुरानी कहानियां सुनिए कि कैसे अमेरिका के आदिवासियों ने इस द्वीप का निर्माण किया। प्राचीन कथा इस प्रकार की है कि पुराने जमाने में एक गरूड़ न्यू इंग्लैण्ड के किनारे पर आया और वह अपने पंजों में एक इंडियन बालक को उठा ले गया। बड़ी चीख-चिल्लाहट और अफसोस के साथ माता-पिता ने देखा कि उनका हाल का पैदा बच्चा दूर समुद्रों के आगे अदृश्य हो गया। उसी दिशा में उन्होंने भी जाने का निश्चय किया। अपनी नावों में बैठकर और खतरनाक यात्रा को पार कर उन लोगों ने इस टापू का पता लगाया और वहां उन्होंने हाथीदांत की एक खाली डलिया देखी—वह उस छोटे आदिवासी का हड्डियों का ढांचा था।

इसमें क्या ताज्जुब की बात है कि तब समुद्र के किनारे पैदा होने वाले इन 'नन्तुकेत' के लोगों ने समुद्र को ही अपने भरण-पोषण का साधन बना लिया। रेत में पहले उन्होंने केकड़े और छोटे-छोटे जन्तुओं को पकड़ा। तब मजबूत होने पर वे जाल लेकर छोटी मछलियों को पकड़ने समुद्र में बढ़े। और तजुर्बा हुआ तो नावों में चढ़कर उन्होंने मोटी मछली पकड़ी और अन्त में समुद्र में एक बड़ा जहाजी बेडा डाला और इस जलाशय को खखोल डाला। समुद्रों में रात-दिन घूम-घूमकर जैसे चारों ओर एक बेल्ट—एक घेरा-सा बांध दिया। 'बेहरिंग'[2] जलडमरूमध्य तक झांक आए। हर मौसम और हर समुद्र में जैसे बाढ़ और

---

१. अमेरिका का एक नगर।

२. अमेरिका और साइबेरिया के बीच स्थित जलडमरूमध्य।

भारी से भारी कठिनाइयों पर हमला बोल दिया। ये बड़े बहादुर और बड़ी लगन के साबित हुए। वह हिमालेहन, खारा समुद्र 'मस्तोदन', अभियान के लिए और अनदेखी ताकत समेत ऐसा है कि उसकी निर्भय और द्वेषयुक्त आक्रमणों से कहीं अधिक भय उसकी आशंका से ही लगता है।

इस प्रकार इन बिना कपड़ों के 'नन्तुकेत' वासियों ने—इन समुद्र के सन्यासियों ने—जैसे समुद्र की ऊंची लहरों रूपी चट्टानों को अपनी तपस्या का स्थान बनाया। बहुत-से सिकन्दरों की भांति इन्होंने समुद्र पर अपना अधिकार किया। 'अतलांतक', 'प्रशान्त' और भारत महासागरों को इन्होंने माप दिया जैसे पोलैंड ने तीन सत्ताओं के शासन को एक सूत्र में बांध दिया था। चाहे अमेरिका 'टेक्सास' और 'मैक्सिको' एक कर दे, भले ही कनाडा और 'क्यूबा' मिल जाएं, चाहे इंग्लैंड वाले समूचे भारत को हड़प लें और अपने जलते निशानों और झंडों को सूर्य-से उड़ाने लगें, इस पर भी इस गोल दुनिया का दो तिहाई हिस्सा नन्तुकेत वालों का है। क्योंकि समुद्र उनका है। वे उसके अधिकारी हैं जैसे बादशाह लोगों के अधिकार में राज्य होते हैं। दूसरे समुद्र वालों को तो जैसे केवल रास्ते भर का अधिकार मिला हुआ है। व्यापारी जहाज तो जैसे बढ़े हुए पुल मात्र हैं जो एक स्थान को दूसरे से मिला भर देते हैं। हथियारों वाले जहाज़ केवल तैरने वाले किले भर हैं। यहां तक कि डाकू और चोर-उच्चके सड़क की तरह समुद्र को भी इस्तेमाल कर लूट-पाट करते रहते हैं। और 'नन्तुकेत' का रहने वाला अपने अलग तरीके से ही समुद्र में दंगे करता है और रहता है। बाइबिल की भाषा में वह अकेला जहज़ों में जाता है और इधर-उधर अपनी खेती की तरह समुद्र को भी जोतता है। वहीं उसका घर है। वहीं उसका व्यापार है जिसे 'नोआह' की बाढ़ भी नहीं रोक सकती भले ही उसने चीन में लाखों को तबाह किया हो। वह समुद्र में वैसे ही रहता है जैसे मैदानी कौआ मैदान में रहता है। वह लहरों में छिप जाता है। वह उस पर वैसे ही चढ़ता है जैसे हिरण की तरह 'आल्प्स' पहाड़[1] पर चढ़ने वाला कोई शिकारी। वर्षों तक उसने ज़मीन को जाना ही नहीं और उसके बाद जब वह आया तो उसे लगा जैसे वह दूसरी दुनिया में है। वह वैसे ही सोचता रहा जैसे ज़मीन में रहने

---

१. मध्य यूरोप की विशाल पर्वतश्रेणी।

वाले आज चन्द्रमा की दुनियां के सम्बन्ध में सोचते हैं। समुद्री चिड़िया शाम को लहरों पर अपने पंख खोलकर सोती है, उसी प्रकार 'नन्तुकेत' का रहने वाला अपने पतवार ढीले करके उन्हें आराम दे देता है जबकि उसके तकिए के नीचे ही व्हेल हलचल मचाती रहती है।

## १५

काफ़ी रात गए 'मास' ने किनारे पर अपना लंगर डाला और मैं तथा 'क्वीकेग' बाहर घूमने निकले, खाने और सोने के अलावा उस दिन हमने कुछ नहीं किया। 'स्पाउटर इन' के मकान मालिक ने हमसे कहा था कि उसका चचेरा भाई 'होसिया हूसी' 'ट्राईपाट' में रहता है और 'नन्तुकेत' में सबसे बढ़िया होटलों में से एक का मालिक है और वहां का मशहूर मिठाई बनाने वाला है। संक्षेप में उसने हमसे कहा कि 'ट्राईपाट' में हमको खाने का स्वाद लेना चाहिए। उसने बताया कि बाएं जाकर एक गिर्जा मिलेगा और दाहिने जाकर एक पीला मकान, तब फिर दाहिने और फिर बाएं जाकर किसी भी आदमी से पूछना कि वह जगह कहां है। लेकिन उसके इन दिशा-संकेतों ने हमें कम परेशान नहीं किया। हम इधर-उधर टक्कर मारते रहे और थोड़ी-थोड़ी देर में शान्तिपूर्वक रहने वाले वहां के निवासियों से पूछ-पूछकर उन्हें तंग करते रहे। तब अन्त में हम ऐसे स्थान पर पहुंच गए जहां गलती होने की सम्भावना ही नहीं थी।

एक पुराने दरवाज़े के सामने एक दूसरे को क्रास करते हुए दो पेड़ लगे थे और उन पर लकड़ी के दो काले बर्तन लटक रहे थे जिनमें गधे के कान की तरह की कोई चीज़ बनी थी। इन पेड़ों की सींग की तरह की शाखें दाएं-बाएं ओर से काट दी गई थीं जिसको देखने से वह फांसी का झूला-सा दिखाई दे रहा था। शायद यह मेरी अतिशय भावुकता थी, लेकिन इस समय मैं इसके अलावा कुछ सोच नहीं पा रहा था। उन बचे हुए दो सींगों की ओर जब मैंने देखा तो मुझे लगा कि एक फंदा मेरे और दूसरा 'क्वीकेग' के गले के लिए है। जब व्हेल के शिकार के पहले बन्दरगाह पर मैं उतरा तो सराय वाला 'काफिन' मिला, दुबारा उन मछुओं के गिर्जे में मकबरे के पत्थर मुझ पर आंखें गड़ाए रहे, और

यहां यह फांसीघर। और ये अद्भुत काले बर्तन ? क्या इन आखिरी लक्षणों का इशारा 'टाफेट'[1] की ओर है ?

तभी एक पीले बालों वाली और पीला गाउन पहने एक नित्तीदार औरत ने मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा। वह सराय के बरामदे में खड़ी थी जहां एक धीमा-सा लाल रंग का लैम्प झूल रहा था जो एक जख्मी आंख-सा दिखाई दे रहा था। औरत बैंगनी रंग की गरम कमीज पहने एक आदमी को फटकार बता रही थी।

'यहां से चले जाओ, नहीं तो मैं अभी तुम्हारी खबर लूंगी।" वह आदमी से कह रही थी।

"आओ, क्वीकेग ! यही है। वह मिसेज हूसी है"—मैंने कहा।

बाद में पता भी यही चला कि मिस्टर होसिया हूसी घर से कहीं बाहर गए हुए थे और मिसेज हूसी को वहां छोड़ गए थे जो उनके पीछे उनके काम की पूरी-पूरी देखभाल कर रही थी। जब हमने बताया कि हम रात का खाना और बिस्तर चाहते है तो मिसेज हूसी उस आदमी को डांटना बंद करके हमें एक छोटे कमरे में ले गई। एक मेज़ पर बैठकर हमने देखा कि उस पर खाने की जूठन पड़ी हुई थी। तभी मिसेज हूसी ने हमारी ओर घूमकर पूछा "क्लाम[2] या कॉड ?"[3]

"यह कॉड क्या चीज है, मैडम ?" अत्यधिक विनम्रता से मैंने पूछा।

"क्लाम या कॉड ?" उसने दोहराया।

"खाने के लिए 'क्लाम' ? ठंडा क्लाम—आपका मतलब यही है न, मिसेज हूसी ?" मैंने प्रश्न किया "किन्तु सर्दी के समय यह तो बड़ा नीरस स्वागत है, मिसेज हूसी, है न ?"

लेकिन उसी बैंगनी कमीज वाले आदमी को झाड़ बताने की कुछ ऐसी

---

१. 'टाफेट' का शाब्दिक अर्थ है 'चिता'। वास्तव में फिलिस्तीन की टारसस नामक जगह पर 'चिता' पर जीवित जलाने की प्रथा थी। ईसा के जन्म के दो शताब्दियों पहले तक यह प्रथा जारी रही।

२. एक समुद्री जानवर, जिसका मांस बड़ा स्वादिष्ट होता है।

३. एक समुद्री मछली।

जल्दी में मिसेज़ हूसी थी कि 'क्लाम' शब्द के अलावा जैसे उसने कुछ सुना ही नहीं और रसोईघर को खुलने वाले द्वार की ओर लपकते हुए जोर से चिल्लाई "दो क्लाम।" और इतना कहते ही वह वहां से गायब हो गई।

"क्वीकेग! क्या हम दोनों का पेट एक ही 'क्लाम' में नहीं भर जाएगा?" मैंने कहा।

जो भी हो, रसोई से आने वाली मसालेदार गरम खुशबू से हमें यही महसूस हुआ कि हमारी आशंका गलत है। परंतु जब वह धुएंदार गरमागरम 'चाउडर'[1] हमारे सामने आया तो सब रहस्य खुलासा हो गया। वह एक छोटे-छोटे रसीले 'क्लामों' से जो जैतून की सुपाड़ी से कुछ ही बड़े थे, बना था जिसमें जहाज़ी बिस्कुट फेंटकर मिलाया गया था और जिस पर सुअर का नमकीन गोश्त महीन लच्छे में काटकर छिड़का गया था। इस सबमें खूब मक्खन पड़ा था तथा कालीमिर्च और नमक बुरका हुआ था। उस कोहरे वाली समुद्री यात्रा के बाद हमारी भूख भी खुल गई थी और 'क्वीकेग' ने अपना प्रिय पकवान सामने देखकर तथा बहुत जायकेदार 'चाउडर' पाकर हम दोनों ने प्लेटें जल्दी ही साफ कर दीं। तब एक मिनट पीछे झुककर तथा मिसेज हूसी के 'क्लाम' तथा 'कॉउ' की बात का ध्यान करके मैंने सोचा कि कुछ नया अनुभव करना चाहिए। रसोई के द्वार की ओर बढ़कर मैंने—'कॉड' कहकर पुकारा और अपनी जगह आ बैठा। थोड़ी देर में यही गरम मसालेदार धुएं की खुशबू फिर आई लेकिन यह दूसरी तरह की थी और जल्दी ही बढ़िया कॉड-चाउडर हमारे सामने आ गया।

हमने खाना फिर शुरू किया। जब हमारी चम्मचें प्लेटों पर खनक रही थीं तभी मैंने ध्यान किया कि अगर इसका असर दिमाग पर हुआ तो? वह बेवकूफी की कहावत क्या है कि कुछ लोगों का मस्तिष्क 'चाउडर' की तरह का होता है? जो हो, मैंने कहा—"लेकिन क्वीकेग! देखो तो, तुम्हारे प्याले में एक जिन्दा सर्प-मछली है? तुम्हारा हारपून कहां है?"

मछलियों वाले स्थानों में सबसे अधिक मछलियों से भरी जगह 'ट्राईपाट' थी जिसका नाम भी बहुत उपयुक्त 'चाउडर' मिलता था। नाश्ते के लिए

---

१. पकवान जो बिस्कुट तथा मलछी को मिलाकर बनाया जाता है।

'चाउडर', दोपहर के खाने में 'चाउडर', रात के खाने में 'चाउडर' और तब तक 'चाउडर' ही 'चाउडर' जब तक कि आपके कपड़ों में मछलियों की हड्डियां न चमकने लगें। मकान के सामने के हिस्से में क्लाम के छिलके पड़े हुए थे। मिसेज हूसी कॉड मछली की रीढ़ की हड्डी से बना एक चमकदार हार पहने थी और 'होशिया हूसी' के बही-खाते बढ़िया शार्क मछली की चमड़ी की जिल्द के बने हुए थे। दूध में भी मछली की ही गंध आती थी और उसे मैं तब तक नहीं समझ पाया जब तक मैंने एक दिन मछुओं की नावों के पास घूमते हुए सुबह यह नहीं देख लिया कि 'होशिया हूसी' की गाय मछलीदार खाने की जूठन को खा रही है और बालू पर चलते समय उसका हरेक खुर मछली की हड्डियों पर ही पड़ रहा है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि यह दृश्य बड़ा अनाकर्षक था।

खाना खत्म करने पर हमें एक लैम्प मिला और मिसेज़ हूसी का यह आदेश कि बिस्तर पर जाने के लिए अमुक द्वार से जाना है। किन्तु 'क्वीकेग' जैसे ही मेरे आगे सीढ़ियों पर चढ़ने को हुआ, उस महिला ने अपना हाथ आगे बढ़ाकर उसका 'हारपून' मांगा। वह अपने कमरों में 'हारपून' ले जाने की इजाजत नहीं देती थी।

"लेकिन क्यों नहीं ?" मैंने कहा—"प्रत्येक सच्चा मछली का शिकारी हारपून को साथ लेकर सोता है। तब क्यों नहीं ?"

"क्योंकि यह खतरनाक है" उसने उत्तर दिया—"जब नौजवान 'स्टिग्स' साढ़े चार साल की भाग्यहीन यात्रा से लौटा था और उसके पास सिर्फ तीन पीपे तेल था, वह पहली मंजिल के पिछले हिस्से वाले अपने कमरे में एक दिन मरा पाया गया, उसका 'हारपून' उसकी बगल में धंसा था। तभी से मैं अपने किसी मुसाफिर को 'हारपून' साथ नहीं ले जाने देती। रात को ऐसा खतरनाक अस्त्र मैं नहीं ले जाने देती। मि० 'क्वीकेग', (वह उसका नाम जान चुकी थी।) मैं इसको अपने पास रखूंगी और सुबह उठते ही दे दूंगी। और कल सुबह नाश्ते में 'चाउडर' रहेगा न, क्लाम का या कॉड का ?"

"दोनों का" मैंने कहा—"लेकिन दो प्लेट भुनी हुई हेरिंग[1] मछलियां भी—जायका बदलने के लिए।"

---

१. नीले रंग वाली नन्ही-नन्ही मछलियां।

# १६

बिस्तर पर पड़े-पड़े हमने अगले दिन का प्रोग्राम बनाया। लेकिन एक बात पर मुझे बहुत ताज्जुब और परेशानी हुई। 'क्वीकेग' ने बताया कि वह पिछले दिनों अपने उसी काले रंग की लकड़ी के बने भगवान 'योजो' से सलाह लेता रहा था और उसके भगवान ने दो-तीन बार उससे ज़ोर देकर कहा था कि व्हेल के शिकारी जहाज़ों का जो ज़खीरा डॉक पर खड़ा है उसमें से अपने लिए एक जहाज़ चुनने—मुझे तथा 'क्वीकेग' को एक साथ नहीं जाना चाहिए बल्कि जहाज़ का चुनाव करने की जिम्मेदारी पूरी तरह मेरी ही होनी चाहिए। उसके भगवान का कहना था कि इससे हमारी मित्रता और दृढ़ होगी। यही नहीं, उसके भगवान ने एक खास जहाज़ की ओर संकेत भी किया था कि 'क्वीकेग' की बिना परवाह किए मैं उसकी तलाश करूं और मिलते ही बिना 'क्वीकेग' की परवाह किए उस पर सवार हो जाऊं।

मैं पहले यह बताना भूल गया था कि 'क्वीकेग' को कई मामलों पर अपने भगवान 'योजो' पर बहुत विश्वास था और वह कहा करता था कि उसका भगवान आगे की बातें बहुत सही-सही बताता है।

किन्तु 'योजो' की उस सलाह से मुझे असन्तोष हो रहा था कि केवल मैं ही जहाज़ चुनूं और यह कि जिस विशेष जहाज़ के सम्बन्ध में बात हो रही थी वह ऐसे साजो-सामान से लैस नहीं था कि मैं उस पर जाऊं और व्हेल के शिकार में अपना भाग्य उसको सौंप दूं, लेकिन मेरी बहस का 'क्वीकेग' पर कोई प्रभाव नहीं हो रहा था इसलिए मैंने सोचा कि इस प्रकार के झंझटी प्रसंग को मैं जल्दी ही निबटा दूं। अगले दिन सुबह जब 'क्वीकेग' 'योजो' की पूजा कर रहा था और सोने वाले कमरे में बन्द था—तभी मैं चल दिया। लग रहा था कि वह जैसे एक प्रकार से 'लेन्ट'[१] या 'रमदान'[२] था और वह समूचा दिन 'क्वीकेग'

---

१. ईसाइयों में ईस्टर से पहले चालीस दिन का उपवास।

२. रमजान, मुसलमानों के रोज़ों के दिन—जब वे उपवास रखते हैं।

पूजा, व्रत और विनय में लीन था। पता नहीं वह कैसे कर लेता था किन्तु मैं तो प्रयत्न करके भी उसकी उस धार्मिक कथा और उन्तालीस अनुच्छेदों को समझ नहीं पाया था। अस्तु, गंडासेनुमा उसी पाइप को पीकर व्रत करते हुए और लकड़ी की छीलन से आग जलाकर 'योजो' को गरम करते तथा पूजा की अग्नि जलाते हुए क्वीकेग को छोड़कर मैं जहाजों के सम्बन्ध में छानबीन करने चल दिया। बहुत खोज और पूछताछ के बाद वहां तीन जहाज़ दिखाई दिए जो तीन साल की यात्रा पर जा रहे थे—'डेविल-डाम', 'टिट-बिट' और 'पिकोड'। 'डेविल-डाम' के नाम का मौलिक उद्गम क्या था, मैं नहीं कह सकता, 'टिट-बिट' (मन-पसन्द) का नाम तो साफ है और 'पिकोड' तो आपको याद ही होगा कि मैसा-च्युसेट्स के आदिवासी निवासी थे जो अब प्राचीन 'मेडीज'[1] की तरह लुप्त हो गए हैं। मैंने 'डेविल-डाम' 'टिट-बिट' और तब 'पिकोड' को हर तरह से घूम-फिरकर देखा और अपना अन्तिम निर्णय दिया कि 'पिकोड' ही उपयुक्त जहाज़ है।

अपने ज़माने में आपने बहुत तरह के अजीबोगरीब जहाज़ों को देखा होगा जिन्हें मुझे भी जानना चाहिए—चौखूटी नोंक वाले छोटे जहाज़, ऊंची उठान वाले जापानी जहाज, मक्खन के सन्दूक वाली माल ढोने की नावें तथा अन्य बहुत तरह के, किन्तु विश्वास मानिए कि 'पिकोड' की तरह का पुराना जहाज़ शायद ही कभी आपको दिखाई दिया हो। वह पुराने ज़माने का जहाज़ था, बहुत छोटा, जिसके पेंदे की शक्ल एक पंजे की-सी थी। हर तरह के मौसमी तूफानों और समुद्रों के अनुभवों से उसके पुराने ढांचे का रंग फ्रांस के गोला फेंकने वाले उस सिपाही की तरह हो गया था जो उसी प्रकार अनेक बार मिस्र और साइ-बेरिया में लड़ चुका था। उसके आगे के भाग में जैसी दाढ़ी उग आई थी। उसके मस्तूल जो जापान के किसी किनारे पर फट गए थे और उसके पुराने नाविक एक तूफान में वहीं बह गए थे—तने हुए सीधे खड़े थे जैसे 'कोलोन' के तीन पुराने राजाओं की यादगारें। उसके पुराने डेक बहुत जर्जर और सिकुड़े हुए थे। उसका कैप्टेन बूढ़ा 'पेलेग' बहुत दिनों तक मुख्य मेट रह चुका था और

---

१. भारत और जर्मनी की मिलवां नस्ल जो फारस के रहने वालों में लिप्त हो गई।

बाद में उसने अपना एक जहाज चलाया था। अब एक प्रकार से पेन्शन पाया हुआ जहाज़ी था, साथ ही 'पिकोड' का मालिक भी। 'यूथोपिया' के बर्बर सम्राट की भांति ही वह जहाज दिखाई देता था। आगे की उसकी नाक पर चमकदार हाथी दांत की लटकनें झूल रही थीं। वह एक प्रकार से असभ्य जहाज़ दिखाई देता था जो अपने दुश्मनों की हड्डियों की तलाश में रहता था। उसके मस्तूलों की किलेबन्दी खुले जबड़े-सी दिखाई देती थी। आगे की ओर घुमाने वाला एक पहिए लगा हुआ था जिसके पास ही एक भारी जंजीर हिलती-डुलती थी। उस पहिए को चलाने वाला आदमी तूफान के समय एक 'तातार'-सा दिखाई देता था जो पहिए और जंजीर के दांतुओं को चलाते हुए जहाज की तेज़ी को संभालता था। जहाज वड़ा अच्छा था, लेकिन उसके चारों ओर एक उदासी थी। सभी अच्छी चीजों के चारों ओर उदासी फिरी होती है।

किसी अधिकारी की खोज में, मैंने ऊपर के छोटे डेक पर पहले तो किसी को नहीं देखा कि मैं नाविक के लिए अपना नाम प्रस्तावित कर सकूं किन्तु बाद में वहां एक अजीब-सा शामियाना दिखाई दिया जो मुख्य मस्तूल के ज़रा पीछे बंधा था। लग रहा था जैसे अस्थायी रूप से बन्दरगाह के लिए ही वह खड़ा किया गया था।

इस विचित्र तम्बू में आधा छिपा-सा एक व्यक्ति दिखाई दिया जो अपने व्यक्तित्व से वहां का आफीसर दिखाई दे रहा था और दोपहर का समय होने के कारण विश्राम कर रहा था। वह एक पुराने ढंग की ओक की कुर्सी पर बैठा था, जिस पर हर जगह नक्काशी कटी हुई थी और उसके पेंदे में उसी तरह के इलास्टिक के फीते बंधे हुए थे जैसे शामियाने में इधर-उधर लगे हुए थे।

उस बुजुर्ग आदमी में यों कोई खास बात नहीं थी। वह भूरे रंग का तन्दुरुस्त आदमी था और दूसरे जहाज़ियों की तरह नीले रंग का 'क्वेकर' नमूने का कटा पाइलट-कोट पहने था। केवल उसकी आंखों के चारों ओर झुर्रियों का महीन ताना-बाना दिखाई दे रहा था जिसका कारण भारी तूफानों में निरन्तर समुद्र-यात्रा और सदा ही हवा के रुख को देखते रहना था। किसी भी गुस्सेवाली भौहों में इस प्रकार के नेत्रों की सलवटें बहुत प्रभावशाली दीखती हैं।

"क्या आप ही 'पिकोड' के कप्तान हैं?" आगे बढ़ते हुए शामियाने में जाकर मैंने पूछा।

"यही समझ लीजिए। कहिए, आपको क्या काम है ?" उसने प्रश्न किया।

"मैं यात्रा करना चाहता हूं।"

"क्या आपने कभी की है या नहीं की ? मुझे लगता है आप 'नन्तुकेत' के रहने वाले नहीं हैं। क्या आपने कभी 'स्टोव-बोट' पर यात्रा की है ?"

"नहीं जनाब ! कभी नहीं की।"

"तब तो शायद व्हेल के शिकार के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं जानते होंगे—मुझे यही कहना चाहिए।"

"महोदय ! कुछ भी नहीं। लेकिन इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि मैं जल्दी ही जान जाऊंगा। मैंने व्यापारी जहाज़ों में लम्बी समुद्री यात्राएं की हैं और मैं सोचता हूं"—

"व्यापारी यात्राओं को दफ़न कीजिए। इस तरह की नासमझी की बातें मुझसे मत करिए। अपना पैर देखते हैं ?—अब आगे कभी मुझसे व्यापारी जहाज़ों की बातें कीं तो पैर तोड़ दूंगा। वाह ! मैं समझता हूं, उस तरह की यात्रा का बहुत घमंड है। तब बोलो, व्हेल शिकार पर जाने की सनक क्यों हो गई ? मुझे तो इसमें कुछ शक होता है ? क्या तुम कभी समुद्री डाकू थे ? क्या अपने आखिरी कप्तान को नहीं लूटा, या लूटा है ? पानी में जाने पर क्या अपने अफ़सरों के कत्ल की सोचते हो ?"

मैंने इन बातों का विरोध किया। मैंने देखा कि वह 'केप कॉड' या 'वाइनयार्ड' के अलावा किसी भी दूसरी जगह के आदमी को देखकर सन्देह करता है।

"लेकिन तुमको व्हेल के शिकार की सनक क्यों सवार हुई ? तुमको जहाज़ पर ले चलने के पहले मैं यह जानना चाहूंगा।"

"व्हेल का शिकार क्या है, महोदय, मैं केवल इतना जानना चाहता हूं ? मैं दुनिया देखना चाहता हूं।"

"वाह ! व्हेल का शिकार देखना चाहते हो। क्या तुमने कभी कैप्टेन आहाब को देखा है ?"

"महोदय ! यह कैप्टेन आहाब कौन हैं ?"

"यही, यही, मैंने यही सोचा था। कैप्टेन आहाब इस जहाज़ के कप्तान हैं।"

"तब मैंने गलती की। मैं समझा मैं कैप्टेन से ही बातें कर रहा हूं।"

"नौजवान ! तुम कैप्टेन पेलेग से बातें कर रहे हो। यह जहाज़ मेरा है और कैप्टेन बिल्दाद—पिकोड की सब चीजें दुरुस्त करता है, सफर की तैयारी करता है और साथ ही उसके यात्री व मजदूरों का भी प्रबन्ध करता है। हम दोनों इसके साझीदार हैं और एजेण्ट भी। लेकिन जैसा तुम कहते हो कि व्हेल का शिकार जानना चाहते हो तो कैप्टेन आहाब से मिलो। तुम देखोगे कि उनके एक ही पैर है।"

"आप क्या कहना चाहते हैं महोदय ! क्या दूसरे को व्हेल ने काट डाला ?"

"व्हेल ने काट डाला ! नौजवान ! मेरे पास आओ। वह निगल लिया गया, चबा डाला गया, उस खतरनाक जानवर के द्वारा पीस दिया गया जिसने नाव के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। आह ! आह !"

पहले तो मैं चौंका लेकिन बहुत शान्ति से मैंने कहा—"आपने जो कुछ कहा है महोदय ! वह सच ही है, लेकिन मैं उस व्हेल की तेज़ी को कैसे जान सकता था ? हां, घटना के विवरण से मैं उसका अनुमान लगा सकता हूं। वैसे मैं कटी टांग से ही व्हेल की भयानकता का अनुमान लगा सकता था।"

"तब नौजवान ! दिखाई देता है कि तुम्हारा हृदय बहुत कोमल है और तुमने पहले कभी जहाज़ी सफर नहीं किया। क्या तुम्हें विश्वास है कि तुम पहले जहाज़ी सफर कर चुके हो ?"

"महोदय ! मैं आपको बताऊं कि मैंने चार यात्राएं की हैं, व्यापारी···"

"अब समझे रहना—व्यापारी जहाज़ के सम्बन्ध में मुझसे कोई बात मत करना। हमें एक दूसरे को समझ लेना चाहिए। व्हेल का शिकार क्या है—इसका संकेत मैं तुमको दे चुका हूं। क्या तुम अब भी इस यात्रा पर जाना चाहते हो ?"

"चाहता हूं महोदय !"

"बहुत ठीक ! क्या तुम व्हेल के गले में भाला घुसेड़कर तब उसके पीछे उछाल लगाते हुए लौट सकते हो ? जल्दी जवाब दो !"

"अगर ऐसा मौका आ गया तो मैं ज़रूर वैसा कर सकता हूं। मैं तब भागूंगा नहीं।"

"ठीक है ! तब तुम सिर्फ इतना ही नहीं जानना चाहते कि व्हेल का शिकार क्या है बल्कि तुम दुनिया को भी देखना चाहते हो। यही तो तुमने कहा था ? मैं भी यही सोचता था। ठीक है ! आगे बढ़कर वहां तक जाओ और उस 'वेदर-बो' को देखो फिर लौटकर बताओ कि तुमने क्या देखा ?"

इस विचित्र आदेश को सुनकर पहले तो मैं परेशान हुआ कि बात को मजाक में लूं या गम्भीरतापूर्वक, किन्तु अपने पैर की एक ही छलांग में उछालते हुए उन्होंने मुझे उधर ढकेल दिया।

आगे बढ़कर जब मैंने 'वेदर-बो' के पार झांका तो मैंने देखा कि जहाज अपने लंगर पर झूल रहा है और लहरें भी उसे उधर की ही ओर खींच रही हैं। वह आगे के खुले समुद्र की दिशा की ओर संकेत कर रहा था। बहुत आशा हुई लेकिन एकरस और सतर्क करने वाली।

"हां, तो क्या समाचार है ?" जब मैं लौटा तो पेलेग ने प्रश्न किया—"तुम-ने क्या देखा ?"

"ज्यादा कुछ नहीं," मैंने जवाब दिया—"पानी के अलावा कुछ नहीं। दूर तक फैला क्षितिज और मैं सोचता हूं—उधर हवा का झोंका आ रहा है।"

"ठीक है, तब तुम दुनिया देखने की क्या सोच रहे हो ? क्या 'हार्न अंतरीप' का चक्कर लगाकर कुछ और देखना चाहते हो ? जहां तुम खड़े हो क्या तुम्हें वहां से दुनिया नहीं दिखाई दे रही है ?"

मैं कुछ लड़खड़ाया—लेकिन शिकार को मुझे जाना ज़रूरी था और 'पिकोड' एक अच्छा जहाज़ था। मैं इसे सर्वश्रेष्ठ मानता था। मैंने यही सब कुछ 'पेलेग' से कह डाला। मुझको इतना दृढ़ देखकर जहाज़ पर चलने की मुझे उस-ने इजाज़त दे दी।

"तुमको सब कागज़ों पर अभी दस्तखत करने होंगे"—उसने कहा—"मेरे साथ आओ !" कहते हुए वह डेक के नीचे केबिन की ओर मुझे ले चला।

टेढ़े शहतीर पर एक विचित्र आदमी बैठा दिखाई दिया। पता लगा कि वह कैप्टेन बिल्दाद है—जहाज़ का दूसरा बड़ा मालिक। कैप्टेन 'पेलेग' और 'बिल्दाद' के सबसे ज्यादा शेयरों के बाद जहाज़ के दूसरे शेयर बन्दरगाह के कुछ पुराने भत्ता पाने वाले लोगों के थे—विधवाओं, बिना बाप के बच्चों और उन लोगों की एक खासी भीड़ थी, जिनके नाम रजिस्ट्रार के यहां चढ़े हुए थे। हरेक

किसी लकड़ी के सर या किसी तख्ते के पैर का मालिक था या जहाज़ की एक-दो कीलों का। 'नन्तुकेत' के लोग व्हेल के शिकारी जहाज़ों पर अपना रुपया लगाते थे, वैसे ही जैसे कि आप लोग किसी शेयर या माल पर—अच्छे व्याज पर रुपया लगाते हैं।

'पेलेग' और अनेक अन्य नाविकों की तरह 'बिल्दाद' भी 'नन्तुकेत' के 'क्वेकर' लोगों में से था। यह विशेष फ़िरका उस द्वीप में निवास करने सबसे पहले पहुंचा था और आज भी वहां के निवासियों में 'क्वेकर' लोगों की विशेषताएं मानी जाती हैं। सिर्फ इनमें दूसरे ढंग की अनेकानेक बातें भी मिल गई हैं। कुछ 'क्वेकर' लोग तो जहाज़ियों और व्हेल के शिकारियों में, सबसे ज्यादा बढ़े-चढ़े होते हैं। वे जैसे लड़ाकू 'क्वेकर' थे, बदला लेने वाले 'क्वेकर' थे।

इस टापू के इन लोगों में बहादुराना कामों और हमेशा तूफ़ानी जिन्दगी बिताने के कारण अद्‌भुत विचित्रताएं दिखाई देती थीं। इनके नाम धार्मिक पुस्तकों में से निकालकर रखे जाते थे—यही यहां का रिवाज था। 'स्कैंडिनेविया' के समुद्री राज्य या गीतों में गाए गए रोम के मूर्तिपूजकों की तरह की इनकी आदतें थीं। और जब किसी मनुष्य में ये सब बातें एक साथ मिल जाती हैं—जिसका दिमाग और भारी दिल, जो दूर समुद्रों के जल के साथ एकांत में वैसा ही स्थिर हो जाता है और रात के सन्नाटे में नजरें गड़ाए वह कहीं दूर देखता रहता है और पानी की गहराई में खो जाता रहता है, वैसा स्वभाव इधर-उधर के लोगों में नहीं होता। वह अपनी सदा की पाक साफ नज़रों से अपने आप प्रकृति की मिठास और कड़वाहट दोनों को हंसते हुए सहन करता है और तब घटनाओं के घेरे में अपनी मजबूत और बहादुर ज़िन्दगी के बोलते शब्दों में कहता है कि दुनिया का हर इन्सान एक है—एक विचित्र प्राणी जिसका जीवन केवल दुःखों से भरा हुआ है। और वह जन्म से ही अथवा परिस्थितियों के अनुसार प्रकृति के घेरे में रोग और उदासी को जैसे दाबे रहता है। क्योंकि हरेक इस प्रकार की तकलीफों में बढ़ा आदमी यों दुःख से ही बढ़ता है। ऐ हरेक जवान इच्छा, प्रत्येक नश्वर महानता सिर्फ एक बीमारी है। और इन सब विचित्रताओं से घुला-मिला 'क्वेकर' होता है जो अपनी व्यक्तिगत परिस्थितियों से बढ़ता है।

कैप्टेन 'पेलेग' की तरह 'बिल्दाद' भी मालदार आदमी था और अवकाश-

प्राप्त व्हेल का शिकारी। किन्तु कैप्टेन 'पेलेग' से भिन्न—जो गम्भीर बातों की ओर कभी नहीं भागते थे क्योंकि सोचते थे कि वे बातें ही सब फसाद की जड़ होती हैं, कैप्टेन बिल्दाद पूरी तरह 'नन्तुकेत' के 'क्वेकरों' की आदतों के आदमी थे और उनकी समुद्री जिन्दगी साथ ही 'हार्न' के चारों ओर टापुओं पर सुहाने जन्तुओं को देखने से वे सदा 'क्वेकर' की तरह ही तूफानी बने हुए थे। इस सबके होते हुए कैप्टेन पेलेग में दृढ़ता और एकरूपता की कमी थी। अपनी उसी दृढ़ता में भूमि पर हमला करने वालों के विरुद्ध उन्होंने हथियार नहीं उठाया जब कि खुद अतलांतक और प्रशान्त महासागरों पर हमला करते रहे और यों मनुष्य के रक्तपात के जन्मजात विरोधी होते हुए भी समुद्री मगर-मच्छों का अमाप रक्त उनके कपड़ों में लगा था। पता नहीं कैसे, लेकिन अब अपनी उम्र की इस ढलती शाम में—धर्मात्मा बिल्दाद ने उन बातों को जैसे बीती याद के रूप में भुला दिया था। और उससे अब उनके मन में कोई विशेष परेशानी भी नहीं थी। अपनी साधुओं की-सी जिन्दगी और सचाई के नतीजे से उन्होंने मान लिया था कि मनुष्य का धर्म अलग चीज है तथा यह दुनिया उससे बिल्कुल अलग। यह संसार उसका इनाम देता है। तंग से तंग कपड़े पहने हुए एक छोटे केबिन के लड़के से बढ़कर वह अपनी वास्कट पहने हुए हारपूनर बने, तब नाव के सरदार, चीफ-मेट, तब कप्तान और अन्त में कप्तान से जहाज के मालिक और अब बिल्दाद ने अपनी उस तूफानी जिन्दगी से हटकर आराम और अवकाश की जिन्दगी बितानी शुरू कर दी थी और अपनी साठ साल की उम्र में अपने जीवन के शेष दिन अपनी आमदनी की बचत पर बिताना तय कर लिया था।

अब आगे बिल्दाद के सम्बन्ध में सुना जाता था कि वह अपनी जहाजी यात्राओं के दिनों में बड़े कठोर और सख्त अधिकारी रहे थे। 'नन्तुकेत' में यह कहानी मशहूर थी कि जब कभी वह व्हेल-यात्रा पर गए तो लौटकर जहाजी कर्मचारी, घायल, थके और निष्प्राण-से अस्पताल भेजे गए। धार्मिक होते हुए भी क्वेकर होने के कारण काम लेने में वह बहुत निर्दय थे। जब बिल्दाद मुख्य मेट थे तब उनकी कड़वी आंखें देखकर कांपते हुए काम करने वालों को लगता था कि या तो हथौड़ा मार देंगे या छेदवाला कांटा। आराम और काहिली उनके सामने भागते थे। स्वयं उनका व्यक्तित्व भी कठोर परिश्रम को स्पष्ट झलकाता

था। उनके लम्बे-चौड़े और गठे हुए शरीर पर कहीं मांस का बेकार हिस्सा नहीं झूलता था, न बेकार की दाढ़ी। उनकी ठोड़ी भी मुलायम और पिचकी हुई थी वैसे ही जैसे उनका दबा-पिचका टोप।

जब मैं कैप्टेन पेलेग के साथ केबिन में पहुंचा तो ऐसा आदमी मुझे दिखाई दिया। डेक के पास की जगह कम थी और वहीं तनकर बिल्दाद बैठा था। वह सदा वैसे ही बैठता था और कभी झुकता नहीं था जिससे उसका कोट खराब न हो। उसका चौड़ा टोप पास ही था और पर तने हुए एक दूसरे पर रखे थे। उसकी पोशाक के बटन थोड़ी दूर तक बन्द थे और नाक पर चश्मा चढ़ा था। वह किसी बड़ी किताब में डूबा बैठा था।

"बिल्दाद" कैप्टेन पेलेग ने चिल्लाकर कहा—"बिल्दाद ! तुम फिर वही धर्म पुस्तक पढ़ने लगे, जिसे मेरी याद में निश्चित ही तीस साल से पढ़ रहे हो। कहां तक पहुंचे बिल्दाद।"

जैसे अपने साथी की इन बातों के आदी हो उस तरह बिल्दाद ने बिना उस बातचीत पर ध्यान दिए, खामोशी से सर ऊपर उठाया और मुझे देखकर एक प्रश्नात्मक दृष्टि पेलेग की ओर फेंकी।

"बिल्दाद ! यह कहता है कि यह हमारा आदमी है। यह जहाज पर जाना चाहता है।" पेलेग ने कहा।

"जाना चाहते हो ?" मेरी ओर मुड़ते हुए अपनी खोखली आवाज में वह बोला।

"चाहता हूं।" मैंने तपाक से उत्तर दिया।

"बिल्दाद ! इसके बारे में क्या सोचते हो ?" पेलेग ने प्रश्न किया।

"ठीक रहेगा।" मुझको गौर से देखते हुए बिल्दाद बोला और फिर किताब में डूबकर कुछ बुदबुदाता रहा, और बुदबुदाने की ध्वनि सुनाई पड़ती रही।

वह क्वेकर दिखाई दे रहा था। मैंने कुछ कहा नहीं—केवल अपने चारों ओर ध्यानपूर्वक देखता रहा। पेलेग ने तभी एक आलमारी खोलकर कुछ कागज निकाले, अपने सामने कलम-दवात रखी और छोटी मेज के पास बैठ गया। मैंने सोचना प्रारम्भ किया कि यही ठीक समय है जब मैं समुद्रयात्रा को जाते समय इन लोगों से शर्तें तय कर लूं। मैं पहले ही से जानता था कि इस व्हेल के धंधे

में वे लोग कुछ तनख्वाह नहीं देते लेकिन सभी लोग यहां तक कि कैप्टेन भी कुछ हिस्सा पाते हैं जो 'लेज़' कहलाता है और यह हिस्सा काम के अनुसार दिया जाता है। मैं यह जानता था कि बिल्कुल नया होने के कारण मुझे कुछ ज्यादा हिस्सा नहीं मिलेगा लेकिन यह ध्यान में रखकर कि मैं जहाज चलाता रहा हूं, रस्से चढ़ा-उतार सकता हूं और उसी प्रकार के दूसरे काम भी कर सकता हूं, मैं सोच रहा था कि मुझे दो सौ पचहत्तरवां 'लेज़' तो मिलना ही चाहिए—मतलब यह कि समुद्रयात्रा में जो बिक्री हो उसका दो सौ पचहत्तरवां हिस्सा; भले ही रकम कुछ भी हो। 'लेज़' को वे ज्यादा समझते थे लेकिन फिर भी वह नहीं के बराबर थी क्योंकि यदि यात्रा में भाग्य ने साथ दिया तो इतना मिल सकता था कि कपड़ों का खर्च निकल आवे। तीन साल के खाने-रहने को तो भाड़ में झोंकिए जिसके लिए हो सकता है कि मुझे एक कौड़ी भी न देनी पड़ेगी।

सोचा जा सकता है कि धन कमाने का यह ढंग तो बड़ा निम्न श्रेणी का है, और सचमुच है भी ऐसा ही—बड़ी निम्न श्रेणी का ढंग है यह। किन्तु मैं उन लोगों में से हूं जो सुनहरे भविष्य पर बहुत आश्रित नहीं रहते क्योंकि जब मैंने उन तूफानी हवाओं के निशानों पर अपने आपको छोड़ दिया तब कहीं रहूं—कुछ खाऊं—क्या अन्तर पड़ता है? दो सौ पचहत्तरवां 'लेज़' मेरे लिए काफी था किन्तु ऐसी भी सम्भावना थी कि दो सौ वां 'लेज़' मुझको दिया जाए क्योंकि मेरे कन्धे काफी बलिष्ठ और चौड़े थे।

परन्तु मुझे एक और बात से भी विश्वास नहीं हो रहा था कि मुझे लाभ का उचित हिस्सा मिलेगा और वह यह कि मैंने किनारे पर ही सुन लिया था कि कैप्टेन पेलेग तथा बिल्दाद दोनों ही पिकोड के खास मालिक हैं और दूसरे तमाम तितर-बितर मालिकों ने पूरा इन्तजाम उन दोनों के सुपुर्द ही कर रखा है। पता नहीं अपने केबिन में बाइबिल से चिपके बिल्दाद का क्या ढंग हो? अस्तु, जब पेलेग अपने चाकू से कलम बना रहा था उस समय बिल्दाद अपनी किताब से पढ़ रहा था—"अपने धन को जमीन पर मत रखो जहां कीड़े—"

"हां, कैप्टेन बिल्दाद," पेलेग ने टोका—"तुम क्या कहते हो? इस जवान को कितनी 'ले' देनी चाहिए?"

"तुम सबसे ज्यादा जानते हो। सात सौ सतहत्तर तो ज्यादा नहीं होगी या

होगी ?—जहां कीड़े-मकोड़े और जंग उसे बरबाद कर देगी किन्तु 'ले'···वह बड़बड़ाता रहा।

'ले' तो वह थी किन्तु कौन-सी ? सात सौ सतहत्तरवीं। तब बूढ़े बिल्दाद ! तुमने निश्चित कर लिया है कि हमें अधिक 'ले' नहीं पानी चाहिए क्योंकि कीड़े-मकोड़े उसे बरबाद करते हैं। यों देखने में उस 'ले' के अंकों की लम्बाई किसी को भी प्रभावित कर सकती थी परन्तु वह नहीं के बराबर थी।

"बिल्दाद ! लेकिन आंखें क्यों निकाल रहे हो ? तुम इस नौजवान आदमी को उल्लू मत बनाओ ! इसको इससे ज्यादा मिलना चाहिए।" पेलेग ने बिगड़ते हुए कहा।

"सात सौ सतहत्तर" बिल्दाद बिना अपना सर ऊपर उठाए हुए बुदबुदाया—"जितना धन हो उतना ही मन चलना चाहिए।"

"मैं इसको तीन सौ दूंगा," पेलेग ने उत्तर दिया—"बिल्दाद ! सुन रहे हो। तीन सौ वीं 'लेज' मैंने कहा।"

बिल्दार ने अपनी पुस्तक बन्द कर दी और उसकी ओर घूमकर बोला—"कैप्टेन पेलेग ! तुम्हारे भीतर एक कोमल हृदय है। लेकिन इस जहाज़ के और मालिकों ने जो भार तुम्हें सौंपा है उस कर्तव्य को तुम्हें नहीं भुलाना चाहिए। विधवाएं हैं और अनाथ हैं—और लोग भी हैं। अगर इसी तरह इस नौजवान की मेहनत का हम फालतू इनाम देंगे तो उन विधवाओं और अनाथों की रोटी छीनेंगे। सात सौ सतहत्तरवीं 'ले' कैप्टेन पेलेग।"

"तुम बिल्दाद !" उसकी ओर तेजी से देखते हुए और केबिन में जूते खड़-खड़ाते हुए पेलेग ने चीखकर कहा—"यह कितनी खराब बात है—कैप्टेन बिल्दाद ! इन मामलों में अगर मैंने तुम्हारी सलाह मानी होती तो मैं इतने भारी जहाज़ को कभी न चला पाया होता।"

"कैप्टेन पेलेग," बिल्दाद ने स्थिरतापूर्वक कहा—"तुम्हारी आत्मा भले ही ऐसी हो कि चाहे तुम दस इंच पानी के नीचे जाओ या दस फ़ैदम पानी के नीचे—इसको मैं नहीं कहता किन्तु तुम अब भी अस्थिर आदमी हो और मैं अब भी कहता हूं कि तुम्हारी आत्मा में कहीं छेद है जो तुम्हें कहीं न कहीं किसी नर्क में ज़रूर गिरा देगा, कैप्टेन पेलेग।"

"नर्क ! नर्क ! भले आदमी ! तूने मेरा अपमान किया है। यह असह्य है

तूने मेरा अपमान किया है। किसी आदमी से यह कहना कि तू नर्क में गिरेगा, कितनी बड़ी बदलमीजी है। बिल्दाद ! फिर तो कहो ! लेकिन याद रखो। मैं एक जिन्दा बकरी निगल सकता हूं—सींगों और बालों सहित। केबिन के बाहर जाओ—तुम नाक से बोलने वाले ! लकड़ी की बन्दूक के जाये ! तुझसे तो सीधा झगड़ा करना होगा।"

इतना चीखते हुए वह बिल्दाद की ओर लपका किन्तु बहुत तरकीब से बिल्दाद ने अपने को बचाया।

उस जहाज़ के दो प्रमुख और जिम्मेदार मालिकों और कप्तानों के बीच उस तरह का खतरनाक झगड़ा देखकर मेरा आधा मन तो उसी समय कहने लगा कि जिस जहाज़ की ऐसी स्थिति हो उस पर यात्रा करना तो मूर्खता है और यह सोचते हुए मैं एक किनारे हट गया जिससे कैप्टेन पेलेग के गुस्से का बचाव करने के लिए बिल्दाद उधर सरक सकें। लेकिन मुझे ताज्जुब हुआ कि वह उसी प्रकार शहतीर पर बैठ गया जैसे वहां से हटने का कोई इरादा न हो। लग रहा था जैसे पेलेग के उस प्रकार के तूफ़ान का वह आदी था। पेलेग में भी सब बड़बड़ाहट बाहर आ जाने पर लगा कि अन्दर खाली हो गया और वह भी एक खामोश भेड़ की तरह पास ही बैठ गया। यों वह अभी भी दांत मिस-मिसा रहा था जैसे बहुत क्रोध में हो। "अरे ! वह कहां चला गया ?"—'बिल्दाद ! तुम बरछे से कलम बना लेते हो। जरा इसे बनाओ तो !'''वह यह है—धन्यवाद, बिल्दाद ! हां तो नौजवान ! तुम्हारा नाम इस्माइल है। तुम हमारे साथ चलो इस्माइल। तुमको तीन सौवां 'ले' मिलेगा।"

'कैप्टेन पेलेग ! मेरे साथ मेरा एक दोस्त और है। वह भी जहाज पर जाना चाहता है। क्या मैं उसे कल ले आऊं ?" मैंने पूछा।

"ज़रूर-ज़रूर। उसे साथ ले आना। हम देख लेंगे।" पेलेग ने उत्तर दिया।

"वह कौन-सी 'ले' मांगता है ?" बिल्दाद फिर गुर्राया।

"ओह ! बिल्दाद, तुम उसकी फिक्र मत करो।" पेलेग बोला। तब मेरी ओर मुड़ते हुए उसने प्रश्न किया, "उसने क्या कभी व्हेल का शिकार किया है ?"

"जितनी मैं गिन सकता हूं उससे अधिक व्हेलें उसने मारी हैं, कैप्टेन पेलेग।"

"तब उसे साथ जरूर लाना।"

कागजों पर दस्तखत करने के बाद मैं चल दिया और सोचा जैसे एक जरूरी काम निबट गया। साथ ही यह भी कि 'योजो' ने इसी के सम्बन्ध में संकेत किया होगा कि मैं और 'क्वीकेग' इस पर ही निःसन्देह यात्रा करें।

उसके बाद मेरे मस्तिष्क में एक और विचार आया कि इतना सब होने के बाद भी कैप्टेन से तो मुलाकात ही नहीं हुई। ऐसा होता भी है कि शिकारी जहाज जब अपनी सब तैयारी कर लेता है तो अन्त में कैप्टेन आकर उसे संभाल लेता है। तब तक वह अपने निजी कामों में फंसा रहे तो कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि बन्दरगाह पर आकर वह जहाज मालिकों के सुपुर्द कर स्वतन्त्र हो जाता है। इतना सब जानते हुए भी मैंने कैप्टेन पेलेग से पूछा कि कैप्टेन आहाब से कहां भेंट होगी?

"अब तुम्हें कैप्टेन आहाब से क्या लेना है? सब ठीक है, समझ लो तुम्हें जहाज मिल गया।"

"हां, लेकिन मैं उनसे मिलना चाहता हूं।"

"मैं कह नहीं सकता कि उनसे अभी मुलाकात हो जाएगी। पता नहीं उसे क्या हुआ। बीमार है या ठीक। जो भी हो, नौजवान! वह हमेशा मेरे पास भी नहीं रहता। तुम उसे पसन्द भी नहीं करोगे। कैप्टेन आहाब भी विचित्र आदमी है—लेकिन भला आदमी। बढ़िया। कम बोलता है, बोलता है तो तुम्हें जरूर सुनना पड़ेगा। पहले सावधान हो जाना। कैप्टेन आहाब कालेजों में भी रहा है और नरभक्षकों में भी। लहरों से भी अधिक आश्चर्यजनक चीजें देखी हैं उस आदमी ने। व्हेल से अधिक भयानक शत्रुओं पर भी उसका भाला चलता है। इस टापू में उसका बर्छा सबसे खतरनाक है। वह पेलेग नहीं है न बिल्दाद। वह आहाब है आहाब। पुराने जमाने का बादशाह, लड़के।"

"और बड़ा शैतान! जब वह चालाक और पाजी बादशाह मारा गया था तब क्या कुत्तों ने उसकी बोटी नहीं नोची थी?"

"इधर आओ—इधर" विचित्र ढंग से देखते हुए पेलेग बोला—"लड़के! अब कभी 'पिकोड' पर यह मत बोलना। कहीं भी मत कहना। कैप्टेन आहाब

ने अपना नाम खुद नहीं रखा है, वह उसकी सनकी मां की सनक थी और वह तभी मर गई थी जब आहाब केवल बारह महीने का था। और बूढ़ी 'स्कवा'[1] टिस्टिग ने 'गे हेड' में कहा था कि यह नाम भाग्यशाली होगा। सम्भव है उसी तरह के दूसरे मूर्ख भी ऐसी ही बात कहें। मैं तुम्हें सावधान करना चाहता हूं। यह झूठ है। मैं कैप्टेन आहाब को अच्छी तरह जानता हूं। उसके साथ मेट होकर मैं सालों पहले घूमा हूं। जानता हूं कि वह क्या है—एक अच्छा आदमी लेकिन धर्मात्मा नहीं। मैं यह भी जानता हूं कि वह सदा बहुत खुश नहीं रहता। मैं जानता हूं कि जब से उस व्हेल ने उसका पैर कुतर डाला है तब से वह गम्भीर भी हो गया है, कभी-कभी जालिम भी हो जाता है। नौजवान! मैं तुम्हें यह भी बताना चाहता हूं कि किसी 'मूडी' या गम्भीर अच्छे कैप्टेन के साथ यात्रा करना उस कैप्टेन से कहीं अच्छा है जो हंसते रहकर भी बेहूदा हो। कैप्टेन आहाब का नाम बुरा है इस लिए यह मत सोचना कि वह आदमी खराब है। उसके एक पत्नी भी है—एक खूबसूरत खामोश लड़की। उस लड़की से उसके एक बच्चा है। इन कारणों से भी आहाब कभी बुरा आदमी नहीं हो सकता। आहाब में मनुष्यता के अनेक गुण हैं, मेरे लड़के।"

मैं जब चला तो विचारमग्न था। कैप्टेन आहाब के प्रति मैं समवेदना में भर रहा था। मुझे उनके पैर के लिए दुःख भी हो रहा था। एक प्रकार का डर भी था, जिसका मुझे स्वयं ही पता न था। मैं आहाब के सम्बन्ध में अधिक सोचते-सोचते दूसरे विचारों में भी उलझा और उसे भूलकर चलता चला गया।

## १७

'क्वीकेग' का 'रमदान' चूंकि पूरे दिन जारी रहता था इसलिए मैंने रात तक उसे छेड़ना ठीक नहीं समझा, क्योंकि हरेक के धार्मिक मामलों को मैं बहुत श्रद्धापूर्वक देखता हूं भले ही उन कार्यों में कुछ ऐसे भी हों जिन्हें देखकर हंसी आए किन्तु मैं किसी के धर्म को हल्के रूप में नहीं देखता। यों तो इस

---

१. अमरीका की इंडियन महिला व पत्नी।

जगतीतल में असंख्य धर्म हैं और न मालूम कैसे-कैसे रूप में माने जाते हैं।

हम 'प्रेस्बीटेरियन' ईसाइयों को प्रत्येक धर्म को बहुत उदारतापूर्वक देखना चाहिए और किसी की इसलिए खिल्ली नहीं उड़ानी चाहिए कि हम ऊंचे हैं, दूसरा मूर्तिपूजक है या ऐसा ही कुछ। अब 'क्वीकेग' को देखिए। वह अपने 'योजो' और 'रमदान' को लेकर अजीब बेहूदी बातों में फंसा हुआ है—लेकिन उससे क्या? 'क्वीकेग' को अपने में सन्तोष है तो होना भी चाहिए। उसमें किसी तरह की बहस से काम चलेगा ही नहीं। धार्मिक मामलों में 'प्रेस्बीटेरियन' ईसाई हों, मूर्तिपूजक हों या कोई और, सभी कुछ न कुछ सनक से भरे हुए हैं और हर जगह सुधार की आवश्यकता है।

शाम होते-होते जब मैंने अनुमान लगाया कि अब तक सब धर्म-कर्म निबट चुका होगा तो मैंने उसके कमरे तक जाकर दरवाजा खटखटाया लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। मैंने उसे खोलने की चेष्टा भी की तो वह अन्दर से बन्द था। चाबी वाले छेद से मैंने पुकारा 'क्वीकेग'—लेकिन सब तरफ खामोशी थी। "मैं कहता हूं क्वीकेग! तुम बोलते क्यों नहीं? मैं हूं—इस्माइल।" लेकिन हर तरफ शान्ति थी। मैं कुछ घबड़ाया। मैंने उसको काफी समय दिया था। अब मैं सोचने लगा उसे कहीं मिर्गी का दौरा तो नहीं आ गया? मैं फिर उसी छेद से झांका लेकिन दरवाज़ा कुछ ऐसे कोने में था कि कमरे में कुछ दिखाई ही नहीं दिया। मैं सिर्फ पलंग का पायताना और दीवाल की एक धारी-सी देख पा रहा था। मुझे यह देखकर और भी ताज्जुब हो रहा था कि जिस हारपून को मकान मालकिन ने ऊपर ले जाने को मना कर दिया था वह दीवाल के सहारे खड़ा है। मैंने सोचा—यह तो विचित्र बात है। लेकिन जब हारपून सामने ही रखा है तो कोई खास बात नहीं है, 'क्वीकेग' अन्दर ही होगा क्योंकि बिना हारपून के वह एक कदम नहीं बढ़ता है।

"क्वीकेग! क्वीकेग!" मैं चिल्लाया। लेकिन सब खामोश। कुछ ज़रूर हुआ। मिर्गी! मैंने दरवाजा तोड़कर घुसने की कोशिश की लेकिन वह काफी मजबूत था। सीढ़ियों से नीचे भागते हुए मुझे जो पहले मिला—कमरे की नौकरानी—उसी से मैंने अपना शक बताया।

"लो! लो!" वह चिल्लाई—"मैंने सोचा कुछ मामला ज़रूर होगा। नाश्ते के बाद जब मैं बिस्तर ठीक करने गई तो मैंने देखा कि दरवाज़ा बन्द

था। चूहे तक की आवाज नहीं सुनाई दे रही थी। तब से वही खामोशी। लेकिन मैंने सोचा कि आप लोग अपना सामान बन्द करके कहीं घूमने चले गए होंगे।...लो! लो! मैडम! मिस्ट्रेस! कत्ल! खून! मिसेज हूसी!" मिर्गी!...इन चीखों के साथ वह रसोई की ओर भागी। पीछे-पीछे मैं भी।

एक हाथ में मसाले का बर्तन और दूसरे में कोई रसीली चीज लिए मिसेज हूसी सामने निकल पड़ी। लग रहा था जैसे कोई चीज तैयार कर रही थी और अपने काले रंग के छोटे लड़के नौकर को डपट रही थी।

"लकड़ी-घर किधर है?" मैं चिल्लाया—"किधर से जाना होगा। भगवान के लिए दौड़िए। दरवाजा तोड़ने के लिए कोई चीज लाइए। कुल्हाड़ी! कुल्हाड़ी!—उसने कुछ कर लिया। विश्वास कीजिए।"—इस प्रकार चिल्लाते हुए खाली हाथों मैं फिर सीढ़ियों पर दौड़ चला। मिसेज हूसी ने अपने हाथ खाली किए जैसे उनके मसाले की जगह चेहरे का रंग उड़ गया।

"जवान आदमी, तुम्हें क्या हुआ?"

"कुल्हाड़ी लाइए! भगवान के लिए। डाक्टर के लिए दौड़िए—कोई भी। तब तक मैं दरवाजा तोड़ता हूं।"

"इधर देखो" मकान मालकिन ने जल्दी से कहा—"क्या जनाब! मेरा दरवाजा क्यों तोड़ रहे हैं?" कहते हुए उसने मेरा एक हाथ पकड़ा। "तुमको क्या हुआ है? जहाजी आदमी! तुमको क्या हुआ है?"

जितना भी सम्भव हो सकता था शान्तिपूर्वक किन्तु फुर्ती से मैंने उसे सब कुछ समझाने की चेष्टा की। अचानक ही उसके दोनों हाथ जुड़ गए और तब वह बोली—"नहीं। जब से मैंने उसे यहां रखा था तब से उसे देखा ही नहीं।" तब जीने में ही एक घिरी हुई जगह तक वह गई और देखकर तेजी से लौटी। उसने मुझे बताया कि 'क्वीकेग' का हारपून गायब है।

"उसने आत्महत्या कर ली" वह चिल्लाई, "हे भगवान्। स्टिग की कहानी फिर दोहरा दी गई। वह दूसरा बिस्तर उठा। परमात्मा! उसकी मां को तसल्ली दे। यह तो मेरे मकान की सत्यानाशी है। क्या उस बेचारे के कोई बहन थी? वह लड़की कहां है?—ऐ बेट्टी! जरा स्नेअर्ल्स पेन्टर के यहां तो जा और एक साइनबोर्ड बनवाकर ला:

'यहां आत्महत्या करने की इजाजत नहीं है।'

'छज्जे में सिगरेट पीना मना है।'
हो सकता था दोनों चिड़ियां एक साथ ही मर जातीं। मौत ? हे भगवान्! उसके भूत को तसल्ली दे। वह वहां क्या शोर हो रहा है? तुम नौजवान आदमी! उधर देखो तो।"

मेरे पीछे भागते हुए उसने मुझे फिर पकड़ लिया जैसे मैं फिर दरवाज़ा तोड़ने जा रहा हूं।

"मैं ऐसा नहीं करने दूंगी। मैं अपना मकान बरबाद नहीं होने दूंगी। किसी ताले वाले के यहां जाओ। वह यहां से एक मील पर रहता है। लेकिन रुको।" तब उसने अपनी बगल की जेब में हाथ डाला—"यह एक चाभी है जो ठीक लग जाएगी। मेरा ध्यान है। देखें।" कहते हुए उसने चाभी लगाई लेकिन अफ़सोस। 'क्वीकेग' का चिपका दरवाजा हिला तक नहीं।

"इसे तोड़ना ही पड़ेगा" कहते हुए मैंने एक-दो धक्के लगाए तभी मकान-मालकिन ने मुझे पकड़कर दरवाज़ा न तोड़ने के लिए फिर क़सम दिलाई। लेकिन मैंने उससे अपने को छुटकारा दिलाकर अपने शरीर का पूरा धक्का दरवाज़े पर दिया।

चड़चड़ाहट की आवाज़ के साथ दरवाज़ा पूरा खुल गया तब दरवाज़े की धमक से बगल और छत का प्लास्टर भड़भड़ाकर जमीन पर गिर गया और हे भगवान्! वह सामने 'क्वीकेग' बड़े आराम से बैठा था और योजो को अपने सर पर रखे हुए था। वह न इधर देख रहा था और न उधर और ऐसे खामोश बैठा था जैसे कोई नक्काशीदार बुत।

"क्वीकेग!" उसके नज़दीक जाकर मैंने पुकारा—"क्वीकेग! तुम्हें क्या हुआ?"

"क्या समूचे दिन यह ऐसे ही नहीं बैठा रहा है?" मकान मालकिन ने पूछा।

हम तो सब कुछ बोलते रहे लेकिन उधर से एक शब्द भी बाहर नहीं आता। मैं तो जैसे उसका आसन बदलने को उसे जोर से झकझोरने वाला था क्योंकि उसके बैठने का वह ढंग अजीब बेहूदा व डरावना था खासतौर पर बिना खाने के वह आठ-दस घंटों से यों ही बैठा था।

"मिसेज़ हूसी!" मैंने कहा—"यह हर हालत में जिन्दा है। इसलिए

मेहरबानी करके मुझे यों ही छोड़ दीजिए। मैं इस अजीब हालत से खुद ही निबट लूंगा।"

मकान मालकिन के जाने के बाद दरवाजा बन्द करते हुए मैंने कोशिश की कि क्वीकेग एक कुर्सी पर बैठ जाए लेकिन बेकार। वह वहां बैठा रहा और जो कुछ वह कर सकता वह इतना क मेरी सब नर्म कोशिशो और तरकीबों के बाद भी—वह एक इंच भी न हिला, न एक शब्द बोला, न मेरी ओर देखा, यहां तक कि मैं वहां हूं—यह देखने की भी तकलीफ उसने नहीं की।

उसके इस रमजान को देखकर मैं परेशान था कि अच्छा रमजान है। क्या अपने टापू में भी ये लोग इसी तरह के स्वांग भरते रहते हैं? ऐसा ही है। यह इनकी जाति का असर है। तब इसे यों ही आराम करने दिया जाए। जल्दी या देर में—यह उठेगा तो है ही। हे भगवान! शुक्र है कि यह कोई हमेशा के लिए तो है नहीं। इनका यह रमजान तो साल में एक बार आता है और मैं नहीं सोचता कि इसका टाइम ठीक एक ही-सा होता हो।

तब मैं नीचे खाने चला गया। बहुत देर तक मैं कुछ मल्लाहों की लम्बी कहानियों को सुनता रहा जो अपनी प्लम-पुडिंग-वायेज (यात्रा) से अभी ही लौटे थे। व्हेल के शिकारकी छोटी जहाजी यात्रा जिसमें वे छोटे स्कूनर जहाज या ब्रिग में बैठकर जाते हैं और अतलांतक महासागर की उत्तर की ओर एक खास लाइन तक रहते हैं। हां, तो रात के ग्यारह बजे तक मैं इन कहानियों को सुनता रहा और तब यह सोचकर उठा कि अब सोना चाहिए क्योंकि अब तक 'क्वीकेग' का रमजान निबट चुका होगा। लेकिन नहीं—वह ठीक उसी जगह था जहां मैं छोड़ गया था और अपनी जगह से एक इंच भी टस से मस नहीं हुआ था। लेकिन उसे देखकर अब मैं ऊब रहा था—भला बताइए! नासमझी और पागलपन की हद है कि इस तरह समूचे दिन, और आधी रात पलथी मारे बैठे रहना और एक लकड़ी का टुकड़ा खोपड़ी पर टिकाए रहना।

"क्वीकेग! भगवान के लिए अब हिलो-डुलो, खाना खाओ। क्वीकेग, तुम भूखों मर जाओगे।" लेकिन वह एक शब्द नहीं बोला।

उससे निराश होकर मैंने सोचा कि मैं सोऊं क्योंकि कभी न कभी तो वह उठेगा ही। लेकिन पलंग पर जाने के पहले सर्दी का ध्यान कर मैंने शेर के

खाल की अपनी वास्केट उसके ऊपर डाल दी। देर तक मुझे नींद नहीं आई। तब मैंने बत्ती बुझा दी। सिर्फ एक ही तस्वीर—क्वीकेग चार फीट से भी कम दूर पर बैठा है—सर्दी और अंधेरे में जमीन से चिपका, मुझे बहुत बुरा लग रहा था। जरा सोचिए तो समूची रात उस कमरे में सोना जहां एक मूर्तिपूजक एक आसन पर बैठा रमजान से चिपका हो।

लेकिन किसी तरह मैं सो गया। दिन निकला। तब भी मैंने देखा कि 'क्वीकेग' जैसे जमीन में पेंचों से कस दिया गया हो। लेकिन ज्योंही सूरज की पहली किरण दरवाजे में घुसी वैसे ही अपने जमे हुए जोड़ों और घोंटुओं को संभालता क्वीकेग खुश होता हुआ मेरी ओर लपका। अपने माथे से मेरे माथे को दाबा और बोला कि उसका रमजान खत्म हो गया।

अब, जैसा कि मैंने पहले कहा था, मुझे किसी के धर्म पर तब तक कोई एतराज नहीं है जब तक कोई किसी को मार नहीं डालता या उसकी बेइज्जती करना वह भी सिर्फ इतनी-सी बात पर कि उसके धर्म पर दूसरे का विश्वास नहीं है। लेकिन अब किसी का धर्म सचमुच एक पागलपन-सा दिखाई दे, जो उसे खुद को तकलीफ दे, और वह इस दुनिया को तकलीफ देने वाली सराय बना दे तब यह आवश्यक है कि उसके व्यक्ति को एक तरफ हटाकर उस बात पर उससे बहस की जाए।

उसी तरह मैंने 'क्वीकेग' से भी बहस की। मैंने कहा—"क्वीकेग! बिस्तर पर लेटकर मेरी बात सुनो।" तब मैंने आदिकाल से धर्म के प्रारम्भ की बात शुरू की और आज के जमाने के बहुत-से धर्मों की बातें शुरू करते हुए मैंने बहुत कोशिश करके 'क्वीकेग' को समझाया कि इस प्रकार ईसाइयों की लेन्ट या मुसलमानों का रमजान या और लोगों की वैसी इबादतें जो इस तरह सर्दी में गुमसुम होकर अकेले में की जाती हैं—इनसे बड़ी बेवकूफी दूसरी नहीं है। इससे तन्दुरुस्ती खराब होती है। वह आत्मा के लिए भी बेकार है और संक्षेप में स्वास्थ्य-रक्षा और साधारण अक्ल के कानूनों के खिलाफ है। मैंने उससे कहा कि जब वह और मामलों में इतना समझदार जंगली है तो अपने रमजान के मामले में इतना बेवकूफ क्यों है? इसके अलावा मैंने उससे कहा कि उपवास करने से बदन सूख जाता है। इससे आत्मा भी सूखती है। और यही नहीं उपवास करके जितने विचार मन में आते हैं वे आधे सूखे होते हैं। यही कारण है कि पेट की

बीमारी और अजीर्ण के रोगी—इन धर्म के अगुआ लोगों ने अपने आगे आनेवाले बाल-बच्चों को ऐसी उदासी भरी बातें सिखाईं। एक ही शब्द में मैंने 'क्वीकेग' से कहा कि वह कैसा वाहियात दिन था जब पेट में न पचने वाली सेव की पकौड़ी से मन में सबसे पहले यह विचार आया कि भूखे रहकर धर्म करो और तब से ही इस रमजान की नींव पड़ गई।

तब मैंने 'क्वीकेग' से पूछा कि कभी उसे तो बदहज़मी नहीं हुई थी ? उसने कहा—"नहीं। सिर्फ एक खास मौके पर। वह भी उस समय जब कि उसके बादशाह पिता ने एक भारी लड़ाई की जीत की दावत की थी जिसमें दोपहर के दो बजे तक पचास दुश्मन मार डाले गए थे और शाम तक वे सब भूनकर चट कर दिए गए थे।"

"क्वीकेग ! और ज्यादा नहीं। इतना काफी है।" कांपते हुए मैंने कहा। वह आगे कुछ कहे उसके पहले ही सारा नज्जारा मेरी आंखों के सामने घूम गया। एक बार मेरा एक दोस्त उस टापू में गया था और लौटकर उसने बताया कि वहां का यह रिवाज था कि जब भी कोई लड़ाई जीती जाती थी तो सब मरे हुए दुश्मनों को किसी मैदान या बगीचे में भट्टी पर चढ़ा दिया जाता था। उन पर नारियल का तेल और फल-मेवा डालकर पकाया जाता था और जीतने वाले की ओर से सौगात के रूप में उसके दोस्तों में वे तश्तरियां बांटी जाती थीं।

जो भी हो, मेरा ध्यान है कि धर्म सम्बन्धी मेरी बातों का 'क्वीकेग' पर कोई असर नहीं पड़ा। पहली बात तो यह कि वैसे खास मामले में वह बहुत उदासीन दिखाई दिया। दूसरे यह कि मेरी आधी बातें भी उसके पल्ले नहीं पड़ीं क्योंकि वह समझ ही नहीं पाया और तीसरे यह कि वह खुद समझता था कि मुझसे ज्यादा धर्म वह जानता है। वह मुझे खुद ही ऐसे देख रहा था जैसे सोच रहा हो कि इतना समझदार नौजवान इतना बेवकूफ है कि मूर्तिपूजा की पवित्रता के सम्बन्ध में ऐसे भोंड़े विचार रखता है।

अन्त में हम उठे। कपड़े पहने। 'क्वीकेग' ने हर तरह के चाउडर का छककर नाश्ता किया जिससे मकान-मालकिन को रमजान के कारण घाटा न हो और तब सटरगश्ती करते हुए हम पिकोड की ओर बढ़ गए।

## १८

घाट पर पहुंचकर हम जहाज़ की तरफ बढ़े ही थे कि कैप्टेन पेलेग ने अपने शामियाने से खुरखुरी आवाज़ में कहा—"मैं नहीं जानता था कि तुम्हारा दोस्त एक नरभक्षी होगा। और जहाज़ पर मैं किसी नरभक्षी को तब तक नहीं चढ़ने दूंगा जब तक उसके कागज़ न देख लूं।" उस समय 'क्वीकेग' अपने हाथ में हारपून लिए हुए था।

"कैप्टेन पेलेग! इससे क्या मतलब?" अपने साथी को किनारे पर ही छोड़कर, रस्सों की किलेबन्दी पर उछलकर चढ़ते हुए मैंने कैप्टेन पेलेग से पूछा।

"मेरा मतलब है कि उसे अपने कागज़ दिखाने होंगे।"

"हां।" शामियाने में ही कैप्टेन पेलेग के सर के पीछे से अपनी खोपड़ी हिलाते हुए खोखली आवाज़ में बिल्दाद बोला—"उसको यह दिखलाना पड़ेगा कि उसने अपना धर्म परिवर्तन कर लिया है। अज्ञानता का बच्चा!" क्वीकेग की ओर मुड़ते हुए उसने जोड़ दिया—"क्या तुम किसी ईसाई गिर्जे में शामिल हो गए हो?"

"क्यों?" मैंने पूछा—"वह अपने सबसे प्राचीन ईसाई धर्म-समाज के गिर्जे का सदस्य है।"—यहां पर यह जानना आवश्यक है कि नन्तुकेत के जहाज़ों पर यात्रा करने वाले बर्बर आखिरकार किसी न किसी गिर्जे में सम्मिलित हो ही जाते थे।

"प्राचीन ईसाई धर्म-समाज का गिर्जा? क्या मतलब?" बिल्दाद चीखा—"क्या वही जो डीकन ड्यूटेरोनोमी कालमैन के सभा-गृह में इबादत करता है?" कहते हुए उसने अपना चश्मा उतारा और अपने लम्बे-चौड़े रूमाल से उसके शीशों को पोंछकर सावधानी से फिर नाक पर चढ़ाते हुए वह शामियाने से बाहर निकल आया। रस्सों के जाल पर झुककर उसने 'क्वीकेग' को बहुत गौर से देखा।

"यह कब से सदस्य है?" मुझको सम्बोधित करते हुए उसने प्रश्न

किया—नौजवान आदमी ! मेरा ख्याल है बहुत दिन नहीं हुए ।"

"नहीं" पेलेग बोल पड़ा—"उसने अपने आपको धर्म में दीक्षित भी नहीं किया है वर्ना उस शैतान के चेहरे के नीले चकत्ते कुछ कम हो जाते ।"

"तब बताओ कि क्या यह फिलिस्तीन[1] डीकन ड्यूटेरोनोमी की सभा का स्थायी सदस्य है ? मैंने उसे वहां कभी जाते हुए नहीं देखा जबकि मैं हर इतवार को जाता हूं ।" बिल्दाद बड़बड़ाया ।

"डीकन ड्यूटेरोनोमी या उसकी किसी मीटिंग की बात मैं नहीं जानता । हां, मैं इतना जरूर जानता हूं कि क्वीकेग प्राचीन ईसाई धर्म-समाज गिर्जे का सदस्य है । वह तो खुद ही डीकन[2] है । जी हां !" मैंने उत्तर दिया ।

"नौजवान !" बिल्दाद ने गुर्राकर कहा—"तू मेरे साथ चालाकी कर रहा है । तू छोकरे हिट्टी[3] । अपनी बात साफ कर । तेरा मतलब किस गिर्जे से है ? जवाब दे ।"

अपने को थोड़ी मुश्किल में पाकर मैंने कहा—"महोदय ! मेरा मतलब उसी अति प्राचीन कैथोलिक गिर्जे से है जिसके हम सब सदस्य हैं—मैं, आप, कैप्टेन पैलेग, क्वीकेग । अपनी मां के सभी बेटे, यहां तक कि हर आत्मा ! धर्म मानने वाली समूची दुनिया उसी पहली धर्म-समाज की सदस्य है—अपने भारी विश्वास को लेकर । हां, आजकल कुछ ऐसे झक्की और सनकी लोग जरूर हैं जो किसी दूसरी तरह से सोचते हैं और हम सब उनका साथ देते हैं ।"

"गठबन्धन, तुम्हारा मतलब है हम गठबन्धन करते हैं", चिल्लाते हुए पास आकर पैलेग ने कहा—"नौजवान ! इससे तो अच्छा है कि तुम किसी धर्म-

---

१. पैलेस्टाइन के समुद्रतट पर रहने वाली लड़ाकू जाति फिलिस्तीन कहलाती है । पैलेस्टाइन में जिस समय हिब्रू-शासन था उन्हीं दिनों, इस जाति का भी चरमोत्कर्ष काल था । फिलिस्तीनों और हिब्रुओं में जानी दुश्मनी थी, इसलिए हिब्रू पुस्तकों में उन्हें बहुत ही बुरा लिखा गया है ।

२. सबसे छोटी हैसियत का पादरी ।

३. हिट्टी नामक जाति ईसा के जन्म से लगभग हजार बरस पहले पश्चिमी एशिया के विशाल भूभाग में बसी थी । अनुमान किया जाता है कि उनमें आर्यों और काकेशियनों के रक्त का सम्मिश्रण है ।

उपदेशक जहाज़ पर चले जाओ। इस ऊंचे मस्तूल वाले जहाज़ पर जाकर क्या करोगे? इससे अच्छा प्रवचन मैंने इसके पहले कभी नहीं सुना। डीकन ड्यूटेरोनोमी—फादर मैपिल इतने मशहूर हैं, फिर भी वे इससे अच्छा प्रवचन नहीं दे सकते। ऊपर आओ, ऊपर आओ। कागज़ों की फिक्र मत करो। मैं कहता हूं—क्यूहौग से बता दो—तुम उसे यही तो कहकर पुकारते हो? क्यूहौग से कहो कि क़दम बढ़ावे। उधर लंगर की तरफ से। यह कैसा हारपून लिए हुए है? वह तो कोई बढ़िया चीज़ मालूम देती है और वह उसे पकड़े भी बड़े ढंग से है। मैं कहता हूं—क्यूहौग! या जो कुछ भी तुम्हारा नाम हो, तुम कभी व्हेल-नाव पर चढ़े हो? क्या तुमने कभी कोई मछली मारी है?"

बिना एक शब्द बोले, विचित्र ढंग से 'क्वीकेग' ने एक उछाल ली और रस्सों की किलेबन्दी के ऊपर चढ़ आया और वहां से उधर जा पहुंचा जहां कुछ व्हेल-नावें रखी थीं। तब अपने पैर के घुटने को छूते हुए जैसे इबारत कर रहा हो, हारपून ठीक कर कुछ ऊटपटांग तरीके से वह चिल्ला पड़ा:

"कैप्टेन! वहां पानी में टूम को काला तारकोल का-सा बुलबुला दिखाई देता है—वो?···समझो कि वह व्हेल की एक आंख है—तब?" कहते-कहते उसने निशाना लगाकर हारपून फेंका कि वह बिल्दाद के सिर के पास से होकर जहाज़ के डेक को पार करके चमकदार बुलबुले से जा लगा और बुलबुला गायब हो गया।

"अब!" हारपून की डोरी को खींचते हुए 'क्वीकेग' बोला—समझ लो कि अगर वह व्हेल की आंख थी तो व्हेल मर गई।"

"जल्दी बिल्दाद!" क्वीकेग के हारपून के इतने पास से निकलने पर घबड़ाकर केबिन की ओर पलटकर आते हुए पेलेग ने चिल्लाते हुए कहा—"जल्दी करो बिल्दाद! जहाज के कागज़ ले आओ। मैं इस 'हेजहौग' मेरा मतलब है क्यूहौग को अपने साथ जरूर ले चलूंगा। क्यूहौग! इधर देखो। तुमको नब्बेवीं 'ले' मिलेगी। नन्तुकेत के किसी जहाज़ में आज तक किसी हारपून वाले को इतनी नहीं मिली।"

अब 'क्वीकेग' भी मेरे जहाज़ का साथी होगया।

खानापूरी खत्म कर लेने के बाद पेलेग ने मुझसे कहा—"मेरा ख्याल है—

क्यूहौग पढ़ा-लिखा नहीं है।'''क्यूहौग ! तुम दस्तखत कर सकते हो या यह निशान लगाओगे ?"

दो-चार मौकों पर इस तरह की खानापूरी 'क्वीकेग' कर चुका था, इसलिए वह घबड़ाया नहीं और बड़े तेवर से पेलेग का कलम लेकर उसने कागज़ की सही जगह पर—अपने हाथ पर गुदे हुए एक निशान से मिलता-जुलता निशान बना दिया जो इस प्रकार का था :

क्यूहौग

उसका ❋ निशान

कैप्टेन बिल्दाद इतनी देर खामोश बैठे रहे और तब 'क्वीकेग' की ओर गौर से देखते हुए उन्होंने अपने कोट की खोल सरीखी जेब से बहुत-से पर्चे निकाले जिनमें से एक था—'आखिरी दिन आ रहा है, एक क्षण भी बर्बाद मत करो।' और उन्होंने क्वीकेग का हाथ उस किताब पर रखते हुए कहा—"अंधेरे के बच्चे, मैं इस जहाज़ का हिस्सेदार हूं। मुझे अपना फर्ज पूरा करना होगा। जो भी कर्मचारी इस जहाज़ पर होंगे उनकी आत्मा की शुद्धि की जिम्मेदारी मेरी है। हो सकता है तुम अभी भी वही गंदे मूर्तिपूजक हो। हे भगवान ! बहुत ठीक ! सब शुद्ध रहे।'''"

इस प्रकार कुछ धार्मिक, कुछ घरेलू, कुछ फालतू बड़बड़ाहट में बिल्दाद बकता रहा।

"ठहरो ! ठहरो ! बिल्दाद, रुको। तुम हमारे हारपूनर को बिगाड़ दोगे।" पेलेग बोला—"धर्म मानने वाला पवित्र हारपूनर कभी भी अच्छा शिकारी नहीं बन सकता और न जहाज का सफर कर सकता है। वह तो मछली का लोभ ही उसे घर के बाहर निकाल लाता है। अगर हारपूनर मछली का पीछा नहीं कर सकता तो वह बेकार है। इस नन्तुकेत और वाइनयार्ड में एक सबसे बहादुर म[illegible]आ शिकारी नट स्वेन था। वह एक बार पूजा को गया और फिर काम का नहीं रहा। वह अपनी आत्मा की गन्दगी से इतना डर गया कि व्हेल के सामने पहुंचने पर कांप कर चीख पड़ता था।"

"पेलेग ! पेलेग !" बिल्दाद ने अपनी आंखें और हाथ झुलाते हुए कहा—"तुमने और मैंने अपनी-अपनी जगह बहुत-से खतरनाक वक्त देखे हैं। पेलेग ! मौत का डर क्या है—तुम जानते हो। तब तुम इस तरह की ऊटपटांग बातें क्यों करते हो ? पेलेग ! अपने दिल में तुम अपनी तरह से विश्वास करते ही हो। बोलो। यही पिकोड जब जापान में तूफान में फंस गया था और तुम कैप्टेन आहाब के मेट थे और जब उस यात्रा में इसके तीन मस्तूल बह गए थे तब तुमने क्या मौत और उस परमात्मा के जजमेंट[1] की बात नहीं सोची थी ?"

"सुनो ! अब इसकी सुनो।" पेलेग ने केबिन में इधर-उधर टहलते हुए कहा—"तुम सब इसकी सुनो। सोचो। हर मिनट जब हम सोच रहे थे कि जहाज़ डूब जाएगा, तब मौत और जजमेंट कैसा ? जब तीनों मस्तूल बह गए थे। हर तरफ से समुद्र हम पर चढ़ रहा था। तब मौत और जजमेंट की सोचना ? नहीं-नहीं, मौत के लिए सोचने का वह वक्त ही नहीं था। कैप्टेन आहाब और मैं दोनों ही जिन्दगी की बात सोच रहे थे। सोच रहे थे कि सब की जानें कैसे बचाई जाएं। मुख्य मस्तूल को कैसे संभाला जाए ? कैसे नजदीकी बन्दरगाह तक पहुंचा जाए ? हम यही सोच रहे थे।"

बिल्दाद आगे कुछ नहीं बोला। अपने कोट के बटन लगाते हुए वह डेक पर चढ़ गया। हम भी साथ चले। वहां कुछ कारीगरों को वह काम करते देखने लगा।

## १९

"जहाज़ियो ! क्या तुम लोगों ने इस जहाज़ पर सफर किया है ?"

मैं और 'क्वीकेग' अभी-अभी पिकोड से उतरे थे और पानी पार करके सूखे की ओर बढ़ रहे थे। दोनों ही अपने-अपने विचारों में उलझे थे। तभी उस अजनबी के वे शब्द हमारे कानों में गूंजे जो सामने खड़ा जंभाई ले रहा था और अपनी मोटी उंगली से जहाज़ की ओर संकेत कर रहा था। वह एक गंदी और

१. धार्मिक विश्वास, कि कयामत के दिन खुदा सबका फैसला करता है।

मैली-कुचैली वास्केट पहने हुए था तथा थेगली लगा पायजामा। काले रंग के एक रूमाल के चीथड़े से वह अपनी गर्दन बांधे था। चेचक के दागों से उसका चेहरा बुरी तरह भरा हुआ था।

"क्या तुम लोगों ने उस पर सफर किया है ?" उसने दोहराया।

"तुम पिकोड के लिए कह रहे हो ?" उसको गौर से देखते रहने के ध्यान में मैंने टोककर पूछा।

"हां, पिकोड ! वह जहाज़, वहां," कहते हुए उसने अपनी पूरी बांह आगे बढ़ा दी और तब झट से उसे खींचकर अपनी उंगली उधर बढ़ाता रहा।

"हां, हमने अभी-अभी कागजों पर हस्ताक्षर किए हैं," मैंने कहा।

"तुम्हारा मन तो नहीं डूब रहा ?"

"किसलिए ?"

"हो सकता है तुमको ऐसा कुछ न लग रहा हो," उसने जल्दी से कह डाला—"इससे कोई फर्क नहीं। बहुत-से ऐसे लोग होते हैं जिनके दिल मजबूत होते हैं। परमात्मा का शुक्र है। आत्मा तो किसी गाड़ी के पांचवें पहिए जैसी है।"

"अरे जहाजी ! तुम क्या बक रहे हो ?" मैंने पूछा।

"उसमें है तो बहुत, लेकिन, जैसे उस तरह की कमी वह हरेक में पूरा करने का दम भरता है।" उस अजनबी ने योंही बड़बड़ाते हुए कहा और 'उस' शब्द पर काफी जोर दिया।

"क्वीकेग ! आओ चलें। इसका कोई पेंच कहीं से ढीला है। यह किसी के बारे में कुछ कह रहा है जिसे हम नहीं जानते," मैंने कहा।

"रुको !" अजनबी चिल्लाया—"तुमने ठीक कहा—क्या तुमने अभी तक उस ओल्ड थण्डर (पुराने तूफ़ान) को नहीं देखा, या देखा है ?"

"कौन है ओल्ड थण्डर ?" उस पागलपन में भी किसी गंभीर बात का आभास पाकर मैंने पूछा।

"कैप्टेन आहाब।"

"क्या ? हमारे जहाज—पिकोड—का कप्तान ?"

"हां, हममें से कुछ पुराने मल्लाहों में उसका यही नाम है। क्या तुमने उसे अभी तक नहीं देखा, या देखा है ?"

"नहीं, हमने नहीं देखा। सब लोग कहते हैं वह बीमार है—लेकिन ठीक हो रहा है। और जल्दी ही ठीक हो जाएगा।"

"जल्दी ही ठीक हो जाएगा?" अजनबी हंसा। उसकी हंसी में जैसे बड़ा व्यंग्य छिपा था। "तुम लोग देखो! जब कैप्टेन आहाब ठीक हो जाएगा तब मेरा यह बायां हाथ भी ठीक हो जाएगा, उसके पहले नहीं।"

'उसके बारे में तुम क्या जानते हो?"

"उन सबने तुमसे उसके बारे म क्या कहा? पहले यह बताओ।"

"उसके बारे मे उन लोगों ने हमें ज्यादा कुछ नहीं बताया। मैंने केवल इतना सुना है कि वह व्हेल का अच्छा शिकारी है और अपने आदमियों का अच्छा कप्तान।"

"यह सही है—यह सही है, दोनों बातें काफी सच हैं। लेकिन वह जब हुक्म देगा तो तुम उछल जाओगे। आगे बढ़ जाओगे, तब कूदोगे, कूदोगे और तब भागोगे—कैप्टेन आहाब की यही आवाज़ है। लेकिन उसके साथ जैसी घटना हार्न अन्तरीप में हुई वैसी कभी नहीं हुई। बहुत दिन हो गए तब तीन दिन-रात वह मृत-सा पड़ा रहा। सान्ता की बलिवेदी पर उस स्पेनवासी के साथ जो कशमकश हुई उसका क्या कहना?—उसके बारे में कुछ नहीं सुना? उस चांदी के कैलाबाश (बर्तन) के बारे में कुछ नहीं सुना जिसमें उसने थूक दिया था। और उसकी उस आखिरी यात्रा में पैर जाने की बात जो भाग्याधीन थी? इन मामलों में या कुछ और भी—कुछ नहीं सुना? नहीं, मैं समझता हूं नहीं सुना। सुन भी कैसे सकते थे? उसे कौन जानता है? मैं समझता हूं सब नन्तुकेत वाले तो नहीं। लेकिन मैं कह सकता हूं कि और कुछ भी हुआ तो—उसका पैर कैसे जमा, यह बात तुमने ज़रूर सुनी होगी। ओह, हां, हरेक यही जानता है कि उसके एक ही पैर है और दूसरा एक स्पर्म व्हेल ले गई।"

"मेरे दोस्त! न मैं जानता हूं और न मुझे परवाह है कि तुम यह सब बकवास क्यों कर रहे हो, क्योंकि मुझे लगता है कि तुम्हारे दिमाग़ में कुछ खलल है। लेकिन अगर तुम उस जहाज़ पिकोड के कप्तान आहाब के बारे में कुछ कहना चाहते हो तो मैं बताऊं कि उसकी टांग कैसे गई, इस बारे में हम जानते हैं।"

"सब, उसके बारे में सब कुछ ? यह क्या तुम सब कुछ जानते हो ?—सब ?"

पिकोड की ओर अपनी आंखें और एक उंगली टिकाए हुए—जैसे किसी उफनती हुई नदी में खड़ा हो, वह कुछ आगे बढा और तब घूमकर बोला—"क्या तुम जहाज़ पर चढ़ गए हो ? क्या काग़जों पर अपने नाम लिख दिए ? ठीक है, ठीक है, जो लिख गया, सो लिख गया और जो होना है वह होकर रहेगा। और फिर हो सकता है न भी हो। जो भी हो, वह सब कुछ पहले ही से तय है। मैं सोचता हूं, कुछ मल्लाह तो उसके साथ जाएंगे ही—भगवान उन पर मेहरबानी करना। नमस्ते, दोस्तो, नमस्ते ! मुझे अफसोस है कि मैंने आपको रोका।"

"दोस्त, इधर सुनो ! अगर तुम्हें कोई खास बात कहनी हो तो बोलो। या यों ही बकवास करके हमें परेशान करना है तो तुम ग़लती पर हो। तुम्हारी कोई चालबाजी हम पर नहीं चलेगी। मुझे सिर्फ इतना ही कहना है," मैंने कहा।

"और तुमने बहुत ठीक कहा। मैं ऐसी बातें सुनना पसन्द करता हूं। उसके लिए तुम ठीक आदमी हो। उसे ऐसे ही आदमी चाहिए। जहाजियो ! आदाब-अर्ज ! आदाब-अर्ज ! ओह ! जब तुम्हें वहां जाना हो तो कह देना कि मैंने तय कर लिया है कि अब मैं एक को भी नहीं सम्भालूंगा।

"आह, मेरे प्यारे भाई ! इस तरह तुम हमें बेवकूफ नहीं बना सकते—तुम हमें बेवकूफ नहीं बना सकते। दुनिया में किसी आदमी के लिए इससे सरल बात और कुछ नहीं है कि वह हरेक के सामने ऐसे देखे जैसे उसके अन्दर कोई राज हो।"

"आदाब," मैंने कहा—"क्वीक्वेग, आओ चलें। इस पागल आदमी को छोड़ो। लेकिन रुको। तुम अपना नाम बताओ। क्या बताओगे ?"

"एलीजाह।"

एलीजाह ! मैंने ध्यान किया और उस गन्दे, चिथड़े लपेटे पुराने मल्लाह के बारे में अपने-अपने तरीके से नुक्ताचीनी करते हुए हम दोनों आगे बढ़ गए। हमने सोचा कि वह सब बेहूदगी थी, बेकार का झूठ। लेकिन हम सौ गज़ भी नहीं गए होंगे कि एक मोड़ पर यों ही मुड़ते हुए मैंने देखा कि हमारे पीछे

एलीजाह आ रहा था। वैसे वह कुछ दूर था। मुझ पर कुछ ऐसा असर हुआ कि मैं मुड़कर यह देखता रहा कि एलीजाह उसी ओर तो नहीं मुड़ता जिधर हम मुड़े हैं लेकिन मैंने यह बात अपने साथी से नहीं कही। वह हमारे पीछे मुड़ा और तब मैंने देखा कि वह हमारा पीछा कर रहा है। किस इरादे से—यह तो मेरे सोचने के बाहर की बात थी। उसकी उस तरह की ऊल-जलूल, उलझी हुई, भेदभरी बातें सुनकर मैं कुछ अजीब ताज्जुब और बेकार के डर में उलझ गया था। वही पिकोड, कैप्टेन आहाब, उसकी कटी हुई टांग, कल पेलेग ने कहा था, और उस औरत टिस्टिग की भविष्यवाणी, हमारी आगे आनी वाली जहाजी यात्रा और इस तरह की सौ दूसरी बातों में ही मेरा दिमाग डूबा रहा।

यह मालूम करने का संकल्प करके कि एलीजाह सचमुच हमारा पीछा कर रहा है या नहीं हमने अपने कदम रोके और एक किनारे रुककर देखते रहे। लेकिन बिना हमें देखे—एलीजाह बगल से निकल गया। इससे मुझे तसल्ली हुई और फिर अपनी समझ में आखिरी बार मैंने मन में धारणा बनाई कि वह सब बकवास था।

## २०

एक-दो दिन निकल गए। पिकोड पर काम की बहुत चहल-पहल थी। पुराने पाल ही नहीं सुधारे गए बल्कि नए भी तैयार किए गए। कैनवास, रस्से और संक्षेप में सब तैयारी निबटाने की जल्दी की जा रही थी। कैप्टेन पेलेग अपने शामियाने में बैठे ही बैठे—बिना किनारे गए, पूरे इन्तजाम पर पैनी नज़र रखे था। बिल्दाद ने बाज़ार की खरीदारी की और सामान इकट्ठा किया। रात में देर तक मज़दूर हर तरफ काम में लगे रहे।

'क्वीकेग' के कागज़ पूरे हो जाने के बाद सभी सरायों में जहां मल्लाह ठहरे थे, यह खबर भिजवा दी गई कि सभी लोग अपने-अपने सन्दूक रात होने से पहले-पहले जहाज पर पहुंचा दें क्योंकि पता नहीं जहाज़ कब चल दे। इसलिए मैंने और 'क्वीकेग' ने अपने चारजामे उतारे और तय किया कि जहाज़ चलने तक हम किनारे पर ही सोएंगे। लेकिन ऐसा लगता है कि जहाज वाले काफी लम्बे समय

की नोटिस (सूचना) देते हैं क्योंकि जहाज कई दिन तक नहीं चला। लेकिन इसमें ताज्जुब की कोई बात नहीं, अभी बहुत कुछ करना बाकी था और कहा भी नहीं जा सकता था कि पिकोड के लिए अभी कितने और सामान की जरूरत थ.।

हर आदमी जानता है कि हजारों सामान हैं—बिस्तरे, बर्तन, चाकू, कांटे, फावड़े, चिमटे, तौलिए, जम्बूरे और गृहस्थी को संभालने की न जाने कितनी चीजें। इसी तरह की व्हेल के शिकार की यात्रा होती है जिसमें तीन साल तक खुले समुद्र में रहना पड़ता है, जहां न कोई डबलरोटी वाला होता है, न फेरी वाला, न डाक्टर, न मिठाई वाला, न कोई बेकर और पूरी गृहस्थी जुटाए रखनी पड़ती है। इन शिकारी जहाजों में व्यापारी जहाजों से अधिक साधन जुटाने पड़ते हैं क्योंकि अजीब तरह का सामान होता है जो मछली के शिकार में काम में आता है, साथ ही बचाव की चीजें भी क्योंकि हर समय मौत और नाश का भय बना रहता है। अलग नावें, उनके फुटकर सामान, अलग हारपून और दूसरे हथियार। और उन नावों का अलग कप्तान, यहां तक कि एक दोहरा जहाज भी।

टापू पर पहुंचने तक पिकोड में भारी सामान लादा जा चुका था : गोश्त, रोटी, पानी, ईंधन, लोहे की पत्तियां, फावड़े, सीढ़ियां इत्यादि।

सामान लाने और इधर-उधर करने में सबसे अधिक काम बिल्दाद की बहन ने किया। यह एक दुबली-पतली-बूढ़ी महिला थी, बहुत गम्भीर और अथक परिश्रम करने वाली और कोमल हृदया। उसका वश चलता तो वह पिकोड में इतना सामान जुटा देती कि फिर समुद्री यात्रा में किसी कमी का अनुभव न होता। कभी वह मुरब्बे का जार लेकर रसोइयों के भण्डार तक जाती, तो कभी मुख्य मेट की डेस्क के लिए कलमों का ढेर ले आती जहां वह अपना रोजनामचा रखता था, तीसरी बार किसी की कमर के गठिया के दर्द के लिए फलालैन का टुकड़ा। किसी स्त्री का नाम उससे अधिक उपयुक्त नहीं हो सकता था—'चैरिटी'—'आन्ट चैरिटी' के नाम से ही उसे सब पुकारते थे। 'आरन्ट चैरिटी' जहाज पर इधर से उधर घूमती थी और हरेक को सहायता और तसल्ली देती थी—आराम, शान्ति, सन्तोष, क्योंकि उस जहाज में उसका भाई बिल्दाद हिस्सेदार था और उसके अपने यत्न से जोड़े कुछ डालर उसमें लगे हुए थे।

लेकिन ऐसे कोमल हृदय की महिला को जहाज पर आखिरी दिन देखकर हैरत हुई जब उसके हाथ में व्हेल के शिकार में काम आने वाली बर्छी थी और दूसरे में तेल की लम्बी कड़छी। न बिल्दाद, न ही कैप्टेन पेलेग किसी से पीछे थे। बिल्दाद के पास भी सामान की एक लम्बी लिस्ट थी जिस पर उसे बार-बार निशान लगाना पड़ता था। पेलेग सारे जहाज़ में अलग शोर मचाता घूम रहा था।

तैयारी के इन दिनों में मैं व क्वीकेग कई बार जहाज़ पर गए और कैप्टेन आहाब के हालचाल लेते रहे कि वह जहाज पर कब आ रहा है। हमेशा यही जवाब मिलता था कि वह ठीक हो रहा है और जल्दी से जल्दी आने वाला है। इस बीच पेलेग और बिल्दाद का साम्राज्य था। अगर मन की बात मान ली जाए तो मैंने बहुत बार यह सोचा कि जिस एक आदमी के सहारे इतनी लम्बी जहाज़ी यात्रा करनी हो, जो जहाज़ का अकेला मालिक डिक्टेटर हो, कम से कम जहाज़ चलने के पहले उसकी शक्ल तो देखी जाए। लेकिन जब कोई आदमी किसी बुराई का शक करता है तो कभी-कभी वह उस मामले में खुद ही लिपटा होता है और अनजान में वह अपने शक को अपने से ही छिपाने की कोशिश करने लगता है। यही हाल मेरा था। मैंने कुछ न कहा, और कोशिश करने लगा कि सोचूं भी नहीं।

होते-करते वह दिन भी आया जब यह तय हो गया कि अगले दिन जहाज़ ज़रूर चल देगा। इसलिए, अगले दिन मैं और क्वीकेग बहुत जल्दी तैयार हो-कर चल दिए।

## २१

जब हम घाट के पास पहुंचे तो उस समय छः बज रहा था और भूरे रंग का सुबह का धुंधलका फैला था।

"अगर मैं ठीक देख पा रहा हूं तो वह सामने कुछ मल्लाह दौड़ रहे हैं" मैंने क्वीकेग से कहा—"वह छाया नहीं हो सकती। सुबह होते-होते वह चल देगा। आओ चलो।"

"ठहरो !" एक आवाज़ ने पुकारा और साथ ही पुकारने वाला हमारे नज़दीक आकर हम दोनों के बीच झुककर खड़ा हो गया। धुंधली-सी रोशनी, 'क्वीकेग' से उचटकर मेरे पास तक आ रही थी। वह एलीजाह था।

"क्या तुम लोग जहाज़ पर जा रहे हो ?"

"अपने हाथ दूर रखो।" मैंने कहा।

"इधर देखो", अपने आपको हिलाते हुए 'क्वीकेग' बोला "भागो, चलो !"

"तब क्या जहाज पर नहीं जा रहे हो ?"

"हां, जा रहे हैं"—मैंने कहा—"लेकिन तुमको इतनी फिक्र क्यों है ? मिस्टर एलीजाह ! आप जानते हैं कि मैं आपको थोड़ा गुस्ताख आदमी समझता हूं।"

"नहीं, नहीं, नहीं ! मुझे उसका पता नहीं था" एलीजाह ने मुझसे हटकर 'क्वीकेग' को अजीब नजरों से देखा।

"एलीजाह ! ज़रा मुझसे और मेरे मित्र से दूर हटने की मेहरबानी करो। हम लोग भारत और प्रशान्त महासागरों की ओर जा रहे हैं। एक मिनट भी नहीं रुकना चाहते।"

"हां-हां, जाओ-जाओ। नाश्ते के पहले लौट आओगे न ?"

"क्वीकेग ! यह पागल है। आओ चलें", मैंने कहा। बढ़ गए तो स्थिर खड़े एलीजाह ने आवाज़ लगाई।

"उधर ध्यान मत दो क्वीकेग ! आओ", मैं बोला।

लेकिन वह फिर चुपचाप हमारे पास आ खड़ा हुआ और मेरे कन्धे पर एक हाथ टिकाते हुए बोला—"क्या तुमने आदमी की तरह की किसी छाया को अभी थोड़ी देर पहले जहाज़ की तरफ जाते हुए देखी थी ?"

ऐसे साफ सवाल को सुनकर थोड़ा चौंकते हुए मैंने जवाब दिया—"हां, मैं सोचता हूं कि वे चार-पांच आदमी थे, लेकिन उस समय बहुत धुंधलका था इसलिए कुछ ठीक से नहीं कहा जा सकता।"

"बहुत धुंधला—बहुत धुंधला" एलीजाह ने कहा "तुम लोगों को आदाब-अर्ज़ !"

एक बार फिर हम लोग उससे दूर हो गए किन्तु फिर बहुत मुलायमियत से वह हमारे पास आया और मेरे कन्धे को हिलाते हुए बोला—"क्या तुम

उनको अब फिर ढूंढ सकते हो, देखो ?"

"किसको ढूंढ सकते हैं ?"

"आदाब-अर्ज़ ! आदाब-अर्ज !" जाते-जाते उसने कहा—"ओह ! ओह ...मैं फिर तुम लोगों को एक बार सावधान करने जा रहा था...लेकिन कोई बात नहीं, कोई बात नहीं...वह सब एक-से हैं, सब एक ही कुटुम्ब में हैं। आज सुबह तेज़ कोहरा था न ? अच्छा किया। मेरा ध्यान है, तुम लोगों से अब जल्दी ही भेंट नहीं होगी जब तक कि उस ऊपर वाले की—उस ग्रान्ड ज्यूरी[1] की मर्जी न हो।"

इन, पागलों की-सी बातें कहकर वह चला गया तथा मुझे कुछ क्षणों के लिए कुछ ताज्जुब और अपनी सनकी बातों में उलझा गया।

अन्त में, पिकोड पर पहुंचने पर हमने देखा कि सब तरफ पूरी खामोशी; कोई चीज भी नहीं हिल-डुल रही। केबिन का दरवाज़ा अन्दर से बन्द था, साथ ही खिड़कियां चढ़ी हुई थीं और जहाज़ तैयार खड़ा था। ऊपर की किलेबन्दी थी और पहुंचते हुए हमने देखा कि पेंदे के झरोखों के सरकाने वाले ढक्कन खुले हुए थे। कुछ रोशनी देखकर हम नीचे उतर गए और वहां हमने एक प्रबन्धक को देखा जो फटी हुई 'पी-जैकेट' पहने था। वह दो सन्दूकों पर लम्बा फैला हुआ था, उसका चेहरा नीचे को दबा और मुड़ी हुई बाहों में छिपा हुआ था। वह गहरी नींद में था।

"क्वीकेग ! जिन मल्लाहों को हमने देखा था वे किधर गए होंगे ?" सोने वाले की ओर सशंक देखते हुए मैंने कहा। लेकिन क्वीकेग ने किनारे पर उनको देखा ही नहीं था। मुझे चिन्ता लगी कि एलीजाह ने उस बात पर सवाल क्यों उठा दिया था। लेकिन उस बात को दबाते हुए मैंने, मजाक में, सोने वाले को देखते हुए 'क्वीकेग' से कहा कि न हो, तो इसके ऊपर ही बैठा जाए। तब क्वीकेग ने सोने वाले के नजदीक टटोलकर देखा कि जैसे वह बहुत मुलायम है और फिर बिना किसी रुकावट के वह चुपचाप वहां बैठ गया।

"बहुत अच्छे ! क्वीकेग ! वहां मत बैठो", मैंने कहा।

---

१. खुदा।

"ओह ! बड़ी प्यारी कुर्सी है।" 'क्वीकेग' बोला—"मेरे देश के तरीके की। इसके चेहरे को चोट नहीं लगेगी।"

"चेहरा ?" मैंने कहा—"यह इसका चेहरा है ? तब तो बहुत दयावान है। लेकिन कैसी गहरी सांसें भरता है ? वह दब रहा है। क्वीकेग ! अलग हटो। तुम भारी हो। यह तो किसी ग़रीब का गला पीसना है। क्वीकेग ! अलग हटो। देखो, वह तुम्हें जल्दी ही उठाकर फेंकने वाला है। मैं डरता हूं कि कहीं वह जाग न जाए।"

क्वीकेग वहां से उठकर बिल्कुल उसके सर के पास सरककर जा बैठा और अपना वही हंसिए वाला पाइप जलाने लगा। मैं पैरों पर बैठा। हम सोने वाले के ऊपर ही अदल-बदल कर पाइप सरकाते रहे। इस बीच पूछने पर क्वीकेग ने अपने उसी टूटे-फूटे ढंग से समझाने की कोशिश की कि उसके देश में कुर्सियों और सोफ़ों के न होने पर यही रिवाज है कि बड़े लोग, जैसे बादशाह, ऊंचे अफ़सर और बड़े-बड़े आदमी साधारणतः छोटी जाति के लोगों को लिटा-कर उसी तरह बैठते हैं और अपने पूरे मकान को सजाने के लिए केवल आठ-दस बेकार आदमियों को ढूंढना होता है और उन्हें खम्भों तथा सीढ़ियों के बराबर जमा दिया जाता है। यही नहीं घूमने-फिरने के समय इससे बड़ा आराम मिलता है और वे उन बगीचे की कुर्सियों से कहीं अच्छे होते हैं तथा चलती-फिरती घूमने की छड़ी बन जाते हैं। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि किसी पेड़ के नीचे गीली और नम जमीन पर बैठने के लिए किसी अफ़सर ने अपने गुलाम को बुलाया और उस पर बैठ गया।"

इस दास्तान को बताते हुए हर बार 'क्वीकेग' मुझसे पाइप मांग लेता था। सोने वाले के सर के ऊपर से वह उस पाइप के आगे का हिस्सा पकड़ता था।

"यह किसलिए, क्वीकेग ?"

"बहुत सरल, भारी, ओह ! बहुत आसान।"

दो बार पाइप लेने पर ही मुझे लगा कि क्वीकेग के मस्तिष्क में अपने पाइप के सम्बन्ध में कोई भयानक याद चक्कर काट गई जिसने उसके मन को भी थोड़ी तसल्ली दी। तभी हम दोनों उस सोने वाले की ओर आकर्षित हुए। अब उस भिंचे हुए नाक के छेद से तम्बाखू का धुंआ घुसकर उस पर असर दिखाने लगा। उसने छींक लेने के ढंग से सांस खींची जैसे उसकी नाक में कोई

तकलीफ़ हो, तब एक दो-बार करवट ली और आंखें मलते हुए उठकर बैठ गया।

"हल्लो ! तुम तम्बाकू पीने वाले कौन लोग हो ?" आखिर में उसने सांस लेते हुए कहा।

"जहाज़ पर जाने वाले आदमी", मैंने जवाब दिया—"यह कब चलेगा ?"

"ऐ-ऐ, तुम लोग इसमें चल रहे हो ? यह आज चल रहा है। कप्तान कल रात में आ गया।"

"कौन ? कैप्टेन आहाब ?"

"तब और कौन ?"

आहाब के सम्बन्ध में मैं कुछ और सवाल करने जा रहा था तभी ऊपर डेक पर शोर सुनाई दिया।

"हल्लो ! स्टारबक जग गए हैं", मल्लाह बोला—"वह बड़ा प्यारा चीफ़ मेट है, अच्छा आदमी, धर्मात्मा भी। लेकिन अब चारों ओर चहल-पहल है। मुझे चलना चाहिए" कहते हुए वह डेक पर गया। हम भी उसके पीछे गए।

अब सुनहरी सुबह हो गई थी। जल्दी ही जहाज़ के कर्मचारी दो-दो तीन-तीन करके आने लगे। जहाज के चालक हिले-डुले। मेट लोग सब तरफ जुटे हुए थे और किनारे वाले लोग कुछ न कुछ आखिरी सामान लाते जा रहे थे। और कैप्टेन आहाब अपने केबिन में शान्त बैठा रहा।

## २२

अन्त में, दोपहर तक, जहाज़ के कर्मचारी हट गए, 'चैरिटी' अपने बहनोई दूसरे मेट स्टब को अपनी आखिरी सौगात एक हैट और रसोइए को एक अतिरिक्त बाइबिल देने के बाद नाव पर उतर गई तो 'पिकोड' किनारे से हिला और दोनों कैप्टेन पेलेग और बिल्दाद केबिन से निकले। चीफ मेट की ओर मुड़ते हुए पेलेग ने कहा :

"क्यों मिस्टर स्टारबक ! तुम्हें विश्वास है कि सब कुछ ठीक है ? कैप्टेन आहाब भी बिल्कुल तैयार है—अभी बात हुई थी—अब किनारे से तो कुछ

नहीं आना है न ? सब लोगों को बुला लो यहीं ।"

"पेलेग ! चाहे जितनी जल्दी हो लेकिन बेकार की बातें करने की कोई जरूरत नहीं है", बिल्दाद बोला—"लेकिन दोस्त स्टारबक ! अब हमारी बात सुनो ।"

अब क्या होगा ? जहाज़ चलने ही वाला वाला था कि कैप्टेन पेलेग और कैप्टेन बिल्दाद छोटे डेक की ओर बढ़ गए । लग रहा था जैसे यात्रा में वे दोनों मिलकर संचालन करेंगे जैसे बंदरगाह में कर रहे थे । कैप्टेन आहाब अभी तक दिखाई नहीं दिए थे । सिर्फ लोग यही कर रहे थे कि वह केबिन में ही हैं । ठीक भी था कि जहाज चलना शुरू हो, वह खाड़ी से बाहर निकलकर खुले समुद्र में पहुंचे, इस सबमें कैप्टेन की तो कोई जरूरत नहीं थी । यह तो 'पाइलट' का काम था । यही नहीं, लोगों का कहना यह भी था कि चूंकि वह अभी पूरी तरह ठीक नहीं हुआ था इसलिए अभी भी नीचे ही था । ऐसा ही व्यापारी जहाज़ों का भी नियम है कि जहाज़ चलाने का काम 'पाइलट' का होता है और कैप्टेन काफी समय तक मल्लाहों के सामने नहीं आता ।

अब एक प्रकार से कप्तान का काम बिल्दाद नहीं केवल पेलेग कर रहा था । वह तेज़ स्वर में बोल रहा था, हुक्म दे रहा था, इसलिए अब सोचने का भी समय नहीं रह गया था ।

"ऐ नाजायज लड़को ! उधर—उधर ।" ज्योंही मल्लाहों ने प्रमुख मस्तूल को संभाला त्योंही वह चीखा ! "मिस्टर स्टारबक ! उन लोगों को वहां खदेड़ो ।"

"तम्बू को यहां रखो ।" दूसरा हुक्म था । जैसा मैंने कहा था, बन्दरगाह के अलावा जहाज़ पर तम्बू नहीं लगाया जाता ।

"पहिए पर तार लपेटो । खून और तूफ़ान !—कूदो !" अगला हुक्म था और कर्मचारी पहिए की ओर बढ़ गए ।

जहाज़ की चाल तेज होने के समय पाइलट की जगह साधारणतः आगे होती है । यहां पेलेग और बिल्दाद भी लाइसेंसशुदा पाइलट थे और अपने जहाज़ों की पाइलट की फ़ीस वे बचा लेते थे । बिल्दाद तो इस समय ऊपर उठने वाले लंगर की प्रतीक्षा में जहाज़ के सामने की ओर था और कभी-कभी कोई भजन गा उठता था, जिससे जहाज़ का भार खींचने वाले मजदूर कुछ

आनन्दित हों जो स्वयं भी बूबिल ऐली की लड़कियों के सम्बन्ध में अपनी खुशी में कोई सहगान (कोरस) गा रहे थे। वह तब, जब कि तीन दिन पहले ही बिल्दाद ने सबको हुक्म दिया था कि कोई फ़ोश (गन्दा) गाना पिकोड पर नहीं गाया जाएगा खासतौर पर जब जहाज़ दौड़ पकड़ रहा हो, और उसकी बहन चैरिटी ने हर जहाज़ी की बर्थ पर 'वाट' की एक-एक प्रति रख दी थी।

इसी बीच, जहाज़ के दूसरी ओर देखते हुए पेलेग चिल्लाया और बहुत डरावने ढंग से बकझक करता पीछे की ओर भागा। मैंने तो समझा कि लंगर उठने से पहले ही वह जहाज़ को डुबा देगा और तभी जैसे मेरा हाथ अपने आप पतवार पर चला गया। मैंने 'क्वीकेग' से भी यही करने को कहा। उस समय हम दोनों ही सोच रहे थे कि इस शैतान पाइलट के साथ यात्रा करने में हमने अपने को कितने भयंकर खतरे में डाल दिया था। मैं यह भी सोच रहा था कि सात सौ सतहत्तरवीं 'ले' के स्थान पर धर्मात्मा बिल्दाद से कुछ बढ़िया बातें तो सुनी ही जा सकती हैं और तभी अचानक मेरी बगल में एक तेज धक्का-सा लगा। घबड़ाहट में घूमने पर दिखाई दिया कि कैप्टेन पेलेग का पैर मेरे पास से पीछे हट रहा है। वह मुझ पर लगी पहली ठोकर थी।

"क्या व्यापारी जहाज़ी में इसी तरह काहिली होती है?" वह चीखा! "ऐ भेड़ की खोपड़ी वाले! उठ! उठ! और अपनी रीढ़ की हड्डी तोड़! तुम लोग उठते क्यों नहीं?—सब उठो! क्यूहौग! उठ, लाल गलमुच्छों वाले छोकरे! ऐ स्काच टोपी वाले! तू भी उठ, ऐ हरी पैन्ट वाले! उठ। मैं कहता हूं तुम सब उठो और अपनी आंखें उठाओ।" कहते हुए वह चरखी की ओर बढ़ गया। वह अपने पैर ढीले करके पटकता जा रहा था और अविचलित बिल्दाद अपना भजन गाता जहाज़ बढ़ाए जा रहा था। मैं सोच रहा था कि कैप्टेन पेलेग ने आज कोई शराब जरूर छान ली है।

अन्त में, लंगर उठा, पाल तान दिए, और हम आगे बढ़ने लगे। बड़ी सर्दी थी। उत्तर का छोटा-सा दिन रात में डूब गया और हमने अपने आपको खुले और चौड़े सर्द समुद्र में पाया और किसी चमकदार ज़िरहबख्तर की तरह बर्फ़ीली हवा और कोहरे ने हमें बर्फ़ से ढक दिया। चांदनी में जहाज़ की किलेबन्दी के दांते चमक रहे थे, और जहाज़ के आगे के किनारों की पटरी ऐसे

चमक रही थी जैसे किसी भारी हाथी की सूंड के नीचे के चमकदार दांत।

इस समय पाइलट का काम करने वाला पतला बिल्दाद, यात्रा के पहले घंटों में जहाज़ बढ़ाए गया और जहाज़ में भयंकर सर्दी भर गई। ठंडी हवा शोर कर रही थी साथ ही रस्सों के खिंचने-खुलने की आवाज़ें आ रही थीं। तभी बिल्दाद की स्थिर आवाज़ में सुनाई दे रहा था:

> उफनती बाढ़ के परे प्यारे मीठे खेत—
> जैसे हरी चादर पहने खड़े हों।
> वैसे ही पुराने कैनान[1] में यहूदी खड़े थे—
> और बीच में जार्डन था।

वे मीठे शब्द इतने मीठे मुझे कभी नहीं लगे। उनमें नई आशाएं और नई उमंगें थीं। विशाल अतलांतक महासागर की उस डरावनी सर्द रात में भी और मेरी वास्कट और पैर तर होते हुए भी, मुझे लग रहा था कि अनेक सुखमय धाम मेरे लिए मौजूद हैं। झाड़ियों और पत्तियों में जैसे स्वर्ग की सुषमा भर रही थी। जैसे नए बसन्त में नई घास उगी हो, जिसपर अभी किसी ने पैर भी न रखा हो, वह जोती भी न गई हो और वह आधी गर्मियों तक वैसी ही बनी रही हों।

अब हमारी चाल इतनी तेज़ हो चुकी थी कि दोनों पाइलटों की आवश्यकता नहीं रह गई थी। वह भारी नाव जो हमें बढ़ाने के लिए अब तक हमारे साथ चल रही थी—अब अलग होने लगी।

इस मौके पर पेलेग और बिल्दाद और विशेष रूप से कैप्टेन बिल्दाद क्या सोच रहे होंगे, इसे याद करने भर से ही आश्चर्य होता था और अप्रिय भी नहीं लग रहा था। विदा होने में दुःख है, हां, किसी को छोड़ने में कितनी तकलीफ़ होती है? एक जहाज़ अपनी बड़ी लम्बी और डरावनी यात्रा को चल पड़ा है, दोनों तूफानी अन्तरीपों से भी आगे—जहाज़, जिसमें उसकी गाढ़ी कमाई के डालर लगे हैं, जिसमें उस जहाज़ी ने कभी मेट के रूप में यात्रा की थी, उस जैसा बूढ़ा आदमी एक बार फिर समय के निर्दयी जबड़ों और भय का सामना करने चल पड़ा है, अपनी रुचि की जगह को छोड़ने में सचमुच कितनी पीड़ा हो रही थी।

---

१. नगर।

बेचारा बूढ़ा बिल्दाद ज्यादा से ज्यादा देर लगा रहा था, आतुर कदमों से डेक पर चहलकदमी कर रहा था। बिदा के शब्द कहने को केबिन तक भागकर गया, फिर दौड़कर डेक पर आया और हवा के रुख पर नजरें गड़ाईं, अन्तहीन विशाल जल-राशि को देखने लगा, जिसकी सुदूर सीमा पर दृष्टि से पूरे पूर्वी महाद्वीप थे। धरती की ओर देखा, सूनी दिशाओं की ओर देखा, दाएं-बाएं देखा, सब तरफ देखा और किसी तरफ नहीं देखा और अन्त में जैसे मशीन की तरह रस्से को खूंटी के चारों ओर लपेटते हुए एकाएक झटके से तन्दुरुस्त पेलेग का हाथ थामते हुए, हाथ में लालटेन लेकर तथा उसके चेहरे पर नजरें गड़ाकर दृढ़ स्वर में बोला, "कुछ भी हो, दोस्त पेलेग ! मैं सब कुछ पार कर ले जाऊंगा। हां, मैं सब कुछ सहन कर सकता हूं।"

इन्हीं बातों क पेलेग ने दार्शनिक की भांति अपनाया, लेकिन अपनी उस सब दार्शनिकता के बावजूद, लालटेन पास पहुंची तो उसकी आंख में एक आंसू चमकता दीख पड़ा। वह भी केबिन से डेक, डेक से केबिन, कभी एक बात किसी से—तो दूसरी स्टारबक से करने को, लगातार भाग-दौड़ कर रहा था।

लेकिन अन्त में वह अपने साथी की ओर मुड़ा और जैसे अपनी आखिरी दृष्टि फेंककर बोला—"कैप्टेन बिल्दाद ! आओ, हमें चलना होगा। उस मुख्य डेक में लौटना होगा ! नाव है ! नजदीक आने के लिए बिल्कुल पास आ जाओ। जल्दी करो। सावधानी से ! सावधानी से ! आओ बिल्दाद ! विदा दो। स्टारबक ! तुम्हारा सौभाग्य जागे और मि० स्टब ! तुम्हारा भी और मि० फ्लास्क ! तुम्हारा भी (अलविदा)—और आज के बाद तीन साल तक नन्तुकेत में शाम को घर पर गरम खाना तुम्हारे लिए तैयार रहेगा। हुर्रे ! चल दिया !"

"साथियो ! भगवान की तुम पर कृपा हो और वह सबको अपनी पवित्र छाया में ले ले।" लगभग फुसफुसाकर बिल्दाद कह गया। "मुझे आशा है कि जल्दी ही अच्छा मौसम मिलेगा जिससे कैप्टेन आहाब तुम्हारे बीच में आ सकेगा। उसको खुशनुमा धूप की ज़रूरत है जो सबको गरम देशों की ओर बढ़ने पर मिलेगी। शिकार में बहुत सतर्क रहना, जहाजियो ! नावों को बेकार मत दौड़ाना हारपूनर ! इस साल में देवदार के समान सेडार वृक्षों के तख्ते पूरे तीन प्रतिशत बढ़ जाएंगे। तुम लोग अपनी पूज्य प्रार्थना भी मत भूलना।

मिस्टर स्टारबक ! ख्याल रखना कि लोग फालतू सीढ़ियों को बेकार खराब न करें। ओह् ! पाल की कीलें हरी आलमारी में हैं। जहाज़ियो ! आजकल क्रिसमस में—भगवान के इन दिनों में—व्हेल का अधिक शिकार मत करना, लेकिन किसी बढ़िया मौके को भी मत छोड़ना क्योंकि फिर वह भगवान की भेजी सौगात को लौटाना होगा। मिस्टर स्टब ! शराब के पीपों का ध्यान रखना। हो सकता है वे कुछ रिस रहे हों। मिस्टर फ्लास्क ! अगर कोई टापू मिल जाए तो स्त्री-संग से बचना। गुड-बाई, गुड-बाई ! पनीर को देर तक बर्तन में मत रखना नहीं तो खराब हो जाएगी, मिस्टर स्टारबक ! मक्खन का ध्यान रखना—बीस सेन्ट का एक पौंड मिला है और ध्यान रखना कि अगर······"

"कैप्टेन बिल्दाद ! आओ, चलो ! ज्यादा उपदेश मत दो,—हटो।" कहते हुए पेलेग उसे एक तरफ ले गया और दोनों नाव पर कूद पड़े।

जहाज़ और नाव अलग-अलग हो गए। रात की सर्द और नम हवा बीच में चलने लगी। एक चीखती हुई तूफ़ानी समुद्री चिड़िया ऊपर से निकल गई, तेज़ हवाओं के झोंके डरावनेपन से चक्कर लेते रहे। हमने भारी दिल से तीन बार 'चियर्स' कहा, और अतलांतक महासागर की एकान्तता में भाग्य की तरह आंखें बन्द करके कूद पड़े।

## २३

नन्तुकेत से चलने के कई दिन बाद तक जहाज़ पर कैप्टेन आहाब के संबंध में कुछ भी पता नहीं चला। मल्लाह लोग अपने टाइम से हटते और दूसरे ड्यूटी वाले आ जाते। लग रहा था कि वे ही जहाज़ के कप्तान हैं। बस कभी-कभी वे कैप्टेन के केबिन से एकाएक ऐसे हुक्मनामे लेकर निकलते थे जिनका उल्लंघन नहीं हो सकता था। और इससे यही स्पष्ट था कि वे दूसरे की मर्ज़ी के ही गुलाम हैं। वैसे उनका सुप्रीम लार्ड और अफसर वहीं था, अपने केबिन में अकेला और ऐसे किसी आदमी की दृष्टि से दूर था जिसे वहां प्रवेश पाने की आज्ञा न थी।

नीचे के पहरे से छूटकर मैं जब भी डेक पर चढ़ता तो फौरन ग़ौर करता

कि कहीं कोई नया चेहरा तो नहीं दिखाई दे रहा है। कारण कि अज्ञात कैप्टेन के बारे में जो मेरी उत्कंठा थी वह अब समुद्र के एकान्त में भी उसे देख न पाने पर झुंझलाहट बनती जा रही थी। फटेहाल एलीजाह की वे बेसिर-पैर की बातें अनायास मेरे मस्तिष्क में अप्रत्याशित शक्ति होकर आ रही थी और अकसर मेरी झुंझलाहट बढ़ती ही जा रही थी। किसी दूसरी मनोस्थिति में तो मैं घाटों के उस धर्मोपदेशक की सनकी बातों का मज़ाक उड़ाने को भी तैयार था, लेकिन उस समय उनकी याद भी सहन न कर पा रहा था। इस तरह की आशंका या व्याकुलता ( यही कह लीजिए इसे ) का जहाज़ की यात्रा में कोई स्थान नहीं था। यों वे हारपूनर और उनके साथ के मल्लाह मेरी अब तक की परिचित व्यापारी कम्पनियों के मल्लाहों से कहीं अधिक उजड्ड, नृशंस और अनेक जातियों के थे। लेकिन यह सब उन तीनों बड़े अफसरों—मेटों की मेहरबानी है कि वे चाहें तो इस प्रकार की निराशावादी भावनाओं को बढ़ने दें या घटने दें और चाहें तो समुद्रयात्रा को बड़ा आनन्ददायक और सरल बना दें। उन तीनों ऊंचे अफसरों में तीनों ही अमेरिकन थे—एक नन्तुकेत का, एक वाइनयार्ड का और तीसरा केप का। बन्दरगाह से जब जहाज़ चला था तो क्रिसमस के दिन थे और ध्रुवप्रदेश की-सी किटकिटाती सर्दी पड़ रही थी। फिर भी हर क्षण हमारा जहाज़ दक्षिण की ओर भाग रहा था और उस निर्दय सर्दी को हर अक्षांश के साथ पीछे छोड़ता चला जा रहा था। सुबह को अभी भी भूरा धुआं और उदास कोहरा छाया रहता था और हवा के अच्छे रुख के कारण जहाज़ पानी में भागता चला जा रहा था जैसे उछल-उछलकर उदास मन चल रहा हो क्योंकि एक बार जब दोपहर के पहले के पहरे से बदल कर मैं डेक पर आया और तख्तों की ओर नजर सीधी की तो उस भागने वाली सर्दी की कँप-कँपी से भर गया। सभी शंकाएं दूर हो कर सचाई सामने आ गई—कैप्टेन आहाब अपने छोटे डेक पर खड़ा था।

देखने में न तो कोई शारीरिक बीमारी ही या न उससे मुक्ति के चिह्न उसमें दिखाई दे रहे थे। वह एक ऐसा आदमी दिखाई दिया जैसे कोई खूंटे से अलग कर दिया गया हो। ज्यों आग ने अंग-अंग जलाया नहीं बेकार कर दिया हो या जैसे उम्र की ताज़गी का कोई एक अंश निकल गया हो। उसका ऊंचा चौड़ा शरीर जैसे ठोस धातु का बना दिखाई दे रहा था और ऐसा ढ़ला हुआ था जैसे

सेलिनी[1] का ढला पर्सूस[2]। एक गहरा चोट का निशान जो कुछ सफेद था उसके सफेद बालों के बीच से होकर उसके छोटे-से मुंह और गर्दन तक गया था और आगे कपड़ों में छिप गया था। वह ऐसी लग रही थी जैसे किसी पेड़ के बीच में कोई सीधी दरार पड़ गई हो। जैसे आकाश की बिजली ऊपर से आकर शाख और पेंदों को चीरती हुई नम धरती में घुस गई और उसने किसी भी पत्ती, कोंपल या फूल का बिना नुकसान किए हुए उस भारी पेड़ की हरियाली को सिर्फ दगीला कर गया हो। वह निशान पैदायशी था या किसी चोट के जख्म की यादगार—कोई नहीं कह सकता था।

उसका व्यक्तित्व उदासी लिए होते हुए भी इतना प्रभावशाली था कि मैं देर तक खड़ा आहाब को देखता रहा और सोचता रहा कि उसकी वह उदासी उस हाथी दांत के-से चमकदार एक पैर के कारण नहीं, जिस पर वह खड़ा है क्योंकि मैं समझ रहा था कि समुद्री लोगों में यह रिवाज है कि वैसा पैर वे किसी स्पर्म व्हेल के जबड़े का बनाते हैं। उस बूढ़े गे-हेड इंडियन ने कहा—"जापान से दूर उसके मस्तूल उखड़ गए थे लेकिन वहीं दूसरा मस्तूल खड़ा करके वह चलता रहा लेकिन उसके लिए घर नहीं भागा। उसमें ऐसी ही अनोखी बातें हैं।"

एक ही-सी चेहरे की मुद्रा देखकर मैं परेशान था। पिकोड के छोटे डेक के दोनों ओर, और दिशा बदलने वाले तख्ते को बांधने वाले रस्सों के बहुत पास ही एक छोटा-सा छेद था—करीब आध इंच के जो पेंदे में छेद करके बनाया गया था, उसीमें उसकी वह हड्डी का पैर टिका हुआ था। उसका एक हाथ फैला हुआ था जिससे वह रस्सा पकड़े था। इस तरह कैप्टेन आहाब तना हुआ खड़ा था और जहाज के सामने की नोक पर स्थिर दृष्टि गड़ाए था। वहां जैसे स्थिरता और दृढ़ता तनी हुई खड़ी थी, और उस सधी हुई निर्भय दृष्टि में जो सामने को देख रही थी जैसे स्थायी और कभी न झुकने की भावना चमक रही थी। वह एक शब्द भी नहीं बोल रहा था, न उसके अफसर ही उससे कुछ कह रहे थे किन्तु उनके हर क्षण के चेहरे की अदल-बदल से दिखाई देता था कि जैसे

---

१. ग्रीस में एक स्थान।

२. एक ग्रीक योद्धा।

मालिक की आंख के सामने वे एक उलझन, एक कष्ट और एक सतर्कता का अनुभव कर रहे हैं। यही नहीं, मूडी और गुमसुम आहाब अपने चेहरे पर ईसू के क्रास की-सी तेजी और भय लिए खड़ा हुआ था। जैसे किसी महान दुःख की पूरी ताकत और उसका गौरव सामने लिए खड़ा हो।

पहली बार हवा में बाहर आने के बाद वह बहुत जल्दी ही अपने केबिन में लौट गया। लेकिन उस सुबह के बाद वह कर्मचारियों को नित्य दिखाई देने लगा। कभी वह धुरी की कील के पास खड़ा होता या कभी अपने हाथी दांत के स्टूल पर बैठा होता या धीरे-धीरे डेक पर टहलता होता। जैसे-जैसे आसमान का धुंधलापन कम होता गया वैसे वह भी सरल होता गया और उसकी उदासी भी कम होती गई। जैसे जहाज चलते समय जो मौसम था उसकी मौत की-सी सर्दी ही उसे एक कोने में पड़े रहने को विवश किए रही। धीरे-धीरे वह दूर हो गई और वह डेक पर चमकने लगा और अब धीरे-धीरे ऐसा हुआ कि वह डेक पर प्रायः निरंतर ही दिखाई देने लगा। लेकिन वह अब भी दूसरे मस्तूल की तरह निरर्थक बना हुआ था। पिकोड अब अपना मार्ग बना: रहा था और व्हेल के शिकार की तैयारियों की देखभाल के लिए मेट लोग पूरी तरह से अनुभवी थे तथा उसमें आहाब से काम लेने या उसे उत्तेजित करने की इस समय आवश्यकता भी नहीं समझते थे—ऐसा लग रहा था उसी खाली समय में आहाब की भौंहों के ऊपर बादलों की तहों की तहें जम रही थीं जैसे उन्हें ऊंची चोटी ही चाहिए।

और अब गरम मौसम तथा छुट्टियों का-सा वातावरण बनाता जा रहा था जिससे आहाब खुश था। जैसे लाल गालों वाली, नर्तकी लड़कियां—अप्रैल और मई—सर्दियों में प्राणियों के बैरी जंगलों में अपने स्वदेश से घूमने आई हों। जैसे बिलकुल अकेला, सूखा और बिजली से जला हुआ ओक का पेड़ भी इन खिलखिलाती हुई मेहमानों के लिए कुछ हरी पत्तियां भेज देगा, उसी तरह लुभाने वाली उस लड़कियों की-सी चंचल हवा से आहाब भी भर गया। एक-दो बार उसकी आंखों में हल्की मुस्कान चमकी। उसकी जगह कोई दूसरा व्यक्ति होता तो उसमें खिलखिलाहट के फूल भी झरते!

# २४

कुछ दिन बीत गए, बर्फ और समुद्र में तैरते बर्फीले पहाड़ों के बीच तैरते हुए। 'पिकोड' 'क्यूटो' की ओर बढ़ता चला जा रहा था जो गरम देशों के पानी के पास लगभग हमेशा बना रहता है। गरमी के हल्की गर्मी लिए हुए शीतल, स्वच्छ, तैरते हुए, सुगन्धियुक्त, बड़े-बड़े दिन—मानों झागदार, गुलाब-जल और बरफ पड़े ईरानी शरबत की बूंदों की तरह चमक रहे थे। तारों-भरी शाहाना रातें जवाहरात जड़े मखमली कपड़े पहने सौन्दर्यमय युवतियों-सी लग रही थीं, जो युद्ध में गए अपने स्वामी—सुनहरे शिरस्त्राण पहने सूर्य—की याद में खोई डूबी थी, अपने भवन के एकान्त में। उस समय यह मुश्किल था कि कोई व्यक्ति ऐसे लुभावने दिनों में जागे या आकर्षक रातों में। लेकिन इस ताजे और खुशनुमा मौसम की समूची जादूभरी केवल बाहरी दुनिया में ही उत्साह और आनन्द ही नहीं भर रही थी वरन् वह आत्मा को भी प्रभावित कर रही थी, विशेषतः सायं के धुंधलके में। तब बर्फ के स्वच्छ कणों की भांति स्मृतियां करवट लेने लगती थीं, प्रकृति की ये सक्रिय शक्तियां आहाब पर भी प्रभाव डाल रही थीं।

बुढ़ापे में आदमी हमेशा जागता रहता है, मानो वह जिन्दगी से जितने ज्यादा समय के लिए जुड़ जाता है, उतना ही अधिक वह मौत-सी दीखने वाली चीज़ों से दूर भागने लगता है। बूढ़े-सफेद दाढ़ी वाले समुद्र के कप्तान अपनी बर्थ छोड़कर रात के अंधेरे में डूबे डेक का आनन्द लेने पहुंच जाते हैं। आहाब के साथ भी यही था। सच तो यह है कि अब वह खुली हवा में इतना अधिक रहने लगा था कि वह केबिन से डेक पर नहीं जाता, बल्कि कभी-कभी डेक से केबिन को जाता था। ऐसा महसूस होता है जैसे कोई अपनी ही कब्र में जा रहा हो, "वह अपने आप से बुदबुदाया करता, मेरे ऐसे बूढ़े कप्तान के लिए इस तंग जगह में उतरने का मतलब है अपनी कब्र में खुद दफ़न हो जाना।"

अस्तु, चौबीसों घंटे—जब रात के पहरे व्यवस्थित किए जाने थे, या ऊपर डेक की टुकड़ी नीचे की ऊंघती हुई टुकड़ी से अदल-बदल करती थी, या ऊपर

के ऊंचे मस्तूल का रस्सा ठीक करना होता था—तो मल्लाह लोग उसे दिन की तरह धमाके से न गिराकर आहिस्ता से गिराते थे जिससे उनके ऊंघते—सोते साथी चौंककर जाग न जाएं, और जब इस तरह की गम्भीरता और शान्ति चारों ओर फैल जाती थी तब स्वभावतः जहाज चलने वाला नाविक केबिन की ओर देखता और तभी वह बूढ़ा कप्तान अपने एक पैर की लड़खड़ाहट को सम्भालने के लिए लोहे की छड़ी पकड़े बाहर निकलता। उस समय इन्सानियत की कोमल भावना उसके हृदय में होती क्योंकि ऐसे शान्त वातावरण में वह छोटे डेक पर इसलिए नहीं टहलता था कि उसके थके हुए मेट उसकी हाथी दांत की एडी से सिर्फ छः इंच की दूरी पर आराम करते होते थे और उसके बनावटी पैर की गूंजने वाली खटखट से उनके सपने उसी तरह टूट जाते मानो शार्क मछलियों के पैने दांतों के बीच पड़ गए हों। लेकिन एक बार वह कुछ इतना अधिक मूडी हो गया कि इन साधारण बातों का ध्यान उसे न रहा और वह अपने लकड़ी जैसे पैर से जहाज में आगे से पीछे तक टहलने लगा, ऊपर के तख्तों से मुख्य मस्तूल तक। तब नम्बर दो मेट बूढ़ा स्टब नीचे से आया। ऐसे ही मज़ाक में उसने धीमे स्वर में कहा, "अगर कैप्टेन आहाब को तख्तों पर चलने में खुशी हो तो उन्हें कोई मना नहीं कर सकता" लेकिन उस आवाज़ को छिपाने का कोई तो ढंग होना चाहिए। दबी जबान से किया गया यह संकेत आहाब के हाथी दांत के पैर के सम्बन्ध में था। आह! आहाब को उस समय तक नहीं जान सका था।

"स्टब! क्या मैं कोई तोप का गोला हूं कि तुम इस तरीके से मुझे रोकने की कोशिश करोगे? खैर! जाओ अपना काम देखो। मैंने माफ किया। जाओ नीचे रात वाली कब्र में दफ़न हो जाओ जहां रस्सों के नीचे, तुम्हारे जैसे मुर्दे लोग पड़े रहते हैं। जा नीचे भाग कुत्ते, अपनी मांद में।"

उस बूढ़े की डपट और आखिरी सम्बोधन से, एक मिनट को, स्टब निःशब्द हो गया, तब उत्तेजनापूर्ण स्वर में बोला—"सर! इस तरह के गाली-गुप्ता का मैं आदी नहीं हूं। सर! मैंने गलती की है लेकिन इतनी नहीं..."

"भागो!" अपने दांतों को मिसमिसाते हुए आहाब बड़बड़ाया और कुछ ऐसे हटा जैसे किसी तेज लोभ को दूर कर रहा हो।

"नहीं, श्रीमान्, अभी नहीं। मैं इस तरह आसानी से कुत्ता नहीं कहलाया

जा सकता, सर···" तनते हुए स्टब कह गया।

"तब दस बार गधा बन, और खच्चर, सुअर, गधा। भाग यहां से नहीं तो तुझसे इस दुनिया को दमभर में हल्का कर दूंगा।"

कहते हुए आहाब ऐसे डरावनेपन से आगे बढ़ा कि स्टब अनजाने ही पीछे हट गया।

"ऐसी बातों का मैंने सख्त जवाब दिया है", कहते हुए स्टब नीचे केबिन में उतर गया। स्टब सोचता गया—'यह तो बड़ी विचित्र बात है। स्टब! रुको। मुझे पता नहीं मैं क्या करूं, लौटकर उस पर चोट करूं या क्या? या अपने घुटनों के बल गिरकर माफी मागूं? हां—इस तरह का विचार मेरे मन में आ रहा था लेकिन मैं सोच रहा था कि वह पहला ही अवसर था जब मैं माफी मांग रहा था या प्रार्थना करूंगा। यह बड़ी अनोखी बात होगी—बहुत अनोखी, और अनोखा तो वह भी है, उसे चाहे जिस तरह से देखा जाए, इस तरह के अजीब आदमी के साथ सबने पहली ही बार समुद्रयात्रा की है। वह मेरी ओर कैसे लपका! —उसकी आंखें जैसे बारूद के प्याले की तरह थीं। क्या वह पागल हो गया है? जैसे जब कोई डेक चरचराता है उसी तरह की स्थिति उसके दिमाग की भी है। वह चौबीस घंटों में तीन घंटे से अधिक बिस्तर पर रहता ही नहीं और तब भी सोता नहीं। उस कमअक्ल स्टेवार्ड ने भी तो यह कहा था कि सुबह को उस बूढ़े के सब रात के कपड़े तितर-बितर और सिकुड़े पड़े रहते हैं, चादर ज़मीन में पैरों के पास लोटती है, पलंगपोश में गांठें बंधी होती हैं, और तकिया इतना गरम हो जाता है मानो उस पर कोई तपी हुई लाल ईंट रखी रही हो। गरम बूढ़ा आदमी। मेरा ख्याल है—स्थल पर जिसे कुछ लोग एक 'आत्मचेतना' कहते हैं, यह वही है। यह एक प्रकार की 'टिक—डाली-रौ' है—जैसा वे कहते हैं, दाढ़ के दर्द से भी बुरा। ठीक है, ठीक है, मुझे मालूम नहीं यह क्या है लेकिन भगवान ने, मुझे उससे बचा लिया। उसकी कोई बात समझ में नहीं आती। उस कमअक्ल स्टेवार्ड को शक है कि आहाब रात में न जाने क्या पकड़ने के लिए दौड़ता है। मैं जानना चाहता हूं। वह किसे पकड़ता है? क्या यह अनोखी बात नहीं है? लेकिन इसका क्या कहना—ये तो पुरानी बातें हैं—और उधर ऊंघ आने लगी। यह भी क्या कि इस दुनिया में सिर्फ सोने के लिए पैदा होना? यह भी वैसी ही अनोखी बात है जैसी बच्चे करते

हैं और पैदा होने पर सबसे पहले सोते ही रहते हैं। लेकिन, क्या किया जाए, जो बात सोचो वही अनोखी है। लेकिन यह तो मेरे सिद्धान्त के विरुद्ध है। सोचो मत—यह मेरा ग्यारहवां निर्देश है, और जब मौका मिले सो जाओ, बारहवां। तो फिर सोया जाए। लेकिन उसने मुझे कुत्ता क्यों कहा? उसने मुझे दस बार गधा कहा और उस पर पूरी शक्तिभर बका-चीखा। क्या मालूम वह मुझे ठोकर ही मार देता, मुझे जान से मार डालता? हो सकता है कि उसने ठोकर मारी ही हो और मैंने न देखी हो क्योंकि मैं तो उसकी भौंहों के तनाव से ही घबड़ा गया था। साफ की हुई हड्डी की तरह उसकी आंखें चमक रही थीं। आखिर मुझे हो क्या गया है? मैं अपने पैरों पर सीधा खड़ा ही न रह पा रहा हूं। जैसे उस बूढ़े ने शायद मेरे शरीर में कुछ गड़बड़ी कर दी है। हे भगवान! हो सकता है, तब मैं किसी डरावने ख्वाब में डूब गया होऊं। लेकिन कैसे? कैसे? कैसे?—एक ही तरीका है कि इस घटना को थोड़े समय के लिए भुला दिया जाए और झूले वाले पलंग पर सो जाया जाए। तब सुबह देखा जाएगा कि ये विचार दिन की रोशनी में क्या रूप धरकर आते हैं।'

## २५

जब स्टब चला गया तो आहाब जहाज की किलेबन्दी पर कुछ देर तक झुका खड़ा रहा और तब जैसा कि ऐसे मौकों पर कुछ दिनों से हमेशा उसके साथ होने लगा था, उसने पहरे के एक मल्लाह को बुलाया और नीचे भेजकर अपना हाथीदांत वाला स्टूल तथा पाइप मंगवाया। बाइनाकिल[1] लैम्प से पाइप जलाकर और स्टूल डेक की मौसमी हवा के रुख की तरफ़ रखकर वह बैठ गया और पाइप पीने लगा।

किंवदन्ती है कि पुराने जमाने में नार्वे के समुद्र-प्रेमी बादशाहों के सिंहासन नार्वे की व्हेल के दांतों से तैयार किए जाते थे। इस समय आहाब को हड्डियों की बनी तिपाई पर बैठे देखकर कौन नहीं कह सकता था कि वह भी एक शाह

१. वह सन्दूक, जिसमें कम्पास रखी रहती है।

नहीं है ? और वह उस जहाज़ का खान था, समुद्र का बादशाह था और समुद्री मगरमच्छों का शासक—परमात्मा।

कुछ क्षण यों ही निकल गए। इस बीच भारी धुआं उसके मुंह से निकलकर उसके चेहरे पर उड़ता रहा। तब पाइप को हटाकर वह अपने आपसे कहने लगा, 'अब पाइप को पीने से भी कोई सन्तोष नहीं मिलता। ओह मेरे पाइप! अगर तेरा आकर्षण चला गया तो मुझे बड़ी तकलीफ होगी। मैं अनजाने ही खुशी नहीं मना रहा, मेहनत कर रहा हूं। और हवा के रुख की ओर बैठा पाइप पी रहा हूं, हवा की तरफ और ऐसी मन की उदासी में कि जैसे मौत के मुंह में आखिरी सांसें लेती हुई व्हेल हो। मेरे मनोरंजन ही में सबसे बड़े दुःख बन गए हैं। इस पाइप से मेरा क्या मतलब? यह चीज़ जो गम्भीरता के लिए है, हलका सफेद धुआं, हलके सफेद बालों पर उड़ाने के लिए है न कि उलझे हुए टूटते मेरे जैसे भूरे बालों के गुच्छों पर उड़ाने के लिए। मैं आगे पाइप नहीं पिऊंगा—'

उसने तभी ही जलता हुआ पाइप समुद्र में फेंक दिया। उसकी आग लहरों में फस्स करके रह गई। उसके डूबने पर एक बुलबुला उठा, लेकिन तभी उस पर जहाज़ तैर गया। अपना पिचका टोप लेकर आहाब लंगड़ाते हुए तख्तों पर टहलने लगा।

## २६

अगले दिन सुबह स्टब ने फ़्लास्क से सब कुछ कह सुनाया।

"ऐसा अनोखा सपना, किंग-पोस्ट! मैंने कभी नहीं देखा। तुम उस बूढ़े के हाथीदांत वाले पैर को तो जानते हो—हां, तो मैंने देखा कि उसने उससे मुझे ठोकर लगाई और जब मैंने उलटकर ठोकर लगानी चाही तो मैं कसम खाकर कहता हूं कि मेरा पैर भी साथ ही उखड़ा चला गया। और तब ऐ देखो! आहाब एक ऊंचा पिरामिड-सा दिखाई दिया और मैं एक गुस्सावर मूर्ख की तरह उस पर दनादन लातें चला रहा था। लेकिन फ़्लास्क! इससे ज्यादा

अजीब और मज़ेदार बात क्या थी—तुम जानते हो—सभी स्वप्न कैसे अनोखे होते हैं। इतने सब गुस्से के बाद मैंने अपने आप सोचा कि आहाब की ठोकर कोई इतना बड़ा अपमान तो नहीं है। क्यों, मैं सोचता हूँ—झगड़ा ही किस बात का है? वह कोई असली पैर तो है नहीं, नकली ही है। और एक जिन्दा तथा मरे पैरों में बहुत अन्तर है। तभी फ़्लास्क! तभी हाथ की चोट बेंत से पचास गुनी अधिक तेज होती है। ज़िन्दा आदमी ही तो ज़िन्दा अपमान कर सकता है। उस बेहूदी पिरामिड पर बार-बार ठोकर देते वक्त मैं सोचता जाता था कि उसका पैर है क्या—सिर्फ एक बेंत, व्हेल की हड्डी का बना बेंत। हां! वह तो एक खेल की डंडेबाज़ी थी—वास्तव में तो उसने मछली की हड्डी उछाली न कि ठोकर लगाई। साथ ही—मैं सोचता हूं—उस पैर के आगे के छोटे हिस्से को फौरन देखो। कितना छोटा है? तब किसी चौड़े पैर वाले किसान ने ठोकर दी हो तो वह भारी बेइज्जती होती। लेकिन वह बेइज्जती तो एक नोक पर ही रह गई। लेकिन फ़्लास्क! अब उस ख्वाब का सबसे बड़ा मजाक सामने आता है। जब मैं पिरामिड पर अपनी ताकत आजमाई कर रहा था, तभी एक रीछ के बालों का-सा समुद्री आदमी—जिसकी पीठ पर एक कूबड़ था—सामने आया। उसने मुझे कन्धे से पकड़ा और मुझे चारों तरफ फिढ़लाया। 'तुम यहां क्या कर रहे हो?' वह बोला। उसने मुझे रपटाया। लेकिन मैं डर गया। ऐसा चेहरा! लेकिन अगले क्षण मैं अपने डर पर काबू पा गया। 'मैं किसलिए हूँ' मैंने आखिर कह डाला—'और मिस्टर कूबड़राम! आपका यहां क्या धन्धा है, क्या मैं जान सकता हूं? क्या तुम्हें भी एक ठोकर दूं' लेकिन, हे भगवान! फ़्लास्क! मैं इतना कह ही पाया था कि उसने अपनी पीठ मेरी ओर घुमा दी, झुका, और बहुत-से सरकंडे उसने घसीटे जो उसके चारों ओर लिपटे हुए थे, तब तुम क्या सोचते हो कि मैंने क्या देखा? ज़िन्दा तूफ़ान। उसके पीछे अनगिन कांटे थे जिनकी नोकें सामने निकली हुई थीं। दुबारा सोचकर मैंने कहा—'मैं सोचता हूं—मैं तुमको ठोकर नहीं लगाऊंगा।' 'समझदार स्टब?' उसने कहा—'समझदार स्टब'—और अपने आप बड़बड़ाता और कुछ मुंह में चभुलाता रहा। किन्तु जब मैंने देखा कि वह समझदार स्टब! होशियार स्टब! बड़बड़ाता ही रहा तो मैं दुबारा पिरामिड को ठोकरें लगाने की सोचने लगा। तभी उसने मुझे रोका और बोला—'ठोकरें लगाना बन्द कर दो। सुनो! उस बेइज़्जती के

लिए, चलो, हम बहस कर लें। कैप्टेन आहाब ने तुमको ठोकर लगाई तो क्या हुआ ? वह एक बहुत बड़ा आदमी है और उसने ठोकर भी हाथीदांत के पैर से लगाई है। इसमें परेशान होने की क्या बात है ? यह तो एक सम्मान है—इज़्ज़त ! पुराने जमाने में इंग्लैण्ड के बड़े-बड़े लार्ड महारानी के पैर की ठोकर खाने में इज़्ज़त समझते थे। तब उनको ऊंचे ओहदे मिल जाते थे। तुमको आहाब ने ठोकर मारकर बड़ा और समझदार आदमी बना दिया है। उसकी ठोकर को इज़्ज़त समझना। उलटकर ठोकर लगाने की कभी मत सोचना।' '''कहते-कहते वह हवा में लोप हो गया। मैं खर्राटे भरता रहा और करवट लेता रहा। जब संभला तो देखा झूले वाले पलंग पर सो रहा हूं। फ़्लास्क ! अब क्या सोचते हो ?"

"मुझे नहीं मालूम। वैसे तो निरी मूर्खता दिखाई देती है।"

"हो सकता है। हो सकता है। फ़्लास्क ! लेकिन इसने मुझे अक्ल दी है। वह देखो, आहाब वहां पीछे की ओर झांकते हुए दीख रहा है। अच्छाई इसी में है कि तुम उस बूढ़े को अकेला ही रहने दो। वह जो कुछ कहे—सुन लो। वह क्यों चीख रहा है ? सुनो !"

"मस्तूल की तरफ, वहां ? सब लोग गौर से देखो। वहां आसपास व्हेलें हैं। अगर तुम कोई सफेद व्हेल देखो तो उछटाना।"

"फ़्लास्क ! अब उसके बारे में क्या सोचते हो ? क्या कोई अनोखी बात सामने नहीं है ? देखो—हवा में भी कुछ अजीब बात लग रही है। समझो इसे फ़्लास्क ! आहाब के दिमाग़ में भी कुछ वैसी ही तेजी है। लेकिन, खामोश ! वह इधर ही आ रहा है।"

## २७

*( आहाब का प्रवेश : तब बाकी सब )*

उस पाइप की घटना के बाद अधिक दिन नहीं बीते होंगे कि एक दिन सुबह के नाश्ते के बाद आहाब, अपनी आदत के अनुसार, केबिन के बीच के

रास्ते से ऊपर डेक पर चढ़ा। बहुत-से जहाजों के कप्तान उस समय वैसे ही चहलक़दमी करते हैं जैसे भले लोग खाना खाने के बाद थोड़ी देर बगीचों में टहलते हैं।

शीघ्र ही उसके स्थिर हाथीदांत के पैर की आवाज उन तख्तों पर सुनाई पड़ने लगी। जहाज के पटरे भी, जिनपर वह चहलक़दमी कर रहा था, उसके कदम इतने अधिक अभ्यस्त हो गए थे कि गड्ढे पड़ गए थे, जैसे भूगर्भ से निकले पत्थरों पर पड़ जाते हैं। आप अगर गौर से देखें तो उसकी पतली और निशान पड़ी भौंहों पर भी पैरों के और भी विचित्र चिह्न पड़े हुए हैं—उसके चिरजाग्रत, चिर अस्थिर विचारों के पद-चिह्न।

लेकिन उस समय उसके वे निशान गहरे मालूम होते थे, उसके लड़खड़ाते पैरों से भी गहरे निशान बन रहे थे। और आहाब अपने अंतरंग विचारों से इतना भरा हुआ था कि जब-जब वह मुड़ता तथा जैसे-जैसे मुख्य मस्तूल से बाइनाकिल तक घूमता था वैसे ही वैसे उसके विचार पलटते दीखते थे, जैसे वह कदम बढ़ाता था वैसे ही वे बढ़ते थे, सचमुच वह विचारों में इतना डूबा हुआ था मानो बाहर का हर क्रिया-कलाप एक भीतरी सांचे पर गढ़ा हुआ हो।

"फ्लास्क ! क्या तुमने ग़ौर किया ?" स्टब फुसफुसाया—"उसके अंदर के मुर्ग़ी का बच्चा चोंच मारकर अंडा फोड़ रहा है। अब वह जल्दी ही बाहर निकलने वाला है।"

घंटे बीतते गए, आहाब कभी अपने केबिन में बंद हो जाता, कभी निकलकर डेक पर उसी तरह चहलक़दमी करने लगता।

शाम होने वाली थी। अचानक किलेबंदी के पास आकर वह ठहर गया और अपने हाथीदांत वाले पैर को एक छोटे छेद में जमाते हुए और एक हाथ से एक रस्से को पकड़ते हुए उसने स्टारबक को हुक्म दिया कि हरेक को ऊपर भेज दो।

"सर !" इस विचित्र हुक्म पर ताज्जुब करते हुए मेट बोला क्योंकि ऐसा हुक्म किसी खास बात के अलावा, जहाज पर कभी नहीं दिया जाता।

"सबको ऊपर भेज दो", आहाब ने दोहराया—"मल्लाहो ! चलो, यहां आओ।"

अब जहाज़ के सब लोग इकट्ठे हो गए और कौतूहल से उसे देखने लगे।

आहाब तूफान आने के समय के क्षितिज-सा दीख रहा था। जहाज़ की किलेबंदी पर जल्दी से नज़र फेंककर उसने जहाज़ के कर्मचारियों को देखा। साथ ही अपने स्थान से हिला और जैसे एक भी प्राणी उसके पास न हो, वह फिर चहलक़दमी करने लगा। सिर झुकाए, पिचका हैट हाथ में लिए वह काफी देर तक टहलता रहा, लोगों के बीच चल रही उत्सुक कानाफूसी पर बिना ध्यान दिए।

तभी सावधानी से स्टब ने फ्लास्क के कान में कहा—"आहाब ने हम सबको यहां इसलिए बुलाया है कि हम पैदल चलने वालों का कोई कारखाना देखें।" लेकिन यह स्थिति भी जल्दी समाप्त हो गई। तब एकाएक रुककर वह चीखा :

"लोगो ! तुम लोग किसी व्हेल को देखो तो क्या करोगे ?"

"उसके लिए चिल्लाएंगे !" बहुत-सी आवाजें एक साथ आईं।

"बहुत ठीक !" पूरे संतोष के साथ आहाब ने कहा।

"और फिर उसके बाद क्या करोगे ?" दूसरे कुछ लोगों को संबोधित कर आहाब ने प्रश्न किया।

"नीचे उतरेंगे और उसका पीछा करेंगे।"

"और तुम कौन-सी धुन अलापोगे ?"

"एक मरी व्हेल या एक स्टोव-बोट !"

हर आवाज़ के साथ बूढ़े का चेहरा खुशी से अधिकाधिक भरता जाता। साथ ही जहाज़ी भी आश्चर्य से एक दूसरे को देख रहे थे और सोच रहे थे कि वे ऐसे निरर्थक प्रश्न पर क्यों इतने उत्तेजित हो रहे हैं।

तब आहाब ने उनकी उत्सुकता को और बढ़ाते हुए कहा—"तुम सब मस्तूल वालों ने सफेद व्हेल के लिए मुझे हुक्म देते पहले ही सुना है। देखो ! क्या तुम यह स्पेन के एक औंस के बराबर सोना देख रहे हो ?"—एक सोने के सिक्के को सूरज के सामने चमकाते हुए उसने कहा—"लोगो ! यह सोलह डालर का टुकड़ा है। तुमने देखा ? मिस्टर स्टारबक ! मुझे बड़ा हथौड़ा दो।"

जब तक मेट हथौड़ा लाया, आहाब बिना बोले सोने के सिक्के को अपनी वास्केट में रगड़कर जैसे चमकाता रहा और मुंह से कुछ ऐसे भन्-भन् करता रहा जैसे उसके भीतर की शक्ति के पहियों के चलने की आवाज़ आ रही हो और वास्तव में उसकी शक्ति को हुंकार रही हो।

स्टारबक से बड़ा हथौड़ा लेकर वह बड़े मस्तूल की ओर बढ़ा। उसके एक हाथ में हथौड़ा ऊपर उठा और दूसरे में सोने का पासा झलक रहा था। ऊंची आवाज़ में तब उसने संबोधित किया—"जो भी मुझे सफेद सर वाली व्हेल लाकर देगा जिसकी भौंहें तिरछी हैं और जबड़ा टेढ़ा है, जो भी मुझे सफ़ेद सर वाली व्हेल लाकर देगा जिसकी पीठ पर तीन छेद हैं, जो उस सफेद व्हेल को ला देगा—मेरे मल्लाहो! वही इस सोने का अधिकारी होगा।"

"हुज़्ज़ा! हुज़्ज़ा!" जहाजी चिल्लाए जैसे फरफराते मोमजामे को वे मस्तूल पर सोने की कील से ठोक रहे हों।

"वह सफेद व्हेल है," आहाब ने हथौड़े को एक ओर पटकते हुए कहा—"सफेद व्हेल। मल्लाहो! उसकी तलाश ग़ौर से करना। सफेद पानी को भी ग़ौर से देखना। एक भी सफेद बुलबुला देखना तो चिल्लाना शुरू कर देना।"

इन सबमें टाशटेगो, डैग्गू और क्वीकेग सबसे ज्यादा सम्मान और आश्चर्य से देख रहे थे और उस तिरछी भौंहें तथा टेढ़े जबड़े को सुनकर जैसे उन्हें अपनी बीती याद आने लगी थी।

"कैप्टेन आहाब! सफेद व्हेल वही होगी जिसे कुछ लोग 'मोबी डिक' के नाम से पुकारते हैं?" टाशटेगो ने पूछा।

"मोबी डिक?" आहाब चीखा—"टाश! तब तुम सफेद व्हेल को जानते हो?"

"सर! क्या पानी में नीचे जाने के पहले वह अनोखी तरह से अपनी पूंछ हिलाती है?" इस मजाकिया आदमी ने जान-बूझकर कहा।

"और क्या उसका थूथुन भी विचित्र है?" डैग्गू ने कहा—"उसके थूथुन में बाल हैं और उसकी रफ़्तार भी काफी तेज है। है न, कैप्टेन आहाब?"

"और उसके शरीर पर एक-दो-तीन ओह! कैप्टेन! उसमें बहुत-से भाले गड़े हैं," क्वीकेग ने रुकते-अटकते हुए जोड़ दिया—"और वह उलटती-पलटती है, उसकी तरह वैसी—" जैसे बोलने के लिए शब्द ढूंढ़ रहा था और अपना हाथ अपने आप ऐसे मरोड़ रहा था जैसे किसी बोतल का कार्क खोल रहा हो—"उसकी तरह···वैसी···"

"कार्क खोलने का पेंच!" आहाब चिल्लाया—"हां, क्वीकेग! उसके शरीर पर अनगिनत भाले लगे हैं। ऐ डैग्गू! उसकी फुंकार तेज होती है और

वह इतनी सफेद होती है जैसे हमारे नन्तुकेत के सालाना मेले में सफेद ऊन का ढेर लगता है। और टाशटेगो ! वह ऐसे पूंछ हिलाती है जैसे हवा के तेज़ झोंकों में फटा पाल उड़ता है। मौत और शैतान ! मल्लाहो ! वही मोबी डिक है जिसे तुमने देखा है—मोबी डिक···मोबी डिक।"

अब तक स्टारबक, स्टब और फ़्लास्क खामोशी से अपने अफसर की बातों को ताज्जुब से सुन रहे थे। तभी अचानक स्टारबक के दिमाग में एक बात आई और वह बोल ही पड़ा : "कैप्टेन आहाब ! कैप्टेन आहाब ! मैंने मोबी डिक के बारे में सुना है लेकिन मोबी डिक ने आपका पैर नहीं खाया था ?"

"तुमसे किसने कहा ?" आहाब चिल्लाया तब खामोश हो गया—"ऐ स्टारबक ! ऐ मेरे सब प्यारे मल्लाहो ! वह मोबी डिक ही थी जिसने मुझे लंगड़ा कर दिया, उसीकी वजह से मुझे आज हाथीदांत के पैर पर खड़ा होना पड़ रहा है। ऐ···ऐ···" वह भयानक और ऊंची आवाज़ में जानवर की तरह सांस खींचने लगा जैसे किसी चूहे का हृदय बिंध गया हो। "ऐ···ऐ ? वही नापाक सफेद मछली थी जिसने मेरा पैर कुतर डाला और मुझे जीवन भर के लिए लंगड़ा बना दिया।" तब दोनों हाथ फैलाते हुए अपने पूरे जोश से वह चिल्लाया—"ऐ···ऐ ! मैं उत्तमाशा, हार्न, नार्वे मेलस्ट्रोम तक उसका पीछा करूंगा और तब उसका नाश करूंगा। और इसीलिए तुम लोग भी जहाज़ पर लाए गए हो—मल्लाहो ! कि उस सफेद व्हेल को पृथ्वी के दोनों छोर तक तलाश करो और धरती के सब तरफ ढूंढ़ो जब तक कि अपनी फुंकार में वह काला खून न उगलने लगे और उसकी पूंछ हिलना बन्द न हो जाए। तुम लोग अब क्या कहते हो ? क्या अब तुम लोग उस पर अपनी ताकत आजमाओगे ? मैं सोचता हूं कि तुम लोग काफी बहादुर दिखाई देते हो।"

"हां, हां !" हारपूनरों और जहाज़ियों ने उस उत्तेजित बूढ़े आदमी के निकट आकर कहा—"हम सफेद व्हेल को तेजी से ढूंढ़ेंगे। मोबी डिक पर हमारा तेज़ बर्छा पड़ेगा।"

"तुम सब पर भगवान की कृपा हो," वह बोला, मानो सिसकियां भी भर रहा था और चीख भी रहा था—"साथियो ! तुम सब पर भगवान की कृपा

हो। रसोइये ! ग्राग[1] का बड़ा वर्तन उठाकर लाग्रो। मिस्टर स्टारबक ! मुंह क्यों लटकाए हुए हो ? क्या तुम सफेद मछली का पीछा नहीं करोगे ? क्या तुम मोबी डिक का शिकार करने को तैयार नहीं हो ?"

"मैं तो उसके फटे जबड़े का शिकार करूंगा ही और मौत का भी, कैप्टेन आहाब ! यदि अपने रास्ते आ गई तो, लेकिन मैं यहां व्हेलों का शिकार करने आया हूं, न कि अपने कमाण्डर की किसी बात का बदला लेने। कैप्टेन आहाब ! अगर आपने अपना बदला ले भी लिया तो उसके तेल से कितने पीपे भरेंगे ? नन्तुकेत के बाजार में उसका ज्यादा पैसा भी तो नहीं मिलेगा।"

"नन्तुकेत का बाजार ! बकवास ! स्टारबक ! मेरे पास आओ। तुमको थोड़ा नीचे दाबने की ज़रूरत है। भले आदमी ! अगर धन ही अकेला मापदंड हो तो सारी दुनिया के बहीखाते वाले संसार को ही अपना बहीखाता मान लें और एक-एक इंच के तीसरे हिस्से को गिन्नियों से नाप डालें। मुझे कहना यह है कि मेरे बदले से ही बहुत कुछ मिल जाएगा।"

"वह अपनी छाती ठोंक रहा है" स्टब फुसफुसाया—"वह किसलिए ? मेरा ख्याल है उसकी छाती चौड़ी तो है लेकिन है खोखली।"

"एक गूंगे, बहरे जानवर से बदला।" स्टारबक चिल्लाया—"यह तो आप का सिर्फ अन्धा जोश है। पागलपन ! एक गूंगी-बहरी चीज़ पर क्रोधित हो जाना। कैप्टेन आहाब ! यह तो बड़ा भ्रष्ट और निन्दनीय लगता है।"

"चुप रहो ! तुम्हें थोड़ी दाब की जरूरत है। आदमी ! दुनिया की हर दिखाई देने वाली चीज दफ्ती की नक़ाब की तरह है। लेकिन प्रत्येक समय हर संदेहरहित काम में—कुछ अज्ञात किन्तु ऐसी तर्क की बात ज़रूर रहती है जो उस तर्करहित नकाब के पीछे से निकाल कर उसे सामने ढाल देती है। अगर आदमी टकराएगा तो उस नक़ाब के भीतर से। कोई कैदी बिना दीवार तोड़े बाहर कैसे जा सकता है ? मेरे लिए सफेद मछली वही दीवार है जो मेरे पास खड़ी है। कभी-कभी मैं देखता हूं कि उसके आगे कुछ नहीं है। लेकिन इतना बहुत है। वह मुझे उत्तेजित करती है, वह मुझे हिला डालती है, उसमें मैं भयंकर शक्ति देखता हूं—इतना मैल जो मुझे विद्रोह करने को भड़काता है। वह साफ़ न होने वाला

---

१. एक शराब।

मैल ही है जिसको मैं घृणा करता हूं, वह सफेद मछली उसकी प्रतिनिधि है, या स्वयं मूलवस्तु—लेकिन मैं अपनी उस घृणा से उसको रगड़ डालूंगा। आदमी! मुझसे घृणा या निन्दा की बात मत करो। अगर सूरज भी मेरा अपमान करे तो मैं उस पर भी चोट करूंगा। क्योंकि यदि वह वैसा करता तो मैं भी वैसा करता और इस तरह यह एक खरा सौदा है। सृष्टि की हर वस्तु पर घृणा का आधिपत्य है। भले आदमी! वह मेरा मालिक भी खरा खेल खेलता है। मेरे ऊपर कौन है? सचाई की कोई सीमा नहीं है। अपनी आंख बन्द करो। उस मूर्खतापूर्ण दृष्टि में इस स्थिति से अधिक असह्य चमक दिखाई देगी। तो—तो—तुम लाल-पीले हो रहे हो। मेरी गरमी ने तुम्हें पिघलाकर क्रोध से चमका दिया है। स्टारबक! लेकिन देखो—जो कुछ गुस्से में कहा जाता है, वह अपने आप समाप्त हो जाता है। कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनके गुस्से से भरे शब्दों का बुरा नहीं लगता। मैं तुम्हें जलाना या क्रोधित नहीं करना चाहता। देखो! सामने दिखाई देने वाले चमकते चमड़े को देखो—सूरज द्वारा चित्रित सांस लेती हुई रंगीन तस्वीरें। मूर्तिपूजा करने वाले तेंदुए और चीते—धर्म न मानने वाली चीज़ें जीवित रहती हैं और वे कैसी झुलसी जिंदगी बिताते हैं उसका न कोई कारण सोचते हैं न बताते हैं। यह जहाज के कर्मचारियों का समूह, भले आदमी! यह दल! क्या व्हेल के मामले में वे आहाब के साथ पूरी तरह नहीं हैं? स्टब को देखो! वह हंसता है! वह सामने 'चिलियन' को देखो! वह उसको सोचकर नाक बजा रहा है। ऐ! ऐ! तुम खामोश हो, ओह, तो यही तुम्हारा जवाब है। मेरी नाक से कोई चीज बाहर आई है जिसे इसने अपने फेफड़ों में भर लिया है। स्टारबक अब मेरा है। वह मेरा विरोध अब नहीं कर सकता। वह अब विद्रोही नहीं होगा।"

"भगवान मेरी रक्षा करे! सबकी करे!" धीरे से स्टारबक बुदबुदाया।

लेकिन अपनी प्रसन्नता और मेट की उदासीनता में आहाब ने वह कुछ नहीं सुना। सामने खड़े जहाजियों की धीमी हंसी ही उसे सुनाई दी; रस्से लिपटे पहिए के खुलने-लिपटने से उभरी आवाजें, मस्तूलों की ओर उठने वाले डांडों की छप-छप की आवाजें भी उसे न सुनाई दीं, मानो एक मिनट को सबके दिल बैठ गए हों। एक बार फिर स्टारबक की आंखें जीवन की दृढ़ता से चमक उठीं, वह भीतरी हंसी समाप्त हो गई, हवा बह रही थी, डांडे चल रहे थे और

जहाज़ पहले ही की तरह आगे भागता चला जा रहा था। आह, तुम उपदेश और सावधानी ! जब आते हो तो रुकते भी क्यों नहीं ? लेकिन परछाइयो,— तुम भविष्य हो या चेतावनी ! मन के अन्दर का जो कुछ सच है उतना भविष्य कथन नहीं हो सकता। बाहरी रुकावटें कुछ भी हों लेकिन अन्दर की आवाज़ जब उठती है तो रोक असम्भव है।

"शराब का बर्तन ! शराब का बर्तन !" आहाब चिल्लाया।

वह छलकता पीपा सामने आते ही हारपूनरों की ओर घूमते हुए आहाब ने उन्हें अपने-अपने हथियार निकालने को कहा। अपने-अपने हारपून लिए हुए उन लोगों को उसी तार लपेटने के पहिए के पास सामने खड़ा किया, जब कि उसके तीनों मेट उसके बराबर अपने-अपने बर्छे लेकर खड़े हुए और जहाज़ के बाकी लोगों ने उन लोगों के चारों ओर एक गोल चक्कर बना लिया। एक मिनट को उसने खामोश खड़े होकर हर आदमी को गौर से देखा और उनकी खूंख्वार आंखें वैसे ही उससे जा टकराईं जैसे खूंख्वार चीतों की आंखें उनके बड़े चीते से मिल जाएं, उसके पहले कि वह जंगली सांडों के निशानों को देखकर उस ओर लपके। लेकिन, अफसोस ! उसे तो आदिवासियों के छिपे हुए जाल में फंसना था।

"पिओ और आगे बढ़ो !" मदिरा की लबालब भरी सुराही को सबसे पास खड़े जहाज़ी की ओर बढ़ाते हुए उसने ज़ोर से कहा। "अभी सिर्फ जहाज़ के कर्मचारी पिएं। दौर चलने दो। छोटी-छोटी घूंटें—लोगो ! फौरन गले से नीचे। यह शैतान के खुर की तरह गरम है। ठीक है, ठीक है ! प्याला चारों ओर घूम रहा है। यह तुमको नशे में धुत् कर देगी। सांप की तरह आंखों में लपलपाएगी। बहुत अच्छे। खूब पिया तुम लोगों ने। मुझे दो—यह खाली है ! तुमने जिन्दगी के साल देखे हैं—साथियो ! वह उदास जिन्दगी डूब गई, समाप्त हो गई। रसोइए ! फिर भरो।

"मेरे बहादुरो ! इधर आओ। तुम सबको मैंने यहां इकट्ठा किया है। तुम मेटो ! अपने-अपने बर्छों को मेरे पास लाओ। और तुम हारपूनरो ! अपने-अपने हथियारों के साथ वहां खड़े होओ। और तुम मजबूत मल्लाहो ! मुझे अपने गोले में घेर लो और वैसे ही जैसे हम मछुओं के पूर्वज किया करते थे—मुझे भी करने दो। साथियो ! वह अभी देखोगे। हां ! लड़का आ गया क्या ?

बदमाश लड़के जल्दी नहीं लौटते। वह मुझे दो। यह शराब का बर्तन फिर क्यों उदास हो गया ?

"मेटो ! आगे बढ़ो। अपने-अपने बर्छों की सलामी दो। बहुत ठीक।" कहते हुए उसने तीनों बर्छों की लाठियां उनके स्पर्श-केन्द्र पर छुई और स्टारबक, स्टब और तब फ्लास्क को गौर से देखा। तीनों मेटों ने उसकी तेज, स्थिर और भेदभरी दृष्टि को कूता। स्टब और फ्लास्क उसके दृढ़ व्यक्तित्व के सामने अगल-बगल देखने लगे और स्टारबक की ईमानदार आंखें नीचे भूमि की ओर झुक गईं।

"सब बेकार !" आहाब चीखा। लेकिन, शायद यह ठीक ही है। पहले कभी तुमने मेरी बिजली का धक्का अगर एक बार भी सह लिया होता, लेकिन अब तो मेरी वह तेजी जैसे बुझ ही गई है। अगर ऐसा मौका होता तो एक ही झटके में तुम्हारा काम तमाम हो गया होता। खैर। बर्छे गिराओ। और ऐ मेटो ! तुम तीनों को मैं यह काम सौंपता हूं कि तुम प्याले ले जाकर वहां उन तीनों मूर्तिपूजक साथियों को दो—वे तीनों बहुत इज्जत वाले भले आदमी —अच्छे खानदानी, मेरे बहादुर हारपूनर हैं। क्या यह काम तुच्छ है ? महान पोप भिखमंगों के पैर धोता है और अपनी खूबसूरत टोपी से कमंडल का काम लेता है। ओह, मेरे प्यारे पादरियो ! तुम्हारी अपनी विनम्रता तुम्हें झुकाएगी। मैं तुम्हें हुक्म नहीं दे रहा हूं। तुम उसे अपने आप करो। अपनी लाठियां अलग कर लो और कोने पकड़ लो, हारपूनरो !"

खामोशी से आज्ञा का पालन हुआ और हारपूनर लोग लोहे के अलग किए हुए भाले जो लगभग तीन फीट लम्बे थे—पकड़े हुए, उठाकर उसके सामने खड़े हो गए।

"अरे-अरे ! उस तेज लोहे से मुझे मत छेदो। इनको पलटो ! हां-हां। ऐ प्याले वालो ! आगे बढ़ो ! उन भालों को लो और जब तक मैं ढालूं, पकड़े रहो।" एक-एक मेट के पास जाकर तब उसने वह हलाहल बर्तन से उन हारपूनों के गड्ढों में डाला।

"अब—तुम लोग तीन-तीन खड़े होओ। उन जान लेने वाले प्यालों को थामो। कभी न टूटने वाली हमारी इस संस्था के लिए शुभ कामना करो। हां ! स्टारबक ! कम हो गया ! अब वह प्रकाशित होने को है। ऐ हारपूनरो !

पियो। पियो और कसम खाओ कि मोबी डिक की मौत हो। अगर मोबी डिक को हम न मारें तो भगवान हमें सज़ा दे।"

वे लम्बे और भारी भाले उठे तथा सफेद मछली व्हेल के विरुद्ध तरह-तरह के खुशी तथा तेज़ी के शब्द हुंकारते हुए, शराब पीते हुए और मस्ती में झूमते हुए जहाज़ी डेक पर उछलने लगे। स्टारबक कांपने लगा, पीला पड़ गया और घूम गया। एक बार फिर वह जाम सब के सामने घूमा। तब धीरे-धीरे हाथ हिलाते हुए सब तितर-बितर हो गए। आहाब अपने केबिन में चला गया।

## २८

केबिन में जहाज़ के पीछे की खिड़कियों के पास, आहाब अकेला बैठा है, और बाहर नजर गड़ाए है।

जहां कहीं भी मैं यात्रा करता हूं मुझे जागरण की उदासी और परेशानी उठानी पड़ती है। पीले समुद्र, पीले गाल। वे ईर्ष्यालु लहरें अगल-बगल से उफन कर आती हैं और मेरे जहाज़ को नष्ट करने की कोशिश करती हैं। करने दो, लेकिन मैं निकल जाता हूं। सामने ही हमेशा चमकने वाले पहिए के फाले के निकट वे शराब की तरह लहरें इतनी गरम व रंगीन लगती हैं। सुनहली किरणें नीले समुद्र का आलिंगन करती हैं। दोपहर के बाद का सूरज धीरे-धीरे डूबते हुए शाम को अस्त हो जाता है। तब मेरी आत्मा जैसे जागती और उत्तेजित होती है। वह ऊंचाई में थक चुकी होती है। तो क्या जो ताज मैं पहने हूं वह बहुत भारी है? लम्बार्डी का यह लोहे का ताज? लेकिन फिर भी बहुत-स रत्नों से यह चमकता रहता है और मैं इसको पहनते हुए भी इसकी चमक का अनुभव नहीं कर पाता। अंधियारे में सिर्फ सोचता भर हूं कि कुछ पहने हूं जो मुझे चौंधिया कर दुःख में घेरे रहता है। सोना नहीं—मैं सिर्फ लोहा जानता हूं। वह ऊंचा-नीचा किनारा ही है जो मेरे सामने झनकारता है। लगता है जैसे मेरा दिमाग सख्त धातु से टकराता रहता है। जैसे यह मेरी खोपड़ी फौलाद की हो। मानो किसी भयंकर लड़ाई में मुझे लोहे के टोप की आवश्यकता नहीं है।

मेरी भौंहों के नीचे जैसे तेज़ गर्मी है। ओह! कोई दिन था जब सवेरा मुझमें आनन्द उल्लास भरता था और शाम आराम और शान्ति देती थी। अब जैसे सब समाप्त हो गया है। यह सुन्दर प्रकाश मुझमें रोशनी नहीं भरता है। हर प्रकार की सुन्दरता जैसे मुझे पीड़ा लगती है क्योंकि मैं उसका आनन्द नहीं ले सकता। अनुभूति की तीक्ष्णता होते हुए भी मुझमें उसको भोगने की शक्ति नहीं है। अफसोस! कितने दुःख और वेदना की बात है? स्वर्ग में भी शोक! गुड़ नाइट, गुड नाइट! *(अपना हाथ हिलाते हुए वह खिड़की से हट जाता है।)*

वह कोई बहुत सख्त काम नहीं था। मैं कम से कम एक मजबूत व्यक्ति चाहता था किन्तु मेरा एक दांतुएदार चक्कर उनके हरेक पहिए में सही बैठा जाता है और वे घूमने लगते हैं। या, अगर आपकी इच्छा हो तो, उन बहुत-सी दीमकों से बनाए गए ओट-से पहाड़ों को देखिए, वे मेरे सामने खड़े हो जाते हैं और मैं उनके अनुरूप लगता हूं। लेकिन दुर्भाग्य! दूसरों पर बारूद चलाने का अर्थ होता है अपनी दियासलाई और आग की बरबादी। जो कुछ मैंने चाहा है उसे करने की हिम्मत की है और जो कुछ मैंने चाहा मैं करूंगा। वे मुझे पागल समझते हैं—स्टारबक समझता है, लेकिन मुझमें शैतान की-सी ताक़त है। मैं पागलपन का पगलाना हूं। उस तरह का पागलपन जो संतोष पाकर अपने आप शांत हो जाता है। भविष्यवाणी की गई थी कि मैं अपाहिज हो जाऊं और देखिए—मेरी एक टांग चली गई। अब मैं अपनी भविष्यवाणी करता हूं कि जिसने मुझे अपाहिज बनाया है मैं उसको समाप्त कर दूंगा। अब फरिश्ता बनकर मेरे संकल्प को पूरा कराओ। यह सब उन सब महान देवताओं से भी अधिक है। ऐ क्रिकेट के खिलाड़ियो! मैं तुम पर हंसता हूं। मैं वैसे नहीं कहूंगा जैसे स्कूल के लड़के गुण्डों और बदमाशों की सोहबत में करते हैं—आप अपनी ही उम्र के किसी को लीजिए, मुझको गांठ बांधकर मत दाबिए। नहीं, तुमने मुझे नीचे गिराया है और मैं फिर ऊपर उठ आया हूं लेकिन तुम अब भागकर छिप गए हो। अपने सूत के बोरों से निकलकर बाहर आओ। तुम्हें मारने के लिए मेरे पास कोई बंदूक नहीं है। आओ! आहाब तुम्हारा अभिनंदन करता है। आओ और देखो, क्या तुम मुझे पहचान सकते हो? क्या मुझे

पहचान सकते हो ? तुम मुझे नहीं पहचान सकते वर्ना तुम अपने आपको पहचान जाओगे ! आदमी की कमजोरी तुममें है। क्या मुझे पहचानोगे ? मेरे निश्चित कामों के लिए मेरा रास्ता लोहे की पटरियों का बना हुआ है और उस पर मेरी आत्मा को दौड़ना है। असीम गहराई वाले खड्डों के ऊपर पहाड़ों के दिल को चीरते हुए, जल की तेज धार के बिछावन के नीचे बिना गलती किए मैं भागता हूं। मेरे रास्ते में कोई बाधा नहीं पड़ सकती।

## २९

*(बड़े मस्तूल के सहारे स्टारबक झुका खड़ा है)*

मेरी आत्मा पर बहुत बड़ा भार है। उस पर ज़रूरत से ज़्यादा आदमी का लदाव है, एक पागल आदमी का दबाव। असहनीय चोट है यह कि एक अच्छा-भला आदमी एक पागल आदमी के कब्ज़े में रहे। लेकिन उसने तो मुझे बिलकुल उखाड़कर फेंक दिया और मेरे समस्त तर्कों को उड़ा दिया। मैं देखता हूं कि मुझे उसका अपवित्र अन्त दीख रहा है। लेकिन मुझे लगता है कि मुझे उसे अन्त तक पहुंचाने में उसकी सहायता करनी चाहिए। मेरी चाहना नहीं होती, किसी न छूटने वाली चीज़ से मैं बंधा हूं। मैं एक तार से बंधा हूं और मेरे पास चाकू नहीं है कि मैं उसे काट सकूं। भयंकर बूढ़ा। वह चीखता है—उसके ऊपर कौन है ? इस सबसे ऊपर वह बड़ा प्रजातन्त्रवादी है—राजनीतिज्ञ, देखो ! अपने से नीची श्रेणी के आदमियों पर वह कैसी हुकूमत चलाता है। ओह ! मैं अपने अधिकार की दुर्दशा साफ देखता हूं—विद्रोह करते हुए भी हुक्म मानो, इससे भी खराब यह है कि दया की भावना के साथ घृणा करो। उसकी आंखों में मुझे कोई ऐसी चीज दिखलाई पड़ती है, कि अगर मेरी आंखों में होती तो मैं बाकी न रहता। फिर भी आशा अभी भी बाकी है। समय और ज्वार की गति बहुत बड़ी है। वह घृणित व्हेल अपने चारों ओर के समुद्र के संसार में तैरती है और छोटी गोल्ड फिश ( सुनहली मछली ) के चारों ओर चमकदार गोला होता है। भगवान उसके स्वर्ग को अपमानित करने के कर्म को भुला दे तो कितना अच्छा हो। अगर मेरा दिल सीसे की तरह भारी न हो गया

होता तो मैं स्वयं वही करता। लेकिन मेरे समय की छड़ी जैसे निर्बल हो गई है। मेरा हृदय घड़ी चलाने वाला पेंडुलम है किन्तु मेरे पास चाभी नहीं है कि मैं उसे फिर चला सकूं।

*(जहाज़ की ऊपरी किलेबन्दी से खुशियों की गूंजें)*

हे भगवान ! ऐसे निर्दय जहाजी कर्मचारियों के साथ यात्रा, जिन्हें मानो मानवी माताओं का स्पर्श ही नहीं मिला। इस शार्क मछली के सागर में जैसे बह गया है। सफेद व्हेल जैसे उनके लिए सर्प-परी है। खामोश ! निर्दय अत्याचार ! खुशियां उभर रही हैं। जहाज के पीछे के हिस्से की शान्त उदासी पर गौर कीजिए। मेरा ख्याल है जिन्दगी की यही सही तस्वीर है। आगे का उभरता हुआ समुद्र जहाज के आगे के खुशनुमा हिस्से से टकराता है। उस कलुषित आहाब को भी घसीट रहा है जो जहाज के पिछले केबिन में पड़ा हुआ चिन्तामग्न है, जो अनिद्रा के मृत जल पर बना हुआ है और इससे अधिक उसकी सनकी और मूर्खतापूर्ण बातों का वहां अधिकार है। यह जोर का शोर मुझमें सिहरन पैदा करता है। शान्ति ! ऐ खुशियां मनाने वालो ! अब अपने-अपने काम और पहरे पर चलो। ओह ! जिन्दगी ! यह इस समय दिखाई दे रही है जब कि आत्मा को हराकर बुद्धि के हवाले कर दिया गया है—जैसे जंगली और अज्ञान चीजों को भी जबर्दस्ती भोजन कराना पड़ता है—ओह जिन्दगी ! अब तो तुझमें छिपा हुआ भय मुझे दिखाई दे रहा है। लेकिन वह डर मैं नहीं हूं। वह डर मुझसे अलग है और इंसानियत की कोमल भावना के साथ है लेकिन फिर भी मैं तुझ उदास और अभागे भविष्य से लड़ूंगा। मेरा साथ दो, मुझे पकड़ो, मुझे बांधो, ओ मेरे आशीर्वाद प्राप्त अच्छे गुणो !

# ३०

*( स्टब अकेला खड़ा एक गांठ ठीक कर रहा है )*

हा ! हा ! हा ! हा ! हूं ! अब गला साफ हुआ। मैं तब से सोच रहा था लेकिन आखिर यह 'हा ! हा !' करनी पड़ी। ऐसा क्यों ? क्योंकि सभी अद्भुत और विलक्षण बातों का सबसे सुगम और समझदारी का उपाय हंसना है। और जो होना है वह होगा पर एक न एक आराम हमेशा रह जाता है। वही जो सर्व सुख है—वह भाग्य द्वारा पहले ही से निश्चित है। स्टारबक से उसकी पूरी बातचीत मैंने नहीं सुनी लेकिन मेरी इन कमजोर आंखों से स्टारबक वैसा ही दीख रहा था जैसा उस शाम मैं खुद दीख रहा था। यह तय है कि बूढ़े आहाब ने ही उसे ठीक किया था। मैंने अनुमान लगा लिया, मैं जानता था, उसको वह सौगात मिली है, जैसे भाग्य ने वैसा ही तय कर दिया है क्योंकि जब मैंने अपनी आंख उसकी खोपड़ी पर भिड़ाई तो देख लिया। हां, स्टब ! समझदार स्टब !—वह मेरा टाइटिल—मेरा नाम है। हां तो स्टब, उसका क्या ? यह एक ढांचा है। मुझे वह सब तो पता नहीं जो होने वाला है लेकिन जो होना है, हो। मैं तो ऐसे ही हंसता रहूंगा। उन सब डरावनी बातों में इतनी बदतमीजी भरी है तो मैं क्या करूं। मुझे तो वह मजाक ही लगेगा। इस समय, घर पर मेरी वह रसीली नाशपाती क्या कर रही होगी ? चीख-चीखकर अपनी आंखें बाहर निकाल रही होगी। सबसे आखिर में पहुंचे हुए हारपूनर को दावत दे रही होगी। मैं कह सकता हूं, कि वह जहाज के झंडे की तरह खुश होगी और मैं भी वैसा ही खुश, ओह···

**आज रात हम दिल के हलकेपन से पिएंगे,**
**मोहब्बत के लिए, खुशियों के लिए,**
**उस बुलबुले से हलकेपन से जो लहर के फेन पर तैरता है,**
**और ओठों पर फूट पड़ता है।**

कैसी सुन्दर कविता है, कौन पुकारता है ? मिस्टर स्टारबक ? हां, हां, सर ! *(स्वगत)* वह मेरा आला अफसर है । अगर मैं गलती पर नहीं हूं तो उससे भी बड़ा उसका एक अफसर है । —हां, हां ! सर ! यह काम निबटाकर अभी आया ।

## ३१

आधी रात, ऊपर किलेबंदी का मंच

हारपूनर और मल्लाह लोग

*( आगे का पाल उठता है और पहरा दिखाई देता है, पहरेदार खड़े हुए, अधलेटे, झुके हुए और लेटे हुए दिखाई देते हैं, सब लोग साथ मिलकर गा रहे हैं । )*

**विदा, अलविदा—स्पेन की महिलाओ !**
**विदा, अलविदा—महिलाओ स्पेन की !**
**हमारे कप्तान का है हुक्म—**

नंतुकेत का पहला मल्लाह

हे लड़को ! भावुक मत बनो । यह हाजमे के लिए खराब है । टॉनिक पियो, टॉनिक ! मेरा साथ दो !

*( गाता है और सब साथ देते हैं )*

**कप्तान हमारा डैक पै खड़ा था,**
**दूरबीन लिए हाथ में,**
**देख रहा था बहादुर व्हेलों को,**
**जो हर जगह तैरती रहती हैं ।**
**ओह ! मेरे साथियो ! तुम्हारे पीपे हैं तुम्हारी नाव पर ।**
**पास ही बंधे हुए हैं रस्से,**

एक मिलेगी, ज़रूर, वह सुन्दर व्हेल,
साथियो ! यह तय है, निश्चित है।
इसलिए मेरे लड़को ! खुश होग्रो—दिल तुम्हारा बैठे ना—
वह बहादुर भाले वाला ! व्हेल जब मारेगा !

*( छोटे डेक से मेट की आवाज़ )*

आठ घंटियां बजीं, देखो ।

नंतुकेत का दूसरा मल्लाह

कोरस बन्द करो। आठ घंटियां बज रही हैं। क्या सुन रहे हो तुम लोग ? ऐ पिप ! तुम काले हब्शी ! मुझे पहरेदारों को बुलाने दो। मेरा वैसा मुंह है—हागशीड[1] का मुंह। तो, तो *(अपना सर नीचे के केबिन की ओर झुकाता है)* स्टार—बो—ली—न्स, ए—हो—य ! नीचे आठ-आठ घंटियां बज रही हैं।

हालैंड का मल्लाह

आज रात, मेट ! बहुत नींद आएगी। रात भी सोने के लिए बड़ी अच्छी है। उस बूढ़े मुग़ल की शराब में मैंने ऐसा ही कुछ देखा है। वह जैसे औरों के लिए उत्तेजक है—वैसी ही भयानक। हम गाते हैं, वे सोते हैं—हां। बन्दूकों की कतारों की तरह नीचे जमीन पर सो जाओ। रात को अपनी-अपनी प्रेमिकाओं के सपने देखना बन्द रखना। यह मौत से उठने का वक्त है। उनको अन्तिम प्यार करके भगवान के फैसले के सामने अपने को खड़ा करना चाहिए। यही एक तरीका है। ऐ मस्टरडम का मक्खन खाते-खाते तुम्हारा गला तो खराब नहीं हुआ ?

फ्रान्स का मल्लाह

हुश, दोस्तो ! कम्बल ओढ़कर सोने के पहले हमें एक-दो बार थिरक लेने दो। तुम क्या कहते हो ? दूसरा पहरा आ रहा है। सीधे खड़े होओ। मेरे सेव-से पिप ! छोटे सेव-से पिप ! तुम्हारी झांझ कहां है। हुर्रे !

---

१. साढ़े बावन गैलन तरल वस्तु की माप वाला पीपा।

पिप

*(ऊंघते और आलस्य में)*

पता नहीं वह कहां है ?

फ्रांस का मल्लाह

तो फिर अपना पेट पीटो और कान खींचो। मैं कहता हूं—थिरक-थिरक कर नाचो। खुशियां मनाओ। हुर्रे। धत—नाचोगे नहीं ? तैयार होओ—हां, एक कतार में खड़े हो जाओ दो बार उछाल लो। अपने को ढीला करो। पैरों पर ! पैरों पर !

आइसलैंड का मल्लाह

मेट ! मुझे तुम्हारा यह फर्श पसन्द नहीं है। यह मेरे लिए बहुत लोचदार है। मुझे बर्फ के फर्श पर सोने की आदत है। मुझे दुःख है कि मैं इस विषय को नहीं मान सकता। लेकिन मुझे माफ करो।

माल्टा का मल्लाह

मैं भी, तुम्हारी प्रेमिकाएं कहां हैं ? किसी बेवकूफ के सिवा ऐसा और कौन अपना बायां हाथ दाहिने से पकड़कर अपने आपसे कहेगा—कैसे मिजाज हैं ? एक साथी चाहिए ! मुझे एक साथी ज़रूर चाहिए—लड़की !

सिसिली का मल्लाह

ऐ, लड़लियां और वो भी जवान—तब मैं तुम्हारे साथ नाच सकता हूं। हां, हां, टिड्डे की तरह नाच सकता हूं।

लांग-आइसलैंड का मल्लाह

हां, हां—सोने वालो ! हममें से अभी और भी बाकी हैं। मैं कहता हूं हमें भविष्य में काम करना होगा। सभी, बहुत जल्दी शिकार में लग जाएंगे। आह ! यह संगीत लहरें ले रहा है। आओ, नाचो !

अज़ोर मल्लाह

*( ऊपर चढ़कर केबिन के ढक्कन के ऊपर खंजड़ी रखते हुए )*

पिप ! लो ! और वहां बोझ उठानेवाला यन्त्र झनझना रहा है। ऊपर चढ़ो। हां, अब ठीक है दोस्तो !

*(उनमें से आधे खंजड़ी की आवाज़ पर नाचते हैं, कुछ नीचे चले जाते हैं, कुछ पालों के रस्सों के पास लेटते हैं या सो जाते हैं। धीमे स्वर में कसमें खाई जाती हैं)*

अज़ोर मल्लाह

*(नाचते हुए)*

बजाते जाओ, पिप ! बजाते जाओ ! ज़ोर से थाम दो, खूब ज़ोर से। आग की तरह चमककर उछलो। घुंघरुओं को तोड़ दो।

पिप

तुम कहते हो—घुंघरू ?—वह दूसरा चला। दूर गिरा। मैं तो उसे चूर-चूर कर ही दम लूंगा।

चीनी मल्लाह

तो फिर अपने दांत किटकिटाओ और उन्हें भी चूर-चूर करके फेंको। अपने शरीर का एक पगोड़ा बना डालो।

फ्रान्स का मल्लाह

खुशियों में पागलो ! पिप ! जब तक मैं कहूं—लोहे की पत्ती पकड़े रहो। जंजीरों को तोड़ दो। अपने आपको फाड़ डालो।

टाशटेगो

*(ख़ामोशी से तम्बाकू पीते हुए)*

वह एक गोरी चमड़ी वाला आदमी है। इसे यह खुशी मनाना कहता है। मैं बेकार परिश्रम नहीं करना चाहता।

मान्क्स का बूढ़ा मल्लाह

मुझे इसमें सन्देह है कि इन नाचने वाले मौजी लड़कों ने कभी सोचा भी है कि वे क्यों नाच रहे हैं ? मैं तुम्हारी कब्र पर नाचूंगा। यह तुम्हारी रात की रानी की सबसे कठोर धमकी होगी कि अनुकूल हवा को भगाकर किनारे कर दे। ओ ईसूमसीह ! हरे रंग की जहाजी बेड़ा और मूर्ख खोपड़ी के कर्मचारी ! वाह-वाह—यह दुनिया तो एक गेंद है—वाल, जैसा कि पढ़े-लिखे लोग कहते हैं और इसलिए इसको एक बाल-रूम—नृत्यगृह—बना देना बिलकुल ठीक है। नाचो, नाचो लड़को ! तुम लोग जवान हो। कभी मैं भी ऐसा ही था।

नन्तुकेत का तीसरा मल्लाह

ओह ! ऐसा सन्नाटा। यह शान्ति तो शान्त मौसम में व्हेलों के पीछे भागने से भी अधिक बुरी है।

*(वे नाचना बन्द कर देते हैं और एक झुंड में इकट्ठा हो जाते हैं। इसी बीच आसमान गहरा हो जाता है और हवा भी तेज चलने लगती है)*

लास्कर का मल्लाह

ब्रह्मा की क़सम ! जहाज़ को जल्दी चलाने का तो मतलब होगा दीपक को बुझा देना। आकाश में उत्पन्न गंगा की ऊंची लहरें हवा के साथ बह रही हैं। शिव ! जैसे तुम्हारा तीसरा नेत्र खुल रहा हो।

माल्टा का मल्लाह

*(आराम से उढ़कते और अपनी टोपी हिलाते हुए)*

ये लहरें हैं—बर्फ की टोपियां, जो अब नृत्य करना चाहती हैं। जल्दी ही वे अपना सुनहला झब्बा तोड़ डालेंगी। अगर ये लहरें सुन्दरियों का रूप ले लें तो मैं उनमें डूबकर उनको खूब मथूंगा। दुनिया में इनसे मीठी चीज़ और कोई नहीं है—स्वर्ग का भी इससे कोई मुकाबला नहीं है। वे चंचल और गरम आंखें, नृत्य करते हुए किसी सुन्दरी का झलकता हुआ वह चमकता-चौड़ा वक्ष, वे मदभरी-झूलती अंगूर-लताओं-सी बाहें—जब हमें घेर लें तो उस आनन्द की क्या बात है ?

सिसिली का मल्लाह

*(आराम से उद्कते हुए)*

ऐसा मुझसे मत कहो। जवानो! खामोश हो जाओ—अंगों को ऐसी गहराई से लिपटना, दबाना, चिपकना, कांपना, ओठ! दिल! कूल्हा! जैसे सब छू गए हैं—सब छिल गए हैं। बेरोक छूना, सहलाना और चल देना—चलते ही चले जाना। लेकिन इसमें कुछ मजा नहीं है। तुम अनुभव करो—आनन्द दूसरी चीज है। ओः—तुम मूर्तिपूजक हो? *(कोहनी मारता है)*

ताहिती का मल्लाह

हमारी नृत्य करने वाली छोकरियों की पवित्र नग्नता की प्रशंसा करो—तारीफ़-तारीफ़ करो। हीवा-हीवा! आह! झीना कपड़ा पहने, चौड़ी छाती वाली ताहिती! मैं तुम्हारी चटाई पर अभी भी झुका हुआ हूं लेकिन वह मुलायम धरती फिसल गई है। मैंने चटाई को जंगल में बुने जाते देखा था। तब पहले दिन मैं इसे हरी ही ले आया था। लेकिन अब इस्तेमाल होने के बाद वह जर्जर हो गई। आह मैं! मैं और तुम कोई—इस परिवर्तन को सहन नहीं कर सकते। अगर तुम्हारी हरियाली को आकाश में उगा दिया जाए तो कैसा हो? भाले-सी ऊंची और नोकीली चोटी पिरोहिटी से आने वाली लहरों की गड़-गड़ाहट को मैं सुन रहा हूं, जब वे उछलते हुए किनारे और गांवों में घुसती चली जाती हैं?—वह विस्फोट! विस्फोट! ऊपर उठो, बीच में घुसो और तब उनसे मुलाकात करो। *(उछलकर खड़ा हो जाता है)*

पुर्तगाल का मल्लाह:

किनारों को कुचलता हुआ समुद्र कैसे हिलोरें लेता है। मेरे प्यारो! चट्टानों से टकराने से बचने के लिए संभले रहो! तलवार की काट से भी तेज हवाएं आ रही हैं, ये प्रचण्ड होकर सब तरफ घुसती चली जाएंगी।

डेनमार्क का मल्लाह

चरचराओ! पुराने जहाज़, चरचराओ! जब तक तुम चरचराओगे तभी तक तुम बने रहोगे। बहुत सुन्दर। मेट तुम्हें कसकर पकड़े हैं। कैटगैट टापू के किले से ज्यादा भय उसे नहीं रहता है क्योंकि उसे हर समय बाल्टिक सागर के तूफान

की बन्दूकों का मुकाबला करना पड़ता है, वहां समुद्र का नाक उबलता रहता है।

नन्तुकेत का चौथा मल्लाह

यह ध्यान रखना कि उसे कोई हुक्म दिया करता है। मैंने सुना है कि आहाब ने उससे कह रखा है कि उसे हमेशा तूफ़ानी लहरों से लोहा लेना है। जैसे किसी पानी के बुलबुले पर पिस्तौल दाग़ी जाए, उसी तरह अपना जहाज़ उछलती लहरों में दाग दो।

अंग्रेज मल्लाह

खून! लेकिन वह बूढ़ा तो बहुत पुराना साथी है। हम छोकरों को उसकी व्हेल की तलाश करनी चाहिए।

सब एक साथ

हां! हां!

मान्क्स का बूढ़ा मल्लाह

तीनों देवदार के पेड़ कैसे हिलते हैं? अगर एक देश से दूसरे देश को ले जाया जाए तो भी देवदार का वृक्ष बहुत समय तक ठहरा रहता है। लेकिन यहां जहाज़ियों की शामित मिट्टी के अलावा कुछ नहीं है। संभलकर! पतवार चलाने वालो—संभलकर! इस मौसम में बहादुर से बहादुर दिल भी किनारे पर टूट जाते हैं और जहाज़ पानी में फट जाते हैं। हमारा कैप्टेन अकेला है। जवानो! सामने देखो—आसमान में एक और है—भूरे रंग का—डरावना! तुम देख रहे हो—उसके अलावा चारों ओर अन्धकार है।

डग्गू

उससे क्या? जो काले रंग से डरता है वह मुझसे डरे! मुझसे बात साफ़ कर लो।

स्पेन का मल्लाह

*(स्वगत)* वह मूर्ख बनाना चाहता है, आह! लेकिन पुरानी ईर्ष्या मुझे झकझोरती है। *(आगे बढ़कर)* ऐ! हारपूनर! तुम्हारी जात इंसानियत का

सबसे भद्दा कालापन है— । ! शैतानियत की कालिख जैसा । लेकिन यह जुर्म नहीं है ।

*(गम्भीरता से)*

हां, गे नहीं हैं ।

सेन्ट जागो का मल्लाह

वह स्पेन वाला या तो पागल हो गया है या गहरी छाने है । लेकिन ऐसा नहीं हो सकता या सिर्फ उसी के अकेले मामले में बूढ़े मुग़ल की गरमी बहुत देर से बढ़ रही है ।

नन्तुकेत का पांचवां मल्लाह

वह क्या है ? बिजली की कौंध ? हां ।

स्पेन का मल्लाह

नहीं, डग्गू अपने दांत चमका रहा है ।

डग्गू *(उछलते हुए)*

ऐ बौने ! मैं तेरी सफेद खाल और सफेद जिगर निगल जाऊंगा ।

स्पेन का मल्लाह *(उसके पास पहुंचकर)*

ज़रा जिगर में चाकू गहराई से पार करना । भारी डीलडौल लेकिन छोटे दिल वाला !

सब मिलकर

झगड़ा ! झगड़ा ! झगड़ा !

टाशटेगो *(फुफकार कर)*

एक झगड़ा नीचे, और एक झगड़ा ऊपर ! खुदा और इन्सान—दोनों उपद्रवी—दोनों झगड़ालू ! दुष्ट !

बेलफास्ट का मल्लाह

झगड़ा ! अरे, झगड़ा ! कुंआरी मरियम की कसम ! झगड़ा हो गया । तुम्हारे सामने संकट उठ खड़ा हुआ ।

अंग्रेज मल्लाह

अच्छा तमाशा ! स्पेन वाले का चाकू छीन लो। घेरा, घेरा डालो !

माल्टस का बूढ़ा मल्लाह

ठीक—तैयार। वहां ! वह क्षितिज भी एक घेरा है। उस घेरे में केन ने एबेल को मारा था। अच्छा किया, ठीक किया ! लेकिन भगवान ने तुम्हें गोल घेरे के लिए क्यों पागल बना दिया ?

छोटे डेक से मेट की आवाज

पालवाली रस्सी संभालो ! बड़े पालों को ठीक रखो, ऊपर ! ऊपर के पालों को संभालने के लिए वहीं पास खड़े रहो।

सब

तूफ़ान ! तूफ़ान ! कूदो, मेरे खुशियां मनाने वालो। *(वे फैल जाते हैं)*

पिप *(पाल के पीछे छिपते हुए)*

क्या—खुशियां मनाने वाले ? खुदा, इन खुशियां मनाने वालों की मदद करे। वह पाल उधर जा रहा है ! जोर का धक्का ! हे भगवान् ! नीचे झुको पिप ! यह राजदंड आ गया। साल के आखिरी दिन में तूफान से घिरे जंगल से यह अधिक कष्टदायक है। अखरोट के पेड़ों पर अब कौन चढ़ सकेगा ? लेकिन वे सब गालियां देते जा रहे हैं परन्तु मैं तो ऐसा नहीं कर रहा। उनके लिए तरक्की के रास्ते हैं—वे स्वर्ग की राह पर हैं। कड़ाई से जमे रहना। जिमिनी, कैसा तूफ़ान है। लेकिन वहां वे लोग इससे भी बुरी हालत में हैं। वे तो जैसे तुम्हारी सफेद मछलियां हैं—वे। सफेद मछलियां। सफेद व्हेल। शीं-शीं। उन लोगों की हंसी-मजाक मैंने अभी सुनी। वह सामने सफेद व्हेल, शिर्र ! शिर्र ! लेकिन वह बात सिर्फ एक बार हुई। वह भी सिर्फ आज ही शाम को और वह मेरी खंजड़ी की तरह मुझे हिला रही है। अनाकोंडा[1] जैसा वह बूढ़ा उन लोगों को कसम खिला रहा था कि वे उसे मारेंगे। ओह ! तुम विशाल सफेद रंग के भगवान् ! तुम यहीं कहीं अन्धकार में छिपे हो। मुझ काले लड़के पर दया करो। मुझे उन नृशंस लोगों से बचाओ जिनके हृदय से डर निकल गया है।

---

१. लंका में पाया जाने वाला जल-सर्प।

# ३२

सफेद व्हेल आहाब के लिए क्या थी यह तो बताया ही जा चुका है; किन्तु वह कभी-कभी मेरे लिए क्या थी वह अभी मैंने नहीं बताया।

मोबी डिक के सम्बन्ध की प्रत्यक्ष बातों के अतिरिक्त जो लोगों में सनसनी पैदा करती थी, एक बात यह थी कि वह एक धुंधला-सा अकथनीय डर पैदा कर देती थी कि कभी-कभी उसके विचारों में आदमी पूरी तरह डूब जाता था। साथ ही वह कुछ ऐसी रहस्यमयी थी कि उसकी पूरी तस्वीर समझ में आने वाले ढंग से उतारने की कोशिश बड़ी मुश्किल है। सब बातों के ऊपर वह केवल व्हेल की सफेदी थी जो मेरे मस्तिष्क को घेरे हुई थी। लेकिन अपनी बात को साफ़-साफ़ कहने की शक्ति मुझमें नहीं है, फिर भी किसी न किसी प्रकार, अस्पष्ट ही सही, मुझे कुछ न कुछ तो बताना ही है, नहीं तो इन सारे अध्यायों का कोई अर्थ ही न रह जाएगा।

यों बहुत-सी प्राकृतिक वस्तुओं में सफेदी एक ऐसी चीज है जो खूबसूरती को बढ़ाती है जैसे वह अपनी ओर से उस वस्तु को कोई विशेषता दे रही हो —जैसे संगमरमर, जापान का श्रीफल, मोती। और वैसे भी बहुत-से राष्ट्रों ने इस रंग पर विशेष राजसी महत्व दिया है जहां तक कि प्राचीन पेगू के आततायी बर्बर शहंशाह ने अपने नाम के साथ 'सफेद हाथियों का सरताज' जोड़ा था और उसको अपने तमाम राज्य में सबसे ज्यादा प्रचारित किया था। यही नहीं आधुनिक स्याम के राजा भी उसी चौपदे जानवर बर्फ की तरह सफेद हाथी को शाही जुलूसों में सबसे आगे रखते हैं। हैनोवर के झंडे में भी इस तरह बर्फ-से सफेद एक सैनिक घोड़े की तस्वीर है। महान रोम के उत्तराधिकारी आस्ट्रियन साम्राज्य (सीजेरियन) ने भी अपने शाही झंडों में इसी सफेद रंग को अपनाया था। यों तो तमाम मनुष्य जाति पर सफेद रंग का प्रामुख्य है और गोरे लोगों ने हर जगह के काले वासियों पर अधिकार किया है। यही नहीं यह सफेदी आनन्द उत्पन्न करने वाली मानी गई है—क्योंकि रोम में सफेद पत्थर हर्ष के दिन का सूचक होता था। यही नहीं, इस सांसारिक

करुणा-दया के साथ-साथ प्रतीक रूप में यह रंग मन की अनेक भावनाओं तथा सुन्दर वस्तुओं को उभारता है—जैसे नवयौवना वधू के भोलेपन को, वृद्धत्व की गुरुता को। यही नहीं अमेरिका के लाल रंग के आदिवासियों में सफेद कपूर की माला देना सबसे बड़ा सम्मान माना जाता था, बहुत-से देशों में जज के सफेद रोएंदार 'फर' में न्याय की महत्ता मानी जाती है, बहुतेरे महाराजाओं और महारानियों की गाड़ियां दूध-से सफेद घोड़ों द्वारा खींची जाती हैं, जिनमें अधिकार की चेतना उभरती है। बहुत-से धर्मों के ऊंचे रहस्यों में इस सफेद रंग को परमात्मा का प्रतीक और उसके अधिकार को प्रकट करने वाला माना गया है। अग्नि के पुजारी ईरान के देशवासी वेदी में उठती हुई आग की सफेद लपटों को सर्वाधिक पवित्र मानते हैं। साथ ही यूनान के पुराणों में बर्फ़ के-से सफेद व चमकदार बैल को विधाता का प्रतीक माना गया है। आइरोक्यूइस लोगों में जो आधे जाड़ों में सफेद कुत्ते की बलि चढ़ाई जाती है वह उनके धर्म का सबसे पवित्र त्योहार माना जाता है तथा उसको उस महान आत्मा के सामने पूजा के रूप में देकर वे उसे अपने वर्ष की शुद्धि और पवित्रता के रूप में भगवान के पास भेजते हैं। सफेद के पर्यायवाची लैटिन भाषा के एक शब्द से ही सब ईसाई पादरियों ने अपनी पोशाक के एक विशेष कपड़े का नाम रखा है, जो आल्ब या ट्यूनिक कहा जाता है और उनके चोगे के नीचे पहना जाता है। रोम देशवालों की मान्यता में जो पवित्रता के समारोह हैं उनमें सफेद रंग के द्वारा ही भगवान को मूर्तिमान किया जाता है। 'सेन्टजान के विज़न' के सामने प्रायश्चित्त करने वालों को सफेद पोशाकें दी जाती हैं और चौबीस 'एल्डर' (पादरी) उस विशाल सिंहासन के सामने सफेद चोगे पहनकर खड़े होते हैं और वह सामने बैठने वाला सर्वोच्च एक मुलायम ऊन की तरह के सफेद रंग में चमकता है। इसीलिए सफेद रंग के साथ जो प्रभाव सम्मिलित है वह आदरसूचक, गम्भीर और प्रतिभाशाली होते हुए भी यह रंग आत्मा के अन्दर कभी-कभी ऐसा डर उत्पन्न करता है जो खून की लाली को देखकर पैदा हुए डर से कहीं अधिक शक्तिशाली होता है।

तब इस रंग में जो एक विशेष गुण है जिससे आत्मा में सफेदी का आभास होता है और जो स्नेहपूर्ण सम्मेलनों से पृथक् करता है, वस्तुओं में भय की सीमाएं बढ़ाता है। ध्रुव प्रदेशों के सफेद भालू को देखिए या गरम देशों की

सफेद शार्क मछली को—लेकिन उनकी वह चिकनी और चमकदार सफेदी अपने में मौत का डर भरे रहती है। और वह सफेदी देखने में कोमल होते हुए भी भय के अस्तित्व से भी भयानक और घृणापूर्ण होती है। और उन खूंख्वार पंजों वाले भयानक चीतों से उस सफेदी में घिरे भालू अथवा मछली में कहीं अधिक डरावनापन छिपा है।

दक्षिणी समुद्र में पाई जाने वाली उस बड़ी और सफेद चिड़िया की कल्पना कीजिए जो आत्मा की विलक्षणता एवं भय के उस पीलेपन को साथ लेकर उस भुतहा सफेदी के साथ बढ़ी चली जाती है। कोलरिज[1] कवि ने ही उस भय को पहले पहल व्यक्त नहीं किया था, बल्कि उस खुशामद न करनेवाली प्रकृति की ही यह सब करतूतें हैं।

अमेरिका के पश्चिमी भागों एवं वहां के आदिवासियों के रीति-रिवाजों में घास के मैदानों के उस सफेद घोड़े की बहुत प्रसिद्धि व महत्व है। एक सुन्दर दूध-सा सफेद घोड़ा, बड़ी-बड़ी आंखों वाला, छोटे सर और पतली छाती वाला जो अपनी लकीर-सी खींचने वाली गाड़ी को लेकर जब भागता है तो हजारों राजाओं का गर्व उस पर न्योछावर है। वह जर्कसेज़ था, जिसके पास भारी घोड़ों के जखीरे रहते थे और जिसके घास के मैदान राकी पहाड़ और ऐलीगैनीज़ के आसपास सुने जाते थे। उसके वे मशाल-से चंचल सर पश्चिम की ओर मुड़े रहते थे और उसकी टापें वैसे ही उधर बढ़ती थीं जैसे कोई खास तारा आसमान में हर शाम को प्रकाश की ओर ही बढ़ता जाता है। उसकी गर्दन के बाल जो चमकीले पानी के झरने की तरह लपलपाते थे, उसकी पूंछ की घुमावदार पुच्छलतारे-सी चमक और उस सबसे बना-ठना उसका रूप सोने-चांदी की आभा प्रकट करता था। पश्चिमी संसार में जैसे सृष्टि के आरम्भ होने के समय आदम खुदा के पूर्ण वैभव में घूमा करता था वैसे ही तेजी और तेवर के साथ निर्भय होकर यह ताकतवर घोड़ा भी पृथ्वी पर दौड़ता है। ओहायो की तरह के मैदानों में अन्य घोड़ों के साथ चलते समय जैसे बेरोक पानी की धार की तरह

---

१. अठारहवीं शताब्दी का एक प्रसिद्ध अंग्रेज रोमांटिक कवि। अंग्रेजी कविता में रोमांटिक कविता का श्रीगणेश सैम्युएल टेलर कोलरिज ने ही किया था।

बढ़कर या अपने गरम नथुनों को फुलाकर उनकी सफेदी और गुलाबी लाली में जब वह दौड़ते हुए क्षितिज की ओर लपकता या किसी भी रूप में रहने पर वह सदा बहादुर से बहादुर आदिवासी लोगों से इज्जत पाता है तो जैसे वे उससे घबड़ाते और उसका आदर करते हैं। पता नहीं किन पुराणों अथवा कथानकों के आधार पर उस घोड़े की उस सफेदी की इतनी पूजा होती है कि वह कोई स्वर्ग की चीज़ मानी जाती है और यही नहीं उसकी पूजा करने के साथ-साथ लोग अजीब तरह से उससे डरते भी हैं।

इसके अलावा कुछ ऐसी चीजें भी हैं जिनमें सफेद घोड़े और अल्बैट्रौस की अतिरिक्त आश्चर्यजनक महानता सफेद रंग में नहीं दिखाई देती।

अलबिनो के आदमी में कौन-सी चीज़ होती है जो आंखों को विकसित करती है कि कभी-कभी तो उसके सगे-सम्बन्धी ही उससे घृणा करने लगते हैं। अलबिनो का आदमी साधारण मनुष्यों की तरह ही होता है—उसमें कोई कमी नहीं होती लेकिन फिर भी उसकी यह सफेदी ही उसे किसी भी गन्दे से गन्दे गर्भपात से अधिक घृणित बना देती है। ऐसा क्यों होता है?

अजीब कुदरत है। दक्षिणी समुद्रों का मशहूर भूत 'व्हाइट स्क्वैल' के नाम से प्रसिद्ध है। फ्रायसर्ट में उस अंश का वर्णन कितनी गहरी उत्तेजना उत्पन्न करता है जब हताश व्हाइट हुड लोग जिनकी नकाबें बर्फ़ की तरह सफेद थीं 'बेलिफ' को सरे बाज़ार कत्ल कर देते थे।

इस रंग के सम्बन्ध में पूरे मानव समाज में हमेशा से क्या अन्ध विश्वास है और क्यों है इसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। मरने वाले को नज़रें गड़ाकर देखने पर जो डरावनी सफ़ेदी झलकती है वह जैसे दूसरी दुनिया को जाने वाले में विस्मय पैदा करने वाली तथा इस दुनिया के लिए मौत की थर्राहट का ही दूसरा नाम है। और उस मरने वाले की सफेदी को जब सफेद कपड़ों में ही लपेटते हैं तो अजीब सन्नाटा खिच जाता है। अतः उन्हीं अन्धविश्वासों में हमने यह भी जान रखा है कि सभी भूतों के चारों ओर दूध-से सफेद झागों का घेरा लिपटा रहता है। और ये सब डर मिलकर जब हमको घेरते हैं तो उस डर से महान डर का राजा भी धर्म पंडितों के अनुसार, धुंधले-से पीले-सफेद घोड़े पर बैठाकर उड़ जाता है।

इस प्रकार इस सफेदी का हमारी आत्मा से बड़ा विचित्र और गहरा नाता है।

लेकिन मानवमात्र इस रंग को कैसे समझे? इसका विश्लेषण करना या इसकी पूरी परीक्षा करना तो असम्भव है। परन्तु इस प्रकार की कुछ घटनाओं अथवा उदाहरण देने से इस सफेदी में छिपी गहराई, धर्म की मान्यता या भय को ढूंढ़ निकालना कुछ बहुत आसान भी नहीं है।

हमें कोशिश तो करनी ही चाहिए। लेकिन इस तरह के मामलों में गहराई में पैठने में गहराई बढ़ती ही चली जाती है। साथ ही बिना कल्पना के आदमी दूसरे को इस प्रकार की बातों की ओर आकर्षित भी नहीं कर सकता।

बिना जाने-बूझे आदर्शों को लपेटने वाला अथवा प्रतिदिन की बातों के अजीब विश्वासों को पकड़ने वाला इंसान क्यों व्हिटसनटाइड का नाम सामने आते ही समझ लेता है कि एक कदम-कदम बढ़ने वाले नीची निगाहें किए पिघलती बर्फ की चादर लपेटे तीर्थ-यात्रियों का काफ़िला, घबड़ाया-सा, चुपचाप उसके सामने चल रहा है? क्यों लाइट फायर या व्हाइटनन का नाम मध्य अमेरिकन स्टेट के प्रोटेस्टेंट ईसाई के सामने लेते ही उसकी आत्मा में एक नेत्र-हीन मूर्ति तैर जाती है?

क्यों अमेरिका के किसी यात्री के सामने लन्दन का व्हाइट टावर वहां के योद्धाओं एवं राजाओं का इतिहास जैसे वहां आसपास के अन्य टावरों से अधिक खुलासा करके कहता हुआ प्रतीत होता है? बाईवार्ड टावर या ब्लडी में भी वह बात नहीं है? और न्यू हैम्पशायर के व्हाइट माउन्टेन का नाम आते ही जैसे आत्मा में क्यों एक अजीब-सी कंपकंपी और डर समा जाता है जब कि वर्जीनिया के ब्लूरिज का नाम आते ही एक मुलायम, मीठा और आकर्षक स्वप्न दिखाई देने लगता है? और क्यों व्हाइट सी का नाम सामने आते ही उसकी लम्बाई-चौड़ाई की बात छोड़कर दिमाग़ में एक तस्वीर सामने आ जाती है जब कि येलो सी ( पीतसागर ) का ध्यान आने पर जैसे हमारे हृदय में एक दर्शनीय सूर्यास्त का चित्र, शाम को इठलाती लहरों का मीठापन और सुहाने सपने घूमने लगते हैं? और क्यों मध्य योरोप की परियों की कहानियां पढ़ते समय हार्ट्ज के जंगलों का वह पीला लम्बा आदमी कल्पना में सामने आते ही जैसे उसका कभी न बदलने वाला पीलापन और हरी झाड़ियों में उसकी चमक उस भूत से

अधिक डरावनी लगती है जो ब्लाक्सबर्ग के प्रेत के नाम से मशहूर है ?

हमको न दिखाई देने वाले उस विचित्र और उदास शहर लाइमा के गिर्जा-घरों को विध्वंस करने वाले भूकम्प की याद या उसके पागल समुद्रों की घुमेड़ें या सूखे हुए आसमान की वह झुलसन जिसमें कभी बादल बरसते ही नहीं या उसके मैदानों और फैले हुए खेतों में झुकी हुई मंजरियां और कोपलें, दीवारों के ऊपर के भद्दे पत्थर किनारे लगे जहाजों में छिपे बन्दरगाह की तरह जैसे सब कुछ पानी में डूबा हुआ दिखाई देने वाले दृश्य अथवा ताश के पैकेट की तरह उछलकर एक दूसरे पर पड़ी हुई बड़ी-बड़ी इमारतों की दीवारों के दृश्य केवल ऐसे नहीं हैं जो हममें दुःख और उदासी भर देते हैं। बल्कि लाइमा ने जो एक सफेद बुर्का पहन लिया था वही सबसे ज्यादा डराता रहा है क्योंकि वह सफेदी ही उसकी तकलीफों का सबसे बड़ा डर प्रकट करती है। पिजारो की तरह बूढ़े होते हुए भी उसकी यह सफेदी उसके खंडहरों की कहानी हमेशा नई बनाए रखती है, सर्वस्व सत्यानाश की ताजगी को वह अक्षुण्ण रखती है, और उसकी फसील के टूटे-फूटेपन में फैले पीलेपन में जैसे उसकी समस्त चेतना, शक्ति लुप्त हुई दिखाई देती है।

ऊपर की इन बातों को कहने से मेरा मतलब यह नहीं है कि दुनिया के सारे दुःख, दर्द और डर को दिखाने वाली केवल सफेदी ही एक चीज़ है बल्कि नीचे के दो उदाहरण देकर मैं उस भावना को कहना ह जो एक तरह से समस्त संसार की मान्यता है।

पहली : जब कोई जहाज़ी विदेश में किनारे के पास पहुंचने लगता है और रात में अगर कहीं वह किसी चीज़ के टूटने-चटखने की आवाज सुनता है तो वह सतर्क हो जाता है और अपनी भरपूर थर्राहट में दिमाग़ को पूरा बल देता है लेकिन बिलकुल इसी तरह की परिस्थिति में आधी रात के समय अपने झूले वाले पलंग से जब वह दूध-से सफेद समुद्र की ओर झांकता है तो उसे लगता है कि घने बालों वाले सफेद भालुओं का दल उसके चारों ओर तैर रहा है और तब वह खामोशी से डर के अंध विश्वास में भर जाता है। सफेद पानी का वह प्रेत सचमुच उसे डरावना भूत लगने लगता है। कहीं कोई आवाज़ नहीं है— यह संतोष बेकार सिद्ध होता है। उसका दिल और दिमाग डूबने लगता है और

उसे तब तक आराम नहीं मिलता जब तक फिर से नीला समुद्र नहीं आ जाता। इस पर भी वह जहाज़ी कहां है जो बता सके—"जी हां श्रीमान्! छिपी हुई चट्टानों से टकराने से इतना डर नहीं लगता जितना उस खतरनाक और निर्दयी सफेदी से।"

दूसरा : पेरू के आदिवासियों को बर्फ से घिरे ऐन्डीज़ को बराबर देखते रहने में किसी डर का अनुभव नहीं होता, सिर्फ कभी-कभी उस सर्दीले स्थान में जो अकेलापन वह पाता है उससे जैसे वह डर का धोखा-सा खाता रहता है। उसी तरह का अनुभव पश्चिम के जंगलों में रहने वालों को होता है जो बर्फ से घिरे उस बिना पेड़-पौधे के मैदान को उदासीनता से देखते हैं, जहां उस सफेदी को तोड़ने के लिए वृक्ष की छाया तक नहीं दिखाई देती। उसी तरह कोई मल्लाह जब एन्टार्कटिक समुद्र के दृश्यों को हृदय में उतारता है तब कोहरे और सर्द हवा के बीच वह कांप जाता है और जैसे उसका जहाज आधा नष्ट हो जाता है। तब उसे किसी भी संतोष पाने के बजाय बर्फ की ऊंची-ऊंची चट्टानें जैसे किसी गिर्जे की मीनार की तरह उसको देखकर किटकिटाती दिखाई देती हैं।

लेकिन जनाब इस्माइल साहब! मैं सोचता हूं कि आप कहना चाहते हैं कि सफेदी का बयान करने वाला यह अध्याय जैसे एक सफेद झंडा है जो किसी डर-पोक मन वाले ने हिला दिया है।

मुझे बताइए कि ऐसा क्यों होता है कि हर खूंख्वार जानवर से बचाकर किसी बछेड़े को वर्मान्ट की शांत घाटी में रखने के बाद भी अगर किसी दिन चमकती धूप में उसके सामने बैल की खाल हिलाई-डुलाई जाए तो चाहे वह उसे देखे भी नहीं लेकिन किसी बड़े जानवर की खाल की गंध सूंघने भर से उसमें डर भरता चला जाता है। वह तब होता है जब उसे उसके पूर्व कभी यह अनुभव अपने जीवन में नहीं हुआ कि वह वैसी किसी कठिनाई में फंसा था। दूर देश ऑरेगन के जंगलों के काले भैंसे की बाबत बेचारा न्यू इंग्लैंड का यह बछेड़ा क्या जानता है?

लेकिन यह समझने की बात है कि इस दुनिया में गूंगे खूंख्वार में भी पैशाचिक गुण कैसे झलकते हैं? कैसे ऑरेगन के इतने दूर देश में रहने वाले जानवर की खाल की डरावनी गंध भी अबोध पशु को भयभीत कर देती है?

इसलिए, दूधिया समुद्र की लहरों का मंथन, दूर पहाड़ों से टकराता डरावना सर्द कोहरा, उस वृक्ष रहित मैदान में झनझनाती बर्फ की चट्टानें—उस बछेड़े के सामने बैल की खाल के हिलने-डुलने के समान ही है—जनाब इस्माइल साहब !

पता नहीं किस अदृश्य से इस तरह की रहस्यमय वस्तुओं का संकेत आता रहता है लेकिन फिर भी उस बछेड़े की तरह मुझे भी ऐसा ही अनुभव होता है कि अदृश्य रहने पर भी संसार में उन वस्तुओं का अस्तित्व तो है ही जिनको हम नहीं जानते । इसलिए बहुत-से मामलों में यह लगता है कि यह दिखाई देने वाला संसार प्रेम में उत्पन्न हुआ है और अदृश्य संसार भय में ।

लेकिन अभी भी हम इस सफेदी की ताकत के सम्बंध में निर्णय नहीं दे पाए हैं कि क्यों वह आत्मा में इतना डर भरती है, उसमें इतनी विचित्रता कैसे है और वह इतनी अपशकुनी क्यों है और क्यों, जैसा कि हमने देखा, उसके सामने आते ही लगता है जैसे किसी आध्यात्मिक वस्तु की प्रतीक है—एक निशान, वल्कि ईसाइयों की पूजा का झीना पर्दा है और इतने पर भी दुनिया के इन्सानों के लिए सबसे डरावनी चीज़ ।

क्या इसी अनिश्चितता के कारण वह संसार में हृदयहीन दुष्कर्मों और कष्टों को जन्म देती है और दूर से दिखाई देने वाली दूध की-सी सफेदी और सचाई के अन्दर पैठने पर हमें लगता है जैसे किसी ने पीठ में छुरा भोंक दिया है ? या यों सोचिए कि सफेदी में रंग की वह गहराई नहीं है जैसी रंगहीनता में है, या वही सब रंगों का निचोड़ है और इसीलिए उस शून्यता में भी रहस्य है—उस सब का कुछ अर्थ है—बिना रंग की सफेदी वाली उस बर्फीली चट्टान में भी गूढ़ रहस्य है और जिस चीज़ से हम सहमते हैं उस नास्तिकता के सब रंग उसमें घिरे हैं । यही नहीं, जब हम प्रकृति सम्बन्धी उन सब दार्शनिकों के सिद्धान्तों को देखते हैं और समझते हैं कि दुनिया में दिखाई देने वाले में सब चमकीले रंग, प्यारी सुहानी चीजें, डूबते सूरज में दिखाई देने वाले आसमान की रंगीनियां, झाड़ियों में फैली लाली, तितलियों की वह मखमली रंगीन चमक, जवान लड़कियों के वे तितलियों की तरह के चिकने, चमकदार गाल—यह सब प्रकृति के धोखे हैं, वस्तुरूप में वह संसार में उत्पन्न नहीं हुए हैं, अनस्तित्व से अस्तित्व में आए हैं और इसीलिए देवत्व प्राप्त यह प्रकृति एक वेश्या की तरह

संसार में जो चमक-दमक और लुभावनापन भरती है वह स्वयं में ही एक कब्रिस्तान है। जब हम और आगे सोचते हैं तो अनुभव करते हैं कि यह रहस्यमय शृंगार-सामग्री जो हरेक में अपना-अपना रंग भरती है, प्रकाश या बिजली का सिद्धान्त, अपने में सदा सफेद बनी रहती है या रंगहीन और यदि वस्तु पर वह बिना कारण के कार्य करे और हर वस्तु को छू सके, कुमुदिनी के फूलों को या गुलाब को अपने खोखले रंग से स्पर्श करे तो कम वायु से घिरी यह दुनिया हमें कोढ़ी जैसी लगेगी और लैपलैण्ड में यात्रा करने वाले यात्री की भांति जो अपनी आंखों में रंगीन चश्मा चढ़ाने से इन्कार करता है और तभी उसके चारों ओर घिरी हुई वह वस्तुओं की चमकदार सफेदी उसे अन्धा बना देगी। अलबिनो की सफेद व्हेल इन सब बातों की प्रतीक है। अब भी उसकी खतरनाक खोज और शिकार पर आपको आश्चर्य हो रहा है?

## ३३

यद्यपि अपने मस्तिष्क में बहुत तरह के तर्क-वितर्क करने के बाद भी आहाब का अन्तिम लक्ष्य 'मोबी डिक' को पकड़ना ही था, और अपने इस ध्येय की पूर्ति में वह अपनी प्रिय वस्तु न्यौछावर करने को तत्पर था, फिर भी स्वभाव और बरसों तक इसी काम को करने के कारण इसमें भी मछुओं की प्रवृत्ति पैदा हो गई थी और वह यात्रा के उद्देश्य को बिलकुल नहीं समझता था।

अपने काम को पूरा करने के लिए यह आवश्यक था कि आहाब उपकरणों की सहायता ले और चन्द्रमा के साये में जितने भी उपकरण हैं उनमें मनुष्य ही सबसे जल्दी बेकार हो जाता है। उदाहरण के लिए वह जानता था कि स्टारबक पर उसका अधिकार तो है, लेकिन यह अधिकार उसकी सम्पूर्ण आत्मा को नहीं ढक सका है। यों स्टारबक का शरीर और उसकी भिंची हुई इच्छाएं उस समय तक आहाब की ही थीं जब तक आहाब उसके मस्तिष्क पर अधिकार जमाए था। वह यह भी जानता था कि उसका मुख्य मेट अपनी आत्मा में अपने कप्तान की समस्त क्रियाओं को घृणा से देखता है और अगर सम्भव होता तो अपने आपको उन सब कामों से अलग रखता अथवा अपनी इच्छा के प्रतिकूल

कार्यों को बिगाड़ भी देता। यह सम्भव था कि सफेद व्हेल दिखाई देने से पहले काफी समय निकल जाए। यह भी सम्भव था कि लम्बा समय यों ही बिताने पर स्टारबक अपने कैप्टेन के खिलाफ बग़ावत कर बैठे जब तक कि किन्हीं अच्छी बातों से वह प्रभावित न किया जाता। 'मोबी डिक' के लिए आहाब की सनक सब जान-समझ रहे थे और समुद्र-यात्रा के सब खतरे, साथ ही चौबीसों घंटे खड़े रहकर रातों की जगाहटें तथा पहरों से सभी अफ़सर तथा आदमी चाहते थे कि उनके उस परिश्रम के फल में 'मोबी डिक' न सही तो कम से कम कुछ व्हेलें तो प्राप्त ही हों। वैसे उस उत्सुक और बर्बर कर्मचारियों के दल ने भले ही आहाब की उस घोषणा का चाहे जितनी खुशी से स्वागत किया हो फिर भी सभी तरह के मल्लाह, कम या ज्यादा चंचल होने के साथ-साथ ज्यादा भरोसे के नहीं होते, वे बदलते मौसमों में रहने के आदी हैं और उसी तरह उनके विचार भी बदलने के आदी हो जाते हैं और जब किसी उद्देश्य को लेकर वे आगे बढ़ते हैं तो भले ही उसमें जीवन की बड़ी से बड़ी आशा और उन्नति दिखाई दे रही हो फिर भी अपने को अन्तिम रूप से झोंक देने के पहले वे थोड़े आनन्द और छोटे-छोटे कामों में उलझे रहना चाहते हैं।

दूसरी बात से भी आहाब उदासीन नहीं था। अधिक भावुकता के क्षणों में मनुष्यमात्र छोटी-छोटी बातें भुला देता है लेकिन ऐसे समय बहुत कम आते हैं और जल्दी खत्म हो जाते हैं। इस ढाले हुए आदमी की स्थायी और वैधानिक स्थिति है—गंन्दगी, कंजूसी और लालच। आहाब सोचता था कि उसके कर्मचारी 'मोबी डिक' या सफेद व्हेल से चाहे जितने उत्तेजित व प्रसन्न होते हों फिर भी उसके पीछे भागते जाने के साथ-साथ हर वक्त की उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति और भोजन की व्यवस्था होना भी बहुत जरूरी है। क्योंकि पुराने जमाने के बहादुर-पराक्रमी लोगों ने अपनी पवित्र समाधि बनाने के लिए यों ही दो-दो हजार मील लम्बी यात्राएं—बिना डाके डाले, जेब काटे या राह चलते इसी तरह के दूसरे कार्य करते हुए—नहीं की थीं। अगर अपने एक ही उद्देश्य को पूरा करने के ध्यान में वे आगे बढ़ते तो उन्हें अवश्य वापस लौटना पड़ता। इसीलिए आहाब ने सोचा कि वह अपने आदमियों को नकद के प्रलोभन से अलग नहीं करेगा।

'पिकोड' की उस यात्रा का जो गुप्त भेद था उसके कारण भी आहाब

सतर्क था कि उन बातों के प्रकट होने पर उसके जहाज़ी तत्काल विद्रोह का झंडा खड़ा कर देंगे, उस पर बलात अपहरण का दोष लगाएंगे और उसका जो नतीजा निकलेगा वह आहाब के लिए कितना घातक होगा—इसको भी वह समझ रहा था। इससे भी उसे अपनी रक्षा करनी थी। लेकिन वह रक्षा केवल उसके अपने दिल-दिमाग़ की तेजी से ही हो सकती थी। इसीलिए वह क्षण-क्षण की परिस्थिति को गहराई से समझ रहा था। तभी 'पिकोड' यात्रा का,जो एक साधारण उद्देश्य था—व्हेल का शिकार, वह उसीका आकर्षण सब ओर प्रकट करना चाहता था।

इधर वह जहाज के पालों को संभालने में जो चीख़-चिल्लाहट मचाता रहता था उसे सभी नाविक बहुत बार सुनते थे। कभी-कभी वह उन्हें सतर्क रहने की चेतावनी भी दे दिया करता था, कि एक छोटी से छोटी मछली भी निगाह से छूटने न पाए और इस सतर्कता का परिणाम भी हुआ।

## ३४

दोपहर ढल चुकी थी। बादल घिरे थे और उमस थी। मल्लाह काहिली में, जहाज़ के डेकों पर आराम कर रहे थे या खाली मस्तिष्क से सलेटी रंग के पानी को देख रहे थे। मैं और 'क्वीकेग' एक सोर्ड मैट बुनने में लगे हुए थे जो हमारी नाव के लिए एक दूसरा दंड था और वहां का वातावरण इतना शान्त और बोझिल था और आनन्द का ऐसा जादू काम कर रहा था कि हरेक खामोश जहाजी अपने आप में ही मगन था।

चटाई बनाने में मैं 'क्वीकेग' के सहायक का काम कर रहा था। 'क्वीकेग' ताने-बाने बुन रहा था और मैं सूत की गुंडी को आड़े-तिरछे निकालने में उसकी सहायता कर रहा था। 'क्वीकेग' ओक लकड़ी की बनी सूत की उस तलवार से तानों-बानों को ठोंकते हुए लापरवाही से समुद्र के पानी में झांक रहा था। स्वप्न की-सी उदास स्थिति जहाज और जल के चारों ओर छाई हुई थी जो सिर्फ 'क्वीकेग' की तलवार की खट्-खट् से ही कभी-कभी टूट रही थी। लग रहा था —समय रूपी करघा भाग्य के तानों-बानों से जैसे बुना जा रहा था और मैं सूत

की गुंडी की भांति एक ओर से दूसरी ओर हिल-डुल रहा था। तानों-बानों में कैसे घेरे के बीच गुंडी या तलवार इधर-उधर दौड़-भाग रही थी और उससे उत्पन्न कंपन के बीच एक सूत दूसरे से मिल रहा था ! यह फेंकने या चलने वाली गुंडी ही जैसे मनुष्य की आवश्यकता के रूप में कार्य कर रही थी और मैं अपने भाग्य रूपी ताने-बाने को बुन रहा था। इस सबमें 'क्वीकेग' की वह तलवार जो आड़े-टेढ़े कभी तेजी से, कभी धीमे भाग रही थी और इस सबसे वह चटाई तैयार हो रही थी तथा इस प्रकार उस बर्बर 'क्वीकेग' की तलवार उस बुनने वाली क्रिया को पूरा कर रही थी—मैं सोच रहा था कि वह इधर से उधर दौड़ने वाली तलवार जैसे जीवन के अवसर, स्वतन्त्र इच्छा और आवश्यकता के रूप में कार्य कर रही थी। आवश्यकता के ताने में कसाव अथवा ढीलन ही उसके पूरक थे और स्वतन्त्र इच्छा ही करघे में कसे घेरे के सूत में अपनी गुंडी फेंक या खींच रही थी और आवश्यकता को इस जीवन रूपी खेल के घेरे में बांधे हुए थी जिसमें स्वतन्त्र इच्छा गति दे रही थी और इस प्रकार सूत की तलवार रूपी गुंडी जीवन के अवसर अथवा मौके के रूप में घूम-फिर रही थी और वस्तुओं को अन्तिम रूप दे रही थी।

इस प्रकार हम बुनते ही चले जा रहे थे कि एकाएक एक अजीब, खिंची हुई संगीतात्मक और अलौकिक आवाज़ सुनकर चौंक पड़ा और सूत का गोला अपने आप मेरे हाथ से गिर पड़ा और मैं खड़ा होकर आकाश की ओर देखने लगा, जहां से वह आवाज़ पक्षी की तरह गिरी थी। मस्तूल पर पागल व खुश दिमाग टाशटेगो दिखाई दिया। उसका शरीर चपलतापूर्वक आगे को झुका हुआ था, उसका हाथ पतवार की तरह आगे फैला था, साथ ही रुक-रुककर वह चीखे जा रहा था। निश्चय ही वैसी ही आवाज़ सैकड़ों व्हेल-शिकारी समुद्र के बीच सुनते थे, जो उतनी ही ऊंचाई पर बैठे व्हेल को तलाशने वाले मल्लाह गुंजाते थे। लेकिन उस इंडियन टाशटेगो की आवाज़ में जो आकर्षक गुरुता उभर रही थी वह बहुत कम लोग उभार पाते होंगे।

उस समय हवा में आधा लटका हुआ, क्षितिज की ओर उत्सुक और आतुर निगाहों से देखता हुआ वह ऐसा मालूम पड़ रहा था, मानो कोई

पैगम्बर भविष्य की बातें देख रहा हो और लगातार चिल्लाकर भविष्य की घटनाओं की सूचना दे रहा हो।

"वहां वह उभर रही है ! वहां ! वहां ! वहां ! वह उभर रही है ! वह उभर रही है !"

"किधर ?"

"एक झुंड का झुंड। कम से कम दो मील दूर !

एक साथ सब तरफ हल्ला मच गया।

घड़ी की टिक्-टिक् की तरह उतनी ही निश्चितता से स्पर्म व्हेल भनभनाती है। उसी से व्हेल के शिकारी उसको पहचान लेते हैं।

"वे हैं, उधर···" टाशटेगो अब चिल्लाया और तभी वे व्हेलें गायब हो गईं।

"स्टेवार्ड ! जल्दी करो।" आहाब चिल्लाया—"कै बजे हैं ?"

ड़फ़-व्वाय नीचे भागा और घड़ी देखकर उसने आहाब को ठीक समय बताया।

जहाज़ हवा के रुख से हटाया गया और धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। टाशटेगो ने बताया कि सब व्हेलें पानी के नीचे, पीछे की ओर चली गई हैं और तभी हम उन्हें अपने जहाज़ के किनारों के सामने देखने के लिए एकटक निहारने लगे। वैसे स्पर्म व्हेल का यह कायदा है कि जहाज को एक दिशा में आते हुए सुनकर वह पानी की तह में डूब जाती है और दूसरी ओर तैर जाती है। लेकिन उस समय वे ऐसा नहीं कर सकती थीं क्योंकि यह नहीं कहा जा सकता था कि जिस व्हेल को टाशटेगो ने देखा था वह सतर्क हो गई थी या उसे हमारे जहाज़ का पता लग गया था। एक आदमी ने—जो जहाज़ की रखवाली के लिए तय किया गया था और जिसे नाव पर रखा गया था—उसी समय मुख्य मस्तूल से उस टाशटेगो को काम से छुट्टी दी। कई तरफ से नाविक नीचे उतर आए। उनके खड़े होने के स्थान निश्चित किए गए, क्रेनें चढ़ाई गईं, मुख्य पाल पीछे किया गया और ऊंची चोटी पर से कच्चे फलों की डलिया की तरह तीन नावें पानी में उतार दी गईं। जहाज़ की किलेबन्दी के बाहर जहाज़ियों के एक-एक हाथ रेलिंग पर टिके थे और एक-एक पैर उछलकर व्हेल पर जा पड़ने को तत्पर

थे। ऐसा लग रहा था जैसे युद्ध करने वाले आदमियों की लम्बी कतार दुश्मन के जहाज़ पर टूट पड़ने को तैयार खड़ी है।

ऐसे गम्भीर झोंके पर एक ऐसी आवाज़ आई कि सभी की नज़रें एक मिनट को व्हेल से घूम गई कौतूहल में सभी आहाब को देखने लगे जो पांच धुंधले देखने वाले आदमियों से घिरा था और वे आदमी मानो उसी समय हवा से पैदा हो गए थे।

# ३५

वे व्यक्ति, जो उस समय छायाओं-से दिखाई पड़ रहे थे, डेक के दूसरे हिस्से पर जाकर ख़ामोशी किन्तु तेजी से उस तरफ़ लटकी एक नाव के रस्सों और पुलियों को ढीला करने लगे। यह नाव हमेशा एक फालतू नाव मानी जाती थी और जहाज़ के दाहिनी ओर लटकते रहने के कारण कप्तान की नाव कही जाती थी। नाव के अगले हिस्से के पास जो छाया दिखाई दे रही थी वह लम्बी व पतली थी और उसके लोहे के-से ओठों के बाहर एक लंबा दांत चमक रहा था। काले रंग की एक मसली हुई-सी सूती चीनी जैकेट और वैसा ही चौड़ा काले रंग का पायजामा वह पहने थी। इस काले रंग का आबनूस के ऊपर चमकदार प्लेटों या पट्टियों से लिपटा एक सफेद साफा ताज की तरह रखा हुआ था। इससे कुछ कम कालेपन में घिरे जो लोग इस छाया के साथी थे वे साफ और चीते के-से पीले रंग की देह के थे जो बड़े विचित्र व 'मनीला' के अद्भुत आदिवासियों की भांति थे। वह एक ऐसी जाति थी जो जादू-टोने की विद्या में पारंगत और मशहूर थी और कुछ भले और ईमानदार नाविक उन्हें पानी के शैतान के भेदिए और छिपे एजेंट समझते थे जो रहते कहीं दूसरी जगह थे।

आश्चर्य में डूबे जहाज़ी इन अजनबी लोगों को ग़ौर से देख ही रहे थे कि आहाब ने सफ़ेद साफे वाले उनके बूढ़े मुखिया से चिल्लाकर कहा—"वहां सब तैयार हैं। फेडैलाह ?"

"तैयार" धीमी फुसफुसाहट में आवाज़ आई।

"तब तुम कूदो । क्या सुनते हो ?" आवाज़ डेक के पार से आई—"मैं रहता हूं; नीचे उतरो ।"

इसकी आवाज में कुछ ऐसी गरज थी कि आश्चर्य में डूबे होने पर भी रेलिंग के सहारे खड़े हुए नाविक सतर्क हो गए । पहिए की गरारी घूम गई, एक 'छपाक्' की आवाज के साथ तीनों नावें पानी में उतर गईं, और अदृश्य किन्तु अद्भुत साहस के साथ वे नाविक चुस्ती से उछले और झूमते जहाज़ से डोलती नावों पर कूद गए ।

जहाज से उछलकर वे लोग नावों पर मुश्किल से संभल ही पाए होंगे कि एक चौथी नाव हवा के रुख की तरफ से आती दिखाई दी । वह पेंदे के पास बह रही थी और वे पांचों विचित्र छायाएं आहाब को साथ लिए हुए थीं । नाव के आगे की ओर तनकर खड़े होकर आहाब ने स्टारबक, स्टब और फ्लास्क से चिल्लाकर कहा कि वे लोग पानी पर दूर-दूर फैल जाएं । किन्तु उस काली छाया वाले फेडैलाह और उसके साथियों पर नजरें गड़ाए हुए दूसरी नाव पर बैठे लोगों ने उसकी आज्ञा का पालन नहीं किया ।

"कैप्टेन आहाब ?"—स्टारबक ने कहा।

"फैल जाओ ।" आहाब चिल्लाया—"यारो ! नावों को रास्ता दो ! फ्लास्क ! तुम पीछे की तरफ बढ़ जाओ ।"

"हां, हां, श्रीमान् !" अपनी पतवार को चलाते हुए किंग-पोस्ट ने खुशी में चिल्लाकर कहा "पीछे चलो" उसने अपने साथियों से कहा—"उधर ! उधर ! उधर ! वहीं वह फुहारें छोड़ रही है, दोस्तो ! पीछे चलो ।"

"आर्ची ! सामने वाले उन पीले लोगों की परवाह मत करो ।"

'ओह ! मैं उनकी चिंता नहीं करता, सर !" आर्ची ने कहा, "मैं वह सब इसके पहले भी जानता था । क्या मैंने उनके बारे में जहाज में बातें नहीं सुनी थीं ? और क्या मैंने काबेको से नहीं कहा था ? वे लोग बिना टिकट हैं ।"

"मेरे जिंदादिल साथियो ! खींचो, खींचो, खींचो, मेरे मासूम बालको !" स्टब ने अपने कर्मचारियों को, जो कुछ उलझन-सी महसूस कर रहे थे, संतोष देते हुए तथा धीमे स्वर में कहा । "मेरे बच्चो ! तुम अपनी रीढ़ की हड्डियां क्यों नहीं तोड़ लेते ? तुम लोग उधर क्या देख रहे हो ? क्या सामने की नाव के लोगों को ? धुत् ! वे तो सिर्फ पांच और आदमी हमारी मदद को आ गए

हैं—कहां से आए हैं इससे क्या मतलब ? जितने ज्यादा हों उतना ही अच्छा । खींचो, खींचो, पीले आदमियों की फिक्र मत करो ! शैतान भी भले होते हैं । तब, तब, तुम लोग वहां हो, वह एक चोट ही हज़ार पौंड की है । वह चोट बाजी जीत जाएगी ! मेरे बहादुरो ! स्पर्म के तेल के लिए सोने का कप मिलेगा ! हुर्रे ! तीन बार खुशियां ! दोस्तो ! सब लोग जिन्दादिल हैं । बहुत आसान, आसान ! जल्दी मत करो ! जल्दी मत करो ! शैतानो ! तुम अपनी पतवारों को क्यों नहीं संभालते ? ऐ कुत्तो ! आगे बढ़ो ! तब, तब, तब, धीरे से, धीरे से ! इसी तरह, इसी तरह ! लम्बे-लम्बे हाथ, मजबूती से ! उधर बढ़ो, उधर ! शैतान तुम्हें खींचेगा । तुम आवारा और शैतान लोगों को जरूर घसीटेगा ! तुम सब सो गए ? खर्राटे भरना बन्द करो, ऐ धूर्त सोनेवाली ! और आगे बढ़ो । खींचो ! क्या तुम खींच नहीं सकते ? क्या तुम खींचोगे नहीं ? तुम लोग मछलियों और अदरख की रोटी के नाम पर क्यों नहीं खींचते हो ? खींचो और कोई चीज़ तोड़ दो ! खींचो और अपनी आंखें बाहर निकाल दो !" अपनी कमर की पेटी से चाकू निकालते हुए वह बोला—"हरेक अपनी मां की औलाद ! अपने-अपने चाकू दांतों में बढ़ाकर आगे बढ़ो । इस तरह, इस तरह । अब लग रहा है कि तुम लोग कुछ कर रहे हो—मेरे लोहे के टुकड़ो ! उसे चालू करो, उसे चालू करो, मेरी चांदी की चम्मचो ! मेरे रस्सी के कांटो ! उसे चालू करो ।"

स्टब की बकवास को विस्तार में इसलिए लिखा गया है, चूंकि अपने कर्मचारियों से काम लेने का उसका एक विचित्र तरीका था । वह उन लोगों से सदा ही अंट-संट कहता रहता था और ऐसे बोलता था जैसे फाड़ खाएगा लेकिन उसमें गुस्सा नहीं होता था । वह उन लोगों से भयानक से भयानक बातें कह डालता लेकिन उसमें क्रोध और मजाक अजीब ढंग से मिला-जुला होता और उसके क्रोध में जो हंसी का पुट रहता था उसी के लिए प्रत्येक मल्लाह पूरी ताकत से नाव चलाता था । यही नहीं वह स्वयं भी देखने में इतना काहिल था, अपने पाल को ऐसे ढीलेपन से मोड़ता—चलाता था, हर समय ऐसे मुंह फाड़कर जम्हाइयां लिया करता था कि उस प्रकार के अंगड़ाइयां लेने वाले कमाण्डर को देखने भर से साथ के कर्मचारी आनन्द से भर जाते थे । वह कुछ ऐसे ख़तरनाक ढंग का मजाकिया था, उसकी हंसी में कुछ ऐसी विचित्रता थी कि उस

मसखरेपन में ही लोग उसके हुक्म को पूरी तरह मानते थे।

आहाब के निर्देश पर स्टारबक उस समय स्टब की नाव की टेढ़ी दिशा में बढ़ता जा रहा था और वे दोनों नावें काफी नजदीक आ गई थीं तभी स्टब ने अपने मेट का स्वागत किया।

"मिस्टर स्टारबक ? ऐ होय ! बाईं ओर नाव है। सर ! अगर तबियत हो तो कुछ बातचीत हो जाए।"

"हल्लो !" स्टारबक ने उत्तर दिया लेकिन बोलते हुए वह एक इंच भी हिला-डुला नहीं और अपने कर्मचारियों से कुछ फुसफुसाता रहा। उसका चेहरा स्टब से ज्यादा चमक रहा था।

"उन पीले छोकरों की बावत क्या ख्याल है सर ?"

"जहाज चलने के पहले किसी तरह चुराकर लाए गए हैं। मजबूती से। मजबूती से, छोकरो !" उसने अपने मल्लाहों से धीमे से फुसफुसाकर कहा तब जोर से बोला "मिस्टर स्टब ! यह भला काम नहीं है। ठीक से, ठीक से—मेरे बच्चो ! लेकिन परवाह मत करो मिस्टर स्टब ! सब भले के लिए ही है। तुम्हारे सब कर्मचारियों को चुस्त रहना चाहिए फिर जो होना होगा, हो। बढ़े चलो, मेरे साथियो ! बढ़े चलो ! मिस्टर स्टब ! जिसके लिए तुम आए थे वह स्पर्म का साढ़े बावन गैलन तेल तैयार है। खींचो, साथियो ! स्पर्म, स्पर्म का ही तो शिकार करना है। फिर भी यह ड्यूटी है—कर्तव्य, कर्तव्य और लाभ एक साथ हैं।"

'यही, यही—मैं भी सोच रहा था', जैसे ही नावें दूर हटीं स्टब अपने से बोला, 'ज्योंही मेरी नजर उन पर पड़ी थी मैंने समझ लिया था। डफ ब्वाय को शक भी था और तभी आहाब बारम्बार भीतर जाता था। वे लोग वहीं छिपे थे। सफेद व्हेल ही इसकी जड़ में है। ठीक है—ठीक है, ऐसा ही हो। कोई उपाय नहीं है। ठीक है।' "लोगो ! रास्ता दो। आज तो सफेद व्हेल मिल नहीं सकती। रास्ता दो।"

इस तरह के उन हट्टे-कट्टे अजनबियों को पहली कूद में उतार देने के कारण जहाज के कुछ लोगों में ताज्जुब के साथ ही अन्धविश्वास भी घिर रहा था लेकिन आर्ची ने उस ढंग की बात कुछ पहले ही प्रकट की थी और वे लोग तभी उस क्षण की प्रतीक्षा भी कर रहे थे। वे लोग विचित्र प्रकार के सन्देहपूर्ण

ढंग से बाहर आए थे इसलिए स्टब के विवरण से लोगों में कोई अन्धविश्वास न पैदा हो पाया था, लेकिन आहाब के उस काले रंग के छिपाव के लिए सब तरफ चर्चा करने का काफी मौका मिल रहा था। और मुझे तो पिकोड पर चढ़ते समय उस धुंधलके में दिखाई पड़ी काली छायाओं का स्मरण हो ही आया था जिनका संकेत एलीजाह ने भी किया था किन्तु जिसको उस समय कोई महत्व नहीं दिया गया।

इसी बीच आहाब, हवा के रुख में दूसरी नावों में सबसे आगे था और अपने अफसरों की बातें न सुन पा रहा था। उसे महसूस हो रहा था कि उसके साथ कितने सुदृढ़ मल्लाह हैं। उसके वे चीते के समान पीले आदमी जैसे लोहे और व्हेल की हड्डी के बने हुए दिखाई दे रहे थे। पांच हथौड़े की तरह वे उठकर व्यवस्थित ढंग से उठते-गिरते थे और नाव को ऐसे ढंग से बढ़ा रहे थे जैसे मिसीसिपी के स्टीमर को उसकी खड़ी हुई सीधी चिमनी फक-फककर बढ़ाती हो। जहां तक फेडेलाह का सम्बन्ध था वह हारपूनर वाली पतवार खींच रहा था। उसने अपनी काली जैकेट एक ओर फेंक रखी थी और नाव की किलेबन्दी के आगे वाले हिस्से पर खड़े होकर उठते-गिरते क्षितिज की पृष्ठभूमि पर उभर रहा था। नाव के दूसरे सिरे पर आहाब—एक गदाधारी की तरह अपनी एक बांह को पीछे हवा में फैलाए था जैसे अपने को सन्तुलित किए हो। आहाब उसी दृढ़ता से पतवार चला रहा था जैसे सफेद मछली द्वारा टांग खाए जाने से पहले चलाया करता था। अचानक ही उसकी फैली हुई बांह विचित्र प्रकार से हिली और स्थिर हो गई। नाव की शेष पांचों पतवारें उछलकर एक साथ ऊपर उठ गईं। समुद्र पर नाव और कर्मचारी जैसे निश्चल बैठे थे। उसी समय पीछे वाली तीन नावें रास्ते में रुकीं। व्हेलें जान-बूझकर नीले पानी के नीचे जैसे समाधिस्थ हो गई थीं और इसीलिए उनकी किसी हरकत का पता नहीं चल रहा था, फिर भी बहुत पास से आहाब ने उसे देख ही लिया था।

"हरेक अपनी-अपनी पतवार संभाले रहो।" स्टारबक चिल्लाया। "तुम क्वीकेग ! खड़े हो जाओ।"

आगे के कोने पर तिकोने उठे सन्दूक के ऊपर चुस्ती से उठते हुए वह बर्बर सीधा तन गया और दूर तक नज़र फेंककर उस जगह को देखता रहा

जहां से नावों ने चलना शुरू किया था। उसी तरह नाव के आगे के उठे हुए हिस्से पर खड़े होकर स्टारबक शान्तिपूर्वक उस फैले हुए महासागर को निहार रहा था।

फ़्लास्क की नाव भी ज़्यादा दूर नहीं थी और स्थिर खड़ी थी और उसका कमान्डर आगे की नोक पर उठे प्लेटफार्म पर उचका हुआ खड़ा था। व्हेल को रस्सी से बांधकर यहीं से खींचा जाता था। उसकी नोक किसी आदमी की हथेली से ज्यादा चौड़ी नहीं होती और ऐसे स्थान पर खड़े होकर फ़्लास्क ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी पानी में डूबे जहाज़ के ऊंचे मस्तूल पर खड़ा हो। उधर बौना किंग-पोस्ट जितना छोटा और ठिगना था उतनी ही उसकी महत्वाकांक्षाएं बड़ी थीं और इसीलिए यन्त्र वाले हिस्से के ऊपर खड़े होकर उसे सन्तोष नहीं मिल रहा था।

"मैं थोड़ी दूर भी नहीं देख पा रहा हूं, मुझे उस पतवार के ऊपर वाले हिस्से पर खड़े होकर दूर तक देखने दो।"

इस पर डैग्गू ने अपने दोनों हाथ आगे की ओर टिका दिए और जल्दी से झुकते हुए तनकर उसने अपने कन्धों को उठा दिया कि किंग-पोस्ट उन पर चढ़ जाए।

"सर ! यह किसी भी ऊंचे मस्तूल की तरह हो गया है, सर। क्या आप इस पर चढ़ेंगे ?"

"ज़रूर। और मेरे अच्छे साथी, इसके लिए मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूं। सिर्फ मैं इतना चाहता था कि तुम पचास फ़ीट और ऊंचे हो जाते।"

तब नाव के दोनों ओर के तख्तों पर पैर जमाते हुए उस कद्दावर नीग्रो ने थोड़ा झुककर फ्लास्क के पैर को अपनी हथेली पर लिया और उसे उचकाकर अपने दोनों कन्धों पर चढ़ा दिया। अब फ़्लास्क डैग्गू के ऊपर जमा खड़ा था और दूर-दूर तक देख रहा था।

किसी भी नौसिखिये को देखने में वह दृश्य बड़ा विचित्र लग सकता था कि किस प्रकार ये व्हेल के शिकारी अपनी नाव पर सीधे और तनकर खड़े रहने में निपुण होते हैं जबकि समुद्र के पानी में नाव इतनी अधिक हिलती-डुलती है। इससे अधिक ताज्जुब की बात थी ऐसी परिस्थितियों में यों अड्डे की तरह खड़े होकर यन्त्र के ऊपर की जगह पर जमना। और इस समय उस हट्टे-कट्टे

डैग्गू पर फ़्लास्क का खड़ा होना तो बड़ा विचित्र लग रहा था। फलास्क से अधिक आकर्षक डैग्गू दिखाई दे रहा था। यों सचमुच वह उत्साही, उपद्रवी और दिखावटी छोटा फ़्लास्क थोड़ी-थोड़ी देर में परेशानी से पैर बदलता लेकिन नीग्रो की चौड़ी छाती से एक बार भी लम्बी सांस तक नहीं निकली। ठीक इसी तरह वासना और अहंकार इस महान् पृथ्वी को कुचलते हैं, लेकिन पृथ्वी ने न कभी अपने ज्वार-भाटे बदले और न मौसम।

इसी बीच, तीसरे मेट स्टब ने चिन्ता से निगाह दूर नहीं दौड़ाई। वह सोच रहा था—व्हेलें अपनी आदत के अनुसार डुबकी लगा गई होंगी, डर के कारण नहीं। ऐसे मौके पर स्टब अपना पाइप जलाकर थोड़ा आराम ले लेता था। इस समय भी उसने पाइप को हैट से निकाला, जहां वह उसे हमेशा रखे रहता था। पाइप भरकर उसे सुलगाया ही था कि उसका हारपूनर टाशटेगो—जिसकी दो आंखें दो सितारों की तरह हवा के रुख की ओर टिकी हुई थीं—जैसे बिजली की लपट की तरह बैठ गया और चीखकर बोला—"सब नीचे-नीचे, और रास्ता दो! वे कहां हैं?"

स्थल पर रहने के आदी व्यक्तियों को उस क्षण व्हेल तो क्या किसी हेरिंग तक का लक्षण न दिखलाई पड़ता। लहराती हुई सफेद लहरों की उछाल के साथ हरे रंग का पानी दिखाई दे रहा था और उसके अतिरिक्त कहीं कुछ न होकर सब तरफ सन्नाटा छाया हुआ था। तभी आसपास की हवा बहने लगी और सबको रोमांचित करने लगी। इस वातावरण में ही पानी की हल्की सतह के नीचे व्हेलें तैर रही थीं। सब निशानों के अतिरिक्त जो भाप वे मुंह से फेंक रही थीं वह बाहर आ रही थी और उसीसे उनके चलने के स्थान का पता चल रहा था।

उस आन्दोलित पानी और हवा के स्थान की ओर चारों नावें चल पड़ीं। वे पानी के बुलबुले एक ही में मिलकर दूर बढ़ते चले जा रहे थे और उनके पीछे-पीछे नावों को भी ज्यादा चलना पड़ रहा था।

"खींचो, खींचो, मेरे अच्छे बच्चो!" स्टारबक ने धीमी किन्तु गम्भीर फुस-फुसाहट में कहा। उसकी दृष्टि सामने ऐसे टिकी हुई थी जैसे कम्पास की दो नोकदार सुइयां। उसने या उसके कर्मचारियों ने ही किसी से कुछ न कहा। वह खामोशी कभी-कभी उसके हुक्म देने की फुसफुसाहट के तीखेपन से या कभी

बातचीत की कोमलता से टूट जाती थी।

लेकिन जोर से बोलने वाला बौना किंग-पोस्ट बिल्कुल दूसरी तरह का था—"गाओ और कुछ कहो मेरे प्यारो! मेरी बिजलियो! खींचो और खींचो! लड़को! उनकी काली पीठों पर मुझे ले जाकर उतारो न। तुम मेरे लिए इतना करो और मैं तुम्हें अपनी मार्था का अंगूरों का बगीचा तुम्हारे नाम लिख दूंगा, साथ में अपने बीवी-बच्चे भी। चलाओ-चलाओ। हे भगवान! हे भगवान! लेकिन मैं नज़र गड़ाए-गड़ाए पागल हो जाऊंगा। देख रहे हो उस सफेद पानी को!" ऐसे चिल्लाते-चिल्लाते उसने अपना टोप सर से उतारकर पैरों से कुचला और उछालकर फेंक दिया और नाव के आगे वाले कोने की तरफ जा पहुंचा।

"उस लड़के को देखो" बड़े दार्शनिक ढंग से स्टब बोला जिसका अनबुझा पाइप उसके दांतों के बीच में दबा हुआ था—"उस फ़्लास्क को दौरे आ रहे हैं। हां—खुशियों-खुशियों में ही दिल जिन्दा रहता है। रात के खाने के समय, आप जानते हैं पुडिंग[1] और खुशी दुनिया में दो ही तो चीजें हैं। बच्चो! खींचो-खींचो। लेकिन तुम क्यों यह जल्दी कर रहे हो? हौले, हौले, लेकिन जमकर मेरे साथियो। सिर्फ खींचो और खींचते रहो—इसके अलावा और कुछ नहीं। अपनी रीढ़ की सब हड्डियां चूर-चूर कर लो और दांतों से अपने चाकुओं के दो टुकड़े कर डालो—बस, इसके अलावा कुछ नहीं चाहिए। इसे साधारण रूप में लो—तुम लोग इसे साधारण रूप में क्यों नहीं लेते और मैं कहता हूं अपने जिगर और फेफड़े क्यों नहीं फाड़ डालते?"

लेकिन गुमसुम आहाब ने अपने पीले मल्लाहों से क्या कहा—वे शब्द यहां सुनाई नहीं दिए। वह तो उन फरिश्तों की दुनिया के आशीर्वाद और रोशनी में रहता था। सिर्फ वे धर्मनिन्दक मछलियां ही इस शोर-गुल वाले समुद्र में उन शब्दों को सुन सकती थीं, जब अपनी तूफ़ानी भौंहों, कत्ल की-सी लाल आंखों और झाग भरे ओठों के साथ आहाब अपने शिकार की ओर लपकता है।

इस बीच सब नावें बढ़ती गई। फ़्लास्क का यह कथन कि 'वह व्हेल' कल्पना में माना हुआ एक पानी का राक्षस है जो उसकी नाव के अगले हिस्से को निरन्तर अपनी पूंछ से हिलाता रहता है—उसका यह उल्लेख कभी-कभी

---

१. तरल मीठा पदार्थ—एक प्रकार की खीर।

इतना विश्वासोत्पादक होता था कि लोग मुड़कर ताज्जुब से देखने लगते थे। लेकिन यह हर कायदे के खिलाफ बात थी। ऐसे नाज़ुक मौके पर मल्लाह को केवल अपने कानों और हाथों से ही काम लेना चाहिए।

बड़ा भयोत्पादक और आश्चर्यजनक दृश्य था। उफनते समुद्र का वह फैलाव, नावों के चलने से उठता शोर और उन नावों के वे महान कष्ट जब उनसे वे धारदार लहरें टकराती हैं तो लगता है जैसे वे उनके दो टुकड़े कर देंगी, उन पानी की घुमेड़ों और गड्ढों में अचानक डुबकी, दूसरी तरफ की पहाड़ी की चोटी पार करते समय नोकों से टकराना और उत्तेजित होना, बर्फ़ीली गाड़ी की तरह दूसरी तरफ फिसलना, तथा इस सबके साथ आगे के लोगों की चीखें और हारपूनरों की आवाज़ें, पतवार चलाने वालों की कंपकंपी और उस चमकदार पिकोड का वह दृश्य जिसकी नावें उतरकर डांडे चला रही थीं जैसे कोई मुर्गी अपने बच्चों को पाल रही हो—ये सब दृश्य बड़े भयावने थे। उस नए सिपाही से जो अपनी पत्नी के वक्ष से उठकर अपने पहले युद्ध के जोश में चला आया हो और उस मरे हुए आदमी के भूत का उस प्रेत से युद्ध जो दूसरी दुनिया में पहली बार मिला हो—ये सब चीज़ें भी उतनी ख़तरनाक व उत्तेजक नहीं हैं जितना किसी स्पर्म व्हेल के आकर्षण के घेरे में लिपटा हुआ वह आदमी जो पहली बार उसके लपेटे में आया हो।

उस प्रकार पीछे दौड़ने से जो समुद्री पानी घूम-घूमकर नाचने लगा था, वह उस अंधियारे में उठती बादलों की परछाइयों के कारण अधिक साफ़ दिखाई दे रहा था। पानी के झाग एक जगह इकट्ठा न होकर दाहिने-बाएं फैल रहे थे और ऐसा प्रतीत होता था कि सब व्हेलें इधर-उधर फैल रही हैं। नावें भी दूर-दूर चल रही थीं। स्टारबक तीन व्हेलों का पीछा कर रहा था जो पीछे भाग रही थीं। हमारे पाल अब सीधे हो गए थे और हवा की चाल के साथ हम तेज़ी से आगे बढ़ रहे थे।

लेकिन जल्दी ही हम कोहरे के बीच में फंस गए और अब न हमें जहाज़ दिखाई दे रहा था, न नावें।

"साथियो! रास्ता दो!" पाल की चादर को और तानते हुए स्टारबक ने कहा। "तूफ़ान आने से पहले कम से कम एक व्हेल मार डालनी है। सफेद पानी फिर दिखाई दे रहा है। पास आओ! आगे बढ़ो!"

एक साथ ही हमारे दोनों तरफ दो चीखों के उभरने से हमने समझा कि दूसरी नावें तेज़ी पकड़कर आगे बढ़ गई हैं। वह आवाज़ मुश्किल से दूर पहुंच पाई होगी कि बिजली की कौंध की भांति स्टारबक फुसफुसाया—"खड़े हो जाओ !" और हाथ में हारपून लेकर 'क्वीकेग' फौरन अपने पैरों पर खड़ा हो गया।

उस समय यद्यपि एक भी आदमी जिन्दगी और मौत का सामना करने वाली स्थिति में नहीं पहुंचा था, फिर भी सबके चेहरों से लग रहा था कि मेट के चेहरे की गम्भीरता उन्हें बता रही है कि अब वह मौका आ गया है। साथ ही उन्होंने भनभन की आवाजें भी सुनीं जैसे पचास हाथी एक साथ इधर-उधर डोल रहे हों। नाव अभी भी धुंधले कोहरे से घिरी हुई थी और गुस्से में तेज सांपों की तरह लहरें सीधी तनकर नाव को धक्का दे रही थीं।

"वह उसका कूबड़ है ! वह रहा ! वह रहा ! उसे चोट दो !" स्टारबक फुसफुसाया।

कोई चीज़ एक आवाज़ के साथ आगे बढ़ी। वह 'क्वीकेग' का हारपून था। तब नाव के पीछे की ओर से एकाएक एक अदृश्य झोंका आया जब कि नाव का आगे का हिस्सा एक चट्टान से टकराकर टूट गया। पाल गिरकर फट गया। झागों का लपेट पास ही दिखाई दिया। भूकंप की तरह कोई चीज हमारे नीचे घूम गई। सब कर्मचारियों का जैसे दम-सा घुटने लगा क्योंकि वे उछाल दिए गए थे और उस तूफ़ान की क्रीम-सी गाढ़ी सफेदी में इधर-उधर गिर-पड़ रहे थे। तूफान व्हेल और हारपून सब एक ही में मिल गए थे और व्हेल लोहे से थोड़ी खरोंच खाकर भाग गई थी।

यों नाव पूरी तरह आपत्ति में फंस गई थी फिर भी उसे कोई नुकसान नहीं पहुंचा था। उसके चारों ओर तैरकर हम लोगों ने तैरते हुए डांडों को पकड़ा और उनको इकट्ठा करके आगे वाले कोने पर डालते हुए हम अपनी-अपनी जगहों पर आ गए। वहां हम समुद्र के घुटनों तक पानी में बैठे रहे क्योंकि पानी ने एक-एक लकड़ी और तख्ता डुबो रखा था और जब हमने नीचे की ओर ग़ौर से देखा तो हमें लगा कि वह नाव जैसे मूंगा ढोने की एक नौका है और समुद्र के तल से प्रकट हुई है।

हवा तूफ़ान में बदल गई थी, लहरें तेज़ी में एक दूसरे पर आकर नाव को

टक्कर दे रही थीं और इस प्रकार समूचा तूफ़ान चीख़-चीखकर सामने आ-आकर हमें वेध रहा था और ऐसा लग रहा था जैसे किसी वृक्षरहित मैदान में सफ़ेद आग लग गई हो जिसमें साबित रहते हुए भी हम जल रहे हैं और मौत के उन जबड़ों के बीच भी ज़िन्दा हैं। बेकार ही हमने दूसरी नावों को पुकारा। एक जलती हुई चिमनी के नीचे के कोयले को पुकारने की तरह ही उस समय उस तूफ़ान में फंसी नावों को पुकारना था। इसी बीच नाव चलाने वाली व्यवस्था, डांडे और कोहरा रात के साथ गहरा हो चला। जहाज़ का कहीं भी कोई निशान नहीं दिखाई दे रहा था। उफनता हुआ सागर नाव को संभालने के सब प्रयत्न विफल कर रहा था। बर्छी की ही तरह पतवारें भी बेकार साबित हो रही थीं और जीवन को बचाए रखने भर का काम पूरा कर रही थीं। वाटरप्रूफ़ दियासलाई की डिब्बी से बहुत बार प्रयत्न करने के बाद स्टारबक ने एक लैम्प जलाकर 'क्वीकेग' को दिया। जैसे वही उस आशा रूपी प्रकाश-लैम्प को लेने के उपयुक्त हो। और तब वहां वह उस हिलती-डुलती और कमज़ोर लैम्प को उस सर्व शक्तिमान की निराश आशा के बीच लिए बैठा रहा। वहीं वह ऐसे बैठा था जैसे एक आदमी अविश्वास के प्रतीक रूप में बैठा हो, जैसे निराशा के बीच बेकार की आशा जगाए हुए हो।

भीगे हुए, तरबतर, ठिठुरती सर्दी में और जहाज़ या नाव के निराश वातावरण में जब सुबह हुई तो हमारी आंखें उठीं। कोहरा अभी भी समुद्र पर छाया हुआ था और खाली लैम्प नाव के पेंदों में दबी पड़ी थी। अचानक ही 'क्वीकेग' उठ खड़ा हुआ और अपने हाथ कानों में लगाने लगा। हम सबने रस्से और पाल तथा सायबान के चरमराने की आवाज़ें सुनीं जो तूफ़ान के कारण अब तक न सुनाई पड़ रही थीं। आवाज़ धीरे-धीरे पास आती गई। गहरे धुएं का-सा काला कोहरा एक भारी और अस्पष्ट वस्तु के सामने आने पर जैसे दूर हट गया। भयभीत होकर हम सब पानी में कूद गए और अन्त में हमने देखा कि हमारा जहाज़ सामने है जो हमारे बहुत नज़दीक है, सिर्फ़ इतनी दूर जितनी उसकी खुद की लम्बाई है।

लहरों पर तैरते हुए हमने तज दी गई नाव को देखा। हमारी नज़रों के सामने वह उछलकर जहाज़ के सामने चली गई, जैसे किसी विशाल शिला के नीचे ज़रा-सा कंकड़ चला गया हो, तब जहाज़ के एक धक्के से वह उलटी और

उसके बाद फिर कभी नहीं देखी गई। हम फिर जहाज की ओर बढ़े और लहरों ने हमें फिर उससे जा टकराया, लेकिन अन्त में हमें सुरक्षित ढंग से ऊपर चढ़ा लिया गया। तूफानी लहर के पास आने से पहले ही दूसरी नावों ने व्हेलों का पीछा करना छोड़ दिया था और समय रहते जहाज पर पहुंच गई थीं। जहाज़ वालों ने तो हमारी आशा छोड़ ही दी थी, लेकिन फिर भी वह वहीं घूम रहे थे कि कहीं हमारी मृत्यु का कोई चिह्न—कोई पतवार या बर्छे की चीज मिल जाए।

## ३६

इस अजीबोगरीब और उलझे हुए तमाशे में—जिसको हम जिन्दगी कहकर पुकारते हैं—ऐसे बहुत-से मौके आते हैं जब हम इस समूची दुनिया को एक अच्छा-खासा मजाक मानते हैं लेकिन साथ ही यह भी है कि इस मजाक का नफा-नुकसान किसी और का न होकर व्यक्ति विशेष का ही होता है। जो भी हो। इसमें न मन तोड़ने की बात है न बहस करने से ही कुछ बनता है। आदमी हर घटना को, हर जाति-समाज को, हर विश्वास को, हर उत्साह को और हर दृश्य-अदृश्य वस्तु को, चाहे वह कितनी ही उलझी हुई क्यों न हो। अपने में कसे रहता है जैसे कोई तन्दुरुस्त हाजमे वाला शुतुरमुर्ग गोलियों और बन्दूक के चकमक पत्थरों को निगल जाता है। और जहां तक छोटी-छोटी परेशानियों और उलझनों की बात है, उम्मीदों और अचानक सत्यानाश का मौका है, ज़िन्दगी व हाथ-पैरों का खतरा सामने है—वहां तक यह सब और खुद जिन्दगी ही एक बड़ा बहाना या धोखा दिखाई देती है, ये अच्छे किस्म की चोटें और मजाकिया ढंग से पिचकने की बातें हैं जिन्हें किसी को न दिखाई देने वाला मसखरा रात-दिन किया करता है। इस तरह के उदासी के ढंग का मूड जिसकी कि बात मैं कह रहा हूं—आदमी में बड़े कष्ट और पीड़ा के समय होता है, वह उसकी बहुत ईमानदारी के बीच आता है जिससे कि जो बात उसे अभी थोड़ी देर पहले बहुत आवश्यक प्रतीत होती है, दूसरे ही मिनट एक अच्छा मज़ाक दिखाई देती है। व्हेल के शिकार के खतरों से अधिक कोई

बात नहीं हो सकती जिसकी तुलना इस जिन्दादिल और साहसपूर्ण फिलॉसफी—दर्शन से की जाए और उसी आधार पर मैं पिकोड की इस जलयात्रा को, साथ ही उस महान सफेद व्हेल को, उसका एक उदाहरण मानता हूं।

अस्तु, जब मुझे, आखिरी आदमी को, सब लोगों ने डेक पर खींचा और अपनी जैकेट फाड़कर पानी को इधर-उधर गिराया तो मैंने कहा—"क्वीकेग ! क्वीकेग ! मेरे बढ़िया दोस्त !" परन्तु बिना किसी अधिक भावावेश के पानी में तर होते हुए भी, उसने मुझे यह समझाने की चेष्टा की कि वैसी घटनाएं सदा होती रहती हैं।

"मिस्टर स्टब !" तब मैंने उन महाशय की ओर संकेत करते हुए कहा जो अपनी मोमजामे की जैकेट के बटन लगा रहे थे और उस वर्षा में पाइप सुलगाए हुए थे—"मिस्टर स्टब ! मेरा ख्याल है मैंने आपको यह कहते सुना है कि जितने भी व्हेल के शिकारी आपके सामने से गुजरे हैं उनमें मिस्टर स्टारबक सबसे ज्यादा चौकस और चतुर हैं। तब मैं सोचता हूं कि कोहरे और तूफान के समय आपकी नाव से किसी उड़ने वाली व्हेल के ऊपर फांदने से अच्छा निर्णय कोई व्हेल का शिकारी नहीं कर सकता।"

"निश्चित ! हार्न अन्तरीप से दूर एक टूटे और रिसते हुए जहाज से मैं व्हेलों के लिए पानी में उतर गया था।"

"मिस्टर फ्लास्क" उस बौने किंग-पोस्ट की ओर मुड़ते हुए जो पास ही खड़ा था—मैंने कहा—"आप तो इन बातों में तजुर्बेकार हैं और मैं नहीं हूं। क्या आप मुझे बताएंगे कि इस व्हेल के शिकार का यह अपरिवर्तनीय कानून है कि मौत के पंजों के बीच कोई भी डांडे वाला नाव को खींचते-खींचते अपनी पीठ ही तोड़ ले ?"

"क्या तुम इसे और संक्षेप में नहीं कह सकते ?" फ्लास्क बोला—"खेद ! हां, तो यही कानून है। किसी भी नाव के कर्मचारियों से मैं चाहूंगा कि वे पानी को उछालते हुए किसी भी व्हेल के मुंह के सामने तक पहुंच जाएं। हा, हा ! हां, इतना जरूर समझे रहना चाहिए कि व्हेल इन्हें सेर को सवा सेर देगी।"

अब तीन निष्पक्ष लोगों की बातों को सुनकर इस समूचे मामले में मेरी भी एक राय बन गई। इसलिए यह सोचकर कि तूफानों में, पानी की घुमेड़ों

में लिपट जाने में और तब अतल जल में समाधि ले लेने की बातें ज़िन्दगी की इस तरह की साधारण घटनाएं हैं, यह सोचकर कि व्हेल के शिकार को जाने की महा भयंकर स्थिति में अपनी ज़िन्दगी उसके हाथों में छोड़ देनी चाहिए जो उस समय नाव का संचालन कर रहा हो—भले ही बहुत बार वह आदमी अपने सनकपने में अपनी नाव में एक बड़ा-सा छेद करके उसे डुबा ही दे, यह सोचकर कि उस हमारी नाव के सत्यानाश का खास कारण स्टारबक के द्वारा वैसा संचालन था जिसे वह अपनी व्हेल के पीछे—तूफान के दांतों के बीच, कर रहा था, जबकि स्टारबक इन शिकारों में सबसे ज्यादा तजुर्बेकार और चुस्त माना जाता है। यह सोचकर कि मैं भी उसी अधिक तजुर्बेकार स्टारबक की नाव में ही था, और यह सोचकर कि सफेद व्हेल के रूप में मैं न जाने किस शैतान का पीछा करने में जुटा हुआ था और इस प्रकार इन सब बातों को एक साथ मिला देने पर, मैं कहता हूं कि मैंने डेक के नीचे जाकर अपने वसीयतनामे का कच्चा मसविदा बनाने का निश्चय किया। मैंने कहा—"क्वीकेग ! मेरे साथ आओ, तुम मेरे वकील होगे, मेरी 'विल के एक्जेक्यूटर' (अन्तिम रूप देने वाले) होगे और मेरी वसीयत के आधार पर मेरी सम्पत्ति के अधिकारी होगे।"

आश्चर्य हो सकता है कि यह मल्लाह भी अपनी आखिरी वसीयतों और दस्तावेजों को मुकम्मिल करें लेकिन दुनिया में उनके ऐसे लोग बहुत कम होंगे जिन्हें वह सब इतना अधिक प्रिय हो। अपनी उस नाविक-ज़िन्दगी में मैंने वैसा चार बार किया। और हर बार मुझे बड़ा आराम मिला जैसे मेरी छाती से कोई पत्थर का-सा बोझ हट गया हो। मैं बाद के दिनों में ऐसे जीवित रहा जैसे अपने पुनर्जीवन के बाद लजारस रहा था, लगा जैसे बाद के हफ्ते या महीने चुटकियों में निकल गए। मैं बच गया, मेरी मौत और मेरी कब्र मेरी छाती में ताला बन्द करके रख दी गई मैंने अपने चारों तरफ धीरज और संतोष के साथ देखा जैसे कोई खामोश भूत अपनी साफ आत्मा को लेकर किसी घर की अलमारी में आराम से बैठा हो।

तब जैसे अनजान में ही अपनी कमीज की बाहें लपेटते हुए मैंने सोचा कि मैं मौत और सर्वनाश की सर्द और मिली-जुली डुबकियां लूंगा और पीछे रहने वाले को शैतान गारत करे।

## ३७

"यह कौन सोच सकता था फ़्लास्क !" स्टब बोला—"कि अगर मेरे एक ही पैर होता, तो तुम कभी भी मुझे अपने बगल में नाव पर न पाते जब तक कि छेद को ही मेरी टांग से रोकने की जरूरत न पड़ जाए। ओह ! कमाल का है बूढ़ा आदमी।"

"इस मामले में तो मैं कुछ कमाल नहीं समझता" फ़्लास्क ने उत्तर दिया—"अगर उसका पैर कूल्हे से कटा होता तो बात दूसरी थी। हां, तब तो वह अपाहिज हो जाता लेकिन उसके एक घुटना है और तुम जानते हो बाएं पैर का काफ़ी हिस्सा भी है।"

"लेकिन मेरे दोस्त ! मैं नहीं जानता, क्योंकि मैंने उसे कभी झुकते हुए नहीं देखा।"

व्हेल की प्रकृति समझने वाले शिकारियों में अक्सर इस विषय पर चर्चा की जाती है कि व्हेल का पीछा करने में व्हेल-जहाज़ के कप्तान को अपना जीवन खतरे में डालना चाहिए या नहीं, क्यों सम्पूर्ण यात्रा की सफलता के लिए उसके जीवन के सुरक्षित रहने की अत्यन्त आवश्यकता होती है। तैमूर-लंग के सिपाही भी आंखों में आंसू भरकर बहस किया करते थे कि भयंकर युद्ध-भूमि में स्वयं तैमूर को जाना चाहिए अथवा नहीं।

लेकिन आहाब के मामले में तो यह बहस दूसरे ही ढंग की हो जाती थी। खतरे के हर मौकों पर दोनों सही-सलामत पैर वाला आदमी बौखला जाता है, व्हेल का पीछा करना सदैव ही भारी और अनहोनी कठिनाइयों को साथ लिए रहता है, उस समय हर क्षण खतरा सामने दिखाई देता है, तब क्या इन परि-स्थितियों में यह कोई समझदारी की बात है कि शिकार के लिए व्हेल-नौका पर कोई लंगड़ा आदमी जाए ? इस प्रकार की साधारण बात को पिकोड के दोनों साझे के मालिकों ने साफ तौर पर नहीं सोचा होगा।

आहाब के घर वाले और दोस्त बहुत कम सोचते होंगे कि वैसी हालत में भी आहाब व्हेल का पीछा करने के लिए भागेगा लेकिन पिकोड के मालिकों से

अपने लिए कोई मदद न लेकर कैप्टेन ने अपनी नाव व उसके पांच कर्मचारियों की अलग व्यवस्था कर ली थी। आहाब की नाव पर आगे वाले कोने पर बढ़ई ने ऐसे ढंग से कांट-छांट की थी कि व्हेल पर हमला करते समय आहाब का घुटना उस स्थान पर बिल्कुल ठीक बैठ जाता था। इस प्रकार आहाब की सभी बातें आकर्षण और चर्चा का विषय बनी हुई थीं। इस पर भी हर आदमी यही सोचता था कि कप्तान की इतनी तत्परता केवल 'मोबी डेक' के लिए है क्योंकि उसने खुद कहा था कि उस भयंकर जन्तु को वह स्वयं मारना चाहता है।

अब कप्तान आहाब के उन पांच सदस्यों के सम्बन्ध में जो आश्चर्य बाकी बचा था, वह भी धीरे-धीरे समाप्त हो गया क्योंकि किसी भी व्हेल के शिकारी में आश्चर्य अधिक नहीं ठहरता। इसके अतिरिक्त जिनकी कभी उम्मीद नहीं की जा सकती वैसी कठिनाइयाँ और नए-नए आश्चर्यजनक राष्ट्रों के किनारे अपरिचित कोणों से सामने आते हैं और व्हेल के शिकारियों के इस तैरते हुए कानून के विरोधियों के दल को उत्साहित करते हैं। यही नहीं स्वतः जहाज ही ऐसे बिलक्षण जीव-जन्तुओं को पा जाते हैं जो खुले समुद्र में तख्तों, टूटकर गिरते टुकड़ों, पतवारों, व्हेल-नौकाओं, शिकारा डोंगियों, उड़े हुए जापानी बर्तनों आदि पर उछलते दिखाई देते हैं।

यों उन पांचों आदमियों ने कर्मचारियों में अपना स्थान प्राप्त कर लिया था लेकिन वे सब फिर भी सबसे अलग दिखाई देते थे और फेडैलाह तो आखिर तक उलझा रहस्य ही बना रहा। वह कैसे इस दुनिया में आया, किस प्रकार वह आहाब के विचित्र भाग्य के साथ बंध गया, कप्तान का उस पर खासा प्रभाव कैसे है? लेकिन इतना जरूर है कि फेडैलाह के सम्बन्ध की बातों को न जानने पर कोई उदास नहीं रह सकता। वह बहुत ही सभ्य और घरेलू आदमी दिखाई देता है जो एशिया की जातियों में विशेषतः पूर्वी हिस्सों में पाए जाते हैं जहाँ अति मानवीय बातों का प्रभाव आदि काल से माना जाता है। जहां तक याद जाती है आदमी एक दूर स्मृति की चीज था और बाद में सभी मनुष्य उसकी ही सन्तान हुए परन्तु यह पता नहीं कि वे कैसे और कहां से आए। हां, उन्होंने एक दूसरे को असली भूतों के रूप में देखा और सूरज तथा चन्द्रमा से पूछा कि

वे क्यों बनाए गए हैं और कब तक रहेंगे ? जेनेनिस[1] के अनुसार फरिश्ते मनुष्यों की लड़कियों से प्रेम करते थे और शैतान भी। उसमें अवैध रैबिन[2] को भी सम्मिलित किया जाए जो सांसारिक प्रणय-प्रेम में लीन रहते थे।

## ३८

दिन और हफ्ते निकल गए। शान्त समुद्र में चलते हुए सफेद रंग का पिकोड सुगमतापूर्वक चार अलग-अलग व्हेल मिलने की जगहों को पार करता गया; वे थीं—एज़ोर; दे वर्दे अन्तरीप, प्लेट[3] और सेन्ट हेलेना से दक्षिण की ओर केरोल ग्राउन्ड—पानी से घिरा वह स्थान जहां अभी तक कोई गया ही नहीं था।

उक्त सागरों में तैरते हुए एक गम्भीर और सुहानी चांदनी रात को—जब लहरें चांदी की तरह चमकती हुई एक दूसरी के साथ इठला रही थीं और अपनी कोमलता तथा मन को शान्त करने वाली मुस्कान से वातावरण को चमका रही थीं जिसमें नीरवता थी किन्तु एकान्त उदासी नहीं—ऐसे ही समय में जहाज़ के आगे की नोक के सामने सफेद बुलबुले उठने से पहले एक चांदी-सा चमकदार फव्वारा दिखाई दिया। चन्द्रमा से प्रकाशित होने के कारण वह स्वर्गिक दिखाई दे रहा था और लग रहा था जैसे कोई कलगी पहने हुए शानदार देवता समुद्र से प्रकट हो रहा है। इस फव्वारे को सबसे पहले फेडैलाह ने देखा। क्योंकि इस तरह की चांदनी रातों में उसकी एक आदत थी कि वह बड़े मस्तूल पर चढ़ जाता था और वहां से इधर-उधर ग़ौर से देखा करता था मानो दिन हो। यही नहीं, रात में व्हेलों के जखीरे के जखीरे चलते दिखाई देंगे लेकिन सौ में एक व्हेल का शिकारी ऐसा नहीं होगा जो उस समय पानी में नीचे उतरे। तब आप सोच सकते हैं कि जहाज़ी उस बूढ़े पूर्वीय को उस ऊंचे मस्तूल पर रात्रि के उस समय किस भावना से देखते होंगे; उसका चमकदार साफा

१. 'ओल्ड टेस्टामेंट' का पहला कांड।
२. वह आदि पुरुष जिसने भगवान के नियम मनुष्यों के सामने रखे।
३. रायो डे ला प्लाटा के मुहाने के पास होने के कारण उसका यह नाम रखा गया था।

और चन्द्रमा आकाश में एक समान हो रहे थे। लेकिन एक के बाद एक अनेक सुहानी रातों में निश्चित समय जब उसने योंही बिना एक शब्द बोले निकाल दिया और फिर उस खामोशी के बाद उसने उस चांदी-से चमकदार फव्वारे की घोषणा की तो आराम में डूबे सभी नाविक उसकी ओर बढ़ चले, जैसे कोई पर वाली आत्मा जहाज के रस्सों पर झूलती हुई उन्हें पुकार रही हो। 'वहां है वह।' अगर क़यामत का बिगुल बज गया होता तो भी इससे ज्यादा वे न कांपते। उस समय उनमें भय के स्थान पर खुशी की भावना दिखाई दे रही थी। यों वह समय बहुत ही विचित्र था लेकिन फेडैलाह का पुकारने का ढंग कुछ ऐसा प्रभावशाली था और उससे कुछ ऐसी उत्तेजना उत्पन्न हुई थी कि हरेक ने पानी में उतरने की चाहना प्रकट की।

गम्भीर और जल्दी-जल्दी पग टिकाते हुए आहाब डेक पर आया और उसने पालों तथा झंडों को संभालने की आज्ञा दी। हरेक छोटा पाल चढ़ा दिया गया। "जहाज के सबसे अच्छे आदमी को पतवार का संचालन संभालना होगा।" तब हरेक मस्तूल के ठीक हो जाने पर जहाज हवा के रुख के साथ चलता रहा। उस समय जो सर्द हवा कुछ पालों में भर रही थी और पलटकर डेक पर तैर रही थी उससे लग रहा था कि जैसे वह पैरों के नीचे सरक रही हो। वह आगे ही बढ़ती जा रही थी और उसमें दो विरोधी प्रभाव एक साथ काम कर रहे थे—एक से तो वह उसे सीधा स्वर्ग में ले जाना चाहती थी और दूसरे से सामने दिखाई देने वाले किसी लक्ष्य की ओर। और अगर उस रात आपने आहाब का चेहरा देखा होता तो उसमें भी दो विरोधी तत्व एक साथ दिखाई दे रहे थे। एक तरफ तो उसका एक पूरा पैर डेक पर अच्छी शब्द-ध्वनि कर रहा था और दूसरा मृत-अंग जैसे कब्र की-सी खट-खट उभार रहा था। जिन्दगी और मौत—दोनों पर यह बूढ़ा पैर रखकर चल रहा था। जहाज़ तेजी से बढ़ रहा था और हरेक आंख से तीर की तरह उत्सुक दृष्टियां देख रही थीं, फिर भी वह चांदी का फव्वारा उस रात दुबारा नहीं दिखाई दिया। हर नाविक ने उसे एक बार देखने की कसम खाई लेकिन किसी को भी वह दुबारा नहीं दिखाई दिया।

यह आधी रात का फव्वारा भुला दिया गया लेकिन लीजिए? कुछ दिनों बाद एक दिन फिर वैसे ही रात के सन्नाटे में वह फिर दिखाई दिया और सभी ने उसे देखा भी लेकिन एक बार फिर तेजी से जहाज़ आगे बढ़ाने पर वह लोप

हो गया जैसे कहीं कुछ था ही नहीं। उसके बाद भी बहुत-सी रातों में वह दीखा और गायब हुआ लेकिन किसी ने उसकी परवाह नहीं की; हां, उस पर ताज्जुब हरेक करता था। कभी चांदनी रात में या कभी तारों भरी रात को वह दिखाई देकर एक, दो या तीन दिन को लोप हो जाता था। इस तरह वह हमारे आकर्षण का केन्द्र बना हुआ था।

धीरे-धीरे नाविकों में यह बात पैठ गई कि वह फव्वारा और कुछ नहीं केवल एक व्हेल के मुंह से छोड़ा हुआ पानी का फव्वारा है और वह भी किसी दूसरी सफेद मछली का नहीं—मोबी डिक का है। यही नहीं, एक प्रकार का डर भी समा रहा था कि वह सफेद व्हेल-रूपी जल-राक्षस उन्हें अपनी ओर बारम्बार आकर्षित करते हुए ऐसे दूरस्थ भयंकर सागरों में लिए जा रहा है जहां जीवन-रक्षा का कोई प्रश्न ही नहीं है।

इस प्रकार की चिन्ताएं—अस्पष्ट किन्तु डरावनी—मौसम की गम्भीरता के विपरीत मन को उद्विग्न कर रही थीं और वैसी ही परिस्थितियों में हम लोग उस थका देने वाले समुद्रों में रात-दिन यात्रा करते चले जा रहे थे।

लेकिन, अन्त में जब हम पूर्व की ओर मुड़े तो 'अन्तरीप' की तूफ़ानी हवाओं ने हमें घेर लिया और तब वहां के चंचल सागरों में हम ऊपर-नीचे होने लगे। हाथी दांत-सा सफ़ेद पिकोड उन झंझाओं के सामने तैरता रहा, झुकता रहा और उन काली-सी डरावनी पागल लहरों पर चोटें देता रहा। चांदी के पत्तरों की तरह झागों की घुमेड़ें जहाज़ की किलेबन्दी तक उछल कर पड़ती थीं और तब ज़िन्दगी की उस बेचैनी में और उदासी बढ़ती गई।

हमारे जहाज़ के कोनों पर विलक्षण शकलें मंडराने लगीं और बीचोंबीच समुद्री काली चिड़ियां चक्कर काटने लगीं। हरेक सुबह, हमारे रस्सों पर इनके झुंड के झुंड दिखाई देते और हमारे बारम्बार उड़ाने और हल्ला मचाने पर भी वे टस से मस न होतीं जैसे वे हमारे जहाज़ को कोई भटका हुआ और सुनसान जलपोत समझती हों; जैसे बिना घर-घरौंदों के उन चिड़ियों ने उस सन्नाटे में अपना ठीहा बनाने का सबसे अच्छा स्थान उस जहाज़ को चुना हो। उस काले रंग में समुद्र की अथाह जलराशि घुमेड़ें ले-लेकर ऐसी लग रही थी जैसे किसी उद्विग्न आत्मा में परिस्थितियों की घुमेड़ें उठ रही हों और वह

महान सांसारिक आत्मा उस वेदना और दुःख में लिपटी हुई हो जिन पापों और कष्टों को उसने स्वतः ही जन्म दिया है।

क्या तुझे सब लोग उत्तमाशा अन्तरीप[1] कहते हैं? या तेरा नाम है दुःखदाई अन्तरीप।[2] जिस कपटी और विश्वासघाती शान्ति ने अब तक हमें दुलराया उससे अलग होकर अब हम इस दुःखमय समुद्र में आ गए हैं, जहां पापी और अपराधी मनुष्य बदलकर पक्षी और मछली बना दिए जाते हैं, जिनको जैसे हमेशा-हमेशा तैरते रहने की सजा दी गई है। जिनके पास पहुंचने को न कोई बन्दरगाह है न इस काली हवा को चीरकर जाने के लिए कोई क्षितिज। लेकिन वह फव्वारा कभी-कभी दिखलाई पड़ जाता था—शान्त, बर्फ़-सा सफेद, अपरिवर्तनीय—अब भी हमें एकान्त में बुला रहा था।

उस परेशानी और तूफ़ान की दशा में आहाब डेक पर अनेक बार आकर निर्देश दे जाता था। ऐसे में हवा की गति की प्रतीक्षा में केवल हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहने के अलावा दूसरा उपाय भी नहीं होता है। कप्तान और कर्मचारी एक प्रकार से भाग्यवादी होकर रह जाते हैं। इसलिए अपने उस हाथीदांत के बने पैर को चिरपरिचित छेद में डालकर आहाब घंटों-घंटों हवा के रुख को टटोला करता और तब सर्द हवा अथवा बर्फ़ उसकी पलकों को भारी कर देते। इसी बीच जहाज के आगे के हिस्से से समुद्र ने कर्मचारियों को भगा दिया था और वे किलेबन्दी के बीच में खड़े थे और लहरों की चपेटों से बचने के लिए रेलिंग के ऊपरी हिस्से को दाबे थे। उन तूफ़ानी लहरों की खुशियों या पागलपन के बीच जहाज़ पर एक शब्द भी नहीं गूंज रहा था जैसे सभी मल्लाह मोम के बुत बनाकर छोड़ दिए गए हों। रात में भी समुद्र की चीत्कारों के बीच मनुष्य की उदास खामोशी छाई रहती थी।

स्टारबक वह बात कभी भूल नहीं सकता जब वह दाबमापी[3] देखने के लिए केबिन की ओर गया तो उसने देखा कि आहाब पेंचों से कसी कुर्सी पर सतर्क बैठा है और पलक मूंदे है। जो टोप और कोट वह पहने है उससे बर्फ़ और

---

१. दक्षिणी अफ्रीका की प्रसिद्ध 'कैप ऑव गुड होप'।

२. कैप टारमेन्टोटो। दोनों नामों का प्रयोग लेखक ने आलंकारिक ढंग से किया है।

३. दाबमापी (बैरोमीटर), हवा का दबाव मापने का एक यन्त्र।

पानी की बूंदें अभी भी टपक रही थीं क्योंकि वह थोड़ी देर पहले ही ऊपर तूफ़ान के बीच में खड़ा था और उसने उन कपड़ों को भी नहीं उतारा था। उस-की मेज़ पर ज्वारों और धाराओं का नकशा और चार्ट पड़ा हुआ था। उसके हाथ में लालटेन झूल रही थी। यों उसका शरीर सीधा तना हुआ था, किन्तु गर्दन पीछे को झुकी हुई थी जिससे बन्द आंखें केबिन की कम्पास की ओर दिखाई दे रही थीं।

भयंकर बूढ़ा आदमी! एक कंपकंपी के साथ स्टारबक ने सोचा कि ऐसे तूफ़ान में भी ऐसी गहरी नींद सो रहा है।

## ३९

अन्तरीप के दक्षिण-पूर्व, 'क्रोज़ेट्स' से दूर, व्हेल के अच्छे शिकारियों के लिए खोज करने की सुन्दर जगह है। वहीं 'गोने' या 'आलबैट्रौस' नामक जहाज़ दिखाई दे रहा था। धीरे-धीरे वह नज़दीक आया तो मैंने आगे वाले मस्तूल के ऊंचे अड्डे पर से उसे अच्छी तरह देखा। दूर समुद्र में मछली के शिकार के लिए निकला हुआ वह एक अच्छा 'व्हेलर' दिखाई दे रहा था। और बहुत दिन से घर से निकला प्रतीत होता था।

लहरें अपनी पूरी गति से थपेड़े दे रही थीं और उन्होंने इस जहाज़ को इतना धो डाला था कि वह किसी असहाय जल-घोड़े का अस्थिपंजर-सा दिखाई दे रहा था। उसके चारों ओर लाल रंग की जंग लगी हुई थी और उसके पाल तथा रस्से एक बड़े पेड़ की शाखों की तरह कोहरे और तुषार से आच्छादित थे। उसके सिर्फ नीचे के पाल ही ठीक थे। तीन आगे के मस्तूलों पर ऊंचाई पर बैठे मल्लाह बड़े भयानक दिखाई पड़ रहे थे। वे जानवरों की खालें पहने मालूम पड़ रहे थे; उनके कपड़े चार साल की समुद्री यात्रा में फट गए थे और नष्टप्राय: थे। धीरे-धीरे वह जहाज़ हमारे इतने पास आ गया कि मस्तूलों पर बैठे हम छ: आदमी एक दूसरे के इतने पास हो गए कि अगर हम चाहते तो अपने मस्तूल से दूसरे जहाज के मस्तूल पर कूद सकते थे। फिर भी वे देखने में निराश मछुए सरल भाव से हमारी ओर देखकर आगे बढ़ गए और उन्होंने

हमारे जहाज़ियों से कुछ भी नहीं कहा। फिर भी नीचे के छोटे डेक से स्वागत करने की-सी आवाज़ें सुनाई पड़ीं।

"ऐ होय ! जहाज़ ! क्या आप लोगों ने सफेद व्हेल देखी ?"

लेकिन वह अजनबी कप्तान, जो घिरी हुई किलेबन्दी को पकड़े खड़ा था, अपना भोंपा मुंह में लगाने ही वाला था कि वह उसके हाथ से फिसलकर किसी तरह पानी में गिर गया। उस समय हवा इतनी तेज़ थी कि उसके मुंह से निकली शब्द ध्वनियां बेकार हो रही थीं। इसी बीच वह जहाज़ हमसे दूर हट गया। 'पिकोड' के जहाज़ी दूसरे जहाज वालों के द्वारा सफेद व्हेल का नाम लेते ही होने वाली उस घटना का ध्यान कर सोच रहे थे कि वह अशुभ लक्षण था। आहाब एक मिनट को रुका। ऐसा लग रहा था कि अगर हवा इतनी तेज़ न होती तो सम्भवतः वह एक नाव उतारकर उस अजनबी को अपने जहाज़ पर बुला लेता। किन्तु हवा के रुख की स्थिति का लाभ उठाने के कारण उस जहाज के कप्तान ने अपना बाजा फिर पकड़ लिया और अपने ढंग से यह जानते हुए कि अजनबी जहाज़ नन्तुकेत का है और जल्दी ही घर लौटने वाला है, उसने ऊंचे स्वर में कहा—"ऐ होय ! यह पिकोड है। दुनिया का चक्कर काटने निकला है। सब लोगों से कह देना कि आगे के पत्र प्रशान्त महासागर के पते पर भेजें। और इस बार तीन साल के लिए निकला हूं और अगर घर न पहुंचूं तो उन सबसे पत्र डालने को कह देना—इस पते..."

उस समय दोनों जहाज़ फिर आसपास आ गए थे। तत्काल ही छोटी-छोटी मछलियों का एक दल छिछले पानी के ऊपर तैरता हुआ दिखाई दिया। यह वही दल था जो कई दिन से हमारे साथ तैरता चल रहा था। यों निरन्तर जल-यात्रा करते हुए आहाब ने इससे पहले भी वैसे दृश्य देखे होंगे किन्तु अकेले में उधेड़बुन करने वाले किसी भी आदमी को छोटी से छोटी बात का भी गूढ़ार्थ निकालने की धुन हो जाती है।

"जाओ, मुझसे दूर हट जाओ", पानी को गौर से देखते हुए आहाब ने कहा। बात कुछ नहीं थी किन्तु स्वर में बड़ी वेदना और असहायावस्था झलक रही थी जैसी उस पागल बूढ़े में पहले कभी नहीं देखी गई थी। तभी 'स्टीयर'[1]

---

१. जहाज़ चलाने वाला मांझी।

वाले आदमी को जोर से पुकारते हुए उसने अपनी शेर की-सी आवाज में दहाड़कर कहा—"चलाओ ! समूची दुनिया का चक्कर लगाते हुए उसे दूर रखो।"

समूची दुनिया का चक्कर ! इस ध्वनि में अहंकार भावना को उत्तेजित करने की बहुत बड़ी शक्ति थी परन्तु वह दुनिया का चक्कर लगाने वाली समुद्र-यात्रा कहां सम्पन्न होती है ? जहां से जिस क्षण हम चलते हैं वहीं से अनगिन ख़तरे प्रारम्भ हो जाते हैं और जितना छोड़ आते हैं वही सुरक्षित रहता है।

अगर यह दुनिया अन्तहीन समुद्र होती और पूर्व की ओर सफर करने पर हमें नई-नई जगहें मिलतीं जो मधुर होने के साथ-साथ 'साइक्लैड्स' या 'किंग सोलोमन' के द्वीप से कहीं अधिक विलक्षण होतीं तो यात्रा में कुछ मजा भी आता। लेकिन उन रहस्यों की खोज में यात्रा करना जिन्हें हम ख्वाब में देखते हैं, या उस समुद्री राक्षस के पीछे पड़कर तकलीफ़ उठाना जो कभी न कभी हर आदमी के दिल में तैरा करता है तो उस तरह की खोज करते हुए सारी दुनिया चक्कर काटने में या तो हम सुनसान दुर्गम स्थानों और भूल-भुलैयों में पहुंच जाएंगे या बीच रास्ते में डूब जाएंगे।

## ४०

आहाब जो उस व्हेलर जहाज़ पर नहीं गया उसका प्रत्यक्ष कारण यह था कि समुद्र और हवा दोनों ही तूफ़ान का संकेत कर रहे थे। किन्तु यह कारण न भी होता तब भी वह उस पर नहीं जाता क्योंकि ऐसे अवसरों पर जब भी स्वागत का आदान-प्रदान हुआ तभी उसको अपने प्रश्न का उत्तर 'न' में मिला। किसी भी नए और अजनबी कप्तान से मिलने पर उसने कभी पांच मिनट को भी बातचीत नहीं की ; बस, सिर्फ ऐसे ही कप्तानों से बोला जो उसकी सूचनाओं का उत्तर दे सकते थे। दूर समुद्रों में और ख़ासतौर पर ऐसे स्थानों में जहां व्हेल का शिकार करने वाले जहाज़ अपने शिकारों की खोज करते हैं, एक दूसरे से मिलने पर वे आपस में कैसा व्यवहार करते हैं यह यदि न बताया जाए तो आहाब के विचित्र व्यवहार को ठीक-ठीक नहीं समझा जा सकता।

अगर कोई दो अजनबी न्यूयार्क स्टेट के 'पाइन बैरेन' या इंग्लैण्ड के सुन-

सान 'सैलिसबरी मैदान' में कभी एक दूसरे के सामने आ जाएं तब भी वे ऐसे सन्नाटे में भी एक दूसरे को नमस्कार करना नहीं भूलते। वे एक दूसरे को रोक कर हाल-चाल पूछते हैं और शायद पास-पास बैठकर दो मिनट आराम का सुख लेते हैं। तब उससे अधिक स्वाभाविक और क्या हो सकता है, अगर समुद्ररूपी 'पाइन बैरेन' अथवा 'सैलिसबरी मैदान' में व्हेल का शिकार करने वाले दो जहाज़ वहां मिलें तथा धरती के छोर पर एक दूसरे को उन जगहों पर पुकारें जैसे 'फैनिंग आइलैण्ड' या बहुत दूर 'किंग मिल' में; तब, मैं कहता हूं कि उससे भी अधिक स्वाभाविक और क्या हो सकता है कि वैसी परिस्थितियों में वे दो जहाज़ न केवल एक दूसरे का स्वागत करें बल्कि और भी नज़दीक आवें, आपस में अधिक दोस्ती तथा सामाजिकों का-सा व्यवहार करें। और अगर जहाज़ एक ही बन्दरगाह के हों; जिनके कप्तान, अफसर और दूसरे आदमी एक दूसरे को जानते हों तो क्या वह कोई अजीब बात होगी यदि वे एक दूसरे से मीठी-मीठी घरेलू बातें करें ?

बहुत दिनों के चले हुए जहाजों के पास—जो अपनी यात्रा पर जा रहे हैं, सम्भवतः, बहुत-से पत्र होंगे और कुछ कागजात जिनकी तारीखें एक-दो वर्ष पुरानी होंगी और जो हाथों की रगड़ से फट गए होंगे। और तब इस भलमन-साहत के बदले में व्हेल के शिकार की बहुत-सी बातें, नए अनुभव तथा बहुत जरूरी खबरें उन्हें दूसरे से मिलेंगी। यही नहीं—भले ही उन दोनों जहाज़ों का काम करने का क्षेत्र एक ही हो और दोनों ही बहुत समय से घर से चले हों फिर भी एक दूसरे के पास कहने-सुनने को कुछ न कुछ रहता ही है। उनमें से एक ने किसी तीसरे से कुछ पत्र पाए होंगे जो उन जहाजियों के मतलब के होंगे जो उन्हें इस समय मिल रहे हैं। इसके अलावा उनके पास व्हेल के शिकार की खबरें होंगी और सम्भवतः गप-शप करने के लिए भी बहुत-सी बातें होंगी। उनके पास एक दूसरे के लिए केवल सहानुभूति ही न होगी बल्कि बहुत-सी विलक्षण बातें होंगी जो हमेशा होते रहने के कारण दोनों के लाभ की होंगी, जिनमें गोपनीयता भी होगी और खतरों के अनुभव भी।

दूसरे देशों के होने का अन्तर कोई अन्तर नहीं है यदि दोनों पक्ष एक ही भाषा बोलने वाले हों जैसे अमेरिका वाले और इंग्लैण्ड वाले। यों ऐसा मौक़ा बहुत कम आता है जब अंगरेज व्हेलर एक दूसरे से मिलते हों और आता भी है

तो उनमें एक प्रकार की लज्जा-सी बनी रहती है क्योंकि अंगरेज एक प्रकार से 'रिजर्व' या अपने में ही लीन बना रहता है और 'यान्की' (अमेरिकन) में यह बात औरों के लिए नहीं बल्कि खुद के लिए रहती है। इसके अलावा अंगरेज शिकारियों में अमेरिका के शिकारियों से कहीं अधिक एक प्रकार की विश्वव्यापी बड़प्पन की भावना बनी रहती है यद्यपि उन लम्बे और छरहरे बदन वाले नन्तुकेत वालों को वे समुद्र का किसान समझते हैं। पता नहीं क्यों अंग्रेज लोगों में इतना अहं और बड़प्पन समाया रहता है जबकि 'यान्की' लोग एक दिन में मिलकर जितनी व्हेलों का शिकार कर लेते हैं उतना वे लोग मिलकर दस वर्ष में भी नहीं कर सकते। इस पर भी इंग्लैण्ड के व्हेल के शिकारियों में यह एक नुकसान न पहुंचाने वाली चरित्र की छोटी कमजोरी है जिस पर नन्तुकेत वाले अधिक ध्यान नहीं देते, क्योंकि, सम्भवतः वे सोचते हैं कि इस प्रकार की कुछ कमियां उनमें भी हैं।

इसलिए हम देखते हैं कि जितनी तरह के जहाज समुद्रों में तैरते हैं उनमें व्हेलर जहाज अधिक सामाजिक हो सकते हैं। जबकि यदि व्यापारी जहाज एक दूसरे के पास से निकल जाते हैं तो पहचान का एक शब्द भी नहीं कहते जैसे 'ब्राडवे' के तड़कीले-भड़कीले दो गुण्डे एक दूसरे को देखकर भी नहीं देखते और यही नहीं, हमेशा एक दूसरे के पालों या छोटी-छोटी चीजों की टीका-टिप्पणी करते हैं। और जब 'मैन-आफ-वार'—लड़ाकू जहाज—दैवात् सामने पड़ जाते हैं तो ऐसे मूर्खतापूर्ण ढंग से झुक-झुककर सलामी देंगे, शुरू में मिलते ही ऐसे झंडे हिलाएंगे कि सद्भावना, भाईचारा और स्नेह कहीं दिखाई ही नहीं देगा। और जब दो गुलामों से भरे जहाज मिल जाते हैं तो वे इतनी जल्दी में होते हैं कि चाहते हैं—जितनी जल्दी एक दूसरे के सामने से भाग जाएं उतना अच्छा हो। और कहीं जल-डाकू एक दूसरे के सामने आ गए तो स्वागत की पहली हुंकार में पूछेंगे—"कितनी खोपड़ियां हैं?"—उसी ढंग से जैसे व्हेलर पूछता है—"कितने पीपे हैं?" और उस सवाल का जवाब एक बार मिल गया—बस, डाकू जहाज फौरन अलग-अलग हो जाएंगे क्योंकि वे तो दोनों ही नारकीय शैतान होते हैं और दोनों ही एक दूसरे की पाजीपन की तस्वीर देर तक नहीं देखना चाहते हैं।

लेकिन उस परमात्मा के रूप, ईमानदार, आडम्बर से दूर, सत्कार करने

वाले, सामाजिक, स्वतंत्र और सरल व्हेलर से मिलिए ! किसी भी अच्छे मौसम में एक व्हेलर जब दूसरे से मिलेगा तो क्या करेगा ? उसके पास एक 'गैम' होगी; एक ऐसी चीज—दूसरों ने जिसका नाम तो नहीं सुना और अगर किसी प्रकार सुन भी लिया तो वे उस पर खींसें निपोर देंगे और मजाक करेंगे, जैसे कहेंगे—'फव्वारा छोड़ने वाला', 'व्हेल मछली की चर्बी उबालने वाला' इत्यादि। लेकिन क्यों सभी व्यापारी जहाजी, जल-डाकू और लड़ाकू जहाजों के आदमी और गुलाम-जहाज के नाविक व्हेल-जहाज के सम्बंध में ऐसी तिरस्कारपूर्ण भावना रखते हैं ? इस प्रश्न का उत्तर कठिन है। क्योंकि जहां तक डाकू जहाजियों का प्रश्न है उनके व्यापार में क्या किसी विशेष प्रकार का सम्मान है ? कभी-कभी वे ऊंचे जरूर उठ जाते हैं, सो भी फांसी के तख्ते पर। इसके अलावा जब कोई आदमी उनके-से बेहूदे ढंग से ऊपर चढ़ता है तो उसकी ऊंचाई की नींव नहीं होती।

लेकिन यह गैम क्या है ? आप पूरा शब्दकोष टटोल डालिए, यह शब्द नहीं मिलेगा। डाक्टर जॉनसन[1] ने भी इस शब्द का ज्ञान नहीं प्राप्त किया। 'नोआह वेब्स्टर'[2] के 'आर्क' में भी यह नहीं है। लेकिन यही जानदार शब्द कम से कम पंद्रह हजार असली जाति के 'यान्की' लोगों में वर्षों से प्रचलित है। निश्चित ही इसका स्पष्टीकरण तो होना ही चाहिए और इसको 'लेक्सिकन'[3] में जुड़ना चाहिए। इसी खयाल से मैं इसका अर्थ विद्वत्तापूर्वक प्रकट कर रहा हूं :

गैम—संज्ञा—दो या दो से अधिक व्हेल के शिकारी जहाजों का सामाजिक मिलन, साधारणतः उस स्थान पर जहां दोनों अपनी-अपनी खोज का कार्य कर रहे हों; तब स्वागत करने के बाद जब वे एक दूसरे के कर्मचारियों से मिला-भेंटी करते हैं, उस समय दोनों कप्तान एक जहाज पर रहते हैं और दोनों मुख्य मेट दूसरे पर।

---

१. डॉक्टर सैम्युएल जॉनसन ने अंगरेजी भाषा का पहला कोष सम्पादित किया था।

२. वेब्स्टर—मशहूर अंगरेजी शब्दकोष का रचयिता।

३. शब्दकोष।

इस 'गैमिंग' या 'मिलन' के सम्बंध में थोड़ी बात और रह गई है जिसे नहीं भूलना चाहिए। हर रोजगार-धंधे की अपनी अलग अनोखी बातें होती हैं, वैसी ही इस मछली के धंधे में भी हैं। एक डाकू जहाज़ में, लड़ाकू जहाज़ में, या गुलाम जहाज में जब कप्तान कहीं लाइन लगाता है तो वह किसी आराम की जगह या गद्देदार कुर्सी पर बैठता है और उसके पास एक छोटी-सी सुन्दर दर्जी की कैंची होती है जो रंगीन फीतों और डोरों से सजी होती है। लेकिन व्हेल-बोट में न तो आगे कोई कुर्सी होती है, न सोफा, न उस तरह की कोई कैंची। वास्तव में व्हेल के शिकारी को इतनी फुर्सत या आराम कहां कि वह इस तरह के चोंचले दिखाए या गठिया के मरीजों की कुर्सी पर बैठे। तब उस गैमिंग या मिलन में सब नाविक और हारपूनर साथ ही कप्तान भी अपना जहाज़ छोड़कर दूसरे पर चले जाते हैं और कप्तान देवदार के पेड़ की तरह सीधा खड़ा रहता है। उसे अपने पैरों की ताकत पर नाज होता है। अपनी प्रभुता को स्थिर रखने के लिए कप्तान अपने हाथ में कोई न कोई चीज़ पकड़े अवश्य रहता है। कप्तान के सामने कभी-कभी ऐसे अजीब मौके भी आ जाते हैं जब तूफ़ान के बीच इधर-उधर कुछ न होने पर वह सबसे नजदीकी पतवार वाले आदमी के बाल पकड़ लेता है और मौत की तरह अपने को संभाले रहता है।

## ४१

अगला दिन और भी शान्त तथा उदास था और इस तरह के खाली समुद्र में जब जहाज़ के कर्मचारियों को मन लगाए रखने का कोई काम सामने नहीं दिखा तो उन्हें सोने की धुन हुई। भारत महासागर के जिस हिस्से में इस समय हमारा जहाज जा रहा था वह व्हेल के शिकारियों के अनुसार आकर्षक नहीं था क्योंकि उसमें शिशुमार व्हेलें, उड़ने वाली मछलियां तथा दूसरे पानी के हरियाले पौधे नहीं थे जैसे रायो डे ला प्लाटा या पेरू में दिखाई दिए थे।

अब बड़े मस्तूल के सामने खड़े होने की ड्यूटी मेरी थी। मैं रस्सों के बराबर अपने कन्धे झुकाए हुए मीठी हवा का आनन्द ले रहा था। मैं कुछ

विचित्र स्वप्न की-सी स्थिति में था और मेरा मन मेरे शरीर के बाहर कुलाचें भर रहा था।

जैसे उस समय मैं सब कुछ भूला हुआ था साथ ही बड़े और छोटे मस्तूलों के नाविकों को मैंने ऊंघते हुए देखा था। इसलिए अन्त में हम तीन एक प्रकार से, निर्जीव-से, पाल के साथ झूल रहे थे तथा हमारे हर झोंके पर नीचे के पतवार वालों से एक हुंकार ऊपर आ जाती थी। लहरें भी, आलस्य में झुकी-झुकी-सी हलकेपन में डोल रही थीं; पूर्व दिशा जैसे पश्चिम को इशारे से बुला रही थी और हम सबके ऊपर सूरज मुस्करा रहा था।

अचानक ही मेरी मुंदी पलकों के नीचे कुछ बुलबुले फूटते-से मालूम पड़ने लगे। संडसी की तरह मेरे हाथ रस्सों को पकड़े रहे। कोई अदृश्य शक्ति मुझे संभाले रही और एक झटके के साथ मैं पुन: सचेत हुआ। और लीजिए! हमारे जहाज़ के बहुत पास एक भारी स्पर्म व्हेल लड़ाई के जलपोत के पेंदे की तरह पानी में लुढ़क रही थी। उसकी नीले रंग की चौड़ी और चिकनी पीठ सूर्य की किरणों में दर्पण की भांति चमक रही थी। बड़े आराम से जो वह पानी में घुमेड़ ले रही थी और इधर-उधर शांतिपूर्वक अपने मुंह से पानी के झागदार फव्वारे छोड़ रही थी उससे ऐसा लग रहा था कि व्हेल बन्दरगाह का कोई बर्घ[1] नागरिक हो और एक अच्छी शाम को पाइप पी रहा हो। लेकिन—बेचारी व्हेल! वह पाइप तेरा अन्तिम पाइप था।—हां, तो जैसे किसी जादूगर ने जादू की लकड़ी घुमा दी हो इस तरह सब सोने वाले जहाज़ी जागकर सतर्क हो गए और जहाज़ के हर कोने से एक साथ बहुत-सी आवाजें गूंजने लगीं। वे ही जाने-पहचाने हुक्म सुनाई देने लगे। और जब वह भारी मछली हवा में धीमे व निरन्तर फव्वारे छोड़ रही थी, उस समय जहाज़ तैयार हो रहा था।

"नावें उतारो!" आहाब चीखा। साथ ही अपने हुक्म को जैसे खुद ही मानते हुए—नाविक डांडे संभालें इसके पहले ही वह नीचे पहुंच गया।

जहाज़ियों के हल्ले-गुल्ले से व्हेल सतर्क हो गई होगी इसलिए नावें नीचे

---

१. वह नगर जिसके नागरिकों को पार्लियामेंट में सदस्य भेजने का अधिकार हो।

उतरें उसके पहले ही बड़े ठाठ से पलटकर पेंदे के नीचे तैर गई लेकिन इतने चुपचाप और घूमने में इतने कम घुमेड़ें लेकर कि यह मालूम हो कि वह अभी सचेत नहीं हुई है। आहाब ने हुक्म दिया था कि एक भी पतवार इस्तेमाल न हो, न कोई मुंह से कुछ बोले; केवल फुसफुसाहट में बातचीत हो। नावों के आगे के हिस्सों पर ऑन्टैरियो के आदिवासियों की तरह हम लोग बैठ गए और बिना शब्द के पाल चढ़ा दिए गए। फौरन ही, जब हम पीछा करते हुए आगे बढे तभी उस राक्षसी ने अपनी पूंछ कमसे कम चालीस फीट हवा में ऊपर सीधी कर दी। तब पानी में डूबकर ऐसे अदृश्य हो गई जैसे किसी ऊंची मीनार को पानी निगल गया हो।

"वह गई!" एक चीख आई और स्टब ने फ़ौरन ही अपना पाइप सुलगाने के लिए दियासलाई जलाई क्योंकि अब लोगों को सांस लेने की आज़ादी थी। जब व्हेल डुबकी ले चुकी तो फिर चमकी। वह उस समय उस पाइप पीने वाले स्टब की नाव के सामने और सबसे पास थी, अतः स्टब ने सोचा कि उसको पकड़ने का सौभाग्य उसे ही मिलेगा। यह तो अब खुलासा ही था कि व्हेल समझ चुकी थी कि लोग उसका पीछा कर रहे हैं। इसलिए अब आगे सतर्कता और ख़ामोशी भी बेकार थी। पैडिल हटा लिए गए और तेज़ी से पतवारें चलनी प्रारम्भ हो गईं। और पाइप पीते हुए ही स्टब ने अपने लोगों को हमला करने के लिए ललकारा।

हां, मछली में एक परिवर्तन हुआ। अपनी विपत्ति को पूरी तरह समझते हुए वह सर बाहर निकालकर चलने लगी। वह सर का हिस्सा घुमाकर उन अमाप झागों[1] को जिसको वह अपने में बना रही थी बाहर फेंक रही थी।

---

१. स्पर्म व्हेल के भारी सर में कुछ बहुत पतला और हलका पदार्थ भरा रहता है। यों ऊपर से देखने में वह बहुत स्थूल होता है, किन्तु बहुत उछलने वाला भी होता है और तभी वह उसे बहुत आसानी से हवा में उछाल देती है; खास तौर पर जब वह तेज भाग रही हो। इसके अतिरिक्त उसके आगे के सर के भाग की लम्बाई इतनी अधिक होती है और पिछले भाग से वह पानी को ऐसे काटती चलती है कि जब वह घुमाकर अपने सर से वह तरल पदार्थ फेंकती है तो वह माल से भरी बोझिल नाव के स्थान पर न्यू यार्क की पैनी धार वाली तेज़ पाइलट-नाव दिखाई देती है।

"उसे शुरू करो, उसे शुरू करो मेरे साथियो ! जल्दी मत करो ! जितना चाहो समय लो ।—लेकिन उसे शुरू करो; उसको तूफ़ानी गर्जन की तरह चालू करो, बस इतना ही है," धुएं को उड़ाते हुए स्टब ने कहा । "उसे अब चालू करो । लम्बी और गहरी चोट देना, टाशटेगो ! टाश, मेरे बच्चे ! उसे चालू करो—चालू करो, सब । लेकिन सब ठंडे दिल से, शान्त रहकर—ककड़ी की तरह मुलायमी से—धीमे, धीमे लेकिन उसे खतरनाक मौत और दांत निकाले हुए राक्षस की तरह हुनकाना और क़ब्र में दफ़नाए मरे हुओं की तरह सीधे खींचना, लड़को !—बस ! उसे चालू करो !"

"वू—हू ! वा—ही !" जवाब में गे-हेडर चीखा और किसी लड़ाई की पुरानी ललकार भरी गूंज को आकाश में गुंजा दिया । सभी डांडे वालों ने उस चीखती गूंज को दोहराया ।

उसकी उन चीखों का उत्तर और लोगों ने भी उतनी ही तेज़ आवाज़ों में दिया । "की—ही ! की—ही !" डैग्गू चिल्लाया । जैसे चीता अपने पिंजड़े में हिलता-डुलता है वैसे ही एक बार वह आगे बढ़ा और एक बार पीछे हटा ।

"का—ला ! कू—लू !" जैसे कोई ग्रेनेडियर[1] अपनी बोटी का स्वाद लेता है वैसे ही, ओठ चभुलाते हुए 'क्वीकेग' गुर्राया । इस प्रकार पतवारों व आवाजों से नावें पानी को चीर रही थीं । तम्बाकू पीते हुए स्टब निरन्तर अपने नाविकों को उत्साहित कर रहा था । अपनी जान की परवाह न करने वाले लोगों की तरह वे सब आगे बढ़ रहे थे । तभी खुशनुमा आवाज सुनाई पड़ी,—"टाशटेगो ! खड़े हो जाओ !—फेंको हारपून ।" हारपून फेंका गया । "सबलोग पीछे हट-कर !"—डांडे चलाने वाले पानी को पीछे करने लगे । हरेक की कलाइयों में गरमी भर गई । वह एक टोना था—जादू । इसी मिनट स्टब ने तेज़ी में दो मोड़ पकड़े और उसके पाइप से एक नीले रंग का धुआं ऊपर उठा ।

"लाइन गीली करो ! लाइन गीली करो !" टब के पास बैठे डांडे वाले से स्टब ने कहा जिसने अपना टोप घसीटते हुए उसमें जल्दी से समुद्र का पानी भरा । और अधिक घुमाव लिए गए जिससे लाइन ने अपनी जगह लेना प्रारम्भ कर दिया । अब नाव खौलते पानी के बीच शार्क मछली की तरह उड़ने-सी

---

१. गोला फेंकने वाला सैनिक ।

लगी। स्टब तथा टाशटेगो ने अपनी-अपनी जगहें बदलीं—वे आगे से पीछे आ गए उस उथल-पुथल में यह काम सचमुच ही रोंगटे खड़ा कर देने वाला था।

आगे की तरफ एक प्रकार से बेरोक पानी का झरना निरन्तर खिलवाड़ कर रहा था; जैसे जल की भंवर या घुमेड़ निरन्तर चक्कर काट रही थी; और उंगली के हिलने तक के छोटे से छोटे डोलन पर वह चक्कर खाने वाली नौका उत्साह सहित पानी को चीरते हुए और जैसे ऐंठते हुए अपने आगे के हिस्से को पानी में झोंक देती थी। इस प्रकार वे बढ़ते चले जा रहे थे। प्रत्येक व्यक्ति अपनी पूरी ताक़त से अपने स्थान पर जमा हुआ था; जिससे थपेड़ों और झाग के फव्वारों से उछल न जाए। साथ ही लम्बा टाशटेगो संचालन करने वाली पतवार के पास दोहरे बल व उत्साह के साथ जमा था। सम्पूर्ण अतलांतक और प्रशान्त महासागर जैसे उनकी दौड़ में पीछे होते चले जा रहे थे और तभी अन्त में व्हेल की दौड़ कुछ ढीली पड़ गई।

"ज़ोर से खींचो! ज़ोर से खींचो! स्टब ने आगे वाले लोगों से चीखकर कहा। सामने व्हेल को देखते हुए सभी ने नाव को खींचना शुरू किया लेकिन वह अभी भी पीछे थी। फ़ौरन ही स्टब ने पीछे से हटकर अपने घुटने को रस्सी बांधने की फन्नी के पास टिका दिया और एक प्रकार से उस उड़ने वाली मछली पर एक के बाद एक भाला फेंकना शुरू किया। उसके हुकम पर नावें रास्ते से अलग होकर उधर बढ़ती जातीं। व्हेल भयंकर लहरें उभार रही थी और एक के बाद दूसरी उछाल की तैयारी करने लगती।

किसी पहाड़ पर से बहती छोटी नदी की तरह उस जलजन्तु के चारों ओर लाल रंग की घुमेड़ें उठने लगीं। उसकी कष्टप्रद देह समुद्र के खारे जलरूपी आंसुओं में नहीं बल्कि खून में लोटने लगी जो कई फर्लाङ्ग तक बुलबुले व धार छोड़ती जा रही थी। तिरछी पड़ती हुई सूर्य की किरणें उस लाल रंग के तालाब में जैसे अठखेलियां कर रही थीं और उसकी छाया से सभी लोगों के चेहरे आदिवासियों के-से लाल दिखाई दे रहे थे। व्हेल की श्वास-नली से सफेद धुएं के फव्वारे बराबर उछल रहे थे और उस उत्तेजित नौकारोही के मुंह से भी पाइप का धुआं उड़ रहा था क्योंकि स्टब अपनी हर चोट पर कांटेदार बर्छे को तेज़ी में नाव के आगे से फेंकता था और पाइप का कश खींच लेता था।

"ऊपर खींचो, ऊपर खींचो!" आगे बैठे लोगों से उसने चीख़कर कहा

क्योंकि समाप्तप्राय व्हेल ढीली पड़ चुकी थी। "बराबर से, ऊपर खींचो!" और नाव मछली के बराबर उसके पीछे की ओर सट गई। बराबर से आकर स्टब ने आहिस्ते से अपने हारपून को व्हेल के भीतर घुसेड़ दिया और घुमाने लगा जिससे समझ ले कि कहीं वह जिन्दा तो नहीं है; जैसे वह टटोल रहा हो कि व्हेल ने कोई सोने की घड़ी तो नहीं निगल ली है। और वह सोने की घड़ी उस मछली की अपनी जान थी। अब उस पर भरपूर चोट पड़ चुकी थी और वह खून में लथपथ थी। खतरे में डूबी नाव के सामने जैसे अब प्रकाश की किरणें फूट रही थीं; और ताजी हवा आ रही थी।

व्हेल ने अपनी 'फ्लरी'[1] से बचने के लिए एक बार फिर पानी में करवट ली और जैसे बड़े कष्ट में सांस लेने लगी। अन्त में लाल रंग की शराब की तरह व्हेल के खून की तरलता हवा में तैरने लगी। फौरन ही व्हेल ने अपनी निर्जीव पूंछ समुद्र में फेंक दी। उसका दिल फट गया था।

"वह मर गई मिस्टर स्टब" डैग्गू बोला।

"हां दोनों ही पाइपों के धुएं खाली हो गए," अपने पाइप को मुंह से निकालकर स्टब ने उसकी राख को समुद्र में गिरा दिया और एक मिनट तक उस निर्जीव लाश को एकटक देखता रहा जो उसने ही बनाई थी।

## ४२

पिछले अध्याय की एक घटना के बारे में दो शब्द।

मछली के शिकार में प्रचलित प्रयोगों के अनुसार व्हेल-बोट जहाज से चलती है और व्हेल-मैन या हेड्समैन या व्हेल-किलर—व्हेल का प्रमुख शिकारी—थोड़े समय के लिए स्टीयरमैन—चालक—का काम भी करता है। और हारपूनर या व्हेल को फांसने वाला सबसे आगे की पतवार को चलाता है जो 'हारपूनर-ओर' कहलाती है। बहुत तेज और ताकतवर हाथ चाहिए जो व्हेल पर पहला वार करे क्योंकि बहुत बार जो लम्बी चोट कहलाती है वह

---

१. व्हेल मछली के दम तोड़ते समय होने वाली वेदना।

कभी-कभी बीस और तीस फीट की दूरी से की जाती है। लेकिन पीछा करते समय चाहें जितना समय लग गया हो और चाहे जितनी थकान हो फिर भी हारपूनर से यह आशा की जाती है कि वह तेजी से पतवार चलाकर व्हेल के नजदीक से नजदीक नाव को पहुंचाएगा। सचमुच वह कुछ निराले आदमी का-सा—सबसे अलग काम करेगा और न केवल वह बिजली की तरह लपके-दौड़ेगा बल्कि अनेक तरह की आवाज़ें और हुंकारे भर-भरकर लोगों को बराबर ललकारता रहेगा। लेकिन अपनी शक्ति भर चीखने से क्या बनता है—जबकि शरीर के दूसरे अंग दूसरे प्रकार से भारी कामों में लगे हों, इसे तो भुक्तभोगी ही बता सकता है। इस 'प्रकार' से जुटे रहने और चिल्लाते रहने की क्रिया करते समय हारपूनर की पीठ तो व्हेल की तरफ होती है और तब वह थका हुआ प्राणी सुनता है—'खड़े हो जाओ, और वार करो।' उसको अब अपनी पतवार रख देनी होगी; थोड़ा पीछे हटकर तब वह 'क्रॉच' से अपना हारपून ले लेगा और जो भी थोड़ी-बहुत शक्ति उसमें बाकी रह गई है उससे वह व्हेल पर चोट करेगा। कोई ताज्जुब नहीं कि व्हेल के शिकारियों के पूरे दल का एक-एक शिकारी पचास-पचास बार चोट करे और सफल पांच भी न हों; कोई ताज्जुब नहीं कि बहुत-से बेकार हारपूनर बुरी तरह फटकारे भी जाते हैं और निकाल दिए जाते हैं; कोई ताज्जुब नहीं कि नाव में ही बहुतों की खून की धमनियां फट जाती हैं; कोई ताज्जुब नहीं कि बहुत-से स्पर्म व्हेल के शिकारियों को चार साल में चार पीपे तेल भी नहीं मिल पाता है; आश्चर्य की कोई बात नहीं कि बहुत-से जहाज़ के मालिकों के लिए व्हेल के शिकार का यह धन्धा टोटे या नुकसान का धंधा है क्योंकि वह हारपूनर ही है जो जलयात्रा की जान है और यदि दौड़ा-दौड़ाकर अगर आप उसकी जान पहले ही निकाल लेंगे तो ऐन मौके पर जब उसकी बहुत आवश्यकता है तब क्या होगा?

फिर, अगर हमले की चोट सफल भी हो गई तो दूसरा खतरनाक मौका तब आता है जब व्हेल भागना शुरू करती है। तब नाव का अगुआ और हारपूनर दोनों ही आगे-पीछे दौड़ना शुरू करते हैं और उस समय का वह आपत्तिकाल न केवल उसका ही बल्कि सबका होता है। तब वे निरन्तर जगहों की अदला-बदली करते हैं।

पता नहीं कि दूसरे लोग इसके विपरीत क्या करते हैं लेकिन कम से कम

मैं इसको एक बड़ी बेवकूफी और अनावश्यक बात मानता हूं। नाव का हेड्समैन या संचालक—शुरू से अन्त तक आगे के हिस्से में बना रहना चाहिए। उसको हारपून और लान्स (बर्छे) दोनों से ही हमला करना चाहिए और उसको एक मल्लाह की भांति आवश्यकतानुसार कर्म करने के अतिरिक्त कुछ भी भाग-दौड़ नहीं करनी चाहिए। मैं समझता हूं कि इससे दौड़ की गति में कुछ कमी जरूर आएगी किन्तु संसार के अनेक देशों के हारपूनरों से बात करने पर ही मैंने यह निष्कर्ष निकाला है कि हमला करने के पहले ही उन्हें थक नहीं जाना चाहिए। व्हेल के शिकार में दौड़ नहीं हमले का महत्व है।

इस चोट में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए हारपूनर जब आगे बढ़े तो विश्राम के बाद, न कि परिश्रम के बाद।

## ४३

पेड़ के तने से शाखें निकलती हैं और उनसे टहनियां। इसी तरह सृजनात्मक रचनाओं में अध्याय अपने आप निकलते चले आते हैं।

पिछले पृष्ठ पर जो 'क्रॉच' शब्द आया है, उसे अलग से बताना जरूरी है। यह एक तरह की विचित्र कटावदार पतली लकड़ी होती है—दो फीट लम्बी, जो नाव में दाहिने हाथ के आगे के कोने में किनारे के पास सीधी लगाई जाती है और हारपून के लकड़ी वाले हिस्से को टिकाने या सहारा देने का काम करती है; जिसका दूसरा खाली और कांटेदार हिस्सा ढलवां नोक से लगा होता है। उसके कारण हथियार फेंकने वाले के हाथ में आसानी से आ जाता है जो जल्दी से घसीटकर वैसे ही उसका उपयोग करता है जैसे कोई जंगलवासी दीवाल से घसीटकर अपनी राइफल का। ऐसा रिवाज है कि 'क्रॉच' में दो हारपून टिके रहते हैं जो पहले और दूसरे 'लोहे' के नाम से पुकारे जाते हैं।

लेकिन ये दोनों हारपून अपनी अलग पतली जंजीर से बंधे रहते हैं क्योंकि आवश्यकता पड़ने पर एक के बाद दूसरा हारपून एक ही व्हेल के ऊपर फेंकना पड़ता है, जिससे एक को खींचा जा सके और दूसरा व्हेल पर ही लगा रहे। यह मौके की बात है। लेकिन बहुत बार ऐसा भी होता है कि पहला लोहा खाते

ही व्हेल तेज़ी से एक साथ भागना शुरू कर देती है। इसलिए हारपूनर चाहे जितना बिजली की फुर्ती की तरह काम करे फिर भी दूसरा लोहा फेंकना बहुत बार असम्भव हो जाता है। अब चूंकि लोहा जंजीर से जुड़ा होता है और साथ ही नाव के 'क्रॉच' में लगा रहता है इसलिए हर हालत में उसे नाव से दूर फेंक ही देना पड़ता है। अन्यथा वह विपत्ति पूरी नाव पर आती है। उसमें बड़ी फुर्ती व चतुराई की ज़रूरत होती है क्योंकि कभी-कभी इससे बड़ी खतरनाक मौतें भी हो गई हैं।

यही नहीं, जब दूसरा लोहा फेंका जाता है तो वह झूलता है, और वह एक तीखे डर का कारण बन जाता है। वह चंचल होकर कुदान भरता है, और नाव तथा व्हेल दोनों के लिए एक भारी खतरा बन जाता है; रस्सों को लपेट लेता है या उन्हें काट डालता है और चारों तरफ सनसनी पैदा कर देता है। जब तक कि व्हेल ठीक से पकड़ न जाए या उसकी लाश ही न बन जाए तब तक उसका वापस होना भी सम्भव नहीं।

अब आप ध्यान कीजिए कि एक व्हेल के लिए जब चार नावें एक साथ पीछे पड़ी हों और आठ या दस नम्बर 'दो' लोहे चोट करने के लिए उछाल दिए गए हों, और वे व्हेल के चारों ओर झूल रहे हों तो कितना ज़बर्दस्त खतरा झूलता दिखाई देता है!

# ४४

जहाज़ से कुछ दूर हटकर स्टब की व्हेल मारी गई थी। उस समय सब ओर शांति छाई हुई थी और तीन नावों के उस बेड़े के साथ हम लोग जीत का उपहार 'पिकोड' को देने के लिए धीरे-धीरे आगे बढ़े। और तब हम अट्ठारह आदमियों की छत्तीस बांहें, एक सौ अस्सी अंगूठे और उंगलियां व्हेल की उस भारी लाश को घसीटने-उठाने का काम समुद्र में, घंटों-घंटों करते रहे।

अंधियारा घिर आया और 'पिकोड' के आगे की तीन बत्तियों ने मन्द प्रकाश से हमें रास्ता दिखाया। जब हम जहाज़ के पास पहुंचे तो हमने आहाब को किलेबन्दी के आगे एक बत्ती और लटकाते हुए देखा। सूनेपन में, एक मिनट

को व्हेल को देखकर उसने रात की सुरक्षा के लिए कुछ निर्देश दिए और अपनी लैम्प एक जहाज़ी को देकर वह केबिन की ओर चला गया तथा सुबह तक बाहर नहीं आया।

उस मरी हुई व्हेल को देखकर आहाब में एक प्रकार का असन्तोष और निराशा पैठ गई। मालूम पड़ रहा था, जैसे उसे देखकर उसकी आंखों के सामने 'मोबी डिक' का चित्र नाच गया—मोबी डिक को अभी मारना शेष था। यों तो उसके जहाज़ पर हजारों व्हेल मछलियां मारकर लाई गई थीं लेकिन उसकी आत्मा को संतोष एक से भी नहीं हुआ था। फौरन ही गहरे पानी में लंगर फेंकने-खींचने की जंजीरें ढीली करने और उसी तरह की खटर-पटर की आवाजें डेक पर गूंजने लगीं। सर से पूंछ तक व्हेल बांध दी गई और उसकी वह काली-काली भारी लाश जंजीरों में झूलने लगी। अब वह जहाज़ के बराबर आ गई थी और रात के उस अंधेरे में उन रस्सों और पालों के बीच वे दोनों—जहाज तथा व्हेल—दो भारी बैलों की तरह दिखाई दे रहे थे, जिसमें एक आराम कर रहा था और दूसरा खामोश खड़ा था।[1]

'मूडी' आहाब की शान्ति और स्थिरता डेक पर जानी जा चुकी थी लेकिन उसका दूसरे नम्बर का मेट स्टब तो अपनी सफलता में आनन्दित और उत्तेजित था ही। वह कुछ इतने आनन्द और चहल-पहल में था कि उससे बड़े उसके आफ़िसर स्टारबक ने थोड़ी देर के लिए जहाज़ का पूरा प्रबन्ध स्टब के सुपुर्द कर दिया। इस समय स्टब को बेहद भूख लगी हुई थी और अपनी प्रिय वस्तु

---

१. यहां एक बात स्पष्ट करना आवश्यक है। जहाज़ के पास पहुंचने पर जो सबसे मजबूत बंधन व्हेल के बांधा जाता है वह उसकी पूंछ और पेट पर कसा जाता है क्योंकि उसके शरीर में वे ही भाग—दोनों ओर के परों को छोड़कर—सबसे भारी होते हैं। मरने के बाद भी उसके शरीर की रपटन बांधने व घसीटने में बहुत मेहनत लेती है। नाव पर से उसके शरीर को जंजीरों में लपेटना सम्भव नहीं है। तब उसको बांधने के लिए जहाज़ से पहले रस्से ढीले किए जाते हैं और व्हेल के आगे से लकड़ी के टुकड़ों को घुमाकर तब पहले से ही तैयार जंजीरों को पानी के अन्दर से लपेटकर ऊपर ले आया जाता है।

व्हेल के लिए उसकी जीभ लपलपा रही थी।

"एक बोटी, मेरे सोने के पहले, एक बोटी ! डैग्गू ! तुम ऊपर जाकर उसके पीछे के भाग से एक छोटा-सा टुकड़ा मेरे लिए काट लाओ !"

यों तो ये भयंकर मछली के शिकारी साधारण रूप में और जैसे सैनिक नियमों के अनुसार भी शत्रु से लड़ाई का खर्च पहले चुका लेते हैं (कमसे कम इस समय जलयात्रा का खर्च) लेकिन इन नन्तुकेत वालों में स्पर्म व्हेल का स्वाद कुछ ऐसा मजेदार है कि स्टब की तरह ही वे उतावले हो जाते हैं।

अस्तु, आधी रात तक वह बोटी काटकर पकाई गई। स्पर्म के तेल में दो लालटेनें भी सामने जलाई गईं और स्टब बहुत अकड़कर तार लपेटने वाली गरारी के ऊपर के हिस्से पर खड़ा हुआ; अपने सामने उसने उस मछली के भोजन को रखा और उस गरारी का उपयोग उसने खाने वाली अलमारी के रूप में किया। उस रात उस व्हेल के भोजन का आनन्द लेने वाला केवल स्टब ही नहीं था। उस समय उसकी उस बोटी को चबाने के साथ—हजारों-हजारों शार्क मछलियां और थीं जो उस मरे हुए मगरमच्छ के चारों ओर मंडरा-मंडरा-कर उसकी चर्बी का स्वाद लेने का आनन्द प्राप्त कर रही थीं। कुछ सोने वाले अपने-अपने बंक[1] में सोते-सोते चौंक पड़ते थे क्योंकि जहाज के पेंदे में कभी-कभी उन मगरमच्छों तथा शार्क मछलियों की पूंछ उन सोने वालों के ठीक कलेजे के नीचे टकरा जाती थी। उस काले और उफनते समुद्र की लहरों से टकराने की भांति हिलकोरे लेते हुए वे अपनी पीठ मोड़ लेते थे और आदमी के सर के बराबर बड़े व्हेल के टुकड़ों की बोटी को चभुलाते हुए वे आराम कर रहे थे। मछली की दावत बड़ी विचित्र दिखाई दे रही थी। उस स्थान में कैसे इनलोगों ने बराबर-बराबर गोल टुकड़े काटे थे, यह एक विश्वव्यापी समस्या दिखाई दे रही थी। यही नहीं, जो निशान उन्होंने व्हेल पर छोड़ा था वह बढ़ई द्वारा किसी लकड़ी में पेंच लगाने की तरह का था।

हर तरह के धुएं के डरावनेपन में और समुद्र से युद्ध करने के बाद समुद्र की मछलियां भूखे कुत्तों की तरह उस मेज की ओर देख रही थीं जो जहाज का

---

१. वे सन्दूक जो दिन में सामान रखने और रात को सोने के काम में लाए जाते हैं।

डेक था और जैसे गोश्त के लाल-लाल टुकड़े काट-काटकर उनके सामने उछाले जा रहे हों वैसे हर उछाल पर वे लपकेंगी। एक स्पर्म व्हेल के शिकार के बाद जितनी खुशी में वे मछलियां अपने चांदी से चमकते मुंह लेकर जहाज से टकराती हैं वैसी वे कभी नहीं दिखाई देतीं। अगर आपने वह दृश्य कभी नहीं देखा तो शैतान की पूजा के औचित्य के बारे में अपना निर्णय और शैतान के साथ समझौते की बात को स्थगित रखिए।

लेकिन जिस तरह स्टब आसपास के लोगों के बोटी चभुलाने के शब्दों को नहीं सुन रहा था उसी तरह डेक के पास घिरी समुद्री मछलियां स्टब के ओठों की चटखार को नहीं सुन रही थीं।

"रसोइया! रसोइया! —वह बूढ़ा फ़्लीस कहां है।" वह चीखा। उसने अपने पैर फैला लिए जैसे अपने भोजन पर ठीक से जम रहा हो और अपनी प्लेट पर ऐसे कांटा चलाया जैसे अपने बर्छे से चोट कर रहा हो—"रसोइया! रसोइया! —पाल इधर को करो, रसोइया!"

अपने झूलने वाले पलंग पर से उठकर काले रंग का बूढ़ा फ़्लीस अपने घुटनों को दाबते, हिलते-डुलते और लंगड़ाते हुए उस बेवक्त सामने आया। अपने दोनों हाथ जोड़कर स्टब की खाने की अलमारी के सामने स्थिरतापूर्वक खड़े होकर और अपनी दो टांगों वाली छड़ी का सहारा लेकर उसने कमान की तरह अपनी कमर आगे झुका ली।

"रसोइए!" जल्दी से एक कौर मुंह में डालकर स्टब बोला—"क्या यह बोटी ज्यादा नहीं पक गई? यह जल गई है। यह बहुत मुलायम होती है इसलिए ठीक से पकाओ। क्या तुम्हीं नहीं कहते हो कि व्हेल की बोटी कुरकुरी पकी होनी चाहिए। वह देखो, उन सामने वाली मछलियों को भी करारी बोटी चाहिए। जाओ, उनसे बात करो। उनसे कहो कि उनका स्वागत है। लेकिन वे शान्त रहें। अगर मेरी अपनी आवाज भी सुनाई दे तो मुझे धमाके से उड़ा देना। जाओ, रसोइए, और मेरी बात उनसे कह दो। यह लालटेन लो", एक लालटेन को तख्ते से उतारकर देते हुए वह बोला—"अब जाओ और उन्हें मेरी बातें बता आओ।"

अनमने-से लालटेन को लेते हुए बूढ़ा फ़्लीस लड़खड़ाते हुए डेक से किलेबन्दी तक गया और एक हाथ से लैंप को पानी में लटकाते हुए और दूसरे से अपनी

बैसाखी संभाले हुए उसने पानी में झांका जैसे उस भीड़-भाड़ को ठीक से देखना चाहता हो और तभी उसने बड़बड़ाना शुरू किया। स्टब ने भी आगे बढ़कर वह सब सुना।

"रसोइए!" उसके कन्धे पर हाथ रखकर स्टब बोला—"रसोइए! वहां क्या देख रहे हो और ऐसे क्या उपदेश दे रहे हो? पाप करने वालों को ऐसे शिक्षा नहीं दी जाती रसोइए?"

"ऐसा क्यों? तब आप स्वयं ही उपदेश दीजिए", जाते हुए फ़्लीस बोला।

"नहीं, रसोइए! बोलो, बोलो।"

"हां तो—प्यारे साथियो!"

"वाह!" स्टब बोला—"उनको पुचकारो। कोशिश करो।"

फ़्लीस वैसा ही करता रहा।

"क्या सभी मछलियां बड़ी पेटू और लालची होती हैं?—वहां पीछे की तरफ़ खट्-खट् करना बन्द करो! तुम उधर खट्-खट् कर रही हो तो मेरी बातें कैसे सुन पाओगी?"

"रसोइए!" गला पकड़ते हुए स्टब बोला—"ऐसे मत बिगड़ो! उनसे शरीफ़ों की तरह मुलायमी से बात करो।"

फ़्लीस का उपदेश फिर जारी हो गया।

"साथियो! तुम्हारे इस पेटू और लालचीपन की मैं शिकायत नहीं करता। वह तो प्रकृति है और उसका कोई इलाज भी नहीं है लेकिन उस धूर्त प्रकृति को कैसे क़ाबू में किया जाए?—प्रश्न तो यही है। तुम मछली हो, शैतान हो। लेकिन अगर तुम अपने बीच में ही दूसरी मछलियों पर हुकूमत करो तो फिर तुम फ़रिश्ता बन जाओगी, क्योंकि फ़रिश्ते और कुछ नहीं भली प्रकार नियंत्रित शार्क मछलियां हैं। तब मेरे भाइयो! सुनो। अच्छे नागरिक बनने की कोशिश करो और उस व्हेल से अपने को बचाओ। मैं कहता हूं अपने पड़ोसी के मुंह की बोटी मत छीनो। क्या एक भी मछली ने उस बड़ी व्हेल के साथ कोई भी भलाई नहीं की? और ठीक भी है—तुममें से एक का भी उस व्हेल पर अधिकार नहीं है। वह व्हेल किसी और की है। मुझे मालूम है कि तुममें से बहुतों के बड़े-बड़े मुंह हैं—औरों से बड़े, लेकिन बहुत बार बड़े मुंह वालों के पेट छोटे होते हैं; इसीलिए बड़े मुंह सिर्फ निगलने भर के लिए नहीं

होते, बल्कि छोटी मछली के लिए बोटी का टुकड़ा काटकर देने के लिए भी होते हैं और उनके लिए जो निर्बल और असहाय होती हैं।"

"शाबाश बूढ़े फ्लीस !" स्टब चिल्लाया—"यही क्रिश्चियेनिटी[1] है। बोले जाओ—बोले जाओ।"

"बोले जाने से कोई लाभ नहीं है। मास्टर स्टब ! वे बदमाश और धूर्त एक दूसरे से लड़ते-झगड़ते ही रहेंगे। वे एक शब्द भी नहीं सुन रहे हैं। जब तक उनका पेट भरेगा नहीं, तब तक उनको उपदेश देने से कोई फायदा नहीं। वे सचमुच बहुत नीच हैं। और उनके पेटों की कोई थाह नहीं है। जब उनके पेट भर जाएंगे तब वे और भी नहीं सुनेंगे क्योंकि तब वे समुद्र की तह में गहरी नींद लेने चले जाएंगे। वे मूंगे की झाड़ियों में सोने चले जाएंगे और कुछ नहीं सुनेंगे, कभी—कभी नहीं सुनेंगे।"

"यह मेरी आत्मा की बात है। फ़्लीस ! इसलिए आशीर्वाद दो और मैं अपने खाने पर जाऊं।"

इस पर फ़्लीस ने अपने दोनों हाथ जोड़ दिए और उस मछलियों की भीड़ के सामने सीटी की-सी आवाज़ में ज़ोर से बोला :

"साथियो ! साथ के जीवो ! जितना झगड़ सको झगड़ो। अपने पेट इतने भरो कि वे फट जाएं और तब सब मर जाओ।"

"हां, तो रसोइए !" गरारी के ऊपर अपना खाना शुरू करते हुए स्टब बोला—"जहां अभी तक खड़े थे वहीं खड़े हो जाओ। मेरे सामने खड़े होओ और ध्यान से सुनो।"

"सब खामोश हो जाओ", अपनी संडसीनुमा बेंत पर झुकते हुए फ़्लीस बोला।

"हां, तो······", स्टब ने संभलकर बैठते हुए कहा—"मैं उसी बोटी की बात कहूंगा। रसोइए ! पहले तो यह बताओ कि तुम्हारी उम्र क्या है ?"

"बोटी से उसका क्या सम्बंध है ?" उस काले बूढ़े ने दृढ़तापूर्वक कहा।

"खामोश ! रसोइए, तुम कितने साल के हो ?"

"जैसा लोग कहते हैं—क़रीब नब्बे साल का", उदास होकर वह बोला।

---

१. ईसाइयत।

"रसोइए ! तब तुम इस दुनिया में करीब सौ साल जिंदा रहे और तुम्हें अभी तक यह नहीं मालूम कि व्हेल की बोटी कैसे पकाई जाती है ?" अपना मुंह जल्दी कौर से भरते हुए स्टब बोला, "रसोइए ! तुम पैदा कहां हुए थे ?"

"रोनोक जाते हुए जहाज के रास्ते में, एक डोंगी में।"

"तुम एक डोंगी में पैदा हुए ? यह भी तमाशे की बात है। लेकिन रसोइए ! मैं यह जानना चाहता हूं कि तुम कौन-से देश में पैदा हुए ?"

"क्या मैंने कहा नहीं कि रोनोक देश में ?" उसने तीखेपन से जल्दी में कहा।

"नहीं तुमने यह नहीं कहा रसोइए ! लेकिन मैं क्या कहने जा रहा हूं, वह मैं तुम्हें बताता हूं। तुम घर वापस जाकर फिर पैदा होओ। व्हेल की बोटी कैसे पकाई जाती है, यह तुम अभी भी नहीं जानते।"

"मुझे तसल्ली दो भगवान् ! जैसे मैंने कभी पकाई ही नहीं ?" वह गुस्से में गुड़गुड़ाया और चलने के लिए लौट पड़ा।

"रसोइए ! लौटकर इधर आओ—यहां। वह चिमटा तुम मुझे दो—अब जरा उस बोटी को लो और बताओ कि क्या वह ठीक पकी है ? मैं कहता हूं—लो"—उसकी तरफ चिमटा बढ़ाते हुए वह बोला—"लो और चाखो।"

अपने ओठों को एक मिनट तक चलाते हुए बूढ़ा नीग्रो बोला—"बहुत बढ़िया पकी है। इसके पहले मैंने ऐसा स्वाद नहीं पाया। रसदार, बड़ी मजेदार।"

"रसोइए !" अपने को संभालते हुए स्टब बोला—"क्या तुम चर्च को मानते हो ?"

"केपटाउन में एक बार एक के सामने से गुजरा था", बूढ़े ने रुखाई से कहा।

"तब तुम अपने जीवन में एक बार उस पवित्र गिर्जाघर के सामने से गुजरे जहां एक धार्मिक पादरी अपने प्रिय साथियों को उपदेश दे रहा था, है न रसोइए ! और मेरे सामने तुम इतना भयंकर झूठ बोल रहे हो ?" स्टब बोला—"तुम्हारा क्या ख्याल है, तुम कहां जाओगे रसोइए ?"

"बहुत जल्दी सोने जाना चाहता हूं", वह भुनभुनाया और चलने के लिए लौट पड़ा।

"ठहरो ! सुनो ! रसोइए ! मेरा मतलब है कि तुम कब मरने वाले हो ? यह एक बड़ा डरावना सवाल है। हां, तो तुम्हारा क्या जवाब है ?"

"यह काला बूढ़ा कब मरने वाला है", नीग्रो ने धीरे से कहा और उसने अपना रुख पलटा—"वह अपने आप कहीं नहीं जाएगा, बल्कि कोई फरिश्ता आएगा और उसे उठा ले जाएगा।"

"उठा ले जाएगा ? कैसे ? किसी कुर्सी में और चार आदमी; जैसे वे लोग एलीजाह को ले गए थे ? और उसे ले कहां जाएंगे ?"

"वहां ऊपर", फ़्लीस बोला और उसने अपने चिमटे को सर के ऊपर उठा लिया तथा गंभीरतापूर्वक उठाए रहा।

"तब तुम्हारा मतलब है रसोइए ! कि जब तुम मर जाओगे तो हमारे ऊंचे वाले मस्तूल पर चले जाओगे, क्यों ? लेकिन क्या तुमको पता नहीं है कि तुम जितना ही ऊपर चढ़ोगे तुम्हें वहां उतनी ही सर्दी मिलेगी ? उस ऊंचे मस्तूल पर ?"

"मैंने यह तो नहीं कहा", फ़्लीस बोल।

"तुमने कहा, वहां ऊपर; नहीं कहा ? और अब अपने आप देखो कि तुम्हारा चिमटा किधर इशारा कर रहा है। लेकिन रसोइए ! मेरा खयाल है कि तुम्हें आशा है कि तुम मस्तूल के छेद से बहिश्त में सरक जाओगे। लेकिन नहीं, नहीं रसोइए, तुम जब तक सीधे-सादे रास्ते से होकर और रस्सों के जाल के सामने से नहीं जाओगे तब तक वहां नहीं पहुंच सकते। यह एक मुश्किल का धंधा है लेकिन वह तो होता ही है वर्ना बेकार है। लेकिन हममें से कोई एक भी अभी तक स्वर्ग में नहीं है। ऐ रसोइए ! अपनी बैसाखी नीचे गिराओ और मेरा हुक्म सुनो। सुन रहे हो ? एक हाथ में अपना टोप लो और दूसरे से अपना दिल थामो और मेरा हुक्म सुनो, रसोइए ! तुम्हारा दिल अपनी जगह पर है ? वह तो तुम्हारा छोटा पेट है ! ऊपर ! ऊपर ! हां, अब यह दिल है। उसे थामे रहो और सुनो।"

"बिल्कुल सतर्क और सावधानी से" उस काले बूढ़े ने निर्देशानुसार दोनों हाथ संभालते हुए कहा और अपना सर ऐसे सीधा कर लिया जैसे दोनों कान सामने लाकर हुक्म सुनने की चिंता में हो।

"हां, तो रसोइए ! क्या तुम देख रहे हो कि तुम्हारी वह पकाई हुई बोटी

इतनी रद्दी थी कि मैंने फौरन ही उसे अपनी नजर से दूर कर दिया, तुम देख रहे हो या नहीं ? हां, तो दुबारा जब तुम मेरे लिए खासतौर पर उसे पकाओगे तो मैं बताऊंगा कि उसे कैसे पकाओ और इस तरह खराब मत करो और जला मत दो। एक हाथ में बोटी लो और एक जलता कोयला उसके सामने करो; इतना करके उसे तश्तरी पर रखो; सुना तुमने ? और अब कल जब हम उसके टुकड़े करें तो रसोइए ! उसके पंखों की नोकें लेने के लिए खड़े रहना और उन्हें अचार में रख देना और उसके कांटों को, उन पर मसाला छोड़ना। हां, अब तुम जा सकते हो।"

लेकिन फ्लीस मुश्किल से तीन कदम गया होगा कि उसे दुबारा पुकारा गया।

"रसोइए ! कल आधी रात को पहरे के समय मुझे खाने के लिए 'कटलेट'[1] देना। सुनते हो ? अब भाग जाओ—हल्लो ! ठहरो ! जाने के पहले सलामी दो।—ठहरो, फिर सुनो ! नाश्ते के लिए व्हेल के लड्डू—भूलना नहीं।"

"हे भगवान ! वह व्हेल न खा पाए और व्हेल उसे खा जाए तो भला हो। वह शार्क मछलियों से भी ज्यादा शार्क है !" लंगड़ाते हुए बूढ़ा आगे बढ़ता और बड़बड़ाता हुआ अपनी जगह पर चला गया।

## ६५

नाशवान मनुष्य उसी जन्तु को खाता है जिससे उसकी लैम्प की बाती जलती है और स्टब की तरह उसकी रोशनी के सामने वह भोजन करता है, यह एक ऐसी अजीबोगरीब बात है कि उसका थोड़ा-सा इतिहास तथा दर्शन जान लेना भी जरूरी है।

यह इतिहास-प्रसिद्ध बात है कि तीन सदियों पहले राइट व्हेल की जीभ फ्रांस में बहुत स्वादिष्ट चीज समझी जाती और उसके लिए बहुत रुपया मिलता था। हेनरी आठवें के समय में एक रसोइए को बहुत-सा इनाम इसलिए मिला

---

१. गोश्त की टिकिया।

था कि उसने एक ऐसा बढ़िया सॉस[1] बनाया था कि जो पके हुए शिशुमार के साथ खाया जाता था—जो व्हेल की ही एक किस्म है। शिशुमार तो आज दिन भी बढ़िया खाना माना जाता है। बिलियार्ड की गेंद की तरह उसके गोश्त के लड्डू बनाए जाते हैं और बहुत अच्छी तरह से तैयार करके मसाले वगैरह डालने के बाद वह बत्तख के लड्डू या बछड़े के लड्डू की तरह के हो जाते हैं। डनफर्म-लाइन के पुराने पादरियों को वे बहुत प्रिय थे। बादशाह से शिशुमार के भोजन के लिए उन्हें एक लम्बा वसीका मिलता था।

सचाई यह है कि कम से कम व्हेल के शिकारियों में व्हेल एक बढ़िया डिश[2] समझी जाती अगर वह इतनी ज्यादा तादाद में न पाई जाती। हो सकता है कि वैसे कुछ समझ में न आए लेकिन अगर आप गोश्त के सौ फुट लम्बे तिकोने के पास बैठाल दिए जाएं तो आपकी भूख मर जाएगी। केवल पक्षपात-हीन आदमी, जैसे स्टब, पकी हुई व्हेल खाने को तत्पर रहता है लेकिन एस्कीमो इतने शौकीन नहीं होते। हमें मालूम है कि वे लोग कैसे सिर्फ़ व्हेल पर ज़िन्दा रहते हैं और उनके पास बहुत पुराने जमाने के तेल की क़ीमती शराबें हैं। उन-का एक मशहूर डाक्टर ज़ोगराण्डा व्हेल की चर्बी की बूंदें छोटे बच्चों को पिलाता है जिससे उनमें बहुत ताक़त व ताजगी आती है। मुझे उसकी याद इस-लिए है कि इंग्लैण्ड के कुछ आदमी किसी व्हेल के शिकारी जहाज़ के द्वारा घटनावश ग्रीनलैण्ड में छूट गए और वे महीनों उसकी चर्बी निकाल लेने के बाद गोश्त के सहारे किनारे पड़े रहे। हालैंडवासी व्हेल के शिकारियों में व्हेल के लच्छे 'फिटर्स' कहलाते हैं और सचमुच ही वे भूरे और कुरमुरे होने के कारण एमस्टरडम की गृहणियों के बनाए ताज़े मीठे गुलगुलों या मीठे पूए की तरह लगते हैं। वे देखने में इतने मज़ेदार व आकर्षक होते हैं कि अत्यन्त संयमी आदमी भी अपने को रोक नहीं पाए।

लेकिन सभ्य लोगों में जो उसका भोजन इतना अप्रचलित है उसका खास कारण है उसका बहुत ज्यादा जायकेदार और स्वास्थ्यवर्धक होना। यह व्हेल स्वयं ही रसदार और चर्बी वाली होती है जैसे पारदर्शी, चमकदार नारियल का

---

१. चटनी।

२. बढ़िया खाना।

तेल, जिसका इस्तेमाल हम मक्खन के अभाव में कर सकते हैं। बहुत-से व्हेल के शिकारी इसको दूसरे-दूसरे खाद्य पदार्थों में दूसरी तरह से मिला देते हैं और तब खाते हैं। बहुत रात गए जहाज़ी मछली की चर्बी में अपने बिस्कुट डुबोकर एक मिनट सुखाने पर मजे से खाते हैं। रात का भोजन ऐसे मैंने बहुत बार पूरा किया है।

छोटी स्पर्म व्हेल का दिमाग़ बढ़िया भोजन माना जाता है। एक कुल्हाड़ी से उसकी खोपड़ी तोड़कर अन्दर से दो लुगदियां निकाली जाती हैं तब उन्हें ओट वगैरह में मिलाकर पकाया जाता है जो बहुत जायक़ेदार होता है।

ऐसा नहीं है कि व्हेल बहुत स्निग्ध व चिकना पदार्थ है इसलिए लोग उस पर जान देते हैं बल्कि ऐसा लगता है कि आदमी अपनी इच्छा से वह वस्तु खाना चाहता है जो ताज़ी-ताज़ी समुद्र में मारी गई हो। लेकिन, निस्सन्देह सबसे पहले जिसने पानी के भैंसे को मारा था वह क़ाहिल कहलाया था और शायद उसे फांसी भी दी गई हो, लेकिन अगर उस पर बैलों ने मुकद्मा चलाया होगा तो ज़रूर ऐसा हुआ होगा। शनिवार की शाम को किसी गोश्त के बाज़ार में जाइए और वहां दो पैर वालों की जीवित भीड़ को मृत चौपायों के ढेर की तरफ़ झांकते हुए देखिए। क्या वह दृश्य किसी नरभक्षी के जबड़े का एक दांत बाहर नहीं निकाल देगा? नरभक्षी? नरभक्षी कौन नहीं है? फिजी के किसी नागरिक को आगे आने वाला अकाल सहन हो जाएगा और उस भाग्यवादी फिजी को क़यामत के दिन उन लोगों से कहीं अधिक संतोष होगा जो सभ्य और उन्नतिशील सरकार के हैं लेकिन जो बत्तखों को जमीन में कीलें ठोक देते हैं और उनके जिगर की दावतें उड़ाते हैं।

लेकिन स्टब, व्हेल को उसकी ही रोशनी में खाता है; है न? और इस तरह वह घाव पर नमक छिड़कता है, है न? उस अपने चाकू के हैंडल को देखिए, मेरे सभ्य मित्र, जिससे आप भुना हुआ गोश्त खाते हैं; वह किस चीज़ का बना है? उसी बैल के भाई-बिरादरी की हड्डी का—जिसे आप खा रहे हैं? और उस मोटी बत्तख को निगलने के बाद आप अपने दांत किस चीज़ से कुरेदते हैं? उसी पक्षी के पंख से। किस सीही के कांटे से 'सोसाइटी आफ सप्रेशन आफ क्रुयेल्टी आफ गैण्डर्स'[1] के मंत्री ने अपने सर्कुलरों को लिखा होगा? उसने

१. वह संस्था जो पत्नियों से विमुख पतियों पर होने वाले अत्याचारों की रोकथाम करे।

सिर्फ पिछले एक-दो महीनों में ही यह प्रस्ताव पास किया है कि केवल लोहे के कलम इस्तेमाल किए जाएं।

## ४६

दक्षिणी समुद्रों में जब मछलियों का शिकार करते समय कोई स्पर्म व्हेल बहुत परिश्रम के बाद और बहुत रात बीते घसीटकर लाई जाती है तो साधारणतः उसे फौरन ही काटना नहीं शुरू कर दिया जाता। यह काम बड़ी मेहनत का है जो जल्दी नहीं समाप्त हो सकता और उसमें सब लोगों को जुटना पड़ता है। इसलिए साधारणतः होता यह है कि उसे पालों के पास शान्तिपूर्वक पटक दिया जाता है और सभी लोगों को अपने-अपने ठिकाने पर सोने भेज दिया जाता है और दिन निकलने का इन्तजार किया जाता है। पहरे लगा दिए जाते हैं जो दो-दो की जुट्टी में हर घंटे बदले जाते हैं। इस प्रकार सभी कर्मचारी एकबार डेक पर चढ़कर देख लेते हैं कि सब कुछ ठीक है।

लेकिन कभी-कभी, खासतौर पर प्रशान्त महासागर के रास्ते में इस ढंग से काम नहीं चल पाता है, क्योंकि छोटी-बड़ी शार्क मछलियों का झुंड मरी हुई व्हेल को इस बुरी तरह से घेर लेता है कि अगर लाश को यों ही छः घंटों के लिए छोड़ दिया जाए तो हड्डियों का ढांचा भर ही रह जाए। दूसरी जगहों में उनका पेटूपन इतना अधिक नहीं दिखाई देता, फिर भी उनकी रोकथाम के लिए व्हेल के शिकार के भालों से काम लिया जाता है लेकिन इससे वे और अधिक भड़कती हैं तथा पास आती हैं। परन्तु पिकोड को इस समय घेरने वाली मछलियों का ढंग वैसा नहीं था। यों अगर कोई आदमी ऐसे दृश्य देखने का आदी न हो और उस दृश्य को देखे तो कह उठेगा कि वह भारी और घिरा हुआ समुद्र एक बड़ी 'चीज़'[१] है और वे मछलियां उसमें चिपटे हुए कीड़े-मकोड़े।

हां तो, जब सबका खाना समाप्त हो गया और लंगर का पहरा लगाया गया तो उस समय पहरे पर 'क्वीकेग' और आगे की किलेबन्दी का एक जहाजी

---

१. पनीर

ड्यूटी पर लगाए गए। और उन्होंने शार्क मछलियों के बीच एक तहलका मचा दिया। बराबर की कांट-छांट बन्द करके तथा तीनों लालटेनों को नीचे उतारकर, जिससे समुद्र को वे ठीक से देख सकें—इन दोनों नाविकों ने अपने लम्बे बर्छे[1] चलाने शुरू किए और शार्क मछलियों का क़त्ले आम वेरोक-टोक होने लगा। वे हारपूनों को उनकी खोपड़ी में ही घुसेड़ते थे क्योंकि वही उनका सबसे कोमल और कीमती हिस्सा होता है। लेकिन उस समय पानी में उठते हुए झागों के बीच तथा जूझती हुई मछलियों की तेज़ी में वार कभी-कभी खाली भी चले जाते थे जिसके कारण दुश्मन ख़तरनाक हो उठता था। वे एक दूसरी की अंतड़ियों से बुरी तरह लिपट जाती थीं और लोचदार कांटों की तरह घूमकर एक दूसरी को काटती थीं और एक ही अंतड़ी की ऐंठन बारम्बार एक ही मछली चबाती थी और गहरे घावों से भागती थी। इतना ही नहीं था। उनकी लाशें और जीवों के भूतों के ढेर से छेड़छाड़ करना भी ख़तरनाक था। हरेक ज़िन्दगी उड़ जाने के बाद भी उनकी हड्डियों और जोड़ों में चटख व तेज़ी बनी हुई थी। एक लटकते ओठ को बन्द करने के चक्कर में तो 'क्वीकेग' का एक हाथ ही साफ़ हो गया होता, लेकिन उस ख़तरनाक चोट से उसने अपने आपको किसी तरह बचा लिया।

'किस खुदा ने इसको शार्क मछली बनाया है, 'क्वीकेग' को इसकी परवाह नहीं है', बेचारे जंगली ने अपने हाथ को पीड़ा से ऊपर-नीचे उठाते हुए कहा —'चाहे वह फ़िज़ी का खुदा हो या नन्तुकेत का, लेकिन शार्क मछलियों को बनाने वाला खुदा ज़रूर कोई शैतान होगा!'

---

१. व्हेल वाले बर्छे बहुत बढ़िया लोहे के बनाए जाते हैं और उनकी लम्बाई एक आदमी के फैले हाथ के बराबर होती है, शक्ल घास काटने वाले औज़ार की तरह। केवल उनकी धारें सपाट होती हैं और उनका ऊपरी सिरा नीचे वाले से काफी पतला होता है। यह अस्त्र तेज़ से तेज़ धार का होता है और उस्तरे की तरह काम करता है। इसका हैंडिल एक सख्त चीज़—लाठी या डंडे का बीस-तीस फुट लम्बा होता है।

## ४७

अब शिकार को काम में लाने का प्रश्न आता है। सब कुछ जानने के लिए यह जरूरी है कि ऑपरेशन करने पर अन्दर की विलक्षण चीजों को समझ लिया जाए।

जहां तक स्पर्म व्हेल के सर का प्रश्न है वह ठोस, लम्बी और कम चौड़ी चीज है और अगल-बगल से उसको दो क्यून्स[1] में बांटा जा सकता है जिसमें नीचे के हिस्से में हड्डियों का जाल है जो कपाल और जबड़ा कहलाता है। आगे बढ़ा हुआ फैला हिस्सा व्हेल का मस्तक है और ऊपर के हिस्से में पतली चर्बी व रस भरा रहता है जिसमें हड्डियां नहीं होतीं। मस्तक के बीचोंबीच ऊपर का क्यून इस हिस्से को विभाजित करता है और तब दो बराबर हिस्से मिलते हैं जो इसके पहले एक मोटी और गांठदार वस्तु की दीवाल से बंटा हुआ होता है।

नीचे का हिस्सेदार टुकड़ा बर्तन कहलाता है जिसमें रसदार और मीठा तेल भरा हुआ होता है, और जिसमें मोड़ पर मोड़ निकलते चले आते हैं। इसमें लगभग दस हजार चिपकी हुई मांसपेशियां होती हैं, छोटे-छोटे खाने या छेद और जो रबड़ की तरह लोचदार सफेद सूतों को जुड़कर बनी हुई हैं। ऊपर का हिस्सा जो सन्दूक कहलाता है वही स्पर्म व्हेल का 'हीडेलबर्ग टन' कहलाता है। और चूंकि वह प्रसिद्ध नाली बड़े रहस्यमय ढंग से आगे को काटी गई है इसलिए व्हेल का वह आगे का चौड़ा और फैला हुआ सपाट मस्तक ही वह विलक्षण टन[2] है जिसकी निशान के रूप में जितनी तारीफ की जाए कम है। यही

---

१. क्यून्स यूक्लीडिया का शब्द नहीं है। यह सीधा-सीधा नौका-गणित से सम्बन्धित है। मुझे पता नहीं कि इसके पहले भी इसका कभी स्पष्टीकरण किया गया है या नहीं। क्यून्स एक ऐसी ठोस चीज़ होती है, जो पच्चड़ या फली की तरह एक तरफ पतली या नोकीली होती है, इसके दोनों सिरे पतले और एक-से नहीं होते।

२. टन—एक बड़ा पीपा, जिसमें २१६ गैलन द्रव भरा जा सकता है।

नहीं चूंकि 'रेन' की घाटियों की शराब भरने में 'हीडेलबर्ग टन' हमेशा मशहूर रहा है इसलिए व्हेल का यह टन भी बहुत कीमती और चिकनी शराब भरे रहता है और इस तरह यह बेशक़ीमती मछली बिल्कुल साफ़, आरपार दिखाई देने वाले झलझलाते, और खुशबूदार तरल पदार्थ का एक खजाना है। वैसे तो व्हेल की यह चिकनाई उसके शरीर भर में पाई जाती है। यों जब तक जीवन रहता है यह तेल बिल्कुल तरल और पतला रहता है लेकिन हवा में आने पर या व्हेल के मर जाने पर यह जमना शुरू हो जाता है और जैसे पानी की तह पर बर्फ का पहला कण जमकर चमकता है वैसे ही मछली का तेल दिखाई देने लगता है। एक बड़ी व्हेल के सन्दूक से लगभग पांच सौ गैलन स्पर्म तेल निकलता है, फिर भी उसको निकालने की क्रिया में अधिक हिस्सा बह भी जाता है या बरबाद हो जाता है।

मैं कह नहीं सकता कि कितनी बढ़िया चीज़ से इस व्हेल का 'हीडेलबर्ग टन' या पीपा अन्दर से रंगा गया है लेकिन वह बहुत कीमती रेशम के मोती के रंग की पतली झिल्ली-सी दिखाई देती है या चिकने रेशम का बढ़िया अस्तर जिससे स्पर्म व्हेल का यह सन्दूक अन्दर से मढ़ा हुआ है।

स्पर्म व्हेल का यह 'हीडेलबर्ग टन' एक तरह से खोपड़ी के पूरे हिस्से में छाया रहता है और चूंकि पूरे शरीर का एक तिहाई हिस्सा इस जन्तु का सर ही सर होता है इस प्रकार पूरे लम्बे आकार की व्हेल की लम्बाई लगभग अस्सी फुट होने पर कम से कम छब्बीस फुट इस टन की गहराई होती है और यों चौड़ाई में यदि वह फैला दी जाए तो पूरे एक जहाज़ की चौड़ाई को घेर ले।

व्हेल की चीरफाड़ करते समय आपरेशन करने वाले का चाकू एक ऐसी जगह पर आता है जो मछली की 'मैगज़ीन' कहलाती है और ज़रा-सी लापरवाही से यह सब कीमती पदार्थ बरबाद हो सकता है। यह सर का वह हिस्सा है जो पानी से निकाले जाने पर बहुत-से रस्सों से घिरा हुआ दिखाई देता है और पटुए की कारीगरी की तरह उस हिस्से में सूत और रस्से ही रस्से दिखाई देते हैं।

बताते-बताते मैं ऐसे स्थान पर आ गया हूं कि उस भारी स्पर्म व्हेल के विशाल 'हीडेलबर्ग टन' का खतरनाक आपरेशन होने को है।

## ४८

बिल्ली की तरह उछलकर टाशटेगो ऊपर चढ़ गया और सीधे तनकर उस ओर भागा जिधर बड़े पाल के पास व्हेल पड़ी हुई थी। वह एक छोटी-सी रस्सी लिए हुए था जो चाबुक की तरह थी और जो एक हैंडिल के दो टुकड़ों में बंटी हुई थी। चाबुक को मजबूती से पकड़े हुए वह व्हेल के सिर पर ऊंचाई पर जा बैठा। वहां बैठकर उसने किसी तुर्की के मुअज्जिन की तरह अजान दे-देकर खुदा को बुलाना शुरू किया और इस तरह जहाज के और लोगों को पुकारता रहा। एक छोटी बेंटी का भाला उसके पास भेजा गया और वह व्हेल के 'टन' की ठीक जगह को ठोक-बजाकर देखता रहा। वह बड़ी खबरदारी से—ऐसे काम कर रहा था जैसे किसी पुराने मकान की दीवालों को खनखना रहा हो और उस हिस्से को टटोल रहा हो जहां सोना दबा हुआ है। जब यह खोजबीन खत्म हो गई तो एक मजबूत लोहे की बाल्टी—कुंए की बाल्टी की तरह—चाबुक के कोने में बांधी गई और उसका दूसरा हिस्सा डेक पर खड़े दो-तीन आदमियों को थमा दिया गया। वे लोग बाल्टी को उस आदिवासी के पास तक आसानी से पहुंचा सकते थे। एक दूसरा आदमी एक लम्बा बांस ले आया। बाल्टी में उस बांस को लगाकर टाशटेगो ने बाल्टी व्हेल के टन में डाल दी जो अन्दर जाकर ग़ायब हो गई। नाविकों को चाबुक की रस्सी खींचने का हुक्म देकर उसने बाल्टी बाहर निकाली और किसी ग्वालिन के ताज़े दूध की तरह भरी हुई बाल्टी ऊपर चमकने लगी। पहले से ही तैयार एक आदमी ने बाल्टी पकड़ी और एक टब में पलट दी। इस प्रकार बाल्टियों का भरना और खाली होना शुरू हो गया, तब तक के लिए जब तक कि उस हौज़ में एक बूंद भी रस बचा रहे। अन्त तक टाशटेगो को वह बांस मजबूती से पकड़े रहना था और ज़्यादा से ज़्यादा भीतर डालते जाना था जब तक कि वह करीब बीस फुट अन्दर न चला जाए।

पिकोड के लोग देर तक इस काम में जुटे रहे और उस खुशबूदार तेल से कई टब भरे गए। तभी अचानक एक घटना हो गई। पता नहीं हुआ क्या—

या तो टाशटेगो ही इतना असावधान और बेपरवाह था या वह जगह रपटीली थी या कोई घड़ी ही खराब आ गई थी कि बेचारा टाशटेगो गड़ाप से—अट्ठारहवीं या उन्नीसवीं बाल्टी के बाद ही हौज़ के अन्दर सरक गया। हीडेल-बर्ग के टन में उसका सर नीचे और धड़ ऊपर और उस भयानक तेल की बुल-बुलाहट के बीच वह आंखों से ओझल हो गया।

"आदमी गिर गया !" उस परेशानी के बीच सबसे पहले होश में आकर डैग्गू चिल्लाया। "बाल्टी को इस तरफ लटकाओ !" कहते हुए एक पैर टिकाते हुए तथा रपटता हुआ हाथ संभालकर जमाते हुए उसने चाबुक को कसकर पकड़ा कि टाशटेगो के और आगे सरकने से पहले ही वह उसे रोके। उस समय खूब हो-हल्ला मच रहा था। तभी लोगों ने देखा कि ठीक उनके नीचे एक निर्जीव सर इधर-उधर लुढ़क रहा है और डुबकी मार रहा है।

जिस समय डैग्गू चाबुक का तेल साफकर रहा था और उसकी काटने वाली हंसिए की शकल बदल रहा था, तभी एक चरचराती आवाज़ सुनाई दी और सभी लोगों के भय के बीच दो कांटों में से एक, जो सर को थामे थे, ढीला पड़ गया और तभी एक तरफ तो धड़ लटक गया और दूसरी तरफ जैसे भारी जहाज़ ने किसी बर्फ़ीली चट्टान से टकराकर करवट ली। केवल एक ही कांटा, जिस पर अब सब बोझ सधा हुआ था—भी सरकता-सा मालूम पड़ रहा था। विशेषतः इसलिए भी कि व्हेल का सिर ज़ोरों से हिल रहा था।

"नीचे उतरो, नीचे उतरो !" नाविकों ने चिल्लाकर डैग्गू से कहा किन्तु उन भारी रस्सों को वह एक हाथ से इसलिए थामे रहा कि अगर सर डूबा भी तो भी वह थमा रहेगा और इसीलिए उसने रस्से को साफ करके इस बार बाल्टी उस व्हेल के कुएं में लटकाई कि दबा हुआ हारपूनर उसे पकड़ ले और फिर उसे ऊपर घसीट लिया जाए।

"खुदा के नाम पर भले आदमी" स्टब चिल्लाया—"क्या तुम वहां कोई गोली दाग़ रहे हो ? —ठहरो ! उससे उसकी क्या मदद होगी ? वह लोहे से बंधी बाल्टी उसके सर के ऊपर और जम जाएगी ? ठहरो ! खूब हो तुम !"

"गरारी से दूर रहो !" राकेट की तरह एक चीखती आवाज़ ने कहा।

उसी समय नियागरा के टेबिल रॉक की तरह पूरा धड़ समुद्र में लुढ़क गया। एक तरफ डैग्गू घड़ी के घंटे की तरह गरारी में इधर-उधर झूलने लगा,

दूसरी तरफ ग़रीब टाशटेगो पानी की सतह की ओर डूबता चला जा रहा था। तभी एक नंगा शरीर किलेबन्दी के बीच चमककर ग़ायब हो गया। वह 'क्वीकेग' था जो मदद के लिए पानी में कूद चुका था। कुछ और लोग भी एक नाव लेकर आगे बढ़े।

"दोनों! दोनों! —वे दोनों हैं!" खुशी में डैग्गू ने अपने लटकने की जगह से चिल्लाकर कहा। जल्दी ही 'क्वीकेग' उस इंडियन टाशटेगो के सर के बालों को पकड़े आगे बढ़ता दिखाई दिया। उसे नाव में लादकर डेक पर लाया गया। टाशटेगो व 'क्वीकेग' दोनों की हालत खराब थी।

'क्वीकेग' ने टाशटेगो की जीवन-रक्षा बड़ी हिम्मत और बुद्धिमानी से की। 'क्वीकेग' ने डूबती हुई व्हेल के निचले भाग को अपनी तलवार से इतना काटा कि एक बड़ा छेद बन गया। फिर अपना लम्बा हाथ भीतर डालकर टटोलना शुरू किया। एक बार एक टांग हाथ में आ गई। टांग मिलने पर जो बाद में बिपत्तियां सामने आती हैं उससे चौंककर उसने टांग झटक दी। तब अन्त में उसे टाशटेगो का सर पकड़ में आया। तब आसानी से 'क्वीकेग' टाशटेगो को ऊपर खींच लाया।

इस प्रकार बड़ी बहादुरी और चतुराई से 'क्वीकेग' इतनी अप्रत्याशित और प्रत्यक्षतः आशारहित परिस्थितियों में टाशटेगो की जीवन-रक्षा करने में सफल हो सका। यह सबक भूलने वाला नहीं है। सच तो यह है कि घूंसेबाज़ी, घुड़-सवारी, नाव चलाने आदि के साथ-साथ मनुष्य को रोगी की परिचर्या की शिक्षा भी दी जानी चाहिए।

मैं जानता हूं कि यह विचित्र अनुभव बहुत अनोखा लगेगा। यों नाविकों या दूसरे लोगों ने कहीं किनारे पर किसी के हौज़ में गिरने की बात सुनी अवश्य होगी किन्तु स्पर्म व्हेल के कुएं में गिरना तो शायद ही कभी सामने आया हो।

लेकिन यह हुआ कैसे? मैं सोचता था सब तरफ मांस-पेशियों से जकड़ा और तन्तुओं से खिंचा स्पर्म व्हेल का सर बहुत हलका और कार्क की तरह कसने वाला होगा। उससे विचित्र बात यह थी, उसका ऐसी चीज़ में डूबना जो डूबने वाली चीज़ से खुद ही भारी हो। अस्तु, जब टाशटेगो उसमें गिरा तो हलका तथा तरल पदार्थ करीब-करीब निकाला जा चुका था और उस कुएं की गांठदार चिकनी दीवार पर जो चीज़ रह गई थी वह दोहरे अस्तर की तहदार चीज़ थी—समुद्र

के पानी से भी ज़्यादा भारी जैसे उसमें खुद ही शीशा या पारा ढाला गया हो। परन्तु इस चीज़ में जल्दी डूबने का गुण इसलिए भी कम हो गया था कि व्हेल का बाकी धड़ सर से अलग था और तभी 'क्वीकेग' को अपना काम भागकर करने में आसानी हो गई थी।

अगर किसी प्रकार टाशटेगो उसमें समाप्त हो जाता तो उसका वह अन्त कितना कीमती होता; उस झलझलाती सफेदी, चिकनाहट और मछली की मीठी खुशबू में अन्त; व्हेल के अन्दर के सन्दूक की बढ़िया क़ब्र और उस समाधि के ऊपर की निराली गुम्बद कितना मजा देती। उस याद की तुलना ओहायो के उस शहद इकट्ठा करने वाले से की जा सकती है जो एक खोखले पेड़ के तने में शहद की टटोल में गया और बहुत-सा शहद इकट्ठा देखकर वह उसमें घुसता ही चला गया और बस! वहीं उसका अन्त हो गया। आप में से कितने लोग प्लेटो[1] के शहद से मीठे दिमाग़ में घुसते चले गए हैं और उसी में डूबकर रह गए हैं?

# ४९

पूर्व निश्चित दिन आया और जंगफ्राउ जहाज़, डेरिक डे डियर, मास्टर, जो ब्रेमेन का था—से हमारी भेंट हुई।

किसी युग के सबसे बड़े व्हेल के शिकारी लोगों—जर्मनी वालों और डच वालों का अब कोई नाम नहीं लेता लेकिन कभी-कभी प्रशांत महासागर में कहीं दूर—बहुत दूर आज भी इनके झंडे दिखाई दे जाते हैं।

किसी कारणवश लगा कि जंगफ्राउ जहाज हमें अभिवादन करने को बहुत लालायित है। अभी भी पिकोड से दूर होते हुए भी उसने एक चक्कर लगाया, एक नाव पानी में उतारी और उसका कप्तान जहाज़ के पीछे न खड़े होकर आगे की ओर खड़ा हुआ हमारी ओर ललकभरी नज़रों से देखता रहा।

"उसके हाथ में क्या है?" उस जर्मन के हाथ में कुछ हिलते हुए देखकर स्टारबक बोला। "असंभव! लैम्प में तेल डालने की एक कुप्पी।"

---

१. प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक, अरस्तू का शिष्य।

"नहीं", स्टब बोला—"न, न—वह तो कॉफी-पॉट है, मिस्टर स्टारबक ! वह हमें कॉफी पिलाने के लिए बढ़ रहा है। दोस्त है ! क्या तुम उसके बराबर बड़ा-सा पीपा नहीं देख रहे हो ?—वह उसका गरम पानी है। ओह ! वह बिल्कुल ठीक है, दोस्त है।"

"तुम भी सनकी हो", फ़्लास्क बड़बड़ाया—"वह एक लैम्प की कुप्पी है और वह तेल का कनस्तर। उसके पास तेल खत्म हो गया है और हमसे मांगने आ रहा है।"

बड़ा अजीब था यह कि एक तेल का जहाज़ व्हेल के शिकार के मैदान में तेल उधार मांगे और इस घटना से 'उलटे बांस बरेली को' वाली प्रसिद्ध कहावत जैसे भी कर जाए, फिर भी ऐसा कभी-कभी हो ही जाता है और इस मौके पर भी, जैसा फ़्लास्क ने कहा था, कैप्टेन डेरिक डि डियर तेल की कुप्पी ही हाथ में लिए हुए था।

लेकिन बिना यह देखे कि उसके हाथ में क्या है आहाब ने उसके डेक पर आते ही उससे कुशल-क्षेम पूछना प्रारम्भ कर दिया, लेकिन अपनी टूटी-फूटी भाषा में उसने सफेद मछली को बिलकुल न जानने की बात कही और अपने तेल के कनस्तर व कुप्पी पर बात बदलते हुए उसने तुरंत कहा कि रात को अपने पलंग पर उसे अंधेरे में सोना पड़ा क्योंकि ब्रिमेन तेल की आखिरी बूंद भी समाप्त हो चुकी थी और उसने अब तक ऐसी एक भी मछली नहीं मारी जिससे घाटा पूरा हो जाता और अंत में उसने कहा कि उसका जहाज़ मछली के शिकार के लाक्षणिक शब्दों में बिल्कुल साफ (या खाली) है और तभी उसका नाम भी उपयुक्त ही है—जंगफ्राऊ या 'वर्जिन'—कुमारी।

उसकी ज़रूरत पूरी कर दी गई। डेरिक चला गया और अभी वह अपने जहाज़ के पास भी नहीं पहुंचा था कि दोनों जहाज़ों के मस्तूलों पर से एक साथ व्हेलें दिखाई दीं। डेरिक कुछ इतना उतावला हो गया कि तेल के कनस्तर या कुप्पी को संभालकर रखने के पहले ही उसने उस जलमच्छ रूपी लैम्प की खूराक का पीछा बेसब्री से प्रारम्भ कर दिया।

व्हेलें अब पीछे दिखाई पड़ीं। पिकोड़ की नावें उतरें उसके पहले ही वह और उसकी तीन नावें दौड़ने लगीं। सब मिलाकर आठ व्हेलें थीं—एक अच्छा खासा ज़खीरा। अपने खतरे को जानते हुए भी वे एक दूसरे से रगड़ती हुई

हवा के रुख के साथ बेतहाशा भाग रही थीं जैसे भागते हुए घोड़े हों। समुद्र में एक अच्छा-सा हड़कंप नजर आ रहा था।

उसी पूरी भागदौड़ में बीचोंबीच एक भारी कूबड़ वाली पुरानी व्हेल भी दौड़ रही थी जो कुछ हलके चल रही थी और लग रहा था जैसे विचित्र-से पीले रंग में उसे पीलिया या उसी प्रकार की कोई और बीमारी हो गई है। यह व्हेल भी जत्थे के साथ ही थी या नहीं, यह शंका की बात थी क्योंकि इस तरह के वृद्ध और आदरणीय जलमच्छ समाज में क्यों मिलने-जुलने लगे ? उसके ऊंचे उठे हुए कूबड़ पर जैसे पानी की घुमेड़ें दोनों ओर से आकर टक्कर मार रही थीं।

"क्या किसी के पास कोई दवा है ?" स्टब बोला—"मुझे डर है कि इसके पेट में दर्द हो रहा है। हे भगवान ! पेट-दर्द ! दिन खराब है। क्या किसी ने कभी ऐसी व्हेल देखी है ?"

जिस तरह कोई भारतीय जहाज़ हिन्द महासागर के किसी किनारे पर घबड़ाए हुए घोड़े, सफाई करने की गाड़ियां, रास्ते की कब्रें, रोलर आदि सब एक साथ लादे घूमता है उसी तरह यह बूढ़ा थलथल व्हेल का शरीर अपनी पीठ पर कूबड़ लटकाए था, जो कभी आगे लुढ़कता था और कभी पीछे। यही नहीं उसके दाहिने तरफ का एक सुफ़ना भी ग़ायब था, जो मालूम नहीं किसी लड़ाई में उड़ गया था या पैदाइश से ही नहीं था।

व्हेलों की पंक्ति की ओर इशारा करते हुए निर्दयी फ़्लास्क बोला—"मेरे बच्चे ! ठहर। उस चोट खाए हाथ पर अभी पट्टी लटकाता हूं।"

"यह ध्यान रखना कि कहीं वह तुम्हें उसी से चोट न करे", स्टारबक बोला—"रास्ता दो, वर्ना वह जर्मन उसे समेट लेगा।"

केवल एक ही उद्देश्य से वे मिली-जुली किंतु विपक्षी नावें दौड़ रही थीं कि उस कूबड़ वाली व्हेल को ही पकड़ा जाए क्योंकि वह सबमें लंबी, भारी तथा अधिक क़ीमती थी; साथ ही वह सबसे नजदीक चल रही थी तथा बाकी सब बेतहाशा भाग रही थीं। इस समय पिकोड की नावें तीन जर्मन नावों से आगे बढ़ती चली जा रही थीं, फिर भी डेरिक की नाव की स्थिति बहुत अच्छी थी और व्हेलों का पीछा करने में लग रहा था कि दूसरी नावों के पास आने से पहले ही वह भाला फेंक चुका होगा। डेरिक को तो पूरा विश्वास था कि यह

शिकार उसका ही होगा और वह जोश में अपनी तेल की कुप्पी कभी-कभी हवा में दूसरे नाविकों के लिए झुका देता था।

"ऐहसान-फरामोश और नीच कुत्ता !" स्टारबक चिल्लाया—"वह हमारा मज़ाक उड़ाता है और टीन के डब्बे को मेरे सामने दिखाता है जिसे मैंने अभी पांच मिनट पहले ही भरा था।" तब अपनी तेज़ और तीखी फुसफुसाहट में वह कह गया—"मेरे शिकारी कुत्तो ! बढ़ो आगे ! उसे पीछे छोड़ दो।"

"साथियो ! इसका क्या मतलब है, मैं बताता हूं", स्टब ने अपने नाविकों से चिल्लाकर कहा—"बेमतलब पागल होना मेरे धर्म के प्रतिकूल है, लेकिन मैं उस धूर्त बदमाश को खा जाऊंगा—खींचो—क्या नहीं खींचोगे ? क्या तुम लोग चाहते हो कि वह पाजी तुम्हें पछाड़ दे ? क्या तुम्हें ब्रांडी पसंद है ? सबसे बढ़िया आदमी के लिए एक पीपा भर ब्रांडी मिलेगी। आओ ! तुम लोगों का खून क्यों नहीं खौलता ? वह सामने लंगर कौन नीचे कर रहा है—हम तो एक इंच भी नहीं हिल रहे हैं—हम जैसे सुन्न हो गए हैं। हल्लो ! नाव के पेंदे में *घास उग रही है और हे भगवान ! मस्तूल पर कलियां खिल रही हैं।* इससे कुछ नहीं होगा, लड़को ! उस यारमन को देखो !"

"ओह ! वह जो झाग उठा रहा है वह तो देखो ?" फ्लास्क चिल्लाया और ऊपर-नीचे मटककर नाचने लगा—"कैसा कूबड़ है जैसे कोई लकड़ी का ठूंठ। ओह लड़को ! तरोताज़ा होओ। रात के खाने में अधपकी रोटी मिलेगी और सूअर···और पक्का सत्तू तथा पतली रोटियां—हो—हा, हा तेज़ होओ—वह सौ पीपों वाली है, उसे छोड़ना मत—कभी नहीं।—उस यारमन की निगरानी रखना—ओह ! ऐसा मीठा रस। ऐसी रसदार ! क्या तुम्हें स्वर्ग पसंद नहीं ? तीन हज़ार डालर खर्च होता है ! एक पूरा बैंक—बैंक आफ इंग्लैंड।—बढ़ो ! बढ़ो ! बढ़ो !—वह यारमन अब किस तिकड़म में है ?"

उस क्षण डेरिक अपनी कुप्पी व कनस्तर दोनों को बढ़ती हुई नावों पर फेंकने की सोच रहा था। उससे उसके दो मतलब थे—एक तो अपने प्रतिद्वंद्वी की चाल धीमी करना और दूसरे कुछ बोझ पीछे छोड़कर अपनी चाल बढ़ाना।

"हालैंड का बेहूदा कुत्ता !" स्टब चिल्लाया। "लाल बालों वाले शैतानों के पचास हज़ार लड़ाक जहाज़ों की तरह तेज़ी से खींचो मेरे साथियो !

टाशटेगो ! तुम क्या कहते हो ? क्या उस गे-हेड के लिए आंत के बाईस टुकड़े करोगे ? बोलो ?"

"मैं कहता हूं खुदा की तरह मज़बूती से खींचो", आदिवासी चिल्लाया।

उस जर्मन के व्यंगों से उत्तेजित होकर पिकोड की तीन नावें लगभग साथ-साथ आगे बढ़ने लगीं। तीनों मेट अपने नाविकों को निरंतर उत्साहित करते रहे।

"हुर्रे ! वह सामने लुढ़क रही है।'''सफेद राख की तरह की सर्द हवा जिन्दाबाद ! थारमन का नाश हो ! उस पर नावें चढ़ा दो।"

लेकिन इन सब बहादुराना चीखों के होते हुए भी डेरिक पहले ही इतना आगे बढ़ चुका था कि जीत उसी की नज़र आ रही थी लेकिन जैसे ईश्वरीय न्याय हुआ और डांडे कुछ ऐसे ऊटपटांग ढंग से चल गए कि उसकी नाव के बीच की पतवारें एक दूसरे में फंस गईं और लगा जैसे डेरिक की नाव डूब जाएगी लेकिन वह अपने आदमियों को कड़कती आवाज़ में हुंकारता रहा। स्टारबक, स्टब तथा फ्लास्क को मौका मिला। एक ही झटके में उनकी नावें उसके बराबर आ लगीं और अब सभी व्हेल के फव्वारों और झागों के बीच पहुंच गए।

वह बड़ा डरावना साथ ही दयनीय तथा पागल बना देने वाला दृश्य था। व्हेल दुःखी होकर झाग के फव्वारे छोड़ रही थी और उस बेचारी का एक सुफना भय से उसे एक तरफ से दाब रहा था। समुद्र में कभी वह एक करवट लेती तो कभी दूसरी। उस समय मुझे आकाश में उड़ते हुए एक परकटे पक्षी का ध्यान आ रहा था जो अपनी रक्षा की सब चेष्टाएं हवा में कर रहा हो; साथ ही उसमें बोलने की शक्ति तो थी, वह आवाज़ तो कर सकता था; जबकि व्हेल बिल्कुल खामोश प्राणी की तरह उस खूंख्वार समुद्र में जान लेकर भाग रही थी।

अब यह देखकर कि दूसरे ही मिनट पिकोड वाले हमला कर देंगे डेरिक ने व्हेल पर चोट करने के लिए दूर से ही भाला संभाला। लेकिन ज्योंही उसका हारपूनर वार करने के लिए खड़ा हुआ वैसे ही वे तीनों शेर—'क्वीकेग', टाशटेगो और डैग्गू ने—एक झटके में खड़े होकर अपने भाले ताने और जर्मन हारपूनर के सर के पास से नन्तुकेत के तीन भाले सरसराते हुए निकलकर

व्हेल के शरीर में घुस गए। फ़ौरन ही व्हेल के भागने के पहले झटके में तीनों नावों ने जर्मन नाव को एक तरह से पीछे ढकेल दिया। अब डेरिक व उसका हारपूनर उन हवा में उड़ती तीनों नावों के बीच भौंचक्के-से रह गए।

"मेरे मक्खन के डब्बो! डरो मत", ज्योंही बगल से निकला, स्टब ने एक नजर फेंककर वाक्य जड़ दिया—"तुम सब अभी संभल जाओगे। सेंट बर्नार्ड के कुत्तो! हमने कुछ व्हेलें पीछे की तरफ देखी हैं। उन्हीं से तसल्ली करो, मेरे घबड़ाए हुए यात्रियो! हुर्रे! नाव इस तरह चलाई जाती है। हर नाव सूरज की एक किरण है। हुर्रे! एक पागल बिल्ली के पीछे हम तीन कनस्तर पीछे भागते चले जा रहे हैं। एक-दो आदमियों की छोटी गाड़ी पर बैठकर, मैदान में, मुझे तो हाथी पकड़ने की याद आ रही है। और लड़को! उस तरह पहिए की सब तीलियां हवा में उड़ती नजर आ रही हैं और किसी चट्टान से टकराने पर खुद भी चिथड़े उड़ने का डर दिखाई दे रहा है। हुर्रे! इसी तरह हरेक सोचता है जो डेवी जोन्स पर बैठने जाता है और जिस जहाज़ को कहा ही नहीं जा सकता कि इसका छोर क्या है? हुर्रे! यह व्हेल कभी पूरी न होने वाली डाक की चिट्ठियां साथ लिए जा रही है।"

लेकिन वह भीमकाय जन्तु ज्यादा नहीं भाग पाया। गहरी सांस लेकर वह पानी में डूबने लगी। और ऐसा लगा कि आगे बढ़ती हुई तीनों नावें उसी शोर में समा जाएंगी। हारपूनर भी इतना घबड़ाए हुए थे कि वे रस्से को बार-बार धुंए के बीच में उछालते थे। रस्सों के पानी में जाते ही नावों के पीछे के हिस्से एकदम ऊपर हवा में उठ गए। इस समय थोड़ी देर के लिए व्हेल ने भी डूबना बन्द कर दिया और अब स्थिति 'बढ़े चलो' या 'खींचते जाओ' के अतिरिक्त शान्त थी। तेज़ हारपूनों के नोकीले कांटे व्हेल के जिन्दा मांस में घुसे हुए थे जो उस जल-राक्षस को कष्ट दे रहे थे और दुश्मन की चोट दुबारा पाने के लिए उसे मजबूर कर रहे थे कि वह फिर अपना धड़ पानी के बाहर निकाले और भाले की चोट सहे। पता नहीं यह स्थिति कैसी थी किन्तु कहा यह जाता है कि चोट खाई हुई व्हेल जितनी ही देर तक पानी के अन्दर रहती है उतनी ही वह थक-कर निर्बल हो जाती है। क्योंकि सब मिलाकर स्पर्म व्हेल के शरीर का क्षेत्रफल दो हज़ार वर्गफीट होता है और उस पर पानी का दबाव भी अधिक होता है।

वे तीनों नावें उस शान्त समुद्र की खामोश लहरों पर चुपचाप थिरक रही थीं और दोपहर के चमकते नीले पानी में उनकी परछाईं दिखलाई पड़ रही थी। न कहीं एक सिसकी थी, न चीख; यहां तक कि पानी के अन्दर से एक लहर या बगूला तक नहीं उठ रहा था। लेकिन नाव के मल्लुए बराबर सोच रहे थे कि उस नीरव सागर की तह में पीड़ा और वेदना में डूबा जल-राक्षस सांसें गिन रहा होगा और कराह रहा होगा। नावों के आगे का रस्सा आठ इंच भी सीधा नहीं दिखाई दे रहा था। लग रहा था कि किसी बड़ी घड़ी के साथ इन पतले तीन रस्सों में भारी बोझ वाली व्हेल पकड़कर बांध दी गई है। लेकिन किस तरह? तीन तख्तों से। इस जन्तु के लिए तो बड़ी शेखी से कहा जाता है कि उसकी खाल कांटेदार तार में नहीं बांधी जा सकती है। उस पर पड़ने वाली न तलवार की चोट का कोई असर है, न भाले-बर्छे (हारपून) का, न नोकदार लोहे का—लोहे को तो वह तिनका—'स्ट्रा' समझती है। तीर उसे भगा नहीं सकता; नोकदार लोहा तो उसे तिनका लगता है और भाले की चकमक या चाल पर वह हंसा करती है। हे भगवान्! ऐसा जन्तु! ओह! उसमें जो कमी है उसे फरिश्ते ही पूरी कर सकते हैं। अपनी पूंछ में एक हज़ार जांघों की ताकत लिए हुए यह जलमच्छ समुद्र के पानी के पहाड़ों से टकराता है और पिकोड के हारपूनों से अपने को छिपाता है।

धूप की उस झिलमिलाती छाया में नावों की जो परछाइयां समुद्र में पड़ रही थीं वे ज़र्क़सेज़ की आधी फौज की तरह दिखाई दे रही थीं। पता नहीं उस जख्मी व्हेल को अपने सिर के ऊपर इन परछाइयों से कैसा मालूम पड़ रहा होगा।

सहसा पानी में तीन धारियां हिलीं, और व्हेल के जीवन-मरण की धड़कनें साफ़-साफ़ मानो चुम्बक के तारों द्वारा मांझियों के पास पहुंची, जिन्हें हर नाविक ने महसूस किया और स्टारबक चिल्लाया—"दोस्तो! संभल जाओ। वह उठ रही है।"—दूसरे ही मिनट नावों में हलचल पैदा हुई और नावें कुछ ऊपर उठीं।

"ठीक से! ठीक से!" स्टारबक फिर चिल्लाया—"वह उठ रही है।"

उन दोनों शिकारी जहाज़ियों की लम्बाई के बीच पानी की घुमेड़ें ऊपर उठीं और उन्हीं के साथ व्हेल भी।

उसकी गति यह स्पष्ट बता रही थी कि वह कितनी निर्बल हो चुकी है। बहुत-से मैदानी जानवरों की नसों में खून के कुछ ऐसे दरवाजे होते हैं कि उनके जख्मी होते ही खून का प्रवाह कम से कम कई दिशाओं में एकदम बन्द हो जाता है। लेकिन व्हेल के साथ ऐसा नहीं है। उसके पूरे ढांचे में फाटकों जैसे स्नायु नहीं होते इसलिए हारपून या ज़रा-सी चोट लगने भर से सब नलिकाएं तेजी से बाहर को खून फेंकना शुरू कर देती हैं जो घाव के द्वारा फूट पड़ता है और तब पानी के भारी बोझ से भी खून बेरोक झरने की तरह बाहर निकलने लगता है मानो इसके प्राण ही बाहर निकलने लगे हों। लेकिन उसमें इतनी मात्रा में खून है और ऐसे फव्वारे कि बहुत समय तक वह इसी तरह खून बहा सकती है, जैसे सूखे मौसम में नदी बहती चली जाती है जिसका स्रोत कहीं दूर छिपी पहाड़ी होती है। इस समय भी जब व्हेल को नावों ने घेरा और नए बर्छे फेंके तब भी नए फव्वारों से बेशुमार खून बहना प्रारम्भ हो गया। हां, उसका वह क़ुदरती झरने वाला मुंह कभी-कभी हवा में रस उछाल देता है। सब मिलाकर अभी तक ऐसा लग रहा था कि उसकी जिन्दगी अभी अछूती है।

अपनी बूढ़ी उम्र, एक हाथ और अन्धी आंखों से यह ज़रूरी था कि उसकी मौत हो जाए या वह मार डाली जाए जिससे लोग आनन्द-उत्सव मनाएं; उन गिर्जाघरों में रोशनियां की जाएं जो बिना शर्त पुण्य करने का उपदेश सबको देते हैं।

"एक चोट और—उस जगह," फ़्लास्क चिल्लाया—"मुझे एक चोट वहां और कर लेने दो।"

"ठहरो ! कोई ज़रूरत नहीं है।" स्टारबक बोला।

लेकिन दयालु स्टारबक अपनी बात पूरी करे उसके पहले ही व्हेल ने ताज़े घाव से गाढ़े खून का फव्वारा छोड़ना शुरू कर दिया। अब खून की उछालें फ़्लास्क की नाव के आगे के हिस्से पर पूरी तरह पड़ रही थीं। अन्त में असहाय और थकी हुई व्हेल अब एक करवट से झुकने लगी। दुनिया के गोल चक्कर की तरह वह घूम गई और एक लकड़ी के ठूंठ की तरह मृत हो गई। बड़ा मार्मिक दृश्य था; वह आखिरी उछलता हुआ फव्वारा। जैसे कोई अदृश्य हाथ किसी फव्वारे से पानी का आख़िरी हिस्सा निकाले लिए जा रहा हो और दुःख सहित झरने की ऊंचाई धीरे-धीरे धरती की ओर झुकती चली जा रही

हो—वैसा ही था उस मरने वाली व्हेल का अन्तिम झरना !

अब जब नावें जहाज़ के आने की प्रतीक्षा कर रही थीं उसी समय अपना सब खजाना अपने में ही समेटे हुए व्हेल का शरीर अपनी पूरी शक्ति के साथ पानी में डूबता चला जा रहा था। तभी स्टारबक के हुक्म पर दूसरे इन्तज़ाम किए गए और हर नाव एक दूसरे से फैलकर डोलती चट्टान-सी बन गई जो व्हेल पर खिंचे रस्सों को ताने रहें। व्हेल के चारों तरफ़ भारी जंज़ीरें लपेट दी गईं। तभी जहाज आया और व्हेल को उसके बराबर लाया गया।

हुआ ऐसा कि लोहे से पहली बार काटने पर एक पूरा भाला उसके शरीर के गोश्त में छिपा हुआ मिला। लेकिन ऐसा तो बहुत बार होता है कि मछली मारने के बहुत-से बड़े-छोटे हथियार व्हेल के शरीर में छिपे पड़े रहते हैं और ऊपर से गोश्त भर जाता है; ये हथियार बाद में कभी काटने पर ही निकलते हैं। लेकिन इस मामले में एक विचित्र बात थी कि बर्छे की एक पत्थर की मूंठ उसकी पीठ में छिपी पड़ी थी। यह पत्थर का बर्छा किसने फेंका होगा ? सम्भवतः अमेरिका की खोज होने के भी पहले किसी उत्तर-पश्चिमी आदिवासी ने !

इस भारी शरीर में क्या-क्या विचित्रताएं भरी हुई थीं यह तो बाद में एक के बाद एक निकलती गईं, लेकिन सबसे खास बात यह थी कि उसके बोझ से जहाज़ एक तरफ़ को झुकता चला जा रहा था। उस समय स्टारबक के हुक्म चल रहे थे और समूचे कर्मचारी रस्से और जंज़ीरों को खींचने में फंसे हुए थे। एक स्थिति वह आ गई कि अगर यह आदेश न दिया जाता कि सब कुछ फेंक दो तो व्हेल के बोझ से जहाज़ डूब ही जाता।

"संभाले रहो, संभाले रहो !" स्टब चिल्लाया—"डूबने की इतनी जल्दी मत करो। भले आदमियो ! हमें कुछ तो करना ही चाहिए। ठहरो ! ऐसे बेकार जूझने से क्या बनेगा ? कोई प्रार्थना की किताब लेकर बैठो और कोई कलम-तराश चाकू से बड़ी जंजीरों को काटने में जुट जाओ।"

"चाकू ? हां, हां," 'क्वीकेग' चिल्लाया और कहते-कहते वह बढ़ई की भारी कुल्हाड़ी ले आया तथा उसने अपने कई पूरे-पूरे हाथ जंजीरों पर दिए। चोटों से आग की चिंगारियां उठने लगीं और तभी जहाज सीधा हो गया, और लाश गड़ाप से पानी के अन्दर घुस गई।

तत्काल मारी हुई स्पर्म व्हेल को इस प्रकार डुबाना एक अनिवार्य परि-स्थिति हो गई। बहुत बार तो स्पर्म व्हेल चट्टान की तरह पानी में इधर-उधर तैरती रहती है लेकिन लगता है कि इस बूढ़ी व्हेल के बुढ़ापे के थलथल शरीर के भारीपन, हर हिस्से में गठिया की बीमारी, हर हड्डी के वजन और मोटापे—इन अनेक कारणों से ही वह डूब गई, जब कि तन्दुरुस्ती की ताज़गी में नई उम्र की व्हेलें अपने फुर्तीलेपन में आसानी से तैरती हैं।

परन्तु यों भी स्पर्म व्हेल के डूबने के मौके कम रहते हैं। अगर वैसी साधारण व्हेलें बीस डूब जाएंगी तो व्हेल एक। साधारण व्हेल में हड्डियां भी ज्यादा होती हैं। उसकी वेनीशियन खिड़कियां ही कभी-कभी तो एक-एक टन वजन की होती हैं। साथ ही ऐसा भी देखा गया है कि कभी-कभी कई-कई घंटे या दिन बीत जाने पर डूबी हुई मछली फिर ऊपर तैर जाती है। इसका कारण तो स्पष्ट है। उसमें हवाएं भर जाती हैं, पैदा हो जाती हैं। वह एक प्रकार का गुब्बारा बन जाती है। न्यूज़ीलैण्ड की खाड़ी के लोग तो डूबते समय व्हेल के कुछ ऐसी चीजें निशान के ढंग पर बांध देते हैं कि बाद में वे टटोल सकें कि वह कहां उठेगी।

थोड़ी ही देर में ऊपर के डेक से चिल्लाहटें आने लगीं कि जंगफ्राउ अपनी नावें फिर नीची कर रहा है। यों बहुत दूर सिर्फ़ 'फ़िन बैक' का एक फव्वारा उठता दिखाई दे रहा था जो उस प्रकार की व्हेल थी जिनको पकड़ना इसलिए कठिन होता है कि उनकी दौड़ बहुत तेज़ होती है। लेकिन 'फ़िन बैक' और स्पर्म व्हेल को ऊपर से देखने में इतना कम अन्तर दिखाई देता है कि कभी-कभी तजुर्बेकार मछुए गलती खा जाते हैं। अस्तु, डेरिक और उसके साथी इसी पकड़ में न आने वाली मछली के पीछे पड़ रहे थे। 'वर्जिन' जहाज़ ने अपनी चार नावें छोड़ रखी थीं जो आशा में दूर भाग रही थीं।

ओह ! मेरे दोस्तो ! बहुतेरे 'फ़िन बैक' हैं और बहुतेरे डेरिक !

## ५०

लम्बा और पतला मलक्का प्रायद्वीप जो बर्मा से दक्षिण-पूर्व की ओर फैला हुआ है, समूचे एशिया का सबसे दक्षिणी कोना है। उस प्रायद्वीप की ही रेखा में दूर तक सुमात्रा, जावा, बाली और टिमोर के द्वीप हैं जो अपने तथा औरों के साथ मिलकर पृथ्वी का एक लम्बा हिस्सा या फसील अथवा चहारदीवारी बनाकर एशिया को आस्ट्रेलिया से जोड़ते हैं और अखण्ड हिन्द महासागर को विभाजित करते हैं। यह फसील कई जगहों पर जहाजों और व्हेलों की सुविधा के लिए टूटती भी हैं जिनमें सबसे ज़्यादा खुलासा सुन्डा और मलक्का हैं। खासतौर पर सुन्डा जलडमरूमध्य के पास से गुज़रने के बाद चीन जाने वाले जहाज़ चीन सागर में पहुंच जाते हैं।

सुन्डा का पतला जलडमरूमध्य सुमात्रा को जावा से अलग करती है; साथ ही उस द्वीप-समूह की चहारदीवारी के बीच में स्थित है—नुकीला, ऊंचा और हरा-भरा द्वीप, जो मल्लाहों में 'जावा का सर' के नाम से प्रसिद्ध है। वे जैसे किसी बड़े साम्राज्य में खुलने वाले केन्द्रीय लम्बे-चौड़े फाटक से ही नहीं मालूम पड़ते बल्कि मसालों, रेशम, जवाहरात, सोना, हाथी दांत और उसके साथ ही ऐसी बहुमूल्य वस्तुओं से वहां का पूर्वीय सागर ऐसे भरा-पूरा है, मानो प्रकृति का वह रमणीय खजाना खास तौर पर ऐसे पृथ्वी को घेरकर सिमटा पड़ा है जैसे अपनी उस भद्दी सूरत में सब कुछ समेट लेने वाले पश्चिम से वह अपने को दूर रखना चाहता हो। सुन्डा जलडमरूमध्य के किनारों पर वैसे सुदृढ़ किले नहीं हैं जो भूमध्य, बाल्टिक और प्रोपोन्टिस सागरों के प्रवेश-द्वारों पर हैं। डेनमार्क वासियों से बिलकुल भिन्न, यहां पूर्वीय स्थानों पर पहुंचने पर जहाजों के कभी न समाप्त होने वाले जुलूस को अपने मस्तूलों को झुकाना नहीं पड़ता। ये किनारे शताब्दियों से रात-दिन चलने वाले कीमती से कीमती जहाजों को पूर्व के समुद्रों में तैरते हुए देखते रहे हैं। परन्तु किन्हीं विशेष अवसरों पर यदि वे अपने पालों को खुला रहने देते हैं, तो उसका अर्थ यह नहीं है कि पूर्वी देशों के निवासी महसूल कम लें, महसूल वे भरपूर लेते हैं।

पता नहीं कितना ज़माना हुआ, हो सकता है याद से भी पहले, मलाया की डाकू-नावें सुमात्रा में पानी की खाइयों और तंग हरे-भरे टापुओं में चक्कर काटा करती थीं और आसपास से आने वाले जहाज़ों को अपने भालों की नोकों पर मजबूर करती थीं कि वे उन्हें कुछ सौगात पेश करें। यूरोप के जहाज़ों के हाथों उन्हें कड़े खूनी दंड भी मिले। इस पर उनके ऐसे कार्यों की तूफ़ानी तेजी धीरे-धीरे कम होती गई, परन्तु आज भी अक्सर सुनाई पड़ जाता है कि अमुक अंगरेज़ या अमेरिकन जहाज़ उन समुद्रों में निर्दयतापूर्वक लूट लिया गया।

साफ़ और ताज़ी हवा के साथ पिकोड इस समय इन समुद्री किनारों के नजदीक पहुंच रहा था। आहाब का इरादा था कि वह जावा के समुद्र को पार-कर उत्तर की ओर बढ़ जाए और ऐसे जल में पहुंच जाए जहां स्पर्म व्हेलों की बहुलता है। वह फिलीपाइन्स द्वीपसमूह को ऐसे समय में पार करना चाहता था, जब जापान के दूर किनारों पर व्हेल के शिकार का मौसम पूरी तेज़ी पकड़ ले। इसका अर्थ यह है कि इस प्रकार पिकोड संसार भर के उन सभी स्थलों का भ्रमण कर डालेगा जो स्पर्म व्हेल को पकड़ने की खास जगहें मानी जाती हैं। भले ही आहाब के वे सब धन्धे अब तक असफल रहे हों किन्तु अब वह अन्तिम रूप से मोबी डिक के विरुद्ध मोर्चा लगाना चाहता था और वह भी ऐसे समुद्र में जहां प्रसिद्ध था, कि वह ज्यादातर निकलती है।

परन्तु अब कैसे ? अपनी इस खोज में क्या आहाब किनारों पर उतरता नहीं ? क्या उसके आदमी हवा पी रहे हैं ? वह पानी के लिए तो ज़रूर रुकेगा। नहीं। जमाने से सूर्य अपने आग के गोले को साथ लिए चक्कर लगा रहा है और अब उसे अपने भीतर मौजूद सहारे के अलावा किसी दूसरे सहारे की ज़रूरत नहीं रह गई है। वही हाल आहाब का था। व्हेल-जहाज़ का यह गुण भी देखने लायक है। जब कि और जहाज़ सामान के बोझ से लदे रहते हैं और उन्हें देश-देश के किनारों पर रुककर माल उतारना पड़ता है तब दुनिया का चक्कर काटने वाला व्हेल-जहाज़ अपने और अपने आदमियों के खाने-पीने तथा हथियारों के अलावा कोई सामान नहीं रखता। जैसे समूची झील का पानी उसके सामान के साथ मौजूद रहता है। उसमें सारी आवश्यक वस्तुएं तो होती हैं लेकिन, बेकार का लोहा या शीशा नहीं। बरसों तक काम में आ सकने योग्य पानी उसमें भरा होता है। नन्तुकेत का कीमती और बढ़िया पानी; जिसे कोई

भी नन्तुकेत वाला तीन साल तक पानी में घूमने के बाद भी पीना पसन्द करता है, लेकिन पेरूविया या भारत की नदियों का ताज़े से ताज़ा पानी पीना नहीं। इसलिए संभव है कि कुछ जहाज़ न्यूयार्क से चीन गए और वापस आए हों तथा यात्रा में दर्जनों बन्दरगाहों पर ठहरे हों जब कि उतने समय में व्हेल-जहाज़ ने भूमि के दर्शन तक न किए हों और न उसके आदमियों ने अपनी ही तरह के पानी में तैरते आदमियों के अलावा कोई आदमी देखा हो। और अगर आप उन्हें यह खबर दें कि बाढ़ आ गई है तो उनका जवाब होगा—"हां लड़को ! नूह की नाव भी यह है।"

हां, तो जावा के समुद्री किनारे पर बहुत-सी स्पर्म व्हेलें पकड़ी गईं जिनमें अधिकांश सुन्डा जलडमरूमध्य की तरफ पाई गई थीं। जैसा कि मछुओं में प्रचलित था, वह स्थान शिकार के लिए बहुत उपयुक्त था। अस्तु, पिकोड ज्यों-ज्यों 'जावा के सर' की ओर बढ़ा त्यों-त्यों उसके जहाजियों में उत्साह बढ़ता गया और वे रात-दिन जागकर शिकार में जुटे रहे। लेकिन शीघ्र ही पाम के दरख्तों से लदी पहाड़ियां जहाज़ के सामने घिर आईं; नथुनों में सुगन्धियां भरने लगीं, वायु में दालचीनी की खुशबुएं झूम गईं किन्तु फिर भी व्हेल का एक भी फव्वारा दिखाई नहीं दिया। यह तय करके कि कोई भी नया स्वांग न रचाया जाए—जहाज़ ने इन खाड़ियों में प्रवेश किया और तभी दूर किनारों से स्वागत करने की चिल्लाहटें सुनाई दीं जैसे एक मनोहर दृश्य ने हमको सलामी दी और हमारा सत्कार किया।

यही नहीं, अब तक जो स्पर्म व्हेलों के छोटे-छोटे समूह हमें चारों समुद्रों में मिलते रहे, अब वहीं उनके जखीरे के ज़खीरे दिखाई देने लगे। लेकिन ये व्हेलों के इतने बड़े-बड़े कारवों के मिलने के ही नतीजे थे कि शिकार की ऐसी जगह होते हुए भी एक फव्वारे के इन्तजार में हफ्तों भटकना पड़ता था और तभी कभी एक के दर्शन हो जाते थे, जो हज़ारों मालूम पड़ते थे।

जहाज़ के दोनों कोनों तक फैली हुई लगभग दो-तीन मील लम्बी अर्धचन्द्राकार पंक्तियों में व्हेल के फव्वारे आधे क्षितिज को घेरकर दोपहरी में चमक रहे थे। 'राइट व्हेल' के जुड़वां फव्वारे से भिन्न, जो सीधे जाकर ऊपर दो धाराओं में बंट जाता है और दो ओर गिरता है स्पर्म व्हेल का फव्वारा गहरे

धुएं की एक मोटी झाड़ी की तरह बराबर उठता है और आगे की ओर गिरता है।

समुद्र की किसी ऊंची पहाड़ी पर चढ़े हुए पिकोड के डेक पर इस धुएं से भरे फव्वारों के ढ़ेर को देखा जाए जिनमें सभी घुमेड़ें ले-लेकर हवा में ऊंचे उठते हों और हवा तथा पानी के बीच नीले रंग की हलकी झलक उभारते हों तो ऐसा लगता है जैसे ऊंचाई पर खड़ा कोई घुड़सवार किसी राजधानी की घनी आबादी के बीच धुआं उड़ाती हजारों चिमनियों को सुबह के कोहरे में देख रहा हो।

जैसे बढ़ती हुई फौजें किसी अपरिचित स्थान पर पहुंच जाएं जो दुश्मन और पहाड़ों से घिरा हो तो वे भागकर यह कोशिश करेंगी कि जल्दी से जल्दी किसी मैदानी स्थान पर पहुंचें और अपनी सुरक्षा करें, उसी प्रकार व्हेलें उन जलडमरूमध्यों के बीच तेज़ी से चल रही थीं। वे अपने सुफनों को अर्ध-गोलाकार रूप में धीरे-धीरे घुमा लेती थीं और गोलाई का एकदल होते हुए भी अर्धचन्द्राकार रूप से चल रही थीं।

अपने सब पालों को उड़ाता हुआ पिकोड उनके पीछे बढ़ा और हारपूनर लोग अपने-अपने हथियार लेकर मौज में चिल्लाते-चीखते रहे। अगर हवा ने साथ दिया तो निस्संदेह सुंडा के जलडमरूमध्यों में पूर्वीय समुद्र में, अवश्य कुछ व्हेलों का शिकार होगा। साथ ही कौन कह सकता था कि उस भिंचे हुए दल में मोबी डिक भी न तैर रही हो, उसी प्रकार जैसे स्याम के लोगों के किसी जुलूस में राजतिलक के समय पूजा तथा मन्त्रों से अभिषिक्त कोई सफेद हाथी चला जा रहा हो। अतएव हौले-हौले पतवारें चलाते हम आगे बढ़े जैसे उन जलमच्छों को खदेड़ रहे हों। तभी अचानक सबका ध्यान खींचते हुए टाशटेगो की एक चीखती आवाज़ गूंजी।

जैसा एक अर्धचन्द्र हमारे जहाज़ में लगा था वैसा ही हमने पीछे भी देखा। दृश्य को देखकर अपना चश्मा ठीक करते हुए तथा अपने उस छेद में जल्दी से घूमकर वह चिल्लाया—"वह देखिए! मलायावासी हमारे पीछे आ रहे हैं!"

काफी गहराई तक अन्दर पैठ जाए।—इस इन्तजार में लगे उन धूर्त एशियावालों ने अब तेज़ी से पिकोड का पीछा किया लेकिन जब खुलासा हवा

पाकर तेज पिकोड खुद ही व्हेलों का पीछा करता हुआ जा रहा था तो अच्छा ही था कि इन बौने परोपकारियों ने उसे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में उसकी मदद ही की। वे तो उस समय मामूली चाबुक या तेज भगाने वाली कांटेदार लगाम सरीखा काम कर रहे थे। ऐसे में चश्मा हाथ में लिए हुए आहाब डेक पर इधर से उधर टहल रहा था। आगे जाने पर उसे वे जल-जन्तु दिखाई देते जिनका पीछा वह कर रहा था और पीछे आने पर वे खून के प्यासे जल-डाकू उसका पीछा करते हुए। इसके साथ ही जब उसकी नजर उन हरी-भरी दीवालों पर गई जो पानी में डूबी हुई थीं और जिनके बीच से होकर उसका जहाज़ आगे बढ़ रहा था तो उसके मन में एक विचार आया कि यही वह रास्ता है, ये ही वे फाटक हैं जिनसे होकर वह अपना बदला ले सकेगा। और कितने मजे की बात है कि यहीं पर वह किसी का पीछा कर रहा है और कोई उसका पीछा कर रहा है। इसके साथ ही वे नृशंस और दुष्ट जल-डाकू अपनी गालियों तथा अपशब्दों से उसको हुंकार रहे थे। ये सब बातें आहाब के मस्तिष्क में घुमेड़ें ले रही थीं तो उसकी भौंह कुछ कमजोर और अशक्त हो रही थी जैसे कोई बड़ी परेशानी सामने से गुजर रही हो।

लेकिन उन दया से रहित जहाज़ियों में वैसे विचार शायद ही किसी को कष्टप्रद हो और जब उन डाकू नावों को पीछे छोड़ते हुए पिकोड हरे-भरे काकातुआ प्रायद्वीप को पार करके सुमात्रा की तरफ़ खुले समुद्र में निकल गया तो हारपूनरों को यह खुशी तो न हुई कि वे जल-डाकुओं से बच गए, बल्कि दुःख हुआ कि व्हेलें उनसे आगे बढ़ी जा रही हैं। लेकिन उनका ही पीछा करते रहने पर उन्हें लगा जैसे व्हेलों की रफ़्तार कम पड़ रही है और तब जहाज़ उनके ज्यादा से ज्यादा पास पहुंचने लगा। साथ ही चूंकि हवा कमज़ोर पड़ रही थी इसीलिए नावों का सहारा लेने का हुक्म दे दिया गया। लेकिन ज्यों ही नावें उतरी, न मालूम किस आश्चर्यजनक प्रवृत्ति से जैसे व्हेलों को पता लग गया और वे फिर इकट्ठा होकर दूनी तेजी में अपने फव्वारे उड़ाती हुई भागने लगीं जब कि नावें उस समय भी उनसे कम से कम एक मील पीछे थीं।

अपनी कमीजों और जांघियों की चुस्ती में हम उस सफ़ेद धुएं की तरफ़ दौड़ते रहे और कुछ घंटों की दौड़-भाग के बाद इस नतीजे पर पहुंचे कि पीछा करना छोड़ दिया जाए; तभी लगा कि व्हेलों पर कुछ टोना-सा हो गया और

जैसा हमेशा होता है वे थककर अस्त-व्यस्त हो गईं। एक गंठे हुए और मिले-जुले झुंड में संभलकर तेजी से भागते हुए वह मिली-जुली व्हेलें वैसे ही तितर-बितर हो गईं जैसे हिन्दोस्तान में सिकन्दर के साथ लड़ते हुए राजा पोरस के हाथी घबड़ाहट और पागलपन में भाग खड़े हुए थे। हर दिशा में इधर-उधर भागते-तैरते देखकर ऐसा लग रहा था जैसे उनमें भय समा गया हो। इन जल-जन्तुओं को यदि साधारण भेड़ें मान लिया जाए तो उनकी जो दशा तीन भेड़ियों के पास पहुंच जाने से होती उससे अधिक बुरी हालत उस समय उनकी हो रही थी। इस तरह की भीड़ की घबड़ाहट का स्वभाव लगभग सभी झुंड में चलने वाले जानवरों में पाया जाता है। पश्चिम के शेर की तरह चिंघाड़ने वाले भैंसे जो दसों हजार के झुंड में साथ चलते हैं केवल एक घुड़सवार से तितर-बितर हो जाते हैं। यही क्यों, आदमियों को ही उस समय देखिए जब वह किसी थियेटर हाल में इकट्ठे हों और आग का घंटा दे दिया जाए। तब वह किसी भी दरवाजे, खिड़की या रोशनदान को ढूंढ़ने के लिए बेतहाशा भागेंगे, गिरेंगे, भिचगे और यही नहीं मौत के डर की तरह एक दूसरे को रौंद डालेंगे। इसलिए उस समय अगर व्हेलों की इस बात पर आपको आश्चर्य हो रहा है तो उसे रोक लीजिए, क्योंकि संसार के किसी जानवर में ऐसी आदतें नहीं हैं जो आदमी में न हों।

जैसा कहा जा चुका है—बहुत-सी व्हेलें बहुत तेजी में थीं लेकिन पूरे झुंड में न कोई आगे बढ़ रही थी न पीछे हट रही थी, बल्कि एक साथ झुंड बनाकर सभी एक जगप पर ही तैर रही थीं। ऐसे में जैसा नियम-सा रहता है नावें पृथक्-पृथक् हो गईं और इस फिक्र में तैरने लगीं कि कोई व्हेल अकेले मिल जाए तो हाथ साफ किया जाए। लगभग तीन मिनट में ही 'क्वीकेग' ने अपना हारपून तीर की तरह फेंका। चोट खाई व्हेल ने इतने फव्वारे उड़ाए कि हम अन्धे हो गए और बिजली की कौंध की तरह सामने से दौड़कर वह झुंड के बीच में घुसने की कोशिश करने लगी।

अपने आप किसी विद्युत् शक्ति से वह व्हेल भागती ही चली गई और अन्धे तथा बहरे होकर जैसे उसने अपने आपको उस लोहे की जोंक से बचाना चाहा जो उसके गले में फंसी हुई थी। इसके साथ ही हमने समुद्र की उस सफेदी में भी दरार डाल दी जो उन व्हेलों ने सब ओर फैला रखी थी और

अब हमारी नाव उस जहाज़ की तरह हो रही थी जो तूफान में बर्फीले टापुओं से घिर गया हो। हमारी नाव यह भी कोशिश कर रही थी कि उस घिरे हुए पानी से भागे क्योंकि कौन जाने कब वह घिर या भिंच जाती।

लेकिन बिना किसी घबड़ाहट के 'क्वीकेग' हिम्मत के साथ नाव चलाता रहा और कभी नाव को व्हेल से दूर करता, कभी बगल से आगे बढ़ाता और इस सारे समय स्टारबक बराबर किनारे पर खड़ा रहा और बर्छे को हाथ में लिए रहकर थोड़ी-थोड़ी देर में छोटे हमलों से जो भी छोटी व्हेलें हाथ लगतीं उन्हें लपेट लेता क्योंकि बड़े हमले का फौरन मौका नहीं था। यों पतवार चलाने वाले भी बेकार नहीं बैठे थे; वैसे उनकी खास ड्यूटी हट चुकी थी; वे केवल शोर करने में हिस्सा ले रहे थे।

व्हेल का शिकार करने वाली प्रत्येक नाव अपने साथ कुछ न कुछ विचित्र वस्तुएं रखती हैं जिन्हें नन्तुकेत वालों ने ईजाद किया है। उनमें से एक 'ड्रग' कहलाती है। बराबर की नाप के लकड़ी के दो मोटे तथा चौकोर टुकड़े लम्बवत् एक साथ जुड़े होते हैं; एक प्रकार से उनकी चूल एक दूसरे से ठीक से फंसी रहती है और दोनों का आकार भी बिलकुल बराबर होता है। उनकी लम्बाई के बीचोंबीच एक रस्सी बंधी होती है जो काफी लम्बी होती है और किसी भी क्षण किसी हारपून से बांधी जा सकती है। खासतौर पर जो व्हेलें घबड़ाकर चकाचौंध में पड़ जाती हैं उन्हीं के लिए इस 'ड्रग' का उपयोग किया जाता है। जब बहुत-सी व्हेलें एक साथ सामने हों तो 'ड्रग' लगी व्हेल को आसानी से पहचानकर उसका पीछा किया जा सकता है। लेकिन हर दिन स्पर्म व्हेल शिकार की लपेट में नहीं आती। फिर भी जब आपको अवसर है तो जो भी मिले उसे मारिए और अगर सबको आप एक साथ नहीं मार सकते तो उन पर चोट दे-देकर छोड़ दीजिए और तब धीरे-धीरे आराम से उनका खात्मा कीजिए। अतः ऐसे मौकों पर ही 'ड्रग' काम में आती है। हमारी नाव में वैसी तीन ड्रगें थीं। पहली व दूसरी 'ड्रंग' सफलतापूर्वक फेंकी जा चुकी थीं और वे व्हेलें लड़खड़ाते हुए भाग रही थीं। किन्तु तीसरी के फेंकने पर ऐसा हुआ कि नाव की गद्दी का एक कपड़ा ही साथ फटा चला गया जिससे वह गद्दी अन्दर सरक गई और डांडे वाला पेंदे में लुढ़क गया। उस झपेट में लकड़ी का तख्ता फट जाने से समुद्र का पानी नाव में भरने लगा। तब हमने उस दरार को

फालतू कमीजों व जांघियों से भरा जिससे उस समय पानी आना रुक गया।

यह असम्भव बात थी कि जबतक व्हेलों की बड़ी भीड़ न छटती तब तक हम बढ़े चले जाते और 'ड्रग' लगे हारपून को फेंक सकते। हुआ भी ऐसा कि ज्यों-ज्यों हम आगे बढ़े झुण्ड का गठन छटता गया और व्हेलें तितर-बितर होने लगीं। तभी जब हारपून फेंका गया तो चोट खाई व्हेल बगल की ओर गायब होती गई और उस व्हेल के हटने पर पूरी शक्ति से हम दो व्हेल मछलियों के बीच में घुस गए और उस गोल में ऐसे पहुंच गए जैसे दो चट्टानों के बीच की नदी से सरककर हम किसी पहाड़ी झील में पैठ गए हों। यहां उस झुण्ड के बीच उठे तूफान को हम समझ ही नहीं सके बल्कि साफ सुन सके। समुद्र के बीच के फैलाव में चिकनी साटन की तरह की तह जमी हुई थी जो एक 'स्लीप' कहलाती है और उसे व्हेल अपनी शांत स्थिति में आराम से लेसदार वस्तु की भांति मुंह से फेंकती हैं। हां, हम उस शांति एवं आराम के बीच में पैठे हुए थे जो हरेक खलबली के साथ लिपटी रहती है। आठ-आठ और दस-दस के झुंड में व्हेलें ऐसे सिमट गई थीं जैसे किसी टिटेनिक सर्कस के घोड़े, जिनका सवार आसानी से एक पीठ से उछलकर दूसरी पर कूद सकता था। जिस ढंग से व्हेलों ने हमें घेर रखा था उसको देखते हुए हमारा वहां से भाग निकलना भी आसान नहीं था। हम उस दीवार के टूटने का इन्तजार कर रहे थे जिसने हमें अन्दर करके बन्द कर लिया था। उस बीच की झील में उस भीड़ की पालतू गाएं और बछड़े तथा औरतें, बच्चे भी हमारे नजदीक आते रहे।

सब मिलाकर वह घेरा तीन मील लम्बा था। जो भी हो, उस समय भाग निकलने का वह तजुर्बा लेना खतरे से खाली नहीं था। फव्वारा जो दूर क्षितिज में तैर रहा था—हमारी नावें उसे देख सकती थीं। स्थिति यह थी कि झुंड की गायों और बछड़ों का बारम्बार हमारे पास आना हममें डर पैदा कर रहा था कि उन भोलेभाले और मासूम, साथ ही नातजुर्बेकार छोटे जानवरों को बड़े जानवर रोक क्यों नहीं रहे हैं जबकि खतरा सामने है। जो भी हो, बड़े विश्वास के साथ, निडर होकर, ये छोटी व्हेलें हमारी नाव तक आती थीं। एक घरेलू कुत्ते की तरह वे पास आकर सूं-सूं करके जैसे कुछ सूंघतीं और हमारे पालों के पास तक उछल जातीं। मानो किसी जादू के बल पर वे पालतू बन गई हों।

'क्वीकेग' उनके माथे थपथपाता, स्टारबक अपने भाले से उनकी पीठ सहलाता, लेकिन भयंकर परिस्थिति की आशंका से हम भाग नहीं रहे थे।

परन्तु इस विचित्र दुनिया के और भी अन्दर, समुद्र की सतह में. एक अनोखी दुनिया तैर रही थी; जिससे हमारी नजरें चार हुईं; और उसे हम देखते ही रह गए। उस अथाह जलराशि के ऊपर थमे पानी पर व्हेलों की शिशु-पालक माताएं तैरती नज़र आ रही थीं और कुछ ऐसी भी कि जिनकी अधिक चौड़ाई और फैलेपन को देखकर लग रहा था कि वे मां बनने वाली हैं। वह झील, जैसा कि मैंने कहा है, काफी गहरी होते हुए भी पारदर्शी थी और जैसा बहुत बार होता है कि कोई बालक दूध पीते-पीते दूसरी ओर नजरें गड़ाकर देखने लगता है और दूध छोड़ देता है वैसा ही व्हेल के बच्चे ने भी उस समय किया था। जैसे एक ही समय में दो प्रकार का जीवन व्यतीत कर रहे हों; अपना भोजन प्राप्त कर रहे हों और साथ ही अपनी आत्मा में संसार से ऊपर की किसी बात के सोच में पड़ गए हों। इन व्हेलों के वे बच्चे हमको नहीं तो हमारी तरफ ज़रूर देख रहे थे जैसे उनकी मासूम-सी नई नज़र में हम कोई खाड़ी की बेकार घास-पात हों। उनकी बगल में तैरती हुई माताएं भी हमें देख रही थीं। इनमें से एक बच्चा जो कठिनाई से एक दिन का दिखाई दे रहा था अपने किसी खास अनोखेपन में कम से कम चौदह फीट लम्बा और छै फीट मोटा दिखाई दे रहा था। यह फुदक-सा रहा था, वैसे उसके शरीर की खाल कुछ उधड़ी हुई-सी दिख रही थी जैसे देर तक अपनी मां के गर्भाशय में रहकर जो कष्टमय स्थिति उसने व्यतीत की थी उसका प्रभाव अभी भी दिखाई दे रहा हो; जहां वह गर्भ में पड़े-पड़े किसी तातार के धनुष की तरह कमान बना हुआ था। उसके कोमल सुफनों और जबड़ों से नवजात शिशु का आभास स्पष्ट हो रहा था।

"रस्सी ! रस्सी !" पालों के बीच में देखते हुए 'क्वीकेग' चिल्लाया— "उसे जल्दी ! उसे जल्दी ! उसे कौन बांध रहा है ? कौन वार कर रहा है ? दो व्हेलें; एक बड़ी, एक छोटी।"

"भले आदमी ! तुमको क्या तकलीफ है ?" स्टारबक चिल्लाया।

"ऐ ! तुम इधर देखो," सामने संकेत करते हुए 'क्वीकेग' बोला।

जैसे चोट खाई हुई व्हेल टब में पड़े रहकर सैकड़ों गज़ नाप का रस्सा खाली

करती है और जैसे भारी आवज़ सुनकर फिर तैर जाती है और थककर पानी में घुमेड़ें लेती रहती है, कभी हवा में बाहर आती है और कभी डुबकी ले लेती है वैसे ही स्टारबक ने देखा कि मां-जलमच्छ के पेट से बहुत लम्बी नाल निकली हुई है और वह बच्चा व्हेल उसके सहारे सरक रही है। शिकार में इस तरह के दृश्य बहुत कम देखने में आते हैं। इस रूप में समुद्र के गहरे से गहरे और अनोखे आश्चर्य हमारे सामने थे। उस पानी की गहराई में हमने नौजवान जल-जन्तु की प्रेम-क्रीड़ा भी देखी।[1]

यही नहीं उन, जल-जन्तुओं के खेलों और आनन्द-उत्साह का हम भी उनके बीच में घिरकर भय व आनन्द सहित मजे ले रहे थे। उस सबके बीच जैसे मुझको भी अपार आत्मिक सुख मिल रहा था।

इस बीच, हमारे घेरे से दूर, दूसरी नावों के भी क्रिया-कलाप दिख रहे थे, जो उस झुंड की सीमा पर अपना काम कर रही थीं। वे व्हेलों पर 'ड्रग' फेंक रही थीं और पहले घेरे में जैसे लड़ाई जारी रखे थीं जहां काफी मैदान और भाग निकलने का मौका भी था। 'ड्रग' खाई हुई व्हेल का गुस्से से भागने का दृश्य हम नहीं देख पा रहे थे। बहुत बार ऐसा भी होता है कि बहुत तेज और सतर्क दौड़ने वाली व्हेल की रफ्तार धीमी करनी पड़ती है और उसके लिए उसकी पूंछ का ऊपर उठा हिस्सा बेकार करना पड़ता है। इसके लिए छोटे

---

१. जलमच्छों की दूसरी जातियों की ही भांति परन्तु दूसरी व्हेलों से भिन्न ये स्पर्म व्हेलें हर मौसम में अपने बच्चों का पोषण करती हैं। गर्भावस्था के अनन्तर, जो नौ महीनों में पूरी होती है, एक बच्चा पैदा होता है और कुछ जानी हुई किस्म की एसौ और जैकब व्हेलें पैदा करती हैं—एक खास किस्म जो दो थनों से दूध पीती हैं, जो बड़े विचित्र ढंग से गुदा के दोनों ओर स्थित होते हैं किन्तु वे दूध की छातियां उनसे ऊपर उठी रहती हैं। दैवात् व्हेल के वे कीमती अंग यदि किसी शिकारी के बर्छे से कट जाते हैं तो दूध और खून फैलकर समुद्र के पानी में अजीब रंग घुल जाता है। दूध बहुत मीठा और ताक़तवर होता है। आदमी ने उसका स्वाद चखा है। उसका जायक़ा स्ट्राबेरी जैसा होता है। जब आपसी स्नेह संचार से दूध की मात्रा बढ़ती है तो व्हेल उसमें और अधिक मिठास पैदा करती है।

हंसिए से काम लिया जाता है जिनमें रस्सियां बंधी होती हैं; जिसके द्वारा चोट करने के बाद वे घसीटे भी जा सकते हैं। जैसा कि हमें बाद में ज्ञात हुआ कि जख्मी व्हेल भागते हुए आधी लम्बी रस्सी साथ घसीट ले जाती है और घाव के असह्य दर्द में झुंड में वैसे ही पैठती चली जाती है जैसे सैरटोगा के युद्ध में आततायी आर्नाल्ड अपने साथ क़यामत लिए रहता था।

इसलिए इस खास व्हेल की बेहद तकलीफ उसे पागल बना रही थी और उसी में वह जैसे पानी को मथ रही थी और घुमेड़ें ले रही थी। साथ ही अपने संगी-साथियों को अपने उस हंसिए से घायल कर रही थी या मार रही थी जो सम्भवतः उसके साथ लिपटा चला आया था।

एक प्रकार से पूरे समूह में यह व्हेल खलबली मचाए हुए थी। मिनट भर में वे आनन्द-उत्सव, वे शादियों के उत्साह, वे दूध-पान की क्रियाएं गायब हो गईं। सब तरफ भनभनाहट और शोर सुनाई देने लगा। शान्ति समाप्त हो गई। जैसे बरसात में हडसन नदी[1] बाढ़ के ज़ोर-शोर में बर्फ के पहाड़ों को ढकेलती चलती है उसी तरह व्हेलें पानी में हिल-डुल और तैर रही थीं। अचानक ही 'क्वीकेग' व स्टरबक ने अपनी-अपनी जगहें बदलीं। स्टारबक पीछे चला आया।

"पतवारें! पतवारें!" पतवार को पकड़ते हुए वह बोला।—"अपनी-अपनी पतवारें पकड़ो और अब दिल थाम लो! हे भगवान्! आदमियो! संभलकर! क्वीकेग! उस व्हेल को वहां से दूर हटाओ!—वार करो—उस पर चोट करो! खड़े होओ! खड़े होओ—आदमियो! संभल जाओ!—खींचो, चलाओ! उन व्हेलों की पीठों से टकरा जाओगे, इसकी परवाह मत करो। उनको छील डालो—छील डालो!"

दो काले और भारी मांस-पिंडों के बीच नाव अड़ रही थी जैसे बीच में दर्रा-दानियल बन गया हो। आखिर में हम एक छोटी-सी खुली तरफ घुस गए और दूसरे रास्ते का इन्तज़ार करते रहे। जल्दी ही हम बाहर हो गए। और तो कुछ नुकसान नहीं हुआ, हां 'क्वीकेग' का टोप व्हेल के फव्वारे में उड़ गया।

वह खलबली अब बाक़ायदे एक आन्दोलन बन गई और तब वह जखीरा

---

१. कनाडा की एक नदी, जो उत्तरी महासागर की हडसन की खाड़ी में गिरती है।

मिल-जुलकर भाग खड़ा हुआ। अब हमारा पीछा करना भी बेकार था और हम लोग 'ड्रग' खाई हुई व्हेलों में से एक को समेटने की सोचने लगे, जिसे फ़्लास्क ने मारा था।

व्हेल के शिकार में एक कहावत प्रसिद्ध है कि—'ज्यादा व्हेलें कम मछलियां'। उपरोक्त घटना से इसी कहावत की पुष्टि होती है। सचमुच इतनी 'ड्रग' खाई व्हेलों में केवल एक पकड़ी जा सकी थी, बाकी भाग गईं; जिन्हें पिकोड नहीं तो दूसरे जहाज़ बाद में पकड़ेंगे ही।

## ५१

पिछले अध्याय में स्पर्म व्हेलों के एक बड़े दल का विवरण दिया गया है। साथ ही यह भी बताया गया है कि वह झुंड संभवतः कैसे इकट्ठा होता है।

बड़े दल के अलावा बीस-बीस और पचास-पचास व्हेलों के छोटे झुंड भी होते हैं। ये दल 'स्कूल' कहलाते हैं। ये साधारणतः दो प्रकार के होते हैं। एक, जिनमें सब माता व्हेलें होती हैं। दूसरी, जिनमें जवान, हट्टी-कट्टी नर व्हेलें, जिन्हें बड़े प्यार से 'सांड' कहा जाता है, होता है।

मादा व्हेलों के इस स्कूल में वह पूरी कद्दावर, जवान नर व्हेल होती है जो किसी भी खतरे की घंटी को सुनकर उन मादा व्हेलों के बींच में घुसकर छिप जाती है। सचाई तो यह है कि यह भला आदमी एक प्रकार का अय्याश ओटोमैन होता है जो पानी की दुनिया में तैरता रहता है। लेकिन वहीं पर उसे किसी बादशाह के हरम का सारा ऐश मिलता रहता है। इस ओटोमैन और उसकी रखैलों का अन्तर बहुत स्पष्ट होता है क्योंकि वह उनमें सबसे लम्बा-चौड़ा होता है; जब कि पूरी तैयार व्हेल मादाएं आकार में उससे एक तिहाई भी नहीं होतीं। यही नहीं वे अपेक्षाकृत कोमल भी होती हैं और निस्सन्देह मैं कह सकता हूं कि उनकी कमर छः गज से ज्यादा चौड़ी नहीं होती। जो भी हो, इस सचाई से इंकार नहीं किया जा सकता कि पैतृक रूप से वे मोटी तो होती ही हैं।

इस हरम और उसके मालिक को पूरी तरह मौज लूटते देखना एक बड़ी अनोखी बात है। बड़े फैशनेबुल लोगों की तरह वे मादाओं की अदल-बदल के

सदा इच्छुक रहते हैं। भरपूर फसलों के दिनों में भूमध्य रेखा के नज़दीक समुद्री रास्ते पर वे आपको मिलेंगे जैसे उत्तरी समुद्रों में अभी-अभी गर्मियां बिताकर आ रहे हों और उस मौसम को गर्मी व तेजी को दूर भगाने का उपक्रम कर रहे हों। उस समय तक भूमध्य रेखा के आसपास जल-विहार का समय बिताने के बाद वे पूर्वी समुद्रों की ओर इस आशा में बढ़ते दिखाई देंगे कि वहां सर्द मौसम आने वाला है। इस तरह वे गर्म मौसम से पूरे साल भर बचने की चेष्टा किया करते हैं।

इन यात्राओं में कोई नया या भय उत्पन्न करने वाला दृश्य सामने आ जाए तो वह व्हेल अपने मजेदार परिवार पर गहरी नज़र रखती है। अगर कोई नया और चंचल नौजवान नर जलमच्छ उसकी किसी मादा के आस-पास दिखाई दे जाए तो किस गुस्से और गर्मी से बादशाह महाशय उसे भगा-कर दूर तक खदेड़ आएंगे—यह देखने की चीज़ होती है। यदि नियमों का उल्लंघन करने वाला वह दुष्ट नौजवान पारिवारिक सुरक्षा और सीमाओं को तोड़ता दिखाई देगा तो बड़ा कठिन समय आ उपस्थित होता है। वैसे जो बादशाह की इच्छा हो वही करो लेकिन फिर भी वह उस शैतान लोथैरियो[1] को अपने बिस्तर से दूर नहीं भगा सकता क्योंकि अफसोस है कि सबका बिस्तर तो एक ही होता है। मानव जाति की मादाओं की तरह व्हेल की वे मादाएं भी अपने प्रेमियों के बीच कभी-कभी भयानक द्वन्द्व युद्ध का कारण बनती हैं और मोहब्बत के लिए उनमें भी ज़िन्दगी और मौत की लड़ाई हो जाती है। वे अपने लम्बे निचले जबड़े से झगड़ते हैं और कभी-कभी एक दूसरे से उलझ जाते हैं और अपनी प्रभुता जमाने के लिए वैसे ही हुंकारते हैं जैसे बारहसिंगा अपने दुश्मन को खदेड़ देता है। इन लड़ाइयों की चोटों के गहरे निशानों से शायद ही कोई बच पाता हो—तब पिचकी खोपड़ियों, टूटे दांत, कटे सुफ़ने और किसी-किसी मौके पर तो टूटा हुआ या लटका हुआ मुंह भी दिखाई दे जाता है।

अगर पारिवारिक सत्ता पर हमला बोलने वाला वह आक्रमणकारी बद-माश हरम के मालिक के पहले वार पर भाग गया; तब तो उस परिवार के

---

१. बदमाश।

स्वामी की गतिविधि देखना और भी आकर्षक होता है। वह फिर अपने उस पूरे जखीरे को समेटकर कुछ देर तक सबको दुलराता-पुचकारता रहेगा और धार्मिक तथा पवित्र सोलोमन की भांति हज़ारों प्रेमियों के बीच पूजा करने की तरह वह भी उस नौजवान हमलावर की छाया से दूर होने का सुख लेगा। दूसरी व्हेलें सामने होते हुए कोई भी व्हेल का शिकारी इस महान तुर्क के पीछे बहुत कम ही पड़ेगा क्योंकि इस महान तुर्क में अपनी शक्ति की अधिकता के कारण स्निग्धता और तेल कम होता है। जिन लड़के-लड़कियों का उनसे जन्म होता है वे अपनी देख-भाल या लालन-पालन स्वयं करते हैं या उनकी माताएं करती हैं। क्योंकि दूसरे सर्वभक्षी और आवारागर्द डाकू प्रेमियों की भांति बादशाह व्हेल गृहस्थी या बच्चों के पालने के झंझट में नहीं पड़ना चाहती, भले ही मादा व्हेलों का वह कितना ही गुलाम बनी रहती हो और बड़ी घुमक्कड़ होने के नाते वह अपने गुमनाम बच्चे समूची दुनिया में फैलाती रहती है। हर बच्चा विदेशी होता है। काफी दिनों में जब यौवन ढल जाता है, जब उम्र का प्रभाव उस पर अपना आतंक जमा लेता है, जब उसके अंग शिथिल हो जाते हैं; संक्षेप में जब उस महान तुर्क की शक्ति हर तरफ से क्षीण होने लगती है तब रखैलों के प्रति प्रेम और उमंग समाप्त होकर एकान्तवास व शान्तिमय जीवन के प्रति आकर्षण जागता है और हमारा यह ओटोमैन नपुंसकता, पश्चात्ताप और उपदेशक की ज़िन्दगी बिताते हुए कसमें खा-खाकर हरम को त्याग देता है और एक एकान्त प्रवासी की भांति आत्मा की शान्ति के हेतु प्रार्थना करता हुआ तथा अपने नौजवान जलमच्छों को यौवन की भूलों के प्रति सतर्क करता हुआ सर्वोच्च शिखर की ओर चल देता है।

चूंकि इन मछुओं के द्वारा यह हरम स्कूल (झुंड) कहलाता है, इसलिए उस स्कूल का मालिक या मास्टर कायदे से झुंड का मालिक (स्कूल मास्टर) कहलाता है। ऊपर से देखने में यह बात चाहे जितनी व्यंगात्मक लगे कि एक बार स्वयं स्कूल जाने के बाद वह वहां जो कुछ सीखता है उसके गुण को अपनाने के स्थान पर उसकी मजाक का कारण बनता है। उसका यह स्कूल-मास्टर नाम उस हरम से ही ईजाद हुआ है लेकिन लगता है कि जिस पहले आदमी ने इस ओटोमैन व्हेल का नाम स्कूल मास्टर रखा था उसने निश्चित ही 'वेडाक' के संस्मरणों को पढ़ा होगा और समझा होगा कि फ्रांस के देहातों

का वह स्कूल मास्टर अपनी नौजवानी में कैसा था और उसके वे गूढ़ पाठ कैसे थे जो वह अपने विद्यार्थियों को पढ़ाया करता था।

जिस प्रकार स्कूल मास्टर व्हेल बुढ़ापे में एकान्तवास करती और संन्यास ले लेती है, उसी प्रकार अन्य स्पर्म व्हेलें भी करती हैं। लगभग सारे संसार में अकेले रहने वाली व्हेल बूढ़ी ही होती है। बड़ी लम्बी व पकी दाढ़ी वाले डेनियल बून की तरह प्रकृति के अलावा उसके पास कोई नहीं रहता और उस अथाह जलराशि को ही वह पत्नी रूप में अपने पास रखती है और उसकी वह बहुत अच्छी पत्नी होती भी है; भले ही वह अपने में अनगिनत भेदों को छिपाए रहती है।

जिन स्कूलों में तेज और ताक़तवर नर व्हेलें ही रहती हैं उनमें तथा हरम स्कूलों में बड़ा अन्तर होता है। जब कि मादा व्हेल प्राकृतिक रूप से डरपोक होती हैं; ये चालीस बोर के सांड—जैसा कि उन्हें पुकारा जाता है, जल मच्छों में सबसे बड़े लड़ाकू होते हैं और शिकार में बहुत खतरनाक सिद्ध होते हैं। हां, उन सफेद सिर वाली नर व्हेलों की बात जाने दीजिए जो दृढ़ प्रेत की तरह लड़ती हैं।

ये चालीस बोर के स्कूल, हरम स्कूलों से बड़े होते हैं। कालेज वाले ताजे लड़कों की तरह वे लड़ाई-झगड़ों, हंसी-मजाक, चालाकियों तथा आवारागर्दी के धन्धों से भरपूर रहती हैं, ठीक उसी तरह जैसे 'येल'[1] या 'हारवर्ड'[2] के छोकरों की उद्दण्डताओं की कोई जिम्मेदारी नहीं ले सकता। लेकिन बहुत जल्दी ही वे इन शैतानियों को छोड़कर अलग कहीं स्थिर हो जाती हैं और तीन चौथाई युवा स्थिति को पाने पर हरम में शामिल हो जाती हैं।

विभिन्न सेक्स के अन्तर के रूप में नर और मादा स्कूलों में दूसरा खास भेद भी होता है। अगर आप उदाहरण के लिए उस चालीस बोर वाले सांड पर हमला कीजिए तो उसके सब साथी उसे छोड़ जाएंगे। लेकिन अगर किसी हरम स्कूल के सदस्य पर वार कीजिए तो वे सब इकट्ठे हो जाएंगे और सबके सब अपनी जान झोंकने को तैयार रहेंगे।

---

**१-२. अमेरिका के दो विश्वविद्यालय।**

# ५२

अगर आप कभी पिकोड पर चढ़े होते और घूमते हुए गरारी के पास तक बढ़कर गए होते तो मेरा विश्वास है कि आपको एक ऐसी चीज दिखाई देती जो विचित्र और गूढ़ार्थ से भरी होती और आपको ताज्जुब में डाल देती। वह आपको पालों के बीच की पानी वाली छोटी नली से लम्बी-लम्बी बंधी मिलती। न वह व्हेल की खोपड़ी की बड़ी टंकी है; न उसके निचले जबड़े का लटकता हुआ हिस्सा; न उसकी सपाट और लम्बी पूंछ। ये कोई भी चीजें आपको इतने आश्चर्य में नहीं डालेंगी जितनी उस 'शंकु'[1] की एक झलक जिसका कोई चित्रण ही नहीं किया जा सकता और जो किसी भी केन्टुकी[2] वासी से लम्बी है और जड़ में लगभग एक फीट मोटी तथा 'क्वीकेग' की लकड़ी की 'योजो' की मूर्ति से अधिक काली। वह सचमुच ही एक मूर्ति है या पुराने जमाने की उसी तरह की कोई चीज। वैसी मूर्ति जो 'जूडिया' की रानी 'माशा' के गुप्त लता-कुंज में मिली थी और जिसकी पूजा करने के कारण उसके पुत्र शाह 'आसा' ने अपनी मां को राजसिंहासन से उतारकर उस मूर्ति को नष्ट कर दिया था और पहाड़ी नदी केडरन के पास घृणापूर्वक उसने उसको जलवा दिया था। यह विवरण इसी तरह शाहों की पहली किताब के पन्द्रहवें अध्याय में इसी कालिमा के रूप में वर्णित है।

किसी जहाजी को, जो 'मिन्सर' कहलाता है, देखिए—उसे उसके दो सहायक साथ लाते हैं और उसके सामने आने पर जैसा कि मछुए उसे पुकारते हैं उस ग्रैन्डिसाइमस से टकराने पर झुके कंधों वह ऐसे लड़खड़ाता है जैसे वह कोई ग्रेनै-डियर हो जो किसी मरे हुए सिपाही को लड़ाई के मैदान से ले आया हो। ऊपर वाली किलेबन्दी के डेक तक फैली हुई उस चीज को जब वह सीधे बढ़कर

---

१. शंकु (कोन)—ऐसी वस्तु जिसके ऊपर नोक हो और नीचे चौड़ा पेंदा।
२. केंटुकी—संयुक्त राज्य अमेरिका का एक राज्य।

देखता है तो उसे लगता है कि वह कोई काला चमड़ा है और अफ्रीका के किसी शिकारी को भारी सांप की खाल के रूप में मिल गई है। पतलून की एक टांग की तरह जब वह उसे हिलाता-डुलाता है और इतना खींचता है कि उसका व्यास दोहरा हो जाए तब अन्त में वह उसे टांग देता है। वह रस्सों पर सूखने के लिए उसे फैला देता है। जल्दी ही उसे उतार लिया जाता है। तब नोक की तरफ से लगभग तीन फुट काटकर दूसरे सिरे पर दो छेद करने के लिए दो टुकड़े काट लेने पर वह स्वयं उसे पहन लेता है। अब वह मिन्सर[1] स्वयं मूर्तिवत् बन जाता है; तब अपना काम करते समय वह खोल ही उसकी रक्षा करता है।

उसका काम होता है बर्तन में डालने के लिए बोटी के टुकड़े करना। यह विचित्र क्रिया एक विचित्र घोड़ेनुमा लकड़ी पर की जाती है और तब उस किले-बन्दी में रखे बड़े टब में जल्दी-जल्दी वे टुकड़े डाल दिए जाते हैं जैसे किसी वक्ता की मेज पर से काग़ज़ के पन्ने उड़ रहे हों। उस काले रंग में एक मंच पर रखे बाइबिल के पन्नों की तरह वे दिखाई देते हैं। उस समय वह मिन्सर लड़का एक 'आर्कबिशप' या पोप ही दिखाई देता है।[2]

# ५३

किसी भी व्हेल-जहाज़ से जो नावें लटकती रहती हैं उनके अलावा उसके 'ट्राई-वर्क्स'[3] को देखकर उसे दूर से ही पहचाना जा सकता है। जहाज़ की सम्पूर्णता में सन या जूट तथा लकड़ी को मिला-जुलाकर जो राजगीरी का काम इसमें होता है वह बड़ा बेढंगा और विचित्र-सा दिखाई देता है। ऐसा लगता है

१. बोटी के टुकड़े काटने वाला।
२. बाइबिल के पन्नों की तरह (बाइबिल के वर्कों की तरह)। मछुए मिन्सर के सामने चिल्लाते रहते हैं, उससे वह संभलकर काम करता है तथा जितना सम्भव है उतने पतले टुकड़े काटता है।
३. जहाज़ पर तेल पकाने का कारखाना।

कि किसी खेत से ईंटों का पूरा भट्टा लाकर जहाज के तख्तों पर रख दिया गया है।

आगे के मस्तूल और बीच वाले मुख्य मस्तूल के बीच में, जो डेक पर सबसे चौड़ी जगह होती है, वहीं यह कारखाना बना होता है। सबसे नीचे जो लकड़ी लगी होती है वह इतनी भारी व मजबूत रहती है कि ईंटों और गारे के बोझ को बर्दाश्त कर सकती है। वे दस फुट लम्बी और आठ फुट चौड़ी तथा पांच फुट मोटी होती हैं। इसकी नींव डेक के अन्दर नहीं होती, बल्कि ईंटें चारों तरफ लोहे से जकड़ी रहती हैं और लोहे के कब्जे लकड़ी में कसे रहते हैं। इसके किनारों की दीवारों के चारों ओर लकड़ी का घेरा रहता है और ऊपर चोटी पर जैसे ढलवां द्वार-सा दिखाई देता है जिस पर लकड़ी जड़ी होती है। इस द्वार को दूर हटाने पर दो बड़े-बड़े तेल पकाने के बर्तन दिखाई देंगे, जिनमें हरेक में काफ़ी पीपे तेल आ सकता है। जब इनका इस्तेमाल नहीं होता तो ये बेहद साफ रखे जाते हैं। सोपस्टोन[1] तथा बालू से उनमें पालिश की जाती है और वे अन्दर से चांदी के मदिरा-पात्रों की तरह चमकते हैं। रात के पहरे के समय कोई मछुआ इसमें रेंग जाता है, और गुड़मुड़ी बनकर सोता रहता है।

सामने की ओर लकड़ी का तख्ता हटाने पर लोहे की भट्टी का मुंह दिखाई देता है। ये दो होती हैं और दोनों के दरवाज़ों पर लोहे के भारी ढक्कन लगे होते हैं। डेक पर आग का असर न हो, इसके लिए भट्ठी में विशेष प्रबन्ध रहता है।

इस समय रात का नौ बज रहा था जबकि पिकोड के तेल-कारखाने का काम, इस यात्रा में पहली बार प्रारम्भ किया गया। उस कार्य का निरीक्षण करने की ज़िम्मेदारी स्टब पर थी।

"सब तैयार है? तो फिर दरवाज़ा हटाओ। ऐ रसोइए! 'भट्टी' में आग जलाओ।" वह बोला।

पहले कुछ समय के लिए ट्राई-वर्क्स में लकड़ी इस्तेमाल की जाती है। उसके बाद तेल की आग को तेज़ी पकड़ाने भर के लिए लकड़ी इस्तेमाल होती है। एक प्रकार से एक बार आग जलाने के बाद बोटी के टुकड़े जैसे अपने आप जलते हैं। व्हेल में इतना तेल होता है कि वह स्वतः ही ईंधन का काम करती है और

---

१. सेलखड़ी।

उसकी चर्बी जलती रहती है। व्हेल के जलने का धुंआ भी बहुत भयानक होता है जिसको सांस के साथ खींचना अधिक दुःखदायी होता है किन्तु उसे खींचना ही पड़ता है क्योंकि उसीके बीच रहना है। उसमें उसी प्रकार की गन्ध होती है जैसी हिन्दुओं के यहां श्मशान घाट में लाश जलने से उठती रहती है। वह गंध ऐसी होती है जैसे खुदा के यहां आखिरी फ़ैसला वाले दिन बाईं तरफ़ की भीड़, जिसको नर्क मिलने वाला है।

अस्तु, आधी रात तक कारखाने का काम अपनी पूरी गति पर था। हम लोग घेरे के बाहर हो गए थे। पाल तने हुए थे; ताजी हवा चल रही थी और उस अथाह सागर में चारों ओर गहरा अंधेरा छाया हुआ था। आग की लपटों से लाल रोशनी चमक रही थी, जिसकी लौ बीच-बीच में उठती थी और रस्सों के आगे के हर हिस्से को प्रकाशित कर देती थी। उस समय वह यूनान के प्रसिद्ध अग्निकांड की भांति दिख रही थी। वह जलता हुआ जहाज उत्साहपूर्वक आगे बढ़ता चला जा रहा था, जैसे बदला लेने की भावना से किसी लक्ष्य की ओर बढ़ रहा हो। उन भारी हाइड्रियाट तथा कैनारी द्वीप के अर्ध रात्रि के बन्दरगाहों के ऊंचे स्थानों तथा गन्धक से लदी पुलियों से जैसे आग की लपटें उठ रही थीं और उन्होंने उस तुर्की जलपोत को होलिका-दहन में लपेट लिया हो।

उस कारखाने के ऊपर के ढक्कन को हटा लेने से जैसे एक बड़ी भट्ठी नजर आने लगी। इनके आगे तातारी शक्ल के वे नास्तिक हारपूनर खड़े थे जो व्हेल-जहाज़ को चलाने वाले समझे जाते हैं। वे तब तक आग में ईंधन डालते तथा तेल के बर्तनों को चलाते रहे जब तक आग की लपटें निकलकर उनके पैरों को न छूने लगीं और काले धुंए की धुमेड़ें ढक्कनों से बाहर न आईं। जलता हुआ धुंआ चारों तरफ फैलने लगा। जहाज की हर ऊंचाई के साथ-साथ एक ऊंचाई जलते हुए तेल की भी दिखाई दे रही थी और लग रहा था कि वह उछलकर उनके चेहरों पर पड़ना चाहती है। उस भट्टी के मुंह के दूसरी ओर काफी दूरी पर जहाज चलाने वाली चर्खी थी। वह एक प्रकार से जहाजी सोफ़े का काम कर रही थी। यहीं पर पहरा लगा हुआ था जिसके लोग तब तक आग की लपटों को देखते रहे जब तक उनके सर नहीं जलने लगे। उनकी दबी आकृतियों पर धुएं और मिठास का गहरा प्रभाव दिखाई दे रहा था तथा उनकी

घनी दाढ़ियों और उन खूंख़्वार लोगों के दांतों की चमक से लग रहा था कि कारख़ाना अपनी पूरी तेजी में काम कर रहा है। वे लोग अपने पापमय अनुभव सुना रहे थे। भयानक कुकर्मों की कहानियां मौज ले-लेकर सुनाई जा रही थीं। भट्ठी की लौ की तेज़ी की तरह उनकी बेहूदी हंसी उभर रही थी। अपने भारी और नोकीले कांटों तथा चमचों को लिए हारपूनर इधर-उधर इठला रहे थे। हवा तेजी से बह रही थी। समुद्र का पानी उछल रहा था। जहाज़ चरमराता हुआ पानी पर उछल रहा था। वह अपने आगे के लाल रंग के नोकीले हिस्से को समुद्र तथा रात की अंधियारी में बढ़ाता चला जा रहा था। वह अपने मुंह में सफेद हड्डी को किटकिटाकर दावे हुआ था तथा अपने चारों ओर पानी के झाग उछालता जाता था। पिकोड असभ्य और बर्बर लोगों को साथ लिए, आग से लदा और एक लाश को जलाता हुआ, काले अन्धकार को चीरता चला जा रहा था और अपने कमांडर की एकान्तवासी आत्मा का मूर्तिमान प्रतीक मालूम पड़ रहा था।

उस समुद्र के ऊपर जलती आग को ले चलने वाला जहाज़ उस समय मुझे ऐसा अजीब लग रहा था कि जहाज़ के सूत्र-संचालक के सहारे मैं चुपचाप खड़ा का खड़ा रहा। उस सन्नाटे और एकांत में मैं दूसरे लोगों की लाली, उनका पागलपन साथ ही उनकी भयंकरता को भली प्रकार देख रहा था। उस धुंए और आग में जैसे एक पिशाच की मूर्ति बारम्बार मेरे सामने नाच जाती थी। तभी मुझे उस अर्धरात्रि के वातावरण में नींद की उदासी ने जकड़ लिया।

परन्तु वह रात्रि विशेष रूप से बड़ी अनोखी (और अवर्णनीय) लग रही थी। खड़े-खड़े एक हलकी नींद का झोंका ले लेने के बाद जैसे मैं अपने हृदय में ऐसी भावना का अनुभव कर रहा था जो बहुत अनुचित हो। जबड़े की हड्डी ने मेरी तरफ की जगह घेर ली थी क्योंकि वह उसी तरफ लटक रही थी। मेरे कानों में पालों के हिलने-डुलने की सनसनाहट गूंज रही थी जिन्होंने उस समय हवा में हिलना प्रारम्भ ही किया था। मैं सोच रहा था जैसे मेरी आंखें खुली हुई हैं। मुझे कुछ आधा-सा होश हो रहा था कि मैं अपनी उंगलियों को जैसे मशीन की तरह चलाकर ढक्कनों पर टिकाए हुए हूं तथा आगे बढ़ाता जा रहा हूं। किन्तु इस सबके बाद मैंने अनुभव किया कि मेरे साम  कम्पास नहीं है, जिससे मैं जहाज़ की दिशा का पता लगा सकूं। वैसे मैं सोच रहा था कि मैं

एक मिनट पहले ही उसके 'डायल' को देख रहा था क्योंकि उस पर तेज़ लैम्प की रोशनी चमक रही थी। एक गहरे अंधेरे के अतिरिक्त मुझे अपने सामने कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था। वह अंधेरा कभी-कभी लपटों की लाली से और डरावना दिखाई देता था। सर्वाधिक मुझे लग रहा था कि जिस तेज़ चलने वाली वस्तु के ऊपर मैं खड़ा हूं वह किसी बन्दरगाह की ओर नहीं बढ़ रही है बल्कि पीछे छूट जाने वाले सभी बन्दरगाहों से दूर जा रही है। मौत की एक तीखी और उलझी हुई-सी छाया मेरे मन में पैठ रही थी। कांपते हुए, मेरा हाथ हैंडिल पर जा पड़ा और एक सनक-सी मन में आई कि किसी जादू से हैंडिल मुझसे दूर हट गया है। 'मेरे खुदा! यह मुझको क्या हो गया है?' मैंने सोचा। लीजिए। नींद में मैं घूम गया हूं और मेरा मुंह जहाज़ के पिछले हिस्से की तरफ़ है और पीठ जहाज़ के अग्रभाग तथा कम्पास की तरफ़। एक मिनट में मैं घूमा और ठीक समय पर मैंने जहाज़ को हवा में उड़ने और उलटने से बचा लिया। रात्रि के डरावनेपन के उस बचाव से मैं बहुत प्रसन्न हो रहा था कि कोई भी दुःखद घटना होने से बच गई।

ऐ इंसान! देर तक आग के सामने मत देखो! पतवार पर अपना हाथ रखकर कभी ख़्वाब मत देखो! कम्पास की तरफ अपनी पीठ कभी मत करना; हैंडिल के पहले घुमाव का ठीक से अनुभव करो! उस नकली आग का कभी विश्वास मत करो जो अपनी लाली में प्रत्येक वस्तु को भयावना बना देती है। कल सुबह, प्राकृतिक सूर्य की रोशनी में आसमान चमकेगा और आग की चमकती लपटों में जो कुछ राक्षसी लगता है वह प्रातःकाल कुछ दूसरी प्रकार का दीखेगा; एक शान्तिदायक सन्तोष। वह चमकदार, सुनहला और खिल-खिलाता सूर्य ही असली लैम्प अथवा प्रकाश है, शेष सब प्रकार की रोशनी झूठी है।

यही क्यों, चन्द्रमा के नीचे जो 'वर्जीनिया डिस्मल स्वाम्प[1]', रोम का पतित 'कम्पाना'[2], और वह फैला हुआ सहारा रेगिस्तान है—उसे भी सूर्य प्रकाशित करता है। पृथ्वी के दो-तिहाई हिस्से में फैले हुए तथा एक प्रकार से पृथ्वी का

---

१. वर्जीनिया प्रदेश की कष्टदायक दलदल।

२. उजाड़ और अस्वास्थ्यकर स्थान।

अंधियारा हिस्सा समुद्र भी उससे प्रकाशित होता है। इसलिए उस नश्वर मनुष्य में सचाई नहीं है जिसके जीवन में दुःख की अपेक्षा सुख अधिक है; उस मनुष्य में सत्यता है नहीं; न वह पूर्ण है। उसके लिए भी वे ही पुस्तकें हैं। 'मैन आफ़ लारोज'[1] वाला इंसान ही सही इंसान है और 'सोलोमन' की किताब ही सच्ची किताब है। 'एक्लेस्टियास्टीज'[2] का लोहा ही दुःख का अच्छा तपा हुआ लोहा है। 'सब मिथ्या है।' सब कुछ। इस लोभी संसार ने अभी भी अधार्मिक सोलोमन के गुणों को नहीं अपनाया है। जो अस्पतालों और जेलों को धोखा देता है, और कब्रिस्तान के सामने से तेज भागता है तथा नर्क के स्थान पर ऑपेरा या नृत्य स्थानों की ही बातचीत करता है, वही 'काउपर'[3], 'यंग'[4], 'पास्कल'[5], 'रूसो'[6], कहलाता है जबकि बेचारे वे सभी बीमार आदमी थे। वे अपने चिन्ताओं से मुक्त जीवन में 'रेबेले'[7] का ध्यान समझदारी की श्रेणी में करके खुश होते थे। उनकी यह समझ ही में नहीं आता था कि इंसान सिर्फ कब्र के पत्थरों पर बैठने के लिए ही उपयुक्त है। वे उस असहाय एवं विलक्षण सोलोमन के हृदय परिवर्तन का तिरस्कार करते हैं।

परन्तु सोलोमन भी कहता है कि 'वह इंसान जो समझदारी से दूर होकर चकराया करता है हमेशा (अपने जीवनकाल में भी) मरे हुए लोगों के समूह में ही बना रहेगा।' आग से बहुत अधिक मत लिपटो वर्ना वह तुम्हें अन्धा बना देगी, तुम्हें मार डालेगी, जैसे कुछ समय के लिए उसने मेरी वह हालत कर डाली थी। वेदना में बुद्धि है, लेकिन वह दुःख भी है जो पागलपन हो जाता है। परन्तु किन्हीं-किन्हीं आत्माओं में काट्सकिल[8] का गरुड़ भी रहता है जो

---

१. एक पुस्तक।
२. ईसाई धर्म की पुस्तक जिसमें विशेषतः सोलोमन का ज़िक्र है।
३. इंगलैंड का कवि।
४. इंगलैंड का उपन्यासकार।
५. फ्रान्स का दार्शनिक।
६. फ्रान्स का कलाकार।
७. फ्रान्स का लेखक।
८. न्यूयार्क का पहाड़ी प्रदेश।

काले से काले तथा तंग से तंग स्थानों में गोता मार सकता है और उसी भांति पंख फड़फड़ाकर बाहर आ सकता है तथा प्रकाश में विलीन हो सकता है। यही नहीं, यदि वह तंग घाटियों में पैठता भी है तो वे घाटियां पहाड़ों पर हैं और पहाड़ का गरुड़ अपनी नीची से नीची उड़ान में भी उस मैदानी पक्षी से बहुत ऊंचा रहता है जो उड़ते हुए भी नीचे ही हैं।

## ५४

"ऐ होय ! जहाज ! कोई सफेद व्हेल देखी है क्या ?" एक जहाज को इंगलैंड के झंडे फहराते हुए देखकर आहाब ने एक बार फिर जलपोत का स्वागत किया। मुंह में बिगुल लिए हुए वह अपने उठे हुए छोटे डेक पर खड़ा था और उसके हाथीदांत के पैर को आगन्तुक कप्तान ने देखकर स्थिति को समझ लिया था। वह कप्तान उस समय अपनी नाव के अगले हिस्से पर लापरवाही से आराम कर रहा था। वह काले रंग का मोटा-ताजा, अच्छे स्वभाव का सुन्दर व्यक्ति था। उसकी आयु साठ के आसपास थी और वह ढीले-ढाले कपड़े पहने था। वे नीले रंग के पाइलट-क्लाथ की मालाओं की तरह झूल रहे थे। किसी हुजार[1] के लबादे वाले कोट की बांह में बने कसीदे के काम की तरह ही उसकी एक खाली बांह बास्कट के बाहर झूल रही थी।

"क्या किसी सफेद व्हेल को देखा है ?"

"इसे देख रहे हो ?" कहते हुए उसने कुछ तहों को हटाकर एक स्पर्म व्हेल की हड्डी का सफेद हाथ दिखा दिया जो एक लकड़ी के हत्थे पर लगी हथौड़ी की तरह बना हुआ था।

"मेरी नाव ठीक करो !" डांडों को उतावलेपन में उछालते हुए आहाब चिल्लाया—"नीचे उतारने के लिए खड़े हो जाओ।"

एक मिनट से भी कम समय में वह और उसके साथी पानी में उतार दिए

---

१. जयजयकार करने वाला।

गए और वे जल्दी ही उस अजनबी जहाज के निकट पहुंच गए। यहां एक विचित्र उलझन उठ खड़ी हुई। उत्तेजना में आहाब यह भूल गया था कि अपना एक पैर चले जाने के बाद वह अपने जहाज के अलावा कभी दूसरे जहाज पर चढ़ा ही नहीं था। पिकोड में वह सब सुविधाएं प्राप्त थीं जो उसके लंगड़े पैर के लिए आवश्यक थीं इसलिए अपने पैर की कमी से उसे उस समय बहुत कठिनाई प्रतीत हो रही थी।

जैसा कि पहले कहा गया है कि तनिक-सी उलझन से आहाब गरम हो उठता था। वह उस समय भी आवेश में था। वास्तव में उस नए जहाज के दो अधिकारियों को देख-देखकर वह और भी बिगड़ रहा था, क्योंकि वे सीढ़ियों पर चढ़े हुए रस्सों को लटका रहे थे। वे पहले नहीं समझ पाए थे कि एक पैर का आदमी तो एक प्रकार से अपाहिज ही होता है और वह जहाज की सीढ़ियों पर नहीं चढ़ सकता। परन्तु यह परेशानी एक मिनट से अधिक नहीं रही क्योंकि नए कप्तान ने एक नजर में ही देख लिया और बोला—"मैं समझा! मैं समझा! भागो लड़को! रस्सा लटकाओ!"

सौभाग्य से उन लोगों ने एक-दो दिन पहले ही एक व्हेल पकड़ी थी और भारी रस्से अभी भी लटक रहे थे और साफ तथा सूखा हुआ 'ब्लबर-हुक' कोने में लगा हुआ था। आहाब के लिए यह तत्काल झुका दिया गया। उसने अपनी अकेली जांघ उसमें टिका दी। वह एक प्रकार से किसी लंगर की मुड़ी हुई नोक या सेब के पेड़ का खोखला तना-सा था। फौरन ही आहाब जहाज की किले-बन्दी पर चढ़ गया।

अपने हाथी दांत वाले हाथ को निस्संकोच स्वागत के लिए आगे बढ़ाते हुए नया कप्तान आगे पहुंचा तथा आहाब ने भी अपने हाथी दांत वाले पैर को फैलाते हुए जलसिंह की भांति हिनहिनाते हुए ऊंचे स्वर में कहा, "बड़ी खुशी हुई आपसे मिलकर! एक हाथ जो कभी मुड़ नहीं सकता और पैर जो दौड़ नहीं सकता। आपने सफेद व्हेल कहां देखी?—कितने दिन हुए?"

"सफेद व्हेल" उस अंगरेज ने पूर्व की ओर संकेत करते हुए कहा। "वहां पिछले मौसम में लाइन[1] पर।" वह दूरबीन की तरह अपने हाथी दांत वाले हाथ को आगे किए हुए था।

---

१. निश्चित मार्ग।

"और तब क्या उसने यह हाथ काट लिया ?" अंगरेज के कंधों का सहारा लेते हुए आहाब ने प्रश्न किया।

"हां, कम से कम वही इसका कारण थी। और यह पैर ?"

"मुझे पूरी कहानी सुनाइए" आहाब बोला—"यह कैसे हुआ ?"

"जीवन में मेरा वह पहला अवसर था जब मैंने लाइन से अलग शिकार किया," अंगरेज ने प्रारम्भ किया। "उस समय सफेद व्हेल की बावत मैं नहीं जानता था। हां, तो एक दिन चार या पांच व्हेलों के एक झुंड के लिए हम पानी में उतरे। मेरी नाव उनमें से एक व्हेल से अटक गई और वह उसे खींचती ही चली गई। मेरी नाव के नाविक पीछे की ओर बैठे रहे। तभी समुद्र के अन्दर से एक भारी व्हेल मछली आगे बढ़ आई। उसका सर और कूबड़ दूध की तरह सफेद था। बाकी सब कौए के पैर के रंग का था।

"वही ! वही !" अपनी रुकी सांस को बाहर फेंकते हुए आहाब अचानक चिल्ला उठा।

"उसके आगे वाले सुफने पर हारपून गड़े हुए थे।"

"हां, हां—वे मेरे थे—वह मेरा कांटा था," आहाब ने प्रसन्नतापूर्वक कहा—"तब फिर !"

"मुझे कहने तो दीजिए," मुस्कराते हुए अंगरेज ने कहा। "सफेद सर और तने वाला व्हेलों का यह परदादा झाग उड़ाता हुआ झुंड में घुस गया और हमारी तेज रफ्तार के साथ दौड़ने लगा।"

"हूं, मैं समझा। उसे अलग करना चाहता था; मछली को आजाद करना चाहता था—यह उसकी पुरानी तरकीब है—मैं उसे जानता हूं।"

"वास्तव में हुआ क्या," एक हाथ वाले कप्तान ने कहना प्रारम्भ किया, "मैं ठीक से तो नहीं बता सकता किन्तु लाइन[1] को काटते हुए उसका दांत हिलग गया और वह किसी प्रकार पकड़ गई, परन्तु उसका पता हमें उस समय नहीं लगा, इसलिए बाद में जब हमने लाइन खींची तो हम उछलकर उसके कूबड़ पर आ पड़े। दूसरी सब व्हेलें झाग उछालती हुई हवा की तरफ बढ़ गईं। यह देखकर कि परिस्थिति क्या है और वह कितनी भारी और विशालकाय व्हेल

---

१. रस्सा।

है—श्रीमान् ! जीवन में इतनी शानदार और इतनी बड़ी व्हेल मैंने पहले कभी नहीं देखी थी और तब मैंने उसके भभकते हुए गुस्से को देखकर भी उसे पकड़ना चाहा। साथ ही यह सोचकर कि वह आधी झूलती लाइन या तो ढीली हो जाएगी या वह दांत ही उखड़ आएगा (क्योंकि व्हेल लाइन[1] पर चलने के कारण मेरे पास अधिक जहाजी थे), अस्तु वह सब देखकर, मैं अपने पहले मेट की नाव पह उछल गया। वह श्री माउन्टाप था। (यहां पर उसने आहाब का परिचय माउन्टाप से और माउन्टाप का परिचय आहाब से कराया) हां, तो जैसा मैं कह रहा था मैं माउन्टाप की नाव पर उछल गया और आप समझिए कि मैंने पहला हारपून उस बुजुर्ग व्हेल पर फेंक दिया। लेकिन, ऐ खुदा ! महोदय, समझ लीजिए, दिल और दिमाग़ थामकर सुनिए कि अगले ही मिनट, पलक मारते ही जैसे मैं अन्धा हो गया—जैसे दोनों आंखें बाहर आ गईं। सब तरफ मौत का-सा काला-काला धुआं फैला हुआ था, साथ ही व्हेल की पूंछ संगमरमर के खम्भे की तरह हवा में सीधी खड़ी थी। उस समय सबके आगे-पीछे भागने से तो कुछ बन नहीं सकता था परन्तु जैसे चमकते सूरज के प्रकाश में दिन दोपहरी मैं ढूंढ़ता घूमता हूं, उसी तरह मैंने उसे अंधेरे में टटोलना शुरू किया और दूसरे हारपून को उछालने के लिए ढूंढ़ता रहा। एक 'लीमा' की मीनार की तरह पूंछ नीचे आ पड़ी और उसने खटाक से नाव को दो टुकड़ों में जैसे काट डाला। नाव के उन दो टुकड़ों में से हरेक छर्रों की तरह तितर-बितर हो गया। आगे धुआं और तने के पास वह नष्ट-भ्रष्ट नाव के टुकड़े जैसे धज्जी-धज्जी होकर बिखर रहे थे। हम लोग सब उठाकर पानी में फेंक दिए गए थे। अधिक भयानक परिस्थिति को बचाने के ख्याल से मैंने उस हारपून की लाठी को पकड़ लिया जो व्हेल के घुसा हुआ था और उसी से लटक गया था। परन्तु लहरें फेंकते हुए समुद्र ने मुझे ही उठाकर फेंक दिया और मछली सामने से एक करा वार खाकर बिजली की कौंध की-सी तेज़ी में पानी के अन्दर घुस गई। तब उस दूसरे लोहे के दांतुए मेरे यहां (अपने दूसरे हाथ से कटे हाथ को कन्धे के नीचे से दिखलाते हुए) छिद गए। मेरा हाथ जैसे गायब हो गया और मैं पानी में ऊपर तैर गया। कहानी का शेषांश डाक्टर कैप्टेन बंगर

---

१. व्हेल का शिकार करने के लिए समुद्र का एक निश्चित मार्ग।

बताएंगे। जहाज़ के सर्जन डाक्टर बंगर, मेरा छोकरा—कैप्टेन। हां बंगर! बताओ तो।"

पास ही खड़े एक भद्र पुरुष, जो अपने रौब का प्रदर्शन कर रहे थे, आगे बढ़े। उनका चेहरा बहुत गोल परंतु काफ़ी गंभीर था। वह मुरझाए-से नीले रंग की ऊनी फ्राक या कमीज पहने हुए थे और पैबंद लगा पाजामा। वह अपने एक हाथ में फेंकने वाला कांटा और दूसरे में गोलियों का डब्बा लिए हुए थे और बीच-बीच में दोनों लूले-लंगडों के हाथी-दांत के पैर व हाथ को ग़ौर से देख लेते थे। परंतु अपने अधिकारी द्वारा अपना परिचय आहाब को दिए जाने के बाद वे विनम्रतापूर्वक झुक गए और अपने कप्तान के कथनानुसार उन्होंने कहना प्रारंभ किया :

"वह बड़ा डरावना और खराब घाव था", व्हेल-सर्जन ने कहने लगा, "तब मेरी सलाह पर इन कैप्टेन बूमर ने 'सैमी' को खड़ा कर लिया—"

"मेरे जहाज का नाम सेमुएल एन्डर्बी है", एक हाथ वाले कैप्टेन ने बीच में टोककर आहाब से कहा—"हां, लड़के! शुरू करो।"

"लाइन के गरम मौसम से बचने के लिए सैमी उत्तर की ओर खड़ा था। लेकिन उससे कोई फायदा नहीं हुआ—जो कुछ भी कर सकता था, मैंने किया। इनके साथ मैं सारी-सारी रात बैठा रहा। खाने के मामले में मैं बहुत सख्त था।"

"हां, बहुत सख्त!" मरीज ने जोड़ दिया; तब अचानक अपनी आवाज बदलते हुए उसने कहा—"हर रात को यह तब तक मेरे साथ 'रम'[1] पीता था जब तक घाव पर पट्टी न बांध दे और मुझे सोने न भेज दे। ओह! सचमुच यह मेरे साथ बैठा रहता था और मेरे खाने के मामले में बहुत सख्त था। ओह! बड़ी निगरानी रखने वाला और डाक्टर बंगर खाने-पीने के मामले में बहुत सख्त है। (बंगर, तुम कुत्ते! हंसो! हंसते क्यों नहीं? तुम्हें मालूम है कि तुम एक क़ीमती और खुशमिजाज पाजी हो।) लेकिन लड़के! मुझ पर मेहरबानी करो, नहीं, तुम तो मुझे मार डालोगे।"

---

१. शराब

"आदरणीय महोदय ! मेरे कप्तान ! आपको इसके पहले कुछ उपदेश दे देना चाहिए था"—परेशान न होने वाले सुन्दर बंगर ने आहाब की ओर थोड़ा झुककर कहा—"क्योंकि कभी-कभी वह बड़ी दिल्लगी भी करता है। इस तरह की चालाकी से भरी कहानियों के ताने-बाने हमको बहुत बार बुनने पड़ते हैं। लेकिन मैं यह भी बताता हूं कि मैं—जैक बंगर, फ्रांस के एक कथन की भांति, चलते-चलते यों ही कहता हूं कि पहले मैं एक पादरी था और मैं कभी पीता नहीं हूं। मैं एक संयमी आदमी हूं—"

"पानी !" कैप्टेन चिल्लाया—"यह पानी कभी नहीं पीता। उससे इसको दौरे आते हैं। ताज़े पानी से इसको हाइड्रोफोबिया[1] हो जाता है; लेकिन ठीक है, हाथ वाली कहानी सुनाते रहो।"

"हां, हो सकता है", सर्जन ने उदासी में कहा—"कैप्टेन बूमर की इस दिल्लगी के पहले मैं कह रहा था कि मेरे सब प्रयत्नों के बाद भी घाव बराबर बिगड़ता गया। वास्तव में वह बहुत गहरा घाव था जिसे किसी सर्जन ने शायद ही कभी देखा हो। और वह दो फुट कुछ इंच लंबा था। मैंने उसे नापा था। संक्षेप में, वह काला पड़ गया था। क्या खतरा था, इसका मुझे पता था। वही हुआ भी। लेकिन उस हाथीदांत के हाथ को मैंने वहां नहीं लगाया है। यह नियम के विरुद्ध था"—उस ओर संकेत करते हुए वह बोला—"वह कैप्टेन का काम है, मेरा नहीं। वह उसने बढ़ई से बनवाया था और उसके आगे किसी की खोपड़ी पर जमाने के लिए एक हथौड़ी लगवाई थी। एक बार उसने मुझ पर भी उसके प्रहार का तजुर्बा किया था। कभी-कभी यह बहुत उत्तेजित हो उठता है। महोदय ! आप इस निशान को देख रहे हैं।"—अपने टोप को हटाकर तथा बालों को इधर-उधर करके उसने अपनी खोपड़ी में एक गड्ढा दिखाया। वह कोई चोट का निशान नहीं था, न ही यह पता चलता था कि वहां कभी कोई घाव रहा होगा—"हां, तो यह कैसे हुआ, कैप्टेन बताएंगे; ये जानते हैं।"

"नहीं, मैं नहीं जानता", कैप्टेन ने कहा—"परंतु यह इसकी मां ने किया है। वह ऐसे ही पैदा हुआ था। ओह, तुम पूरे बदमाश, तुम—तुम बंगर ! क्या

---

१. कुत्ते के काटने से होने वाला पागलपन, जिसमें आदमी पानी देखने तक से घबराता है।

पानी की दुनिया में इसके पहले कभी भी ऐसा बंगर रहा था ? बंगर ! जब तुम मरना तो अचार या मुरब्बा होकर मरना, तुम कुत्ते ! तुम पाजी ! जिससे तुम्हें हमेशा सम्हालकर रखा जाए।"

"सफेद व्हेल का क्या हुआ ?" आहाब चिल्लाया जो अधीरतापूर्वक उन दो अंगरेजों के बीच का तमाशा देखकर कुड़कुड़ा रहा था।

"ओह !" एक हाथ वाले कप्तान ने कहा—"ओह ! हां ! ठीक है। उसकी उस आवाज़ के बाद हमने उसे बहुत देर तक नहीं देखा। सचमुच मुझे पहले पता ही नहीं था कि वह किस प्रकार की व्हेल थी जिसने मेरे साथ इतनी चालाकी खेली और जब तक हम लाइन पर नहीं आ गए तथा हमने कुछ लोगों से सुन नहीं लिया कि वह 'मोबी डिक' थी— तब तक मैं नहीं समझा कि वह वही थी।"

"क्या वह तुम्हें दुबारा दिखाई दी ?"

"दो बार।"

"लेकिन पकड़ नहीं सके ?"

"हमने पकड़ने की कोशिश नहीं की; क्या एक हाथ काफी नहीं था ? इस दूसरे हाथ के बिना मैं क्या कर सकता हूं ? साथ ही मेरा ख्याल है कि 'मोबी डिक' काटती नहीं निगलती है।"

"हां तो", बंगर ने बीच में टोककर कहा—"चुग्गा डालने या फांसने के लिए तुम उसे अपना बायां हाथ दो तो दाहिना मिल जाएगा। जनाब ! आप लोग जानते हैं"—बहुत गंभीरता से तथा प्रत्येक कैप्टेन की ओर बारी-बारी से सर झुकाकर उसने कहा—"भाइयो ! क्या आप लोग जानते हैं कि परमात्मा ने व्हेल के पाचन क्रिया वाले अंग कुछ ऐसे ऊटपटांग बनाए हैं कि वह आदमी का एक हाथ भी पूरी तरह नहीं पचा सकती ? यह बात ये महाशय भी जानते हैं ? इसलिए सफेद व्हेल के खिलाफ जो तुम्हारी शिकायत है—वह है उसका बेढंगापन। क्योंकि उसने एक भी अंग को निगलने का कभी प्रयत्न नहीं किया; हां, वह पटेबाजी के हाथ दिखाकर केवल बनावटी दिखावे में डराना चाहती थी। लेकिन कभी-कभी वह उस तरह के बाजीगर का-सा तमाशा जरूर दिखाती है जैसे एक मरीज का इलाज मैंने लंका में किया था और जो यह विश्वास दिलाता था कि वह बड़े-बड़े चाकू निगल जाता है। एक बार ऐसा

हुआ कि एक चाकू उसके अंदर एक साल या उससे भी ज्यादा अटका रहा। तब मैंने उसे क़ै करने की दवा दी; और आप समझ रहे हैं, उसने छोटे-छोटे टुकड़ों में वह उगल दिया। उस बड़े चाकू के हज़म हो जाने का कोई ढंग नहीं था फिर भी वह शरीर की मशीन में चिपका रहा। हां, कैप्टेन बूमर ! अगर आप जल्दी करें और अपने पहले हाथ की अच्छी क़ब्र बनाने के लिए दूसरा हाथ त्याग करें तब वह हाथ तो आपका है। केवल उस व्हेल को आप जल्दी ही दूसरा मौक़ा दे दें। इतना काफ़ी है।"

"नहीं, शुक्रिया बंगर", अंगरेज़ कैप्टेन ने कहा—"जो हाथ वह ले गई, उसके लिए उसका स्वागत है, क्योंकि उसमें मैं कुछ कर न सका और उसको उस समय तक मैं जानता भी नहीं था; लेकिन माफ कीजिए, अब दूसरे के लिए कोई अवसर नहीं है। मुझे अब सफ़ेद व्हेलें नहीं चाहिएं। मैं उसके लिए केवल एक बार पानी में उतरा और उससे मुझे पूरा संतोष प्राप्त हो गया। मैं यह जानता हूं कि उसको मारना बहुत बहादुरी का काम होगा, और उसमें एक पूरा जहाज़ भरकर कीमती तेल भी है लेकिन जनाब, सुन लीजिए कि वह अकेले रहे, यही अच्छा है। कैप्टेन ! क्या आप ऐसा नहीं सोचते ?" हाथीदांत के पैर की ओर देखते हुए वह बोला।

"ऐसा है। लेकिन उसका पीछा तो किया ही जाएगा। उसे अकेले रख छोड़ने से क्या फायदा। जो थोड़ा भी आकर्षित नहीं करती उससे वह शापित वस्तु कुछ तो अच्छी है। वह एक चुम्बक है ! अंतिम बार आपने देखा, उसको कितना समय हो गया ? वह किस तरफ़ जा रही थी ?"

"मेरी आत्मा को आशीर्वाद दो और उस धोखेबाज राक्षस को शाप दो", बंगर चिल्लाया और डग भरता हुआ आहाब की ओर बढ़ गया और अजीब ढंग से कुत्ते की तरह उसको सूंघने लगा—"इस आदमी का खून—ज़रा थर्मामीटर तो लाना।—यह तो जैसे खौलने वाला है !—इसकी नब्ज से जैसे तख्ते हिले जा रहे हैं।—जनाब !"—एक लान्सेट[1] जेब से निकालकर उसने आहाब के हाथ की ओर बढ़ा दिया।

"ठहरो !" उसे रस्सों की ओर ढकेलते हुए आहाब चीख पड़ा—"नाव ठीक करो ! किस तरफ़ गई है वह ?"

---

१. ऑपरेशन करने की दोहरी छुरी, जिसे सर्जन काम में लाता है।

"ऐ खुदा !" अंगरेज कैप्टेन बोल उठा जिससे वह प्रश्न किया गया था। "मामला क्या है ? मेरा ध्यान है वह पूर्व की ओर जा रही थी।—लेकिन क्या तुम्हारा कप्तान पागल है ?" फेडैलाह से फुसफुसाकर उसने कहा।

परंतु फेडैलाह अपने ओठों पर उंगली टिकाकर रस्सों की ओर नाव मोड़ने वाली पतवार को संभालने के लिए सरक गया और आहाब ने लटकते हुए रस्से को खींचकर जहाज के मछुओं से नीचे उतारने का हुक्म दिया।

एक मिनट में ही वह नाव के पीछे खड़ा था और 'मनीला' के मछुए पतवारें चला रहे थे। उसे विदा देने की अंगरेज कप्तान ने बेकार चेष्टा की। आगंतुक जहाज की ओर पीठ करके तथा अपने चेहरे की चमक को जैसे स्वयं ही निहारते हुए आहाब पिकोड के पास पहुंचने तक खड़ा ही रहा।

## ५५

जिस तरह एकाएक आहाब ने लन्दन के 'सैमुएल एन्डर्बी' को छोड़ा, उससे उसके ही शरीर को चोट पहुंची। वह कुछ इतनी तेजी से अपनी नाव पर उतरा कि उसके हाथीदांत के पैर पर ऐसा झटका लगा कि वह टूटने-टूटने को हो आया। फिर अपने जहाज पर, अपनी जगह पहुंचकर उसने इतनी तेजी से घूमकर मल्लाहों को कुछ आदेश दिए (ये आदेश हमेशा इसी बारे में होते थे कि वे पतवारें ठीक से नहीं चलाते) कि पहले ही झटका खाए हाथीदांत को ऐसी मरोड़ लगी कि बाहर से देखने पर वह पूरा का पूरा और ठीक तो रहा किन्तु आहाब को लगा कि अब उस पर पूरा भरोसा नहीं किया जा सकता।

ऐसा बहुत बार होता था कि अपनी लापरवाही और दबंगपन के बावजूद जिस मरी हुई हड्डी पर उसके शरीर का आधा हिस्सा टिका था उसके प्रति वह विशेष सावधान रहता था, क्योंकि नन्तुकेत से चलने के कुछ दिन पहले वह जमीन पर बेहोश पड़ा पाया गया था। किसी अज्ञात दुर्घटना से उसकी हाथीदांत की हड्डी इस तरह अपनी जगह से हट गई थी ( जिसका कारण प्रत्यक्षतः नहीं मालूम था ) कि उसका पैर भूमि पर फिसल गया था जिससे उसके काफ़ी चोट आई और इस हड्डी ने उसके घाव कर दिए। उससे उसे बहुत समय तक कष्ट

रहा। और काफ़ी समय बाद ही यह घाव भर सका।

इस समय भी उसके एकान्तवासी दिमाग़ में यही बात आ रही थी कि उस-की वर्तमान पीड़ा का एकमात्र कारण था पिछली चोट। आहाब सोचता था कि जिस प्रकार झाड़ी में बहुत जहरीला सांप और मीठे गीत गाने वाली चिड़िया—दोनों ही अपनी-अपनी जाति को बढ़ाते रहते हैं, उसी प्रकार कोई पीड़ाप्रद घटना दूसरी पीड़ाप्रद घटना को जन्म अवश्य देती है। और वह भी समान रूप से नहीं, आहाब सोच रहा था; क्योंकि दुःख की आगे और पीछे की पीढ़ियां सुख की आगे और पीछे की पीढ़ियों से कहीं अधिक लम्बी होती हैं। क्योंकि देखिए; किन्हीं नियमित धार्मिक उपदेशों का परिणाम है कि इस संसार के सुखों का परिणाम दूसरी दुनिया के लिए नहीं होता, बल्कि नर्क की यातना में ज़रा भी खुशी नसीब नहीं होती; इसके विपरीत इस जीवन के कुछ अपराध पूर्ण कष्ट कब्र से आगे भी अनेकानेक दुःखों को जन्म देते हैं। अगर इसे छोड़ भी दिया जाए तो भी इसके विश्लेषण से और असमानताएं मिल जाएंगी, क्योंकि, आहाब सोचता चला जा रहा था कि महान से महान सांसारिक सुख में भी अदृश्य वेदना दबी रहती है परन्तु सभी हार्दिक कष्टों में एक रहस्यमयी स्पष्टता झलकती है और किन्हीं-किन्हीं मनुष्यों में तो देवदूत की-सी विशालता प्रकट होती है। अस्तु, अधिक मनोयोग से इन सब कारणों पर सोच-विचार करने से यह प्रकट होता है कि वैराग्य की भावना में मिथ्या भ्रम नहीं है। इन विकट एवं नश्वर पीड़ाओं की वंशावली की कड़ी मिलाने पर अन्त में हम देवताओं की साधनहीन पूर्व परम्पराओं के निकट पहुंच जाते हैं; और उस प्रसन्नचित्त आनन्दमय सूर्य के सामने, इन मधुर झांझ-मंजीरों में, हरियाली पर छाए चन्द्रमा के निकट हमको यह कहना पड़ेगा कि देवता भी सदा प्रसन्न नहीं रहे हैं। किसी आदमी की भौंह पर जन्म से बने अमिट निशान को हस्ताक्षर करने वाले के शोक अथवा दुःख की मोहर ही मानना चाहिए।

अनजाने ही यहां एक ऐसा रहस्य खुल गया है जिसे पहले ही प्रकट हो जाना चाहिए था। आहाब के सम्बन्ध की अन्य बातों के अतिरिक्त सदा ही लोगों में यह रहस्य बना रहा कि पिकोड के चलने के पहले और बाद में भी वह क्यों सबसे बड़े लामा की भांति एकांत में रहता था मानो मृतात्माओं के बीच में ही उसे शान्ति मिलती थी। इस सम्बन्ध में कैप्टेन पेलेग शोर मचाकर जो

कारण बताया करता था वह समुचित नहीं था और बराबर गहराई तक पैठने पर प्रतीत होता था कि उससे बात स्पष्ट न होकर और उलझ ही जाती थी। परन्तु अन्त में वह स्पष्ट हुआ। वह घटना ही आहाब की एकान्तप्रियता के साथ संलग्न थी। तभी वह पिकोड में सब तरफ फैल भी गई।

परन्तु कुछ भी हो; अदृश्य और अपरिचित हवा के फरिश्तों या अग्नि के प्रतिहिंसक राजकुमारों या शासकों का आहाब के साथ कोई सम्बन्ध हो या न हो, लेकिन इस समय तो उसकी टांग का सवाल था और इसके लिए उसने सीधे ढंग से काम किया। उसने बढ़ई को बुलाया।

और कारीगर जब उसके सामने आया तो उसने तत्काल एक दूसरी टांग बनाने का हुक्म दिया। मेटों से उसने कहा कि बढ़ई को स्पर्म व्हेल के जबड़े की हड्डियां, जो अब तक जहाज में इकट्ठी हो गई थीं, दिलवा दी जाएं; खूब तलाशकर जिससे सबसे ज्यादा मजबूत और साफ हड्डी काम में आए। हड्डी मिल जाने पर बढ़ई को हुक्म मिला कि उसी रात टांग और उसके साथ काम में आने वाली सभी चीजें तैयार हो जानी चाहिएं। साथ ही जहाज की भट्टी भी सुलगाई गई और काम जल्दी पूरा करने के उद्देश्य से लोहार को हुक्म दिया गया कि टांग बनाने में काम आने वाली सभी लोहे की चीजें वह जल्दी से जल्दी बनाए।

# ५६

शनिग्रह के चन्द्रमाओं के बीच किसी सुलतान की तरह आप बैठिए, और एक आदमी को देखिए; वह आश्चर्यजनक मालूम होगा, बड़ा शानदार आतंकमय! परन्तु उसी जगह से समूचे इंसानों को देखिए तो उनका अधिक हिस्सा बेकार दिखाई देगा जैसे ताश के 'डुप्लीकेट[1]' जो आज के जमाने के भी हैं और वंश-परम्परा से भी चले आ रहे हैं। लेकिन पिकोड का वह बढ़ई, विचारों की उस ऊंचाई से दूर, एक सीधा-सादा बड़े काम का आदमी दिखाई दे रहा था।

---

१. दोहरे पत्ते।

और वह 'डुप्लीकेट' भी नहीं है; इसलिए इस रंगशाला में वह स्वयं अवतरित होता है।

दूसरे जहाजी बढ़इयों की तरह वह भी अपने काम में बहुत चतुर था तथा बारीक से बारीक काम को भली प्रकार कर लेता था। और बढ़इगीरी से सम्बन्धित अन्य कामों से भी भली प्रकार परिचित था। इसके साथ ही पिकोड के इस बढ़ई में एक विशेषता यह भी थी कि वह तीन-तीन चार-चार साल की लम्बी समुद्री यात्रा में और दूर समुद्रों में मशीन का भी सब काम एक मैकेनिक की तरह कर लेता था।

उसके काम करने की बड़ी जगह पर—जहां वह अपना काम करता था—एक औजारों की मेज़ थी जिस पर लकड़ी तथा लोहे के बहुत-से बड़े-छोटे औजार रखे रहते थे। जिस समय व्हेल जहाज पर होती थी केवल उस समय को छोड़-कर हर समय बढ़ई की मेज ट्राई-वर्क के पीछे, काफी बड़ी जगह में फैली रहती थी।

अगर हमला करने वाले लोहे की पिन अपने छेद के लिए बहुत बड़ी है तो बढ़ई उसको अपने किसी औज़ार से फौरन छोटी कर देगा। अगर कोई अनोखी मैदानी चिड़िया जहाज़ पर आ गई है और वह पकड़ ली गई है तो साधारण व्हेल की हड्डियों के बढ़िया छिले हुए डंडों तथा स्पर्म व्हेल के आड़े-तिरछे टुकड़ों को लगाकर वह एक ऐसा सुन्दर पिंजड़ा बना देगा जिसकी शक्ल 'पगोडा' की-सी होगी। अगर किसी पतवार वाले की कलाई छिल गई तो बढ़ई उस पर लोशन लगा देगा। स्टब ने चाहा कि उसकी हर पतवार पर सिन्दूरी रंग के सितारे पेन्ट कर दिए जाएं; बढ़ई ने सब पर एक-से सितारे अंकित कर दिए। एक मछुए की इच्छा हुई कि वह मछली की हड्डी के ईयर-रिंग कानों में पहने; बढ़ई ने उसके कान छेद दिए और बूंदे पहना दिए। किसी के दांत में दर्द हुआ बढ़ई ने उसे बेंच पर बैठाला; किसी तरकीब से लकड़ी के किसी औज़ार में उसका जबड़ा फंसाया और दांत खींच लिया।

इस प्रकार वह बढ़ई हर काम में तेज़ था और बड़े साधारण ढंग से हर मौके पर काम निबटाता रहता था। दांत को वह हड्डी के एक टुकड़े से ज्यादा नहीं समझता था। लोगों की खोपड़ियों को जैसे वह लकड़ी के मोटे टुकड़े समझता था। यही नहीं, आदमियों को ही वह बड़े साधारण ढंग से तार लपटने

के पहिए से अधिक नहीं समझता था। हर काम में इस तरह की उस्तादी को देखकर लोग उसे साधारण से अधिक बुद्धि वाला समझते थे। लेकिन ऐसी बात नहीं थी। उसमें कोई खास बात नहीं थी सिवा इसके कि अपने व्यक्तित्व से परे कुछ अल्हड़ता अथवा अचेतन मूर्खता उसमें थी जैसी इस संसार में प्रत्यक्ष रूप से सब तरफ़ दिखाई देती है। वैसी स्थिति आप में अनेक मूड अथवा मनः-स्थितियों के समय दिखाई देती है जिसमें दैविक शान्ति होते हुए भी वह आपकी ओर उदासीन रहती है चाहे आप किसी गिर्जाघर की नींव खोदने का-सा पवित्र काम ही क्यों न कर रहे हों। इसी तरह की अल्हड़ता जिसको अर्ध भयानक कह सकते हैं, उसमें थी जिसे हम प्रत्येक दशा में हृदयहीनता ही कहेंगे। इस पर भी कभी-कभी उसमें पुरानी, दकियानूसी और हंसाने वाला मसखरापन दिखाई देता था जैसे 'नोआह' की ऊपरी किलेबन्दी पर रखी पेटी पर बैठकर रात के पहरे में समय कांटने के लिए हंसी-मजाक होते रहते हैं। ऐसा क्या इसलिए था कि यह बढ़ई समूचे जीवन घुमक्कड़ रहा था और इधर-उधर लुढ़कने से उसके पेंदे में कुछ रहा ही नहीं था; साथ ही बाहरी दुनिया की जो थोड़ी-बहुत मोह-ममता थी वह भी खत्म हो गई थी? उसमें बड़ा अलगाव था; एक अभिन्न पूर्णता; नवजात शिशु की भांति न झुकने की प्रवृत्ति; साथ ही वह बिना किसी पूर्व विचार और संकेत के इस संसार में भी रह रहा था और सम्भवतः दूसरी दुनिया के लिए भी जिन्दा था। आप कह सकते हैं कि उसकी उस न झुकने की प्रवृत्ति की गहराई में अनुभव की कमी थी क्योंकि अपने उन तमाम धन्धों में वह कभी तर्क या अन्दर की भावना से काम नहीं करता था। उसे जैसे उसी प्रकार की शिक्षा दी गई थी। वह तो सही और गलत की खिचड़ी-सा था और गूंगे-बहरे की तरह एक धुन में सब कुछ करता रहता था। वह सीधा-सीधा जोड़-तोड़ लड़ाने वाला था और उसका दिमाग़—अगर उसमें कभी था भी तो—उसकी उंगलियों के मांस में टपक आया था। उसके लिए वैसी तर्कहीन परंतु उपयोगी बात कही जा सकती थी—'थोड़े में बहुत कुछ'—जैसाकि शेफील्ड में एक जेबी चाकू बनाया गया है, जो यों तो मोटा दिखाई देता है लेकिन जिसमें न केवल काटने वाले ब्लेड या फल कई साइज़ के होते हैं बल्कि पेंचकस होता है, कार्क निकालने वाला होता है; छोटी चिमटी होती है; सूजा होता है; लोहे की कलम होती है; लाइन खींचने वाला होता है; कील ठोंकने वाला होता है; पेंच

के लिए छेद करने वाला बर्मा होता है। इसलिए अगर उसके ऊंचे अफसरों को उससे पेंच निकालने वाले का काम लेना है तो उसका वही हिस्सा वे खोल लेते हैं अर्थात् उससे जैसा काम लेना होता है वैसा ले लेते हैं।

हां तो, जैसा कहा जा चुका है कि यह सब तरह के औजारों की तरह का आदमी, खोलने-बन्द करने वाला बढ़ई, केवल आप से आप चलने वाली मशीन ही नहीं था। अगर उसमें साधारण मनुष्य की-सी आत्मा न होती तो कैसे वह चतुराई से अपना काम कर सकता था। वह पारा था, या पानी में अमोनिया का घोल—कुछ पता नहीं। लेकिन वह कुछ था; और वह साठ वर्ष या और अधिक समय से यही धन्धे कर रहा था। जीवन के इसी बुद्धिमत्तापूर्ण सिद्धान्त को लेकर वह अपना अधिक समय अपने आप से बातें करने में बिताता था लेकिन उसी तर्क विहीन पहिए के साथ जो अपनी घरघराहट में अपने आप बात करता रहता है या उसका शरीर सन्तरी का एक सन्दूक था और वह अपने आप से बातें करने वाला पहरेदार जो पहरा देते हुए बातें करके अपने को जगाए रहता है।

## ५७

### डेक, रात का पहला पहरा

*(बढ़ई अपने औज़ारों की मेज़ के सामने खड़ा है। दो लैम्पों की रोशनी में वह हाथीदांत के बने हुए पैर के जोड़ को ठीक करने में जुटा हुआ है। हड्डियों के टुकड़े, चमड़े की पट्टियां, पैड, पेंच तथा बहुत तरह के औज़ार मेज़ पर इधर-उधर फैले हुए हैं। सामने भट्ठी की लाल लपटें दिखाई दे रही हैं जहां लोहार काम कर रहा है)*

रेती की कसम, और इस हड्डी की कसम! वह सख्त है जिसे मुलायम होना चाहिए था और वह मुलायम है जिसे सख्त होना चाहिए था। यही हमारा काम है; हम पुराने जबड़ों को रेतते हैं और हड्डियों को छीलते हैं। हमको दूसरी कोशिश भी करनी चाहिए। हां, अब, ठीक काम करती है *(छींकता है)*—

हल्लो ! हड्डी का यह बुरादा (*छींकता है* )—ऐसा क्यों है—(*छींकता हैं* )—हां ऐसा है कि—(*छींकता है* ।) हे भगवान! मैं तो इस छींक के कारण बोल भी नहीं पाऊंगा ! मरे हुए जीवों के इस कबाड़े में काम करने वाले बुड्ढे को यही फल मिलता है । एक ज़िन्दा पेड़ से ऐसा बुरादा थोड़े ही उड़ेगा । एक ज़िन्दा हड्डी को काट डालो, तब भी यह नहीं मिलेगा ( *छींकता है* ) । स्मट ! आओ ! आओ ! यहां पकड़ लो और वह लोहे का छल्ला और पेंच तो मुझे दो । यह अभी ठीक हो जाएगी । कम से कम इतना तो शुक्र है कि घुटने का जोड़ नहीं बनाना है—(*छींकता है* )—उससे मुझे थोड़ी परेशानी होती । सिर्फ घुटने के नीचे की बड़ी हड्डी बनानी है । मुझे उसकी बढ़िया सफाई करनी है । समय ! समय नहीं है नहीं तो मैं ऐसा पैर बनाता कि जैसा मैंने कभी भी नहीं बनाया था (*छींकता है*); जिसका मुकाबला अलमारियों के शीशों में सजे रखे बकस्किन[1] और काफ[2] के बने पैर भी नहीं कर सकते । वे पानी जज्ब कर लेते हैं और तब जैसे उन्हें गठिया हो जाती है । तब उनकी डाक्टरी करनी पड़ती है—( *छींकता है* )—ज़िन्दा पैर की तरह लोशन लगाकर और सफाई करके उन्हें ठीक करना पड़ता है । इसको देने के पहले उन मुग़लशाह को बुलाकर इसकी लम्बाई देख लेनी है हां ! एड़ियों की आवाज़ सुनाई दे रही है ! शुक्र है कि वह आ रहा है या कोई और होगा ।

आहाब—(*आगे बढ़ते हुए*)

(*आगे के दृश्य में बढ़ई बारम्बार छींकता रहता है*)

"हां जी, आदमी बनाने वाले !"

"बहुत ठीक समय पर आए ! श्रीमान्, अगर कप्तान साहब की इच्छा हो तो मैं लम्बाई नाप लूं । ज़रा मुझे नाप तो दीजिए जनाब !"

"पैर के लिए नाप ! बहुत ठीक ! यह पहला मौका तो है नहीं । ठीक, वहां उंगली रखो । बढ़ई ! यह बड़ा भारी औज़ार है; इसकी पकड़ तो देखूं । यह, यह कुछ चुभती है ।"

---

१. साबर की खाल ।

२. गाय के बछड़े के चमड़े का बना सामान ।

"ओह, श्रीमान् ! यह हड्डियां तोड़ देता है—खबरदार, सावधान !"

"डरो मत। मैं अच्छी तरह पकड़े हूं। इस रपटती हुई दुनिया में मैं ऐसी चीज़ चाहता हूं जो कुछ पकड़ सके। प्रोमेथियस मेरा मतलब है लुहार—वहां क्या कर रहा है ?—वह वहां क्या कर रहा हैं ?"

"बकलस का पेंच ठीक कर रहा होगा, महोदय !"

"ठीक। यही साझेदारी है; वह गोश्त का हिस्सा बनाकर दे रहा है। वह वहां तेज़ लाल लपटें उठा रहा है।"

"हां श्रीमान् ! उसके-से बढ़िया और महीन काम के लिए उसे सफेद आग की ज़रूरत है।"

"हूं—ऊं। ज़रूर। अब मैं समझता हूं कि वह ग्रीक का पुराना प्रोमेथियस, जिसने मनुष्यों को बनाया, ज़रूर ही लोहार रहा होगा और उसने उन्हें आग से चेतना दी होगी क्योंकि जो कुछ आग से बना है वह ज़रूर आग के लिए है और इसीलिए नर्क की सम्भावना है। काला धुआं कैसे उड़ता है ! यह वह बची-खुची चीज़ है जिससे यूनानी लोगों ने अफ्रीका वालों को बनाया। बढ़ई ! जब वह बकलस बना ले तो उससे कहना कि लोहे का एक शोल्डर ब्लेड[1] बना देगा क्योंकि जहाज़ पर एक फेरी वाला है जिसके पास सामान बहुत है।"

"श्रीमान् ?"

"चुप रहो; जब प्रोमेथियस का काम समाप्त हो जाएगा तो मैं एक खास किस्म का आदमी बनाने को कहूंगा। पहले, उसकी लम्बाई पचास फुट ऊंची; उसकी छाती टेम्स नदी की टनेल[2] के ढंग की होगी; पैर की ऐसी जड़ें होंगी कि वह एक जगह टिका रह सके, कलाई के पास उसके हाथ तीन फुट होंगे; दिल बिलकुल नहीं होगा, पीतल का माथा होगा और करीब चौथाई एकड़ बढ़िया दिमाग़ होगा; और मैं देखूंगा कि क्या मैं उसकी आंखें भी बनवाऊं जो बाहर देख सकें ? नहीं, लेकिन एक आकाश-दीप उसके सर पर रहेगा जिससे उसकी आत्मा प्रकाशित हो सके। मेरा यही आर्डर है। अब जाओ।"

---

१. पुट्ठे पर लगाने का चमड़े का पट्टा।

२. सुरंग।

यह क्या कह रहा है और किसके लिए कह रहा है, मैं जानना चाहता हूं? क्या मैं खड़ा रहूं?

"एक अन्धी गुम्बद बनाने का यह विचित्र ढांचा है; यहां एक है। नहीं, नहीं, नहीं; एक लैम्प तो लाओ।"

"हो, हो! क्या वह है? श्रीमान्! ये तो दो हैं। मेरे लिए तो एक काफ़ी हैं।"

"भले आदमी! यह 'चोर पकड़ने वाली' रोशनी मेरे चेहरे पर क्यों फेंक रहा है? पिस्तौल की तुलना में फेंकी हुई रोशनी कहीं खराब है।"

"श्रीमान्, मैंने सोचा कि आपने बढ़ई से कहा था।"

"बढ़ई? यह काम तो बहुत ठीक है। या तुम मिट्टी का काम करना चाहते हो?"

"महोदय?—मिट्टी? मिट्टी श्रीमान्? यानी कीचड़; मिट्टी तो खाई खोदने वालों के लिए है श्रीमान्!"

"वह आदमी अपवित्र है। तुम छींक क्यों रहे थे?"

"हड्डी से धूल उड़ती है श्रीमान।"

"तब एक सबक़ लो। जब तुम मर जाओ तो अपने को ऐसी जगह मत दफनाना जहां ज़िन्दा लोगों की नाकें हों।"

"महोदय!—ओह! ओह!—मैं समझा; ठीक है—ओह!"

"ऐ बढ़ई! तुम देखो कि तुम सीधे-सादे कामीदा आदमी हो, हां। तो जब मैं इस बने हुए पैर को पहनूं तो मुझे पुराने पैर की याद नहीं आनी चाहिए, समझे! क्या तुम 'आदम' की कहानी भुला नहीं सकते?"

"ठीक है श्रीमान्! मैं अब कुछ-कुछ समझ रहा हूं। हां, मैंने कुछ अनोखी बात सुनी कि आदमी को पुरानी बात किसी भी तरह भूलती नहीं है और वह कभी-कभी जैसे मन में चुभती रहती है। ऐसा ही है न, श्रीमान्?"

"हां। देखो, जहां मेरा पैर था वहां अपना पैर लगाकर देखो। तब वह देखने में तो एक पैर लगेगा लेकिन मन में होंगे दो ही। जहां तुम लुप-लुप करती हुई इस ज़िन्दगी का अनुभव कर रहे हो; सचमुच—वहीं, नहीं एक बाल के

बराबर मैं भी कर रहा हूं। यह एक पहेली है, क्या ?"

"विनम्रतापूर्वक इसे मैं एक कठिन प्रश्न कहूंगा, श्रीमान् !"

"हिश ! तुम कैसे कह सकते हो कि जहां तुम खड़े हो वहां कोई जीवित और सोचने वाली वस्तु अदृश्य रूप में, मौन और शान्त नहीं खड़ी है; और हो सकता है, तुम्हारे अस्तित्व के स्थान पर उसकी आत्मा हो ! क्या अपने बहुत एकान्त के समय में तुम छिपकर गुप्त बातें सुनने वाले से नहीं डरते ? खामोश रहो, बोलो मत ! और जब मैं अपने नष्ट हुए पैर की चंचलता को अभी भी अनुभव करता हूं तब तुम बढ़ई ! नर्क के दर्दनाक कष्टों का, बिना अपने शरीर के, अनुभव क्यों नहीं करते ? हां !

"ऐ खुदा ! ठीक है, श्रीमान् ! अगर ऐसा है तो मुझे फिर से सोचना होगा। मैं सोचता हूं कि मैं कुछ छोटा शरीर नहीं लिए हूं।"

"देखो ! मूर्खों को मकान नहीं देना चाहिए।—पैर कितनी देर में तैयार हो जाएगा ?"

"सम्भव है, एक घंटे में श्रीमान्।"

"ठीक है, काम खत्म करके मेरे पास ले आना *(जाने के लिए घूमता है)*।" ओह ! जिन्दगी ! यह मैं हूं, एक यूनान के देवता की तरह घमण्डी और उस पर मूर्ख का क़र्ज़ी हूं कि वह एक हड्डी मुझे दे कि जिस पर मैं खड़ा हो सकूं। इस कर्ज और लेन-देन का सत्यानाश हो जिनके कारण बहीखाते कभी खत्म नहीं होते। मैं हवा की तरह स्वच्छन्द होता; परन्तु मैं इस समूची दुनिया की किताब में बन्द हूं। मैं इतना मालदार हूं कि रोम साम्राज्य के नीलाम होने पर—जो समूची दुनिया में था—मैं मालदार से मालदार प्रिटोरियन के सामने हर बोली पर धन दे सकता था परन्तु इस पर भी—जिससे मैं बोलता हूं—उस जीभ के लिए भी मैं गोश्त का कर्ज़ी हूं। मैं सौगन्ध खाता हूं ! मैं धातु पिघलाने वाला एक बर्तन लूंगा और उसमें अपने आपको पिघलाकर एक छोटा, सूक्ष्म से सूक्ष्म, हड्डी का जोड़ रह जाऊंगा। ऐसा ही होगा।

बढ़ई—*(अपना काम प्रारम्भ करते हुए)*

ठीक, ठीक, ठीक ! स्टब उसे सबसे ज्यादा जानता है और स्टब कहता है कि वह विलक्षण है; वह और कुछ न कहकर एक छोटा-सा शब्द कह देता है 'विलक्षण'। वह विलक्षण है, विलक्षण, विलक्षण। और यह उसका

पैर है। हां, मैं सोचता हूं कि यह उसके बिस्तर का साथी है! उसकी पत्नी के रूप में व्हेल के जबड़े की एक हड्डी। और यह उसका पैर है जिस पर वह खड़ा होगा। यह क्या है कि एक पैर तीन जगह खड़ा है और सब तीनों जगहें नर्क में खड़ी हैं—ऐसा कैसे है? ओह! मुझे इसमें ताज्जुब नहीं कि वह मुझको इतने तिरस्कार से देख रहा था। लोग कहते हैं कि मैं भी कभी-कभी अजीब ढंग से सोचने लगता हूं। लेकिन वह तो दैवी रूप से होता है। तब मेरे ऐसे ठिगने कद के मामूली आदमी को, इन कद्दावर और हट्टे-कट्टे कप्तानों के साथ गहरे पानी में कभी नहीं जाना चाहिए। पानी एक मिनट में निगलता है और तब जीवन-नौका की चिल्लाहटें गूंज उठती हैं और यह उस सारस के-से लम्बे आदमी का पैर है; लम्बा और पतला। बहुत लोगों के लिए पैर का एक जोड़ा उसी प्रकार पूरी जिन्दगी चलता है जिस प्रकार किसी कोमल हृदय की बूढ़ी महिला की रोली-पोली घोड़ागाड़ी। परन्तु उसको सहृदयता से व्यवहार में लाया जाता है। लेकिन आहाब, वह तो सख्त ड्राइवर है। देखिए, एक पैर की तो मौत हो गई, दूसरे को समूची जिन्दगी के लिए उसने त्याग दिया और अब हड्डी के तीसरे पैर को पहनने की तैयारी है। ऐ स्मट! जल्दी काम खत्म करो। यह कैसा पैर है, सुन्दर! बिलकुल असली पैर की तरह लगता है। इस पर वह कल सुबह खड़ा होगा। इससे वह खूब काम लेगा। ठीक, ठीक; अब छीलने वाला, रेतने वाला औज़ार और रेगमाल चाहिए।

## ५८

अगली सुबह वे सब नियमानुसार जहाज को पिचकारियों से साफ कर रहे थे। और यह लीजिए। पानी के साथ काफ़ी तेल दिखाई दिया। ऐसा लग रहा था कि नीचे के पेंदे फूटे हुए थे। काफ़ी चिन्ता रही और स्टारबक उस बात को कहने केबिन तक गया।[1]

---

१. स्पर्म व्हेल के शिकारी जहाजों में यह नियम है कि उनमें चाहे जितना तेल भरा हो फिर भी हफ्ते में दो बार भंडार को पानी से साफ करते हैं और बर्तनों में समुद्री पानी भर देते हैं जिसे बाद में थोड़े-थोड़े समय बाद पम्पों

दक्षिण-पश्चिम से चलकर पिकोड अब फारमोशा और बाशी द्वीप के नजदीक पहुंच रहा था जिसके बीच में से चीन के पानी की एक धार प्रशान्त महासागर की ओर आ रही थी। अस्तु, स्टारबक ने आहाब को पूर्वी द्वीप-समूहों के नक्शों को अपने सामने फैलाए हुए पाया। एक नक्शा जापान के द्वीपों के पूर्वी किनारों का था जिसमें निफोन, माट्समाई और शिकोक थे। अपने बर्फ-से सफेद हाथीदांत के नए पैर को मेज के पाए से सटाए हुए, आहाब एक बड़े चाकू का कुंदा हाथ में लिए हुए था। यह विचित्र बुड्ढा—जिसकी पीठ बीच वाले दरवाजे की ओर थी—अपनी भौंहें चला रहा था और अपने पुराने रास्तों की खोज में लगा हुआ था।

"कौन है डेक पर ?" पैरों की आहट सुनकर बिना घूमे हुए ही वह बोला "भाग जाओ !"

"कैप्टेन आहाब ग़लती कर रहे हैं; मैं हूं। टंकी से तेल बह रहा है साहब। हमें 'बर्टन'[1] को ऊपर ले जाकर खोलना चाहिए !"

" 'हमें 'बर्टन' को ऊपर ले जाकर खोलना चाहिए', क्या कहा ? जब हम लोग जापान के निकट पहुंच रहे हैं, तो पुराने तेल की सुरक्षा के लिए यहां रुक-कर एक हफ्ता बरबाद करें ?"

"या तो वैसा कीजिए सर ! या हम लोग एक दिन में इतना तेल नष्ट कर देंगे जितना साल भर में भी नहीं इकट्ठा कर सकते। जिसके लिए हमने बीस हज़ार मील की यात्रा की है, उसे हमें बचाना चाहिए साहब !"

"हां, यह ठीक है, यह ठीक है; अगर हमें वह मिल जाए।"

"मैं टंकी के तेल की बात कर रहा हूं, साहब।"

"और मैं न उसकी बावत बात कर रहा हूं न सोच रहा हूं। जाओ ! उसे बहने दो ! मैं स्वयं ही फूट रहा हूं। दरारों में दरारें हैं। यहां फूटे हुए बर्तन ही

---

से खाली करते हैं। इसके बाद बर्तनों को कसकर बन्द रखा जाता है। इस-के बाद उस निकाले हुए पानी के रंग से जहाजी समझ जाते हैं कि बर्तन ठीक हैं या उनमें कहीं कोई फूटन तो नहीं है।

१. दोहरी और तिहरी पाल की रस्सियां जो पाल को कसने के काम आती हैं।

नहीं हैं, बल्कि फूटे हुए जहाज़ में फूटे हुए बर्तन हैं; भले आदमी ! पिकोड़ से अधिक यह दुःख की बात है। लेकिन अपनी फूटन को संभालने के लिए मैं रुकता तो नहीं हूं; इतने भरे हुए पेंदे में उसे कौन टटोल सकता है; उसका बहना रोका भी कैसे जा सकता है; चीत्कार करने वाले जीवन के इस तूफ़ान में वह फूटन मिल भी जाएगी तो होगा क्या ? स्टारबक ! मैं 'बर्टन' ऊपर नहीं उठाऊंगा।"

"मालिक लोग क्या कहेंगे, साहब ?"

"मालिकों को नन्तुकेत के किनारे पर खड़े होकर तूफ़ान के सामने चिल्लाने दो। आहाब उसकी क्या परवाह करता है ? मालिक लोग, मालिक लोग ? स्टारबक ! मेरे सामने हमेशा ही तुम उन कंजूस मालिकों का राग अलापते हो जैसे वे ही मेरे सब कुछ हों। लेकिन हर चीज का मालिक वही है जो उसका संचालन करता है; और तुम चीखते हो कि मेरी आत्मा जहाज़ की नाव में है।—डेक पर जाओ !"

"कैप्टेन आहाब," केबिन में आगे बढ़ते हुए अधिक आवेश में लाल पड़ते हुए मेट ने कहा—"एक नौजवान की बात का जितनी जल्दी विरोध किया जा सकता है उसी प्रकार मुझसे अच्छा आदमी उससे भी जल्दी आपकी उपेक्षा कर सकता है। और कैप्टेन आहाब ! वह स्थिति शायद खुशी की भी हो।"

"शैतानो ! क्या तुममें इतनी हिम्मत है कि मेरी इतनी आलोचना कर सको ? डेक पर जाओ !"

"नहीं साहब, अभी नहीं। मैं अनुरोध करता हूं और मैं साहसपूर्वक कह रहा हूं कि धैर्य से काम लीजिए कैप्टेन आहाब ! अब तक हम लोगों ने जितना एक दूसरे को समझा उससे अधिक समझने की चेष्टा नहीं करेंगे क्या ?"

आहाब ने एक भरी हुई मस्केट[1] को डेक से—(दक्षिण के जहाज़ियों के केबिन का वह खास फर्नीचर होता है।) निकालकर स्टारबक की ओर निशाना लगाते हुए कहा—"पृथ्वी का एक ही खुदा है जिसे 'लार्ड' कहते हैं और एक कप्तान जो पिकोड का 'लार्ड' है।—डेक पर जाओ।"

मेट की जलती हुई आंखों तथा गालों की तेज़ी को देखकर आपको एक

---

१. फौजी की छोटी बन्दूक।

क्षण को ऐसा लग सकता था कि जैसे उससे उसके चोट लग गई परन्तु अपनी उत्तेजना को रोकते और आधा शान्त होते हुए वह उठा। केबिन छोड़ने के पहले वह एक मिनट को रुका और बोला—"आपने मेरी बेइज्जती ही नहीं की है बल्कि मुझे क्रोधित कर दिया है। हां, उसके लिए आपको स्टारबक से सावधान रहने की आवश्यकता नहीं है। आप तो हंस देंगे, लेकिन आहाब को आहाब से ही सावधान रहना चाहिए; अपने आपसे सावधान रहो बुड्ढे।"

"वह बहादुर है साथ ही हुक्म मानता है। यह तो बहुत समझदारी की बहादुरी है।" ज्योंही स्टारबक गायब हुआ, आहाब बुदबुदाया। "उसने यह क्या कहा—आहाब ! आहाब से सावधान रहो—इसका कुछ अर्थ तो अवश्य है ?" तब कुछ बेहोशी में उसने मस्केट किनारे रख दी और अपनी भौंहें चढ़ाकर वह अपने छोटे केबिन पर इधर-उधर टहलने लगा। तब धीरे-धीरे उसका आवेश कुछ शान्त हुआ और बन्दूक को रैक में रखकर वह डेक पर चला गया।

"तुम बहुत अच्छे आदमी हो स्टारबक," धीमे से उसने मेट से कहा। तब अपनी आवाज़ को तेज़ करते हुए उसने जहाज़ियों को सम्बोधित किया—"बड़े पाल को फैलाओ और ऊपर के पतवारों की रस्सियां इधर-उधर मिलाओ; आगे के आंगन से पीछे जाओ; बर्टन ऊपर करो और टंकी की ओर बढ़ो।"

उसने स्टारबक की इज्ज़त बढ़ाते हुए वैसा क्यों किया इस पर तर्क करना बेकार है। उसमें ईमानदारी का वह जोश था या हो सकता था कि वह उसके काम करने का एक तरीका था जिसके आधार पर वह अपने जहाज़ में शान्ति बनाए रखता था। जो भी हो, उसके आदेशों का पालन हुआ और 'बर्टन' उठा दिए गए।

## ५९

छानबीन करने पर पता चला कि जो बर्तन भंडार में पिछली बार रखे गए थे वे बिल्कुल ठीक थे और छेद किसी दूसरी जगह पर हो गया था। चूंकि मौसम शान्त था इसलिए सब लोग बराबर खोज करते रहे और बहुत-सी चीज़ें खखोल डाली गईं। इस खोज में उन्हें बहुत पुरानी-पुरानी चीज़ें मिलीं। एक

कोने में पत्थर के बर्तन मिले जिनमें कैप्टेन नोआह के सिक्के थे साथ ही कुछ छोटे-छोटे तख्ते जिनमें पानी की बाढ़ से बचाव के लिए व्यर्थ सावधान किया गया था। उस समय उस जहाज की दशा एक विद्यार्थी जैसी हो रही थी, जिसके दिमाग़ में भोजन न मिलने पर भी अरस्तू की समस्त दार्शनिकता भरी हो; उसी प्रकार जहाज के ऊपरी हिस्से में तो सामान भरा पड़ा था किन्तु खोज-बीन में उसका पेंदा सामान से खाली कर दिया गया था।

उसी समय ऐसा हुआ कि मेरे गहरे दोस्त मूर्तिपूजक 'क्वीकेग' को बुखार आ गया, और उससे वह मौत के समीप जा पहुंचा।

कहा जाता है कि व्हेल के शिकार में 'साईनक्योर्स'[1] नहीं होते; बल्कि सम्मान और ख़तरा साथ-साथ बने रहते हैं। वह स्थिति तब तक रहती थी जब तक आप कप्तान न बन जाएं; जितने ऊंचे आप चढ़ते जाएंगे उतना ही परिश्रम करना पड़ेगा। इसलिए ग़रीब 'क्वीकेग' को हारपूनर का काम करते हुए केवल व्हेल के क्रोध का सामना ही नहीं करना पड़ता था बल्कि समुद्र की घुमेड़ों पर कभी-कभी उसकी पीठ पर सवारी भी करनी पड़ती थी और इस समय तेल की कोठरी में समूचे दिन रहकर पसीने की बदबू को सूंघता रहा था। वह बर्तनों को संभालता रहा और तेल की कोठरी की देख-भाल करता रहा। संक्षेप में, व्हेल के शिकारियों के हाथ में हारपूनरों की सुरक्षा सहित तेल की कोठरी का प्रबन्ध रहता था।

बेचारा 'क्वीकेग'! जब जहाज़ का पेट क़रीब-क़रीब आधा साफ़ हो गया उस समय धारीदार ऊनी पाजामा पहने इस गुदे हुए जंगली की दशा देखने योग्य थी। वह उस अंधेरे और नमी में हरी-हरी चित्तियों वाले गिरगिट की तरह कुएं के पेंदे में जैसे पड़ा हुआ था। उस बेचारे मूर्तिपूजक को वह बर्फ का मकान-सा सिद्ध हो रहा था। ताज्जुब था कि पसीने की गरमी के बावजूद उस पर भयानक सर्दी का प्रकोप हो गया। सर्दी बुखार में बदल गई और आख़िर में कुछ दिन की बीमारी के बाद वह पलंग पर पड़ गया जैसे मौत के दरवाज़े पर पहुंच गया हो। वह इतना दुबला हो गया था कि उसके ढांचे और गुदे हुए अंगों के अतिरिक्त उसमें कुछ भी नहीं रह गया। वह सूख गया और उसके गालों की हड्डियां बाहर

---

१. वह पद जिसका वेतन मिलता हो परन्तु कुछ काम न करना पड़ता हो।

निकल आई; परन्तु उसकी आंखों का फैलाव जैसे बढ़ गया था, उनमें विचित्र कोमलता और चमक दिखाई देने लगी। वह ऐसी असहायावस्था से लोगों को देखता जैसे कह रहा हो कि मेरी वह तन्दुरुस्ती तो न कभी कम हो सकती थी न मर सकती थी। जिस प्रकार पानी का बुलबुला दबते-दबते फैल जाता है उसी प्रकार उसकी आंखें गोल होकर फैलती चली जा रही थीं जैसे वे अनन्त के घेरे हों। उस क्षीण होते जा रहे असभ्य मानव के पास बैठने पर आपके मन में ऐसा भय-सा समाता चला जाता जिसको आप प्रकट करने में असमर्थता का अनुभव करते, साथ ही उसके चेहरे से ऐसा लग रहा था जैसा 'जोरोस्टर' के मरते समय उसके पास खड़े लोगों ने देखा होगा। वास्तव में मनुष्य की आश्चर्य एवं भयोत्पादक बातों को शब्दों में नहीं कहा जा सकता। और मौत के नज़दीक पहुंचने वाली स्थिति; मौत जो सभी के लिए समान रूप से आती है, सब पर जिसका अन्तिम प्रभाव एक-सा पड़ता है—उसको मृतकों में से उत्पन्न लेखक ही लिख सकता है। इसलिए, मैं फिर कहता हूं कि किसी भी यूनानवासी के मस्तिष्क में मृत्यु के समय वैसे ऊंचे और पवित्र विचार कदापि नहीं आए होंगे जैसे उस समय रहस्यात्मक काया के रूप में बेचारे 'क्वीकेग' के चेहरे से स्पष्ट हो रहे थे। वह खामोशी से अपने पालनेनुमा पलंग पर झूल रहा था और घुमेड़ें लेता हुआ समुद्र हौले-हौले उसको उसकी अन्तिम निद्रा के लिए हिला-डुला रहा था और सागर की अदृश्य तूफ़ानी लहरें उसे उसके अन्तिम लक्ष्य स्वर्ग की ओर ऊंची उठाने को तत्पर थीं।

अस्तु, भोर के धुंधले प्रकाश में 'क्वीकेग' ने पहरा देने वाले एक जहाज़ी को बुलाया और उससे एक उपकार करने को कहा। उसका हाथ अपने हाथ में लेकर उसने कहा कि जब वह नन्तुकेत में था तब उसने गहरे रंग की लकड़ी की —वृक्ष के तने को खोखला करके बनाई हुई—शिकारा नाव को देखा था जो उसके अपने देश की तरह की थी। पूछने पर उसे पता चला कि जो भी व्हेल का शिकारी नन्तुकेत में मरता है उसे उसी शिकारा नाव पर रखा जाता है और उस पर रखने की बात सोचकर उसे बहुत प्रसन्नता भी हुई थी क्योंकि वैसा ही रिवाज उसके अपने द्वीप में भी था। वे लोग मृत योद्धा को उसी प्रकार की छोटी डोंगी में रख देते थे और उसको सितारों से भरे समुद्र में—अपने द्वीप के चारों ओर तैरने को छोड़ देते थे। वे केवल इतना ही विश्वास नहीं करते थे

कि ये छोटे-छोटे द्वीप ही तारे हैं बल्कि उनका विचार था कि क्षितिज के किनारे से फैला हुआ यह सागर अपने साथ नीले आकाश रूपी स्वर्ग को भी तैराता है और इस प्रकार तारामण्डल में फैले स्वर्ग को जाने वाले चांदनी के धवलमार्ग की ओर मृतात्मा बढ़ती जाती है। उसने कहा कि उसे जब यह मालूम हुआ कि जहाज़ के रिवाज़ के अनुसार वह अपने पलंग पर ही दफ़ना दिया जाएगा तो वह कांप गया। उसे यह पलंग ही मौत की मछली की तरह लग रहा था। उसकी इच्छा थी कि उसे उसी प्रकार की डोंगी पर रखा जाए क्योंकि वह एक व्हेल के शिकारी के लिए उपयुक्त थी और एक व्हेल नाव की भांति यह शिकारा डोंगी भी बिना पेंदे या संचालन के थी। यों वह कहां जाएगी इसका कोई निश्चय नहीं था, किन्तु जल-समाधि लेना तो निश्चित ही था।

जब यह अनोखी बात जहाज़ पर फैली तो बढ़ई को हुक्म दिया गया कि 'क्वीकेग' की इच्छा-पूर्ति के लिए वह वैसी डोंगी बनाए। जहाज़ पर भूरे और काले-से रंग की कुछ भारी और मोटी लकड़ियां पड़ी हुई थीं जिनको 'लकाडी' द्वीप से काटकर रखा गया था—अतः इन्हीं में से कब्र बनाने का निर्देश दे दिया गया। आज्ञा पाते ही बढ़ई अपना रूल लेकर जल्दी ही ऊपर की ओर गया और उसने 'क्वीकेग' का बहुत ठीक-ठीक नाप लिया।

"आह! बेचारा! वह अब मर जाएगा," लांग आइलैंड के मछुए ने कहा।

बढ़ई ने लौटकर अपनी बेंच पर काम चालू कर दिया और डोंगी तैयार की। जब उसमें आखिरी कील लगा दी गई तो मज़ाक में वह बोला कि क्या वे लोग उसके लिए तैयार हैं।

'क्वीकेग' ने जब यह सुना तो कहा कि डोंगी को उसी के पास पहुंचा दिया जाए। यों कुछ मरने वाले बड़े उग्र हो जाते हैं, किन्तु वह पूरी तरह शान्त था।

अपने झूलने वाले पलंग पर से 'क्वीकेग' अपनी क़ब्र अथवा इस डोंगी को बराबर ग़ौर से देखता रहा। तब उसने अपना हारपून मंगाया। उसकी लाठी निकालकर उसके लोहे को उसने डोंगी में रखा और अपनी नाव की एक पतवार भी रखी। उसके अनुरोध पर अन्दर किनारे-किनारे बिस्कुट चुनकर रखे गए। एक बर्तन में ताज़ा पानी, सर के पास रखा गया। लकड़ी की राख और मिट्टी का एक छोटा बोरा पैरों के पास रखा गया। और पाल का एक

टुकड़ा तकिए की तरह सिरहाने सजा दिया गया। अब 'क्वीकेग' ने अनुरोध किया कि उसको उसके अन्तिम बिस्तर पर रख दिया जाए, जिससे वह उस पर आराम से लेट सके। बिना हिले-डुले एक मिनट तक वह चुपचाप उसमें लेटा रहा और तब उसने एक साथी से अपना झोला और उसमें रखी उसके देवता—'योजो' की मूर्ति लाने को कहा। अपने दोनों हाथों को छाती पर रख-कर 'क्रॉस' बनाते हुए उसने 'योजो' को बीच में रख लिया और उस कब्र का ढक्कन बन्द करने को कहा। सर की ओर एक चमड़े की घूमने वाली चूल लगी हुई थी और वहीं 'क्वीकेग' अपनी क़ब्र में सो गया। उसके चेहरे पर स्थिरता तैर रही थी। "ररमई" (यह ठीक है, वह आरामदेह है।) वह बुदबुदाया और संकेत किया कि उसे दुबारा पलंग पर लिटा दिया जाए।

ऐसा होने के पहले ही पिप—जो पूरे समय उसके चारों ओर मंडराता रहा था, पास आया और सुबकियां भरते हुए उसने 'क्वीकेग' का एक हाथ पकड़ लिया। दूसरे में वह अपनी डफली लिए हुए था।

"बेचारा यात्री! क्या थका देने वाली यात्रा के बिना तेरा काम नहीं चल सकता था? अब तू कहां जाएगा? परन्तु यदि धारा तुझे उन मनोहर 'एन्टि-लीज़' तक ले जाएं—जहां जल से उत्पन्न लिली के फूल समुद्रतट पर झूमा करते हैं, तब तू क्या मेरे लिए कोई उपकार करेगा? एक पिप को ढूंढ़ना जो बहुत दिन से गायब है; मेरा ख्याल है कि वह वहीं दूरस्थ 'ऐन्टिलीज़' में है। यदि तुझे वह मिल जाए तो उसे तसल्ली देना क्योंकि वह बहुत दुखी होगा। सुन! वह अपनी डफली यहीं छोड़ गया था। मुझे वह मिल गई है। रिग-अ-डिग, डिग, डिग! क्वीकेग! अब तू मर जा और मैं मौत का गीत गाऊं।"

"मैंने सुन लिया है," झरोखे से झांकते हुए स्टारबक बुदबुदाया—"बहुत तेज़ बुखार में, अनजाने ही आदमी अंट-शंट बकता है। और पुरानी बातें दोहराता है। इसके बाद रहस्य खुलता है तो पता चलता है कि उसके बचपन में वे बातें उसके सामने अवश्य ही कही गई थीं। इसलिए, जैसा कि मेरा विश्वास है, अपने पागलपन की विचित्र मिठास में बेचारा पिप—स्वर्गिक स्थानों की स्वर्गिक बातें कह रहा है। वहां के अलावा उसने यह सब कहां सीखा होगा?—सुनो! वह फिर बोल रहा है लेकिन पहले से अधिक तेज़ी में है।"

"दो-दो की क़तारें बनाओ! आओ, हम उसका 'जनरल' की तरह सम्मान

करें ! हां, उसका हारपून कहां है ? उसको यों यहां टेढ़ा-टेढ़ा रखो ।—रिग—अ-डिग, डिग, डिग ! हुज्जा ! ओह ! खेल की चिड़िया उसके सर पर रखना चाहिए जो बोलती रहे । 'क्वीकेग' बहादुरी के साथ मर रहा है। समझ लो। 'क्वीकेग' बहादुरी से मर रहा है।—ठीक तरह समझ लो। मैं कहता हूं—बहादुरी से, बहादुरी से, बहादुरी से ! लेकिन वह नीच पिप, वह एक डरपोक की मौत मरा ! एक ही कंपकंपी में मर गया। तुम सुनो ! अगर तुम्हें पिप मिल जाए तो समूचे 'एन्टिलीज़' में कह देना कि वह भगोड़ा है; डरपोक है, डरपोक, डरपोक ! उनसे कहना कि वह एक व्हेल-नाव से कूद पड़ा ! मैं अपनी डफली पिप के लिए नहीं बजाऊंगा और अगर वह यहां एक बार फिर मरने लगे तो मैं उसका 'जनरल' का-सा स्वागत नहीं करूंगा। नहीं, नहीं ! डरपोक हरेक के लिए शरम का कारण बनता है ! उन सबको पिप की तरह डूब जाने दो। शर्म ! शर्म !"

समूचे समय, 'क्वीकेग' आंखें बन्द किए पड़ा रहा, जैसे कोई स्वप्न देख रहा हो। पिप भगा दिया गया और मरीज़ आदमी झूले वाले पलंग पर लिटा दिया गया।

ऊपर से दीख रहा था कि उसने अपनी मौत की सब तैयारियां कर ली हैं और उसकी कब्र उसके लिए तैयार है। तभी 'क्वीकेग' संभल गया। जल्दी ही यह दिखाई देने लगा कि बढ़ई के सन्दूक की कोई आवश्यकता नहीं है। जब बहुतों ने आश्चर्य प्रकट किया तो उसने अपनी उस परेशानी का कारण संक्षेप में बताना प्रारम्भ किया—इस भयानक क्षण में उसे अचानक एक काम याद आ गया है जिसे वह किनारे पर बिना पूरे किए ही छोड़े दे रहा है, इसलिए उसने अब मरने का इरादा छोड़ दिया है। वह बोला कि अभी वह कदापि नहीं मर सकता। —तब उन्होंने उससे पूछा कि क्या मरना या जीवित रहना उसकी अपनी इच्छा पर आधारित है ? उसने उत्तर दिया—"निश्चित !" 'क्वीकेग' का कथन था कि यदि आदमी यह तय कर ले कि उसे जीवित रहना है तो केवल बीमारी उसे कभी नहीं मार सकती—"व्हेल, तूफ़ान या उसी तरह के कोई खूंख्वार, न संभाल सकने वाला और मूर्ख संहारक के अतिरिक्त उसको कोई नहीं मार सकता।"

एक सभ्य और बर्बर में यही खास अन्तर है कि कोई भी सभ्य किन्तु

बीमार व्यक्ति ठीक होने में छः महीने लगा सकता है जबकि बीमार असभ्य एक दिन में ही आधा ठीक हो जाता है। अतः थोड़े समय में ही 'क्वीकेग' सशक्त हो उठा। और अन्त में कुछ दिनों तक आराम से रहने और चरखी के सहारे बैठकर और कसकर भोजन करने पर वह फुदकने लगा; अपने हाथ-पैर फरहरे किए, अंगड़ाइयां लीं, थोड़ी चहलकदमी की, अपनी नाव पर घूमा और हारपून को हाथ में लेकर तौलते हुए बोला कि वह किसी भी लड़ाई के लिए तैयार है।

सनक में आकर वह उस क़ब्र को जहाज़ की आलमारी के रूप में इस्तेमाल करने लगा और अपने कैनवेस के थैले की सब सामग्री उसने वहां सजाकर रख दी। बहुत-से खाली घंटों में उसने उसके ढक्कन पर तरह-तरह की तस्वीरें और नक्काशी बनाई और ऐसा लगा जैसे अपने हाथ की पूरी नकल वह उस पर बना देगा। उसके हाथ पर जो चित्रकारी की गई थी वह उसके द्वीप के एक पुजारी व भविष्यदर्शी ने की थी जिसने अपने उन गूढ़ अक्षरों के द्वारा 'क्वीकेग' के शरीर पर स्वर्ग और पृथ्वी की सम्पूर्ण दार्शनिकता को अंकित कर दिया था। उसके द्वारा उस रहस्यात्मक मान्यता के आधार पर सत्य प्राप्त करने की चेष्टा की गई थी और इस प्रकार 'क्वीकेग' का शरीर एक प्रच्छन्न पहेली था; एक ही पुस्तक में लेखक की सम्पूर्ण कृति, जिसके भेदों को वह स्वयं ही नहीं पढ़ सकता था और उसका हृदय उसके विरुद्ध मान्यता रखता था। अतः ये रहस्य तो अन्ततः 'क्वीकेग' के शरीर रूपी उस चर्मपत्र के साथ नष्ट ही हो जाने थे। एक सुबह, उस बेचारे 'क्वीकेग' को देखने के बाद आहाब के मस्तिष्क में एक विचार आया और उसने उसको सम्बोधित करके कहा—"ओह! देवताओं का आनन्द राक्षसी होता है।"

## ६०

बाशी द्वीप-समूह के पास निकलते हुए हम अन्त में उस विशाल 'साउथ-सी' (दक्षिणी सागर) में बढ़ गए। यदि कुछ और बातें न होतीं तो मैं प्रशान्त महासागर को सलाम करता और उसको अनेक धन्यवाद देता क्योंकि मेरी जवानी की बड़ी पुरानी प्रार्थना सुन ली गई थी। आसमान से हजारों मील दूर वह गंभीर

समुद्र पूर्व की ओर घुमेड़ें ले रहा था।

पता नहीं इस समुद्र में क्या मीठा रहस्य छिपा हुआ है जिसकी बड़ी-बड़ी सरल लहरें यह बताती हैं कि उनके अन्दर कोई रहस्यमयी आत्मा समाधि लिए हुए है—उन कथामय तरंगों की भांति जिनमें समाधिस्थ धर्म प्रचारक 'सेन्ट जान' के ऊपर 'एफेसियन' ने घास उगा दी थी। इन समुद्री चरागाहों के ऊपर जैसे पानी के लुढ़कते हुए बड़े-बड़े वृक्षरहित मैदान और चारों भूखण्डों के 'पॉटर्स फील्ड्स' मिलते हैं जहां लहरें उठकर विलीन होती हैं और जहां हर समय ज्वार-भाटा आता रहता है। यहां करोड़ों मिली-जुली छायाएं और रंग, डूबे हुए स्वप्न, निद्रा-भ्रम, मानसिक कल्पनाएं एवं जाग्रत स्वप्न हिलोरें ले रहे हैं। वह सब कुछ जिसे हम जीवन और आत्मा कहते हैं इसमें स्वप्नावस्थित हैं, स्वप्नावस्थित। बिस्तर पर पड़े-पड़े नींद में ऊंघने वालों की तरह वे उछलते रहते हैं। हमेशा-हमेशा उठने वाली लहरें जैसे उनकी अनिद्रा तथा परेशानी से बनी हैं।

कोई भी ध्यान लगाने वाला 'मेजियन' समुद्री यात्री इस गम्भीर प्रशान्त महासागर को एक बार देख लेता है तो सदा इसी समुद्र को अपनाए रहता है। संसार भर के जलाशयों का यह केन्द्र है और हिन्द महासागर तथा अतलांतक महासागर इसकी भुजाओं के रूप में बहते हैं। वे ही लहरें कैलीफोर्निया के नव निर्मित नगरों और बन्दरगाहों को स्वच्छ करती हैं। मनुष्यों की सबसे आधुनिक पीढ़ी एवं अब्राहम से भी पुरानी एशिया की भूमि को यह नहलाता है। 'कोरल' के द्वीप समूह; दूर तक छितरे हुए अपरिचित तथा निचले द्वीप तथा जापान के अथाह जल के दूधिया मार्ग इसी के अन्तर्गत हैं। इस प्रकार यह रहस्यमय तथा स्वर्गिक सौन्दर्य प्राप्त प्रशान्त महासागर समूची दुनिया को अपने में घेरे हुए है। यह सब किनारों को एक कर देता है। ऐसा लगता है जैसे यह, लहरें लेने वाला पृथ्वी का हृदय है। इस प्रकार के विचारों के आने पर आपके समक्ष देवता का एक ऐसा स्वरूप होना चाहिए जो रोम के वन देवता 'पैन' के समक्ष आपका मस्तक झुका दे।

रोम के देवता के ख्याल से आहाब का मस्तिष्क चंचल नहीं होता था और वह लोहे के बुत की तरह अपने चिरपरिचित स्थान पर खड़ा रहा। वह छोटे मस्तूल के रस्सों के पास खड़ा एक नथुने से बाशी द्वीप से आने वाली कस्तूरी की-सी सुगन्धि के मिठास को सूंघ रहा था (जिसके बगीचों में निश्चित ही

कोमल प्रेमीजन टहलते होंगे।) और दूसरे नथुने से नए समुद्र की नमकीन सांस को खींच रहा था—जिस समुद्र में वह घृणित सफेद व्हेल अभी भी तैर रही होगी। इस अन्तिम समुद्र में पैठने पर और जापान के शिकारी स्थानों की ओर बढ़ते हुए उस बूढ़े का संकल्प और दृढ़ हो उठा। किसी शैतान के चिपके ओठों की तरह उसके ओठ चिपक गए। उसके मस्तकरूपी डेल्टे की नसें बाढ़ में उफनती नदियों की भांति उभर आईं। उसकी अपनी ही निद्रा में मेहराबदार पेंदे की आवाजें गुनगुना रही थीं—"सब पीछे भागो! सफ़ेद मछली गाढ़े खून के फव्वारे उड़ा रही है!"

## ६१

उन अक्षांशों के समशीतोष्ण मौसम और व्हेलों के पीछे होने वाली नई खोजों की प्रतीक्षा में जहाज़ के लोहार पर्थ ने अपनी चलती-फिरती भट्टी को आहाब का पैर बन जाने के बाद भी उठाया नहीं था। वह अभी भी डेक पर ही जमी हुई थी और रिंग-बोल्ट से मिलाकर बड़े मस्तूल के निकट रखी थी। उस बूढ़े की आकृति से अन्तर्वेदना झलकती थी और शरीर पर झुर्रियां पड़ गई थीं। जहाज़ के सभी कर्मचारी अपना कुछ न कुछ छोटा-बड़ा काम लेकर लोहार को घेरे रहते थे। किसी चीज़ में परिवर्तन करना, किसी की मरम्मत करना अथवा तरह-तरह के हथियारों की शक्ल बदल देना—ये काम करने में ही लोहार व्यस्त रहता था। वह नावों के सामान को भी ठीक करता था। उसकी व्यस्तता के बीच भाले, फेंकने वाले कांटों के अगले भाग, हारपून तथा बर्छे लिए हुए जहाजी उसकी प्रत्येक गतिविधि को देखते रहते थे। वह दत्तचित्त होकर अपने सधे हुए हाथ से हथौड़े को थामकर काम में जुटा रहता था। कोई शोरगुल नहीं, कोई उतावलापन नहीं; और न ही किसी प्रकार की ढिठाई ही उसे अधीर बनाती थी। खामोशी में, धीरे-धीरे तथा गम्भीरतापूर्वक अपनी झुकी हुई पीठ को निरन्तर झुकाए रहकर वह ऐसे काम में जुटा रहता जैसे काम ही उसका जीवन हो और उसके हथौड़े की भारी चोटें ही जैसे उसके दिल की चोटें और धड़कनें हों। इस सबके साथ ही वह बड़ा दयनीय दिखाई देता था।

पिकोड की यात्रा प्रारम्भ होने के पहले इस बूढ़े के चलने के विचित्र ढंग तथा गिरने-पड़ने को देखकर नाविकों में कुछ आकर्षण उत्पन्न हुआ था। तब उनके बहुत अनुरोध पर पर्थ ने अपनी लज्जास्पद साथ ही दर्दभरी कहानी सुनाई।—

सर्दी की एक रात को बहुत देर हो जाने पर यह बूढ़ा चलते-चलते एक दोराहे पर खड़ा हो गया और उस समय इस लोहार को जैसे बेहोशी-सी आने लगी। उसने एक जर्जर और ध्वस्त अन्न के गोदाम में शरण ली। वास्तव में उसकी उस दशा का कारण पैरों की शक्ति का जवाब दे देना था। इस रहस्योद्घाटन के अनन्तर उसके जीवन रूपी ड्रामे में हर्ष के चार अङ्क और तब महान कष्टों का पांचवां अंक सामने आया।

वह लगभग साठ वर्ष का बुड्ढा था और कष्टों में जिस वस्तु का नाम विनाश है उसको वह किसी प्रकार स्थगित करता अथवा टालता जा रहा था। वह बड़ा कुशल दस्तकार था और हर समय काम में फंसा रहता था। उसके पास एक सुन्दर बगीचा तथा मकान था। वह एक नौजवान और सुन्दर पत्नी का आलिंगन करता था जो देखने में उसकी पुत्री-सी दिखाई देती थी। उसके तीन लड़के थे जो खुशदिल और शैतान थे। हर इतवार को वे झाड़ियों में बने सुहाने गिर्जाघर में जाया करते थे। कथा का दुःखमय अंश यह है कि एक रात के अंधेरे में छिपे रूप से कोई लुटेरा उनके खुश और सम्पन्न मकान में घुसा और उनका सब कुछ लूट ले गया। मजा यह था कि अनजान में लोहार ने स्वयं ही उस लुटेरे को अपने परिवार के बीच रखा था। वास्तव में वह बोतल का जादूगर था! उस सत्यानाशी कार्क के खुलते ही वह पिशाच बाहर निकला और उसने उस घर को तबाह कर दिया। दूरदर्शिता और खर्च दोनों का ध्यान रखकर लोहार ने अपनी दूकान रहने वाले मकान में ही कर रखी थी किन्तु उसका रास्ता अलग से था। उसकी जवान और सुन्दर पत्नी, सदा ही, बिना क्षोभ के प्रसन्नता में अपने बूढ़े पति के मजबूत हाथों से पड़ते हथौड़े की चोटों को सुना करती थी। उन दीवारों और दरवाजों में गूंजती हथौड़े की चोटों की गुनगुनाहट में—जो तीखी के स्थान पर उन्हें मीठी लगती थी—लोहार के बच्चे नींद भरते थे।

विपत्ति पर विपत्ति! ओह, मृत्यु! तू कभी समय से क्यों नहीं आती?

सम्पूर्ण विनाश होने के पहले ही यदि तूने उस बुड्ढे को उठा लिया होता तो उस नौजवान विधवा को सुख से छुटकारा मिल जाता और उन अनाथ बच्चों का भी भावी जीवन चिन्तामुक्त होता; साथ ही आगे आने वाले समय में वे ठीक से बढ़-पनप सकते। लेकिन मौत ने जैसे बड़े भाई को भुला ही दिया और उसकी उस चिल्ल-पों में उसे तब तक भुलाए रही जब तक जिंदगी की सड़ायंध ने पूरी फसल को धीरे-धीरे नष्ट नहीं कर दिया।

सब कुछ क्यों कहा जाए? उम्र के साथ हथौड़ा भी थक चला और हर दूसरी चोट पहले से हलकी पड़ने लगी। पत्नी दरवाजे पर सुन्न बैठी रहने लगी। उसकी आंखों में जैसे आंसू सूख चुके थे और वह अपने बच्चों के रोते हुए चेहरों को नजरें गड़ाए देखा करती थी। आग सुलगाने वाली धौंकनी गिर गई। भट्टी राख से भरकर बेकार हो गई। मकान बिक गया। गिर्जे के बाहर की ऊंची घास में मां की कब्र बनी। उसके दो बच्चे भी वहां जा पहुंचे। और घर-बार तथा परिवार से विहीन बुड्ढा आवारा की तरह इधर-उधर घूमने लगा। उसका प्रत्येक दुःख निर्दय था। उसके सफेद बाल जैसे तिरस्कार की लपेटें ले रहे थे।

इस प्रकार के जीवन की तो मृत्यु ही एकमात्र साथी हो सकती थी, लेकिन मृत्यु तो नए स्थान के अनदेखेपन की ओर बढ़ने का प्रारम्भ मात्र है। मृत्यु से तो हम उस विशाल अनन्त की सम्भावना को केवल नमस्कार करते हैं—जो विकराल है, जलमग्न है, जिसका कभी किनारा ही नहीं मिला। अतः ऐसे लोगों के नेत्रों में जो मृत्यु की कामना दिखाई देती है जिनमें अब भी आत्महत्या के लिए पश्चात्ताप बना रहता है वह उन्हें उस फैले हुए समुद्र की ओर बुलाती है जहां विश्वास न आने वाले डर, अनगिन विलक्षणताएं और नई जिन्दगी के लिए नई खोजें भरी रहती हैं। इस अथाह और असीम प्रशान्त महासागर में हजारों जलपरियां गीत गाती हैं—"ऐ टूटे दिल वालो! यहां आओ। मौत के अतिरिक्त भी यहां एक नई जिन्दगी है। यहां अकल्पनीय विचित्रताएं हैं, और जिनके पीछे आदमी भागता भी नहीं है। यहां आओ! और ऐसी जिन्दगी में अपने को डूबा दो और अपनी तिरस्कार योग्य धरती की जिन्दगी को छोड़ दो जो मृत्यु से भी अधिक कष्टप्रद है। यहां आओ! गिर्जाघर के मैदान में अपनी कब्र का पत्थर खड़ा कर दो और यहां आओ, जब तक हम तुमसे विवाह न कर लें।"

प्रभात और सायंकाल में क्रमश: पूर्व-पश्चिम की ओर इन पुकारों की प्रतिध्वनियों का उत्तर देते हुए, लोहार की आत्मा ने कहा—"हां, मैं आ रहा हूं।" और पर्थ व्हेल के शिकार को चल दिया।

## ६२

उलझी दाढ़ी वाला पर्थ शार्क-स्किन का चोग़ा पहने हुए दोपहर में अपनी भट्ठी और निहाई के बीच में खड़े होकर एक हाथ से लोहे का टुकड़ा कोयलों में रखे हुए था और दूसरे से धौंकनी चला रहा था। तभी आहाब सामने आया। उसके हाथ में एक पुराना चमड़े का झोला था। भट्ठी से थोड़ी दूर पर, मूडी आहाब रुका। तभी अपने लोहे को भट्ठी से निकालकर पर्थ ने उसे निहाई पर पीटना शुरू किया। निहाई पर पिटता हुआ लोहा लाल चिनगारियां फेंक रहा था, जिसके कुछ छोटे अंगारे आहाब के पैरों के पास पड़ रहे थे।

"पर्थ ! क्या ये तुम्हारी मां केरी के मुर्गी के बच्चे हैं ? ये हमेशा तुम्हारी निगरानी में ही उड़ते रहते हैं। ये कुछ अच्छे शकुन की चिड़ियां हैं, परन्तु सबके लिए नहीं। इधर देखो ! वे जलाती हैं। लेकिन तुम, तुम बिना किसी झुलसन के या दु:ख के उनके बीच में रहते हो।"

"क्योंकि मैं सब तरफ से झुलसा हुआ दुखी हूं, कैप्टेन आहाब," अपने हथौड़े को एक मिनट के लिए रोकते हुए पर्थ ने उत्तर दिया—"मैं बीते दिनों से दुखी हूं, झुलसा हुआ हूं। और झुलसने का दाग़ आसानी से मिटाया नहीं जा सकता।"

"न, न, बिल्कुल नहीं। तुम्हारी यह दबी हुई आवाज़ बहुत शान्ति के साथ प्रकट होती है। परन्तु मुझे तुम्हारे साथ हमदर्दी है। हां, इतना समझ लो कि कष्ट में जब तक आदमी पागल नहीं हो जाता तब तक पृथ्वी या स्वर्ग में कहीं भी मैं उसे दुखी नहीं मानता। तुमको तो पागल हो जाना चाहिए था लोहार ! तुम पागल क्यों नहीं हुए ? बिना पागल हुए तुमने सहन कैसे किया ? तुम पागल नहीं हुए हो इसलिए भगवान् क्या तुमसे घृणा करता है ?—तुम क्या कर रहे हो ?"

"एक फेंकने वाले कांटे का मत्था जोड़ रहा हूं श्रीमान्। इसमें बहुत-सी दरारें और छेद हैं।"

"जितना काम इससे लिया गया है उसके बाद क्या इसे वैसा ही चिकना नहीं बना सकते, लोहार?"

"मैं ऐसा सोचता तो हूं श्रीमान्!"

"लेकिन मेरा विश्वास है कि तुम हरेक छेद और दरार को चिकना नहीं कर सकते। भले ही वह धातु कितनी ही कड़ी क्यों न हो?"

"हां श्रीमान्! लेकिन मैं सोचता हूं कि मैं वैसा कर सकता हूं। सिर्फ़ एक को छोड़कर सभी दरारों को भर सकता हूं।"

"ऐ! तब इधर देखो," अधीरता में आगे बढ़कर अपने दोनों हाथ पर्थ के कन्धों पर रखते हुए आहाब बोला—"ऐ, तब इधर देखो—क्या तुम इस तरह की दरार को चिकना कर सकते हो, लोहार—" अपना एक हाथ जुड़ी हुई भौंह पर ले जाकर उसने कहा,—"अगर तुम ऐसा कर सकते तो मैं अपना सर तुम्हारी निहाई पर रखकर, अपनी आंखों के बीच में, तुम्हारे भारी से भारी हथौड़े की चोट सहन कर सकता। जवाब दो? क्या तुम इस दरार को चिकना नहीं कर सकते?"

"ओह! वह एक अलग चीज है श्रीमान्! मैंने कहा था कि एक को छोड़कर मैं सभी दरारों को भर सकता हूं।"

"लेकिन, लोहार! यह वही एक है। ऐ आदमी! यह चिकना होने के लायक ही नहीं है क्योंकि तुम इसे यहां गोश्त पर देख रहे हो लेकिन इसने मेरी खोपड़ी की हड्डी तक पर असर किया है—यह तो एक सलवट भर है? लेकिन बच्चों के खेल से दूर रहो, आज और कोई काम नहीं होगा। यह देखो!" चमड़े के झोले को ऐसे खोलकर दिखाते हुए जैसे उसमें सोने के सिक्के भरे हुए हैं वह बोला—"मैं भी एक हारपून बनवाना चाहता हूं। एक ऐसा हारपून जिसे हजार राक्षस भी न तोड़ सकें पर्थ! एक ऐसी चीज जो व्हेल में उसके पंख की हड्डी की तरह चिपक जाए। यह इसका सामान है," उसने उस थैली को निहाई के ऊपर रख दिया। "लोहार! इसे देखो। घुड़दौड़ के घोड़ों की नालों की ये कीलें हैं।"

"क्या घोड़े के नाल की कीलें श्रीमान्? लोहार जो भी चीजें बनाता है

उसमें यह तो सबसे बढ़िया और मजबूत होती है।"

"बुड्ढे ! मैं यह जानता हूं। क़ातिलों की हड्डियों से पिघलकर बने गोंद की तरह ये भी गलकर एक हो जाएंगी। जल्दी करो ! मुझे एक हारपून बनाकर दो। पहले उसकी बारह नोकें मुझे बनाकर दो और तब जोड़कर और हथौड़े से पीटकर इनको एक कर देना। जल्दी ! मैं आग तेज करता हूं।"

अन्त में बारह डंडे बनाए गए और आहाब ने उन सबकी परीक्षा की, परन्तु उन सबको बेकार करते हुए उसने कहा—"ये ठीक नहीं हैं। पर्थ ! इन्हें फिर बनाओ।"

जब यह काम पूरा हो गया तो पर्थ ने उन बारहों को एक में जोड़ना प्रारम्भ किया। तभी आहाब ने उसका हाथ थाम लिया और कहा कि वह अपने लोहे को अपने आप जोड़ेगा। इसके बाद उसने बड़े ढंग से निहाई पर हथौड़े की चोटें मारनी शुरू कीं और पर्थ उसको चिपकाने वाली गरम लोहे की सलाखें—एक के बाद एक, देने लगा। भट्टी से आग की सीधी लपटें ऊपर आने लगीं।

अन्त में सब सलाखें मिलकर एक लोहा बन गईं और आखिरी आग देने के लिए भट्टी पर रख दी गईं। इसके बाद पर्थ ने बराबर रखे पानी में उन्हें बुझा दिया। आग, गर्मी और धुआं आहाब के झुके हुए चेहरे पर भर गया।

"पर्थ ! मुझे लोहे से दागोगे क्या ?" एक मिनट के लिए दर्द से परेशान आहाब ने कहा—"तब क्या मैं खुद को दागने के लिए अपना लोहा स्वयं ही तैयार कर रहा था ?"

"हे भगवान ! ऐसा नहीं है कैप्टेन आहाब, लेकिन मैं कुछ डर रहा हूं। क्या यह हारपून सफेद व्हेल के लिए है ?"

"सफेद पिशाच के लिए। लेकिन अब कांटे तैयार करने चाहिएं। उन्हें तुम तैयार करो। ये मेरे उस्तरे हैं—बढ़िया लोहे के। इनके ऐसे नोकीले कांटे तैयार करो जैसे बर्फ के समुद्र में कीलों वाली गाड़ी के होते हैं।"

एक क्षण को बूढ़ा लोहार उन उस्तरों को ग़ौर से देखता रहा जैसे उन्हें वह इस्तेमाल नहीं करना चाहता था।

"भले आदमी, इन्हें ले लो। मुझे इनकी जरूरत नहीं है क्योंकि मुझे अब न हजामत बनानी है, न खाना खाना है, न तब तक पूजा करनी है जब तक यहां का काम खत्म नहीं हो जाता।"

अन्त में, तीर की शक्ल का वह कांटा बन गया और पर्थ ने उसे उस लोहे पर जोड़ दिया। फिर उन कांटों को अन्तिम रूप देने के लिए उसने पानी की मांग की।

"नहीं, नहीं, उसके लिए पानी की जरूरत नहीं है। मैं उसमें मौत के-से असली रूप की तेजी चाहता हूं। हां! टाशटेगो, 'क्वीकेग' और डैग्गू! ऐ धूर्तो! तुम लोग क्या कहते हो? यह कांटा जितने में डूब जाए, क्या तुम लोग मुझे उतना खून दोगे?" उसको ऊंचा उठाकर वह बोला। डरावने 'हां' की रेखाएं सामने दीख गईं। उन मूर्तिपूजकों के गोश्त पर तीन छेद कर दिए गए और इस प्रकार सफेद व्हेल का कांटा तेज कर दिया गया।

तब एक सॉकेट (छेद) में उसको ठीक से लगा दिया गया। नए रस्से की एक बिंडी खोली गई और उसको फैलाकर कुछ दूर तक ले जाया गया। उसका एक सिरा लोहे से बांधने के बाद आहाब ने अपने पैरों से उसको खींचा। उसमें बाजे के तार की-सी झनझनाहट का स्वर निकलने पर आहाब ने कहा—"ठीक है। अब पकड़ होनी चाहिए।"

रस्से समेटकर हारपून के सॉकेट से लपेट दिए गए। तीन प्रकार के भाग्य की तरह वे तीनों वस्तुएं—लोहा, उसका बांस और रस्सा एक स्थान पर व्यवस्थित कर दिए गए। तब अपने हड्डी के पैर की खटखट के साथ हारपून को भी जहाज के तख्तों पर खटखटाते हुए आहाब केबिन की ओर चला। आहाब के केबिन में घुसने के पहले एक विचित्र हंसी की-सी आवाज गूंजी जिसमें बड़ा दर्द भरा हुआ था। ओह! पिप, तुम्हारी वह दुःखमय हंसी, तुम्हारी खामोश किन्तु तड़पती नजर—सब कुछ उस घटना की याद दिला रहे थे और मज़ाक कर रहे थे!

## ६३

पिकोड जापान के शिकारी स्थानों में बराबर घुसता चला जा रहा था और व्हेल के शिकार की पूरी चहल-पहल शुरू हो गई थी। उस सुहानें मौसम में सब लोग बारह, पन्द्रह, अठारह और चौबीस-चौबीस घंटे, लगातार अपनी

नावों पर व्यस्त रहते थे और व्हेलों के पीछे भागते फिरते थे अथवा कहीं एक जगह टिककर घंटे दो घंटे का आराम या 'मध्यान्तर' इस इन्तज़ार में कर लेते थे कि व्हेलें ऊपर तैर जाएं। यह ज़रूर था कि अपने उस परिश्रम का फल उन्हें बहुत थोड़ा मिल रहा था।

ऐसे समय में, अस्ताचल को जाते सूर्य के तले, वह अपनी नाव पर बैठा था जो डोंगी से भी हलकी थी। समूचे दिन समुद्र की लहरों पर इन्तज़ार की घड़ियां बिताने के बाद उन लहरों से अपनेपन का नाम जोड़ते हुए और भट्ठी की बिल्ली की तरह म्याऊं-म्याऊं करते हुए वे 'गनवेल'[1] तक बढ़ जाते थे। यह समय स्वप्नलोक की-सी शान्ति का था जब समुद्र के सौन्दर्य को देखकर उसके अन्दर के छिपे हुए ख़तरों को जैसे भुला दिया गया हो। यह ध्यान ही नहीं किया गया कि उस मखमली पंजे की तह में सांप के ज़हरीले दांत भी छिपे हुए हैं।

व्हेल-नाव पर बैठकर समुद्री यात्रा में कुछ ऐसा विश्वास जमता है कि जैसे नाविक जल में न होकर थल पर खड़ा है। जैसे वह फूलों और हरियालीभरी पृथ्वी पर है। इसके अतिरिक्त दूर खड़े जहाज़ को बढ़ते हुए देखकर उसके मस्तूलों से ऐसा लगता है जैसे वह पानी में नहीं बल्कि बिना वृक्षों और छाया वाले मैदान में बढ़ रहा है। उस समय ऐसा प्रतीत होता है जैसे पश्चिमी यात्री का कोई घोड़ा कान खड़े करके तेज़ चौकड़ी भर रहा है।

दूर तक फैली हुई अछूती प्राकृतिक घाटियां; हलके नीले रंग की पहाड़ियों के किनारे—जैसे समूचा शोर-गुल कहीं खो जाता है। आपको ऐसा लगेगा जैसे खेलकर थके हुए नन्हें बच्चे मई के महीने में जब बगीचों में फूल झरते हैं—उस एकान्त स्थान में चुपचाप सो गए हैं। यह वातावरण आपकी भावुकता के साथ घुलमिल जाता है और यथार्थ तथा कल्पनाएं मिलकर जैसे एक हो जाती हैं।

इस प्रकार के मिठास भरे दृश्य आहाब पर भी बिना प्रभाव डाले न रह सके। भले ही वह कितना भी अस्थायी रहा हो। परन्तु स्वर्ण की ये रहस्यमयी कुंजियां उसके अपने गुप्त खजाने को जैसे खोल तो रही थीं फिर भी उसकी श्वास-गति से वह सब मलिन हो जाता था।

ओह! हरे-भरे मैदानो! ओह! आत्मा में सदा बसन्त-बहार फैलाने वाले

---

१. जहाज़ के सामने की रेलिंग।

प्राकृतिक दृश्यो ! यों इस सांसारिक जीवन की लम्बी अनावृष्टि से तुममें सूखा भी फैला हुआ है, कहीं-कहीं, झुलसन भी है—इस पर भी मनुष्य आराम कर सकता है, सुख प्राप्त कर सकता है वैसे ही जैसे बछेड़े-घोड़े सुबह-सुबह घास पर लोटते है। यही नहीं, हवा में उड़ते हुए समय के कुछ क्षणों में उस हरी-भरी घास पर वह छितरी ओस की बूंदों के रूप में जीवन के अमरत्व का रसपान कर सकता है, ज्यों यहां से स्वर्ग तक यह शान्ति और आनन्द छाया हुआ है। परन्तु जीवन के ये उलझे हुए तारों के ताने-बाने ऐसे बुने हुए हैं जैसे शान्ति के ताने के ऊपर तूफ़ानों का बाना पड़ता हो और एक-एक तूफ़ान का धागा हर शान्ति के धागे के सामने आता हो। इस जीवन में स्थिरतापूर्वक कोई उन्नति नहीं है। बन्धनों की जकड़न में हमारी प्रगति रुकी रहती है। अन्त में हरेक को ठहरना पड़ता है। 'अगर' अथवा अनस्थिरता ने मानवमात्र को घेर रखा है। जन्म के पूर्व की अनिश्चितता, बालपन के अल्हड़ विश्वास, किशोरावस्था एवं यौवनावस्था के भ्रम (जो सर्वसाधारण की अवनति का कारण बनते हैं), तब संदेहवाद, अविश्वास—ये सब मनुष्य को अस्थिर बनाए रहते हैं। हां, एक बार चक्कर लगा लेने के बाद हम फिर घूमते हैं और फिर वही जन्म की पूर्वावस्था, बालपन, यौवन एवं प्रौढ़ावस्था और अगर-मगर में घिरकर चक्कर काटते रहते हैं। परन्तु अन्तिम बन्दरगाह, आखिरी ठिकाना, कहां है ? कहा हम अपने जहाज़ का लंगर दुबारा नहीं उठाएंगे ? हम कहां ठहरेंगे ? किस पर्दे में छिपा हुआ यहां आकाश सारी दुनिया पर छाया हुआ है जहां दुखी से दुखी भी सब कुछ भूल जाता है ? इस अनाथ जीवनरूपी शिशु का वास्तविक पिता कहां छिपा हुआ है ? हमारी आत्माएं उन अनाथों की-सी हैं जिनकी अविवाहिता माताएं उनके गर्भ धारण करने पर ही मर जाती हैं। हमारी उत्पत्ति का वास्तविक उद्गम—हमारे पितृत्व का रहस्य हमारी क़ब्रों में छिपा हुआ है। वहीं हमको कुछ सीखना-समझना है।

और उसी दिन अपनी नाव पर बैठे-बैठे उस सुनहले समुद्र में बहुत गहराई तक देखते हुए स्टारबक धीमे से बुदबुदाया :

"अमाप सौन्दर्य ! जिसको किसी प्रेमी ने अपनी युवा पत्नी के नेत्रों में भी शायद ही कभी देखा हो ! —शार्क ! तू अपने दांतों की चमुलाहट के सम्बन्ध में मुझसे कुछ मत कह। न ही अपना राक्षसी ढंग मुझे बता। कुछ देर को विश्वास

द्वारा वास्तविकता को दूर हो जाने दे। कल्पना द्वारा स्मृति को भूल जाने दे। मैं बहुत गहरे में देखता हूं और कुछ विश्वास करता हूं।"

एक मछली की तरह स्टब भी अपनी चमकती हुई आंखों से उस सुनहली प्रकाश-आभा को देखकर उछल पड़ा :

"मैं स्टब हूं, और स्टब का अपना इतिहास है; परन्तु स्टब सौगन्ध खाता है कि वह सदा ही खुश रहा है !"

# ६४

जब आहाब का हारपून तैयार हो गया तो उसके कुछ हफ्तों बाद वातावरण अधिक चित्ताकर्षक एवं आनन्ददायक हो गया था।

वह नन्तुकेत का एक जहाज़ था—'बैचलर' जिसने तेल के आखिरी बर्तन में अभी-अभी पच्चड़ ठोकी थी और उसकी फूटन को ठीक किया था। और अब एक छुट्टी के दिन के-से कपड़ों में प्रसन्नतापूर्वक इस पर भी हर्ष का भूठा संतोष लिए हुए वह अपने घर की ओर मुड़ने के पहले, समुद्र में दूर-दूर छितरे जहाजों के बीच चल रहा था।

मस्तूल के ऊपर के तीन आदमी अपने-अपने टोपों में लाल रंग के चिकने कपड़े की छोटी भंडियां फरफरा रहे थे। पीछे की ओर एक व्हेल-नाव बहुत नीचे लटक रही थी और जहाज़ के आगे के खम्भे के सहारे एक व्हेल का निचला जबड़ा हिल-डुल रहा था जिसको उन्होंने पिछली बार मारा था। संकेत-चिह्न, भंडियां तथा सब रंग के भंडे उसके रस्सों में हर तरफ बंधे हुए थे। डलिया की तरह की उसकी तीनों छतों पर स्पर्म व्हेल के दो-दो पीपे बंधे थे। उसके ऊपर बड़े मस्तूल के दाएं-बाएं उसी कीमती तेल के पीपों को खोलने वाले पतले मारतौल लटकते दिखाई दे रहे थे। उसके मुख्य हिस्से में पीतल का एक लैम्प लापरवाही से लटक रहा था।

बाद में पता चला कि इस 'बैचलर' को बहुत सफलता मिली थी। इससे अधिक आश्चर्य की बात यह थी कि उसी समुद्र में शिकार करने वाले दूसरे जहाज़ों को पूरे एक महीने तक एक भी शिकार हाथ नहीं लगा था। इतना तेल

इकट्ठा हुआ कि न केवल गोश्त और रोटी के पीपे खाली किए गए बल्कि रास्ते में जो भी जहाज़ उसे मिला उससे उसने तेल भरने को बर्तन मांगे, जिन्हें डेक पर, अफसरों के कमरों में और इधर-उधर रखा गया। कैप्टेन की पतलून की जेबों को छोड़कर प्रत्येक जहाज़ी ने एक-एक बर्तन, फाला, यहां तक कि हारपून के छोटे-छोटे सॉकेट तक कीमती तेल से भर लिए।

ज्योंही यह भाग्यशाली जहाज़ भावुक पिकोड के सामने आया वैसे ही उसके ऊपर क़िले से बहुत-से ढोलों के बजने की आवाज़ें आने लगीं। यही नहीं, वह ज्यों-ज्यों नजदीक आता गया उसके आदमी तेल के बर्तनों को घेरकर खड़े हो गए जिस पर काली मछली के पेट की खाल ढकी हुई थी। छोटे डेक पर मेट लोग और हारपूनर जैतून के तेल के रंग की छोकरियों के साथ नृत्यकर रहे थे जिन्हें वे 'पालीनेशियन' द्वीपों से उड़ा लाए थे। पच्चीकारी की हुई एक नाव—बड़े मस्तूल और आगे के मस्तूल के बीच में रखी हुई थी जिस पर 'लांग द्वीप' के नीग्रो—व्हेल की सफेद हड्डी की बनी हुई चमकदार सारंगी पर थिरक-थिरककर उत्साह में नाच रहे थे। कुछ लोग तेल के कारखाने में व्यस्त थे। वे लोग एक साथ जोर-जोर से चिल्लाते हुए मरी हुई व्हेल को घसीट रहे थे जैसे बेकार ईंटें और गारा समुद्र में फेंके जा रहे हों।

उस जहाज़ का लार्ड और मालिक—कप्तान—दूसरी ओर के छोटे डेक पर तनकर खड़ा था और उस सब आनन्द को देख रहा था। लग रहा था जैसे वह सब खेल उसके आनन्द के लिए ही किए जा रहे थे।

और आहाब भी अपने छोटे डेक पर खड़ा था। उसमें रूखा और कालापन झलक रहा था, साथ ही उदासी घिरी हुई थी। जब दोनों जहाज़ एक दूसरे के सामने आए तो कुछ देर को सब समारोह रुक गया और वे एक दूसरे को झुक-झुककर सलाम करने में लग गए। दोनों कप्तान भी अपने-अपने जहाजों के वातावरण का जैसे प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

"आओ, जहाज़ पर आओ, जहाज़ पर आओ!" खुशी में डूबे 'बैचलर' के कप्तान ने कहा और एक बोतल तथा एक गिलास हवा में उठाया।

"आपने सफेद व्हेल देखी है क्या ?" उत्तर में आहाब चीखा।

"नहीं! उसके सम्बन्ध में केवल सुना है। लेकिन उस पर कभी विश्वास

मत करना," मुस्कराते हुए दूसरे कप्तान ने उत्तर दिया—"आओ; मेरे जहाज़ पर आओ।"

"तुम बहुत खुशियां मना रहे हो। चलते जाओ। कुछ आदमी नष्ट हुए?"

"ज्यादा नहीं—केवल दो, वे भी द्वीपों में रहने वाले। बस—लेकिन जहाज़ पर आओ, पुराने साथी, इधर आओ। तुम्हारी भौंह का यह कालापन मैं ठीक कर दूंगा। इधर आओ। मस्ती में झूमता हुआ यह जहाज़ घर की ओर जा रहा है।"

"यह जानने वाला परन्तु कैसा विचित्र मूर्ख है!" आहाब बुदबुदाया, तब ज़ोर से बोला—"तुम कहते हो कि तुम्हारा भरा हुआ जहाज़ घर की ओर जा रहा है; तब मेरा खाली जहाज़ परदेस जा रहा है। इसलिए तुम अपने रास्ते जाओ और मैं अपने जाऊंगा। सब पाल ताने रहो और हवा का रुख पकड़े रहो।"

इस प्रकार एक जहाज़ खुशी में डूबा ठंडी हवा के साथ बह रहा था और दूसरा कठिनतापूर्वक उससे लड़ता जा रहा था और यों दो जहाज जुदा हो गए। दूर जाते हुए 'बैचलर' को पिकोड के जहाज़ी अपनी गम्भीर नज़रों से लगातार देख रहे थे परन्तु अपनी खुशी के बहाव में 'बैचलर' के जहाज़ी उनकी गड़ी नजरों की तनिक भी परवाह नहीं कर रहे थे।

आहाब ने उसी समय, रेलिंग पर झुके-झुके ही, घर की ओर जाने वाले जहाज़ को देखते हुए जेब से एक शीशी निकाली जिसमें नन्तुकेत की बालू भरी हुई थी और इस प्रकार वह भूली-बिसरी स्मृतियों में डूब गया।

## ६५

जीवन में ऐसे अवसर कम आते हैं जब भाग्य की कृपा हम पर होती है। यों कभी-कभी उदास होने पर कुछ अनुकूल वातावरण भी हमें मिल ही जाता है और इसमें प्रसन्नता भर उठती है। पिकोड का भी यही हाल हुआ। खुशी में डूबे 'बैचलर' से मिलने के अगले ही दिन व्हेलें दिखाई दीं और उनमें से चार मारी गईं—एक का शिकार खुद आहाब ने किया।

दोपहर हुए काफी देर हो चुकी थी और उस लाल लड़ाई की सभी औपचारिकता समाप्त हो चुकी थी और सांझ के सागर और आकाश में सूरज और व्हेल—दोनों ही एक साथ डूबे। तब उस आनन्द और शोक में माला लेकर की जाने वाली प्रार्थनाएं जैसे उस गुलाबी हवा में गुंथ गईं मानो मनीला द्वीप की वे पवित्र घाटियां जो हरियाली से आच्छादित हैं; और स्पेन की मैदानी सर्द हवा; और इच्छानुसार आने वाला जहाज़ी—संध्याकालीन मंत्रों को गुनगुनाने के लिए समुद्र पर गया है।

तसल्ली—जिसमें वह और गहरा डूब गया—पाया हुआ आहाब व्हेल से दूर हटकर पीछे जा बैठा और अन्तिम मृत्यु को उस स्थिर व शान्त नाव पर से एकटक निहारने लगा; क्योंकि वह विलक्षण दृश्य प्रत्येक व्हेल के मरते समय दिखलाई देता है। सर का सूरज की ओर घूम जाना और इस प्रकार समाप्त होना—वह विचित्र दृश्य उस शान्त संध्या को ऐसा अनोखा लग रहा था जैसा उसने उस रूप में पहले कभी अनुभव नहीं किया था।

"मृत्यु के क्षणों में उसकी गति-विधि कैसी विचित्र थी जब वह धीरे-धीरे किन्तु स्थिरतापूर्वक उस ओर ही घूमती चली जा रही थी और अपनी अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित कर रही थी। वह भी अग्नि की पूजा करती है। वह उस विशाल सूर्य की प्रजा है और उसके प्रति अत्यधिक श्रद्धा रखती है। इन दयार्द्र नेत्रों को ऐसा आकर्षक दृश्य देखना चाहिए। देखो! इधर देखो! पानी की इन घुमेड़ों के बीच; मनुष्य के समस्त दुःखों और वेदनाओं की चीख-चिल्लाहटों से दूर; इस खरे और निष्पक्ष समुद्र के बीच; जहां रिवाज के अनुसार कोई भी शिला आधार नहीं बनती; जहां चीन में प्राचीन काल से ये लहरें खामोश और निर्वाक् लोगों पर बहती चली आई हैं जैसे ये तारे 'नाइज़र'[1] के अनदेखे उद्गम स्थल पर चमकते रहते हैं; यहीं, यहां भी सम्पूर्ण विश्वास के साथ जीवन—सूर्य की ओर मुख करके मृत्यु को प्राप्त होता है। लेकिन देखो! मरने के फौरन बाद ही, मौत उस लाश को घेर लेती है और उसे किसी दूसरी ओर घुमा देती है।

"ओह! तू अर्द्ध प्राकृतिक काले रंग का हिन्दू, तूने डूबी हुई हड्डियों के

---

१. आफ्रीका की एक नदी।

ऊपर ही, इस उजाड़ समुद्र की गहराई में अपना कहीं अलग साम्राज्य स्थापित किया है। और तू रानी, मलका! तू भ्रष्टा है! तू ईमानदारी से उस सर्वभक्षी तूफ़ान के बीच ही मुझसे बोलती है और तब उस फुसफुसाहट में वे मृत्यु-संस्कार शान्त हो जाते हैं। ऐसा नहीं है कि उस मरती हुई व्हेल ने सूर्य के सामने अपना सर करने के बाद दुबारा घूम जाने पर मुझे प्रभावित नहीं किया है।

"ओह! त्रिगुण रूप में घेरा डालने वाली महिमामयी शक्ति! ओह! ऊंचे उठने वाले इन्द्रधनुष के-से फव्वारे! —वह दाबती है, यह उछालता है—परन्तु सब व्यर्थ। ओह व्हेल! सब बेकार है। उस तेज़ सूर्य से तू कुछ सान्त्वना चाहती है जो जीवन को केवल खींचता है; लौटाता नहीं। इस पर भी तेरा आधा काला रंग—अनिश्चित अंधियारे की तरह—गर्वीले किन्तु अनिश्चित विश्वास की ओर खींचता है। तेरे सब बेनाम घोल या मिश्रण, यहां मेरे नीचे बह रहे हैं। अपनी सांस के साथ मैं कभी जिन्दा चीजों के बीच में तैरता रहा था—जैसे वायु, लेकिन अब मुझे पानी के भारीपन की तरह तैरना पड़ रहा है।

"तू प्रसन्न रहे! हमेशा प्रसन्न रहे! ऐ समुद्र! जिसकी अनन्त उछालों में ही केवल शान्ति प्राप्त होती है। पृथ्वी पर पैदा होने वाला मानव जल अथवा समुद्र में समा जाता है। यों वे पहाड़ियां और घाटियां मेरी माताएं थीं; परंतु ऐ लहरो! अब तुम जैसे मेरे दत्तक भाई हो।"

## ६६

उस शाम को जो चार व्हेलें मारी गई थीं वे दूर-दूर पड़ी हुई थीं; एक पालों की ओर थी; एक उससे कम दूर पर पीछे की ओर, एक ऊपर और एक बगल में। ये तीनों रात होने के पहले-पहले लाई गई थीं। परन्तु आगे वाली सुबह से पहले नहीं आ पाई थी। जिस नाव ने उसका शिकार किया था वह आहाब की थी और समूची रात उस व्हेल के पास ही खड़ी रही थी।

मरी हुई व्हेल के फव्वारे वाले छेद में एक खम्भा ठोक दिया गया था

जिसके ऊपर का लैम्प व्हेल की काली और चमकदार पीठ को प्रकाशित करता रहा था। साथ ही उसकी रोशनी से समुद्र की लहरें भी मुस्करा रही थीं।

पारसी को छोड़कर आहाब और बाकी जहाजी सोए हुए थे। वह छोटी मछलियों को—जो व्हेल के पास उछल-उछलकर आ रही थीं—समूची रात बैठे हुए देखता रहा था। मछलियों के आते ही वह उसकी पूंछ के पास देवदार के हल्के तख्तों से खुट्-खुट् की आवाज़ कर देता जो ऐसी लग रही थी, जैसी गोमोराह के भूत क्षमा न पाने पर, झुंड के झुंड, अस्फाल्टिटीज के निकट हवा में फड़फड़ाते फिरते थे।

नींद की झपकियां दूर करके आहाब पारसी के सामने आया। वे रात्रि की उदासी में घिर गए क्योंकि उस जलमग्न दुनिया में उन्होंने उन मरते हुए आखिरी जीवों को देखा था।

"मैंने स्वप्न में उसे फिर देखा," वह बोला।

"वे ही लाशें ? बुड्ढे, क्या मैंने नहीं कहा था कि न लाश ही तेरी होगी न क़फन; न लाश ले जाने वाली गाड़ी, न सन्दूक ?"

"समुद्र में मरने वालों को गाड़ी कहां मिलती है ?"

"बुड्ढे ! मैं कहता हूं कि यात्रा में मरने से पहले तुमको इस समुद्र में लाशों की दो गाड़ियां देखनी होंगी; एक जिसको इन्सानी हाथों ने न बनाया है और दूसरी ऐसी लकड़ी की जो अमेरिका में पैदा हुई है।"

"आह ! पारसी, वह बड़ा अनोखा दृश्य होगा !—एक लाश की गाड़ी और उसकी कलगियां लहरों के साथ समुद्र में तैरें जैसे क़फन उठाने वाले। खूब !"

"तुम्हें विश्वास हो या न हो परन्तु तुम तब तक नहीं मर सकते जब तक तुम्हें वह दीख नहीं जाएगी, बुड्ढे।"

"और तुम अपनी बावत क्या कहते हो ?"

"यों मैं आखिर में ही आया लेकिन तुम्हारे पाइलट की तरह मैं तुमसे पहले ही जाऊंगा।"

"अगर ऐसा हो भी—और तुम पहले चले जाओ तथा मैं पीछे आऊं तो तुम मुझे रास्ता दिखाने के लिए मेरे सामने आ जरूर जाना; आओगे न ?—ओ मेरे पाइलट ! तो जो कुछ तुम कह रहे हो उस पर मैं विश्वास करूं ? मेरे अभी दो संकल्प हैं कि मैं मोबी डिक की जान लूंगा और स्वयं बचा रहूंगा।"

"बुड्ढे ! एक और प्रतिज्ञा करो," उस उदासी में जुगनू की तरह अपनी आंखें चमकाते हुए वह बोला—"सन की रस्सी ही केवल तुम्हें मार सकती है।"

"तुम्हारा मतलब है फांसी—तब तो मैं जल और थल पर अमर हूं। जल और थल पर अमर हूं," उपहास करते हुए आहाब ने कहा।

दोनों ही फिर खामोश हो गए जैसे वहां कोई न हो। सबेरा हो गया। ऊंघते हुए जहाजी उठ बैठे। दोपहर तक मरी हुई व्हेल जहाज़ पर ले आई गई।

# ९७

अन्त में लाइन का मौसम पास आ गया और हर दिन अपने केबिन से निकलकर जब आहाब अपने सामने दृष्टि दौड़ाता तो सतर्क डांडेवाला बड़े दिखावटीपन से उसकी सीढ़ियों को पकड़ लेता और उत्कंठित मल्लाह रस्सों की ओर लपक जाते और वहां खड़े होकर वे कील से ठुके डवलून[1] पर नजरें गड़ाए रहते। भूमध्य रेखा की ओर जहाज़ के रुख करने की आज्ञा पाने के लिए वे उतावले हो रहे थे। समय रहते आज्ञा मिली। तेज़ धूप पड़ रही थी और आहाब अपनी ऊंची नाव के आगे बैठा हुआ सूर्य को देखकर प्रतिदिन के संचालन के निर्णय के सम्बन्ध में सोच रहा था।

जापान सागर में गर्मियों के दिन स्फूर्तिदायक और चमकीले होते हैं। वह तेज चमक वाला सूर्य जैसे सागर के गरम और अमाप प्याले का प्रतिबिम्ब हो। आसमान जैसे चमकदार वार्निश किया हुआ दिखाई देता है। बादलों का कहीं कोई चिह्न नहीं रहता। क्षितिज जैसे तैरता रहता है। इस उतावली लालिमा की स्पष्ट झलक को देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे ईश्वर के सिंहासन की भव्यता मुस्करा रही हो। आहाब के क्वाडरैन्ट[2] में रंगीन शीशे लगे हुए थे, जिससे सूर्य की गर्मी को देखा जा सकता था। जहाज़ के हिलने-डुलने के साथ वह

---

१. प्राचीन स्पेन का एक सोने का सिक्का।

२. सामुद्रिकों का सूर्य की ऊंचाई मापने का यन्त्र।

भी हिल-डुल रहा था और उसकी आंखें आसमान को देखने वाली दूरबीन से लगी हुई थीं। कुछ मिनट तक उसकी नज़र इस इन्तजार में टिकी रही कि कब सूर्य अपनी चरम सीमा पर पहुंचता है।

जब वह ध्यानस्थ था—जहाज़ के डेक पर पारसी उसके पीछे की तरफ़ झुका हुआ था और आहाब की ही भांति अपना सर लटकाकर सूर्य को देख रहा था। अंततः इच्छित दृश्य दिखाई दिया और अपने हड्डी वाले पैर पर पेंसिल टिकाते हुए आहाब ने गणना की और सोचा कि उपयुक्त समय क्या होगा? तब क्षणिक मानसिक कल्पनाओं में बह जाने के अनंतर उसने पुनः सूर्य की ओर देखा और अपने आपसे बुदबुदाया :

"तुम सागर के संकेत! तुम ऊंचे और शक्तिशाली पथप्रदर्शक। तुम मुझे सच-सच बताओ कि मैं कहां हूं—और क्या तुम तनिक भी संकेत नहीं कर सकते कि आगे मैं कहां होऊंगा? और क्या तुम यह नहीं बता सकते कि इस समय मेरे आसपास दूसरी और कौन-सी वस्तु जीवित है? मोबी डिक कहां है? इस समय तुम उसे जरूर देख रहे हो। मेरी ये आंखें उस दृष्टि को देख रही हैं जो इस समय उसे अवश्य देख रही होंगी। ऐ सूर्य! जिसे कोई नहीं देख पाता उस तक तुम्हारी पहुंच है।"

तब अपने क्वाडरैन्ट पर दृष्टि गड़ाते हुए और उसके अनेक हिस्सों को छूते हुए उसने पुनः झांका और उसका बड़बड़ाना जारी रहा—"पागल खिलौने! तेज-तर्रार एडमिरल, कमोडोर और कैप्टेन लोगों का बच्चों का-सा खेल, संसार तेरी ताकत और चालाकी की प्रशंसा करता है। इतने पर भी, इस संसार में सूर्य किस कोण पर है इसके अतिरिक्त यह कुछ भी नहीं बताता। परंतु एक बूंद जल और बालू का एक कण कल कहां होगा यह तू नहीं बता सकता। अपनी पुंसत्वहीनता से तू सूर्य का भी अपमान करता है। विज्ञान! तू बेकार और तेरा यह खिलौना बेकार, और वे सब वस्तुएं भी व्यर्थ हैं जो मनुष्य की नज़र को, दूर आकाश की ओर ले जाती हैं, जिनकी सजीव विशालता उसे झुलसा देती है। ओ सूर्य! तेरी रोशनी से मेरी आंखें झुलस रही हैं। इस पृथ्वी के क्षितिज से जो समान स्थल दिखाई देते हैं वे प्राकृतिक रूप में मनुष्य की आंखों की दृष्टियां हैं। वे उसके मस्तक से नहीं दिखतीं। परमात्मा ने अपनी सृष्टि को देखने के लिए ही ये नेत्र दिए हैं। क्वाडरैन्ट! तू बेकार

है !"—उसको डेक पर फकते हुए वह बोला—"मैं अपने सांसारिक मार्ग को अब आगे कभी भी तेरे द्वारा नहीं देखूंगा। जहाज़ की कम्पास और गणना वाले यंत्र ही मेरा रास्ता दिखाएंगे। इन्हीं से मैं समुद्र में अपनी स्थिति जान सकूंगा। हां।"—नाव से उतरकर डेक पर आते हुए वह बुदबुदाता गया—"इसलिए ऐ नीच वस्तु ! मैं तुझे कुचलता हूं जो इतनी कमजोरी से आसमान की ओर इशारा करती है। मैं इसे नष्ट करता हूं।"

इस प्रकार बड़बड़ाते हुए उस सनकी बुड्ढे ने अपने एक ज़िन्दा और एक मरे हुए—दोनों पैरों से उसे रौंद डाला। आहाब जैसे खुश हो रहा था और सामने खड़ा हुआ निश्चल पारसी वह सब देख रहा था। अपने कप्तान की उस सनक की बात जानकर सभी जहाज़ी आगे की किलेबंदी के पास इकट्ठा होकर तब तक आपस में फुस-फुस करते रहे जब तक आहाब ने आगे बढ़कर नहीं पुकारा—"रस्सों की ओर ! पतवारें आगे करो !—बराबर से !"

स्टारबक पिकोड की चाल का अनुभव करते हुए खड़ा था और आहाब की बकवास को भी सुन रहा था।

"मैं कोयलों से ठसाठस भरी आग के सामने बैठकर उसकी जलन और चमक को देखता रहा हूं। अंत में उसे मैंने धीरे-धीरे समाप्त होते भी देखा है। समुद्रों के बुड्ढे आदमी ! तेरी ज़िंदगी की इस सब तेज़ी के बाद क्या बचेगा ? बस राख का एक ढेर !"

"ऐ !" स्टब चिल्लाया—"लेकिन समुद्री कोयले की राख। ध्यान रखो स्टारबक ! समुद्री कोयला न कि तुम्हारा वह चारकोल या साधारण कोयला। हां-हां ! मैंने आहाब को बड़बड़ाते सुना है—'मेरे इन अनुभवी हाथों में किसी ने ताश के पत्ते दे दिए हैं और कसम खिलाई है कि मैं उन्हें ज़रूर खेलूं। दूसरा कोई नहीं।' आहाब ! तू काम ठीक करता है। इस खेल में ही जिओ और इसी में ही मरो।"

## ६८

गरम और सुहाने मौसम में जहरीले से जहरीले सांप बढ़ते-पलते हैं ; ताज़ी हरियाली की शीतल छांव में ही बंगाल का शेर फैलकर आराम करता है। साफ़ और चमकदार आसमान में ही भयंकर तूफ़ान छिपे रहते हैं ; शानदार क्यूबा[1] उन झंझावातों और तूफ़ानों से परिचित है जिन्होंने उत्तर के अनदेखे और ऊबड़-खाबड़ स्थानों पर आक्रमण नहीं किया। इसीलिए जापान के उस चमकते हुए समुद्र में मल्लाहों ने भयानक अन्धड़ और टाइफून (तूफ़ानों) का मुक़ाबला किया। बहुत बार ऐसा होता है कि अलसाए और नींद में बेसुध किसी नगर पर उज्ज्वल-नील आकाश से तूफानों के बम फूट पड़ते हैं।

उस दिन शाम तक, पिकोड के पाल फट गए और खाली खम्भे तूफ़ान से लड़ते रहे, जो उस दिन सीधा पिकोड पर हावी हो गया था। जब अंधेरा घिर आया तो सागर और आसमान तूफ़ान से धू-धू करने लगे; बिजली कड़कती रही जिससे दिखाई दिया कि मस्तूल के इधर-उधर पालों के चिथड़े सिमट गए हैं और जैसे उस अंधड़ के गुस्से का पहला प्रकोप उन्हीं पर हुआ है।

मस्तूल के एक रस्से को पकड़े हुए स्टारबक छोटे डेक पर खड़ा था। दूर आसमान में बिजली की हर कौंध पर दिखाई दे जाता था कि कितना विनाश और हो चुका है। स्टब और फ़्लास्क लगातार आदमियों को हुक्म दे रहे थे। परन्तु उस समय उनके सब प्रयत्न विफल होते दिखाई दे रहे थे। क्रेन की चोटी पर उठाए जाने के बाद भी आहाब की नाव आगे के डेक पर नहीं बच पाई। घुमेड़ें लेती हुई समुद्र की तूफ़ानी लहरों ने ऊंचे उठकर जहाज़ पर थप्पड़ लगाने शुरू किए और एक झोंके ने तो ऊपरी रेलिंग को पारकर अन्दर पानी भर दिया। सभी भीग गए।

"बहुत बुरा हुआ, बहुत बुरा हुआ, मि० स्टारबक!" स्टब चीखा—"लेकिन समुद्र तो अपना काम करेगा ही। अकेला एक स्टब तो उससे नहीं लड़

---

१. मेक्सिको की खाड़ी में स्थित पश्चिमी द्वीप-समूह का एक द्वीप।

सकता। मि० स्टारबक ! आप जानते हैं कि टकराने से पहले कोई लहर बड़ी दूर से चलती है और सारी दुनिया में दौड़ जाती है। उसके बाद वसन्त आता है। लेकिन मेरी दौड़ शुरू करने के लिए तो सिर्फ़ यह डेक ही है। लेकिन चिन्ता मत करो; यह भी आनन्ददायक ही है; इस पुराने गीत में तो यही कहा गया है :

ओह ! अन्धड़ है खुशमिजाज़
और जोकर है व्हेल
पूंछ फटफटाती है जो अपनी;

"कैसा मसखरा, खिलाड़ी, ऊधमी, मनमौजी, हंसोड़ और जादू-टोने वाला है यह समुद्र ओह !

वह अपने आप बहता है, उछलता है,
उसका मधुर पेय झाग देता है—
वह चटखता और चौंकता है,—

"कैसा मसखरा, खिलाड़ी, ऊधमी, मनमौजी, हंसोड़ और जादू-टोने वाला है यह समुद्र, ओह !

तूफ़ान जहाज़ों को करता है चूर-चूर,
वह बहकर जैसे ओठ चटकारता है—
जैसे उस पेय का ले रहा हो जायका,—

"कैसा मसखरा, खिलाड़ी, ऊधमी, मनमौजी, हंसोड़ और जादू-टोने वाला है यह समुद्र, ओह !"

"ठहरो स्टब", स्टारबक चिल्लाया—"यह तूफ़ान आ रहा है और अपना बाजा हमारे रस्सों के बीच बजा रहा है लेकिन अगर तुम बहादुर हो तो इस पर भी शान्त रहो।"

"लेकिन मैं बहादुर आदमी नहीं हूं। मैंने यह कभी नहीं कहा कि मैं बहादुर हूं। मैं डरपोक हूं और अपने को हिम्मत बंधाने के लिए गाता हूं। और मि० स्टारबक ! मेरी गर्दन उड़ा देने के अलावा कोई तरीक़ा नहीं है जो मुझे गाने से रोक सके। और जब ऐसा हो जाएगा तब मैं तुम्हारे लिए भगवान से प्रार्थना के गीत गाऊंगा।"

"पागल आदमी ! अगर तेरे आंखें नहीं हैं तो मेरी आंखों से देख।"

"क्या ! आदमी चाहे जितना बेवकूफ़ हो लेकिन रात के अंधियारे में तुम किसी दूसरे से ज़्यादा कैसे देख सकते हो ?"

"यहां !" स्टब का कन्धा पकड़कर मौसम को बताने वाले लोहे के तीर की ओर इशारा करते हुए स्टारबक बोला—"क्या तुम यह नहीं समझ रहे हो कि तूफ़ान पूर्व से ही आ रहा है,' जिधर आहाब मोबी डिक के शिकार के लिए जाना चाहता है ? वही रास्ता जो उसने दोपहर को तय किया था। उसकी नाव को सामने देखो। स्टोव कहां है ? भले आदमी ! पीछे वाले पालों की तरफ जहां वह खड़ा होता है। अब अगर तुम्हें गाना ही है तो जहाज़ से बाहर कूद जाओ और गाओ।"

"मैं तुम्हारी बात, आधी भी नहीं समझ पाया। हवा में क्या है ?"

"हां, हां ! उत्तमाशा अन्तरीप से होकर नन्तुकेत के लिए सबसे छोटा रास्ता है", स्टब के प्रश्न की ओर ध्यान न देते हुए स्टारबक अपने आप बुदबुदाया। "इस तूफ़ान से, जो हमको पीस डालने के लिए आया है, हम तभी बच सकते हैं जब घर की ओर चल दें। सामने हवा के रुख की तरफ़—सर्वत्र अंधियारा है, विनाश है; परन्तु दाहिनी तरफ़ घर की ओर, मैं देखता हूं कि रोशनी की चमक है लेकिन उसमें आसमानी बिजली की चमक नहीं।"

इसी समय, उस भयंकर अन्धकार के बीच में जो शान्ति और उदासी छाई हुई थी उसमें बिजली की कौंध के साथ एक आवाज़ सुनाई दी और फ़ौरन ही सबके ऊपर से अन्धड़ और तूफ़ान घुमेड़ें लेने लगा।

"कौन है ?"

"ओल्ड थन्डर !" अपने पिवट होल[1] से किलेबन्दी की ओर बढ़ते हुए आहाब बोला।

जिस तरह ऊंची हवेलियों में बिजली से बचाव करने के लिए ऊंचाई से लोहा लाकर नीचे धरती में गाड़ दिया जाता है, उसी प्रकार जहाज़ों में भी वैसा ही लोहा ऊंचे मस्तूल में लगा रहता है जो पेंदे से बहुत नीचे पानी में डाल दिया जाता है। इसी को 'लाइटनिंग रॉड' कहते हैं।

"रॉड ! रॉड !" जहाज़ियों से स्टारबक चिल्लाया क्योंकि आहाब के बहुत

---

१. वह छेद, जिस पर आहाब अपना बना हुआ पैर टिकाता था।

पास अभी-अभी बिजली कौंध गई थी—"जल्दी करो !"

"ठहरो !" आहाब चिल्लाया—"हम लोगों का पक्ष कमज़ोर है तो क्या, मुकाबला बराबरी का होने दो। यों मैं एक रॉड हिमालय और दूसरी ऐंडीज़[1] पर लगा दूंगा जिससे सारी दुनिया बिजली के ख़तरे से बची रहे।"

"वह सामने देखिए!" स्टारबक चिल्लाया—"कारपूसैन्ट्स! कारपूसैन्ट्स !"

आगे के यार्ड के सभी कोनों पर पीली आग चमकने लगी और त्रिशूल की तरह के लाइटिंग रॉडों के हर छोर पर सफ़ेद रंग की लपटें उठने लगीं और तीनों ऊंचे मस्तूल उस गन्धक की हवा से जलने लगे जैसे मोम की तीन भारी मोमबत्तियां वेदी के सामने जल रही हों।

"मत फ़िक्र करो नाव की ! उसे जाने दो !" स्टब चिल्लाया क्योंकि उमड़ता हुआ समुद्र उसकी छोटी नाव पर उछल रहा था और उसके रस्सों में उसका हाथ पिचकर रह गया था। "नाश हो इसका !"—पीछे हटते ही उसने आग की लपटों को देखा और चिल्लाया—"कारपूसैन्ट्स, हम सब पर दया करो।"

जहाज़ियों के लिए कसमें खाना बड़ा आसान है। वे शान्ति की सुस्ती में और तूफ़ान की किटकिटाहट में कसमें खाएंगे। वे बड़े मस्तूल के सामने के फैले हुए यार्ड से गालियां देंगे और तब उनमें से कई आराम पहुंचाने वाले समुद्र में झूले की तरह हिलकोरें लेंगे लेकिन अपनी पूरी यात्रा में मैंने इस प्रकार कसमें खाते कभी उनको नहीं देखा। अब जहाज़ पर परमात्मा की जलती उंगलियां जैसे टिक गई हैं।

जब यह पीली आग सामने जल रही थी तभी जहाज़ियों के कुछ शब्द सुनाई दिए जो एक भीड़ में ऊपर की किलेबन्दी के पास खड़े थे और उन सब-की आंखें उस गन्धक की जलन पर चिपकी हुई थीं जैसे दूर छितरे हुए टिम-टिमाते नक्षत्रों का समूह एक जगह इकट्ठा हो। उस भुतही आग से प्रभावित भीमकाय नीग्रो डैग्गू अपने शरीर के वास्तविक ढांचे से तिगुना हो गया और ऐसा काला धुआं-सा दिखाई देने लगा जैसे वह तूफ़ान वहीं से उठ रहा हो। टाशटेगो के खुले हुए मुंह में उसके सफ़ेद दांत चमक रहे थे और ऐसा दीख

---

१. दक्षिणी अमेरिका की उत्तर-दक्षिण की विस्तृत पर्वत-श्रेणी।

रहा था जैसे कारपूसैन्ट्स से वह भी छू गया है। उस विलक्षण रोशनी की जलन में 'क्वीकेग' के हाथ के छापे उसके शरीर में जलती हुई शैतान की नीली आग की तरह लपटें दे रहे थे।

वह आकस्मिक घटना अन्त में समाप्त हुई और साथ ही दूर दिखाई देने वाली पीली आग भी समाप्त हो गई तथा एक बार फिर पिकोड और उसपर रहने वाली हर आत्मा जैसे खामोशी में डूब गई। सब तरफ़ सन्नाटा खिंच गया। एक-दो मिनट बीतने पर स्टारबक किसी को धक्का देते हुए आगे बढ़ गया। वह स्टब था। "भले आदमी ! अब क्या सोचते हो ? मैंने तुम्हारी चीख सुनी थी। वह आवाज़ वैसी तो नहीं थी जैसी तुम्हारे गाने के समय थी।"

"नहीं, नहीं, वैसी नहीं थी। मैंने कहा कि कारपूसैन्ट्स हम सब पर दया करो और मैं अब भी सोचता हूं कि वे करेंगे। परन्तु क्या वे केवल लम्बे मुंह वालों पर दया करते हैं ?—क्या तेज़ हंसने के लिए उनके पास मुंह नहीं हैं ? मि० स्टारबक ! इधर देखो—लेकिन इस घने अंधेरे में कैसे देखा जा सकता है ? मेरी बात सुनो। मेरा ख्याल है कि मस्तूल की वह आग सौभाग्य की निशानी थी क्योंकि उन मस्तूलों के नीचे ही व्हेल के तेल का बड़ा गोदाम भरने को है। समझे। हां, हमारे तीनों मस्तूल व्हेल के तेल की मोमबत्तियों की तरह हैं—यह अच्छे भविष्य का परिचायक है।"

इस समय स्टारबक ने स्टब के चेहरे की ओर देखा, जो धीरे-धीरे रोशनी में आ रहा था। ऊपर देखते हुए वह चिल्लाया—"देखो, देखो !"—और एक बार फिर, ऊंचे पर, पहले से दूने आश्चर्य के साथ, उन्होंने वही पीली आग देखी।

"कारपूसैन्ट्स ! हम सब पर दया करो," स्टब फिर चिल्लाया।

बड़े मस्तूल के नीचे सोने के सिक्के और आग के नीचे झुका हुआ पारसी आहाब को देख रहा था परन्तु उसका सर उससे दूसरी दिशा में झुका हुआ था ; जब कि पास ही, मेहराबदार और ऊपर झूलते रस्सों को मस्तूल से बांधकर बहुत-से जहाज़ी आग की चमक से चकाचौंध थे और पास-पास खिसक आए थे जैसे वे रस्सों पर बर्रे की तरह झूल रहे हों। कौतुक में कोई खड़ा रह गया था, कोई आगे कदम बढ़ा रहा था या कोई हरकुलीज़ की तरह दौड़ रहा था। अन्य कई डेक से चिपके हुए थे परन्तु सबकी नजरें ऊपर उठी हुई थीं।

"ऐ, ऐ ! आदमियो !" आहाव चिल्लाया—"उसकी ओर ग़ौर से देखो। वह सफेद रोशनी सफेद व्हेल की ओर चलने का इशारा कर रही है। बड़े मस्तूल के रस्से मुझे दो। मैं उसकी नब्ज़ टटोलूंगा और मेरी बात वे समझेंगे। आग के मुक़ाबले में ख़ून की गर्मी ! हां !"

तब घूमकर, अपने बाएं हाथ से रस्सा पकड़े हुए और अपना पैर पारसी पर रखकर उसने सीधे खड़े होकर लपटों के उस त्रिशूल को देखा।

"ओ अग्नि की आत्मा ! मैंने इन्हीं समुद्रों पर एक ईरानी की तरह तेरी पूजा की थी और उस धार्मिक कार्य को तब तक करता रहा जब तक तूने मुझे जला नहीं दिया जिसका दाग़ आज तक बना हुआ है। मैं तुझे बहुत अच्छी तरह जानता हूं। मैं जानता हूं कि तेरी ठीक उपासना का मतलब है विद्रोह। न प्रेम से, न श्रद्धा से तू मेहरबानी करती है और घृणा से भी तू मारने के सिवा और क्या करेगी; सभी मारे जाते हैं। कोई भी निडर मूर्ख तेरे सामने नहीं आता। मुझमें तेरी यह निर्वाक्, निराकार शक्ति मौजूद है, लेकिन मेरी इस भूकम्प की-सी जिन्दगी की आख़िरी सांस तक तेरे प्रभाव के लिए बहस बनी रहेगी। एक व्यक्ति के व्यक्तित्व और उसके निराकार रूप में भी साकार रूप बना रहेगा। जहां भी मैं आऊं, जाऊं मुझमें राजसी प्रभाव बना ही रहेगा और उसके सब शाही हक़ मुझे प्राप्त रहेंगे। लेकिन युद्ध एक दर्द है और घृणा एक कष्ट ! तू अपने प्यार के छोटे से छोटे रूप को लेकर मेरे सामने आ; मैं तेरे सामने झुक जाऊंगा और तुझे चूमूंगा। हां, अपने बड़े से बड़े रूप में तू दैविक बनकर ही सामने आ। यों तेरी शक्ति के प्रभाव से ही जहाज़ों में समूची दुनिया समा जाती है, इस पर भी वह अन्तर बना रहता है और उदासीनता छाई रहती है। ओह, तू निष्कलंक आत्मा ! तेरी आग मुझे पागल बनाती है। और आग का असली बेटा होने के कारण मैं अपनी सांस से लपटें तुझे ही लौटा देता हूं।"

*(अचानक बिजली का बारम्बार कौंधना। नौ लपटें लम्बी-लम्बी, पहले से तिगुनी ऊंचाई तक पहुंचती हैं; सबके साथ आहाब अपनी आंखें बन्द कर लेता है, उसका दाहिना हाथ उनको ज़ोर से दाबता है)*

"मुझमें तेरी निर्वाक् और निराकार शक्ति मौजूद है; क्या मैंने ऐसा नहीं कहा ? न मुझसे यह भुलाया गया, न मैं इन रस्सों या सम्बन्धों को ही छोड़

रहा हूं। तू अन्धा बना सकती है लेकिन मैं टटोल सकता हूं। तू समाप्त कर सकती है लेकिन मैं तब राख बनकर रहूंगा। इन ग़रीब आंखों और जुड़े हाथों से श्रद्धा ले। मैं उसे नहीं लूंगा। यह बिजली मेरी खोपड़ी के भीतर झनझना रही है। मेरी आंखों की पुतलियां बराबर दर्द कर रही हैं। मेरा यह मसला हुआ दिमाग सर से दूर होकर जैसे किसी सुन्न करने वाली धरती पर लोट रहा है। ओह! ओह! अन्धे होने पर भी मैं तुझसे बातें करूंगा। यों तू रोशनी है लेकिन अंधियारे में ही लपलपाती है। लेकिन मैं अन्धकार हूं जो रोशनी से बाहर कौंध रहा हूं; तुझसे दूर हो रहा हूं। भाले थम गए हैं; आंखें खोल। देखती है या नहीं? लपटें जल रही हैं? ओह, तू बहुत महान् है। मुझे अपने वंश के लिए अपार गर्व है। लेकिन तू ही अग्नि-सा तेज मेरा पिता है; अपनी प्यारी मां का मुझे कुछ पता नहीं। ओह, कठोर! तूने उसके साथ क्या किया? यही मेरी पहेली है; लेकिन तेरी उससे भी बड़ी है। तुझे पता नहीं कि तू कैसे आई लेकिन तू अपने को अजन्मा कहलाती है। ओ सर्वशक्तिमान्, तू अपने बारे में जो कुछ नहीं जानती मैं अपने बारे में वह जानता हूं। ऐ स्पष्ट आत्मा! तुझ से आगे कुछ अस्पष्ट चीज भी है जिसका आदि और अन्त केवल समय है। यह सब सृजन यन्त्रवत् है। तेरे द्वारा, तेरी लपटों के बीच से, मेरी ये झुलसी आंखें—उस सबको धुंधला देख रही हैं। ओह, तू अनाथ अग्नि, स्मृति से परे ऐ साध्वी! तेरी अपनी भी न सुलझने वाली पहेलियां हैं। तेरे अपने कष्ट हैं जिन्हें कोई बांट नहीं सकता। एक बार फिर अपने समूचे कष्ट के साथ मैं अपनी स्तुति पढ़ता हूं। उठ! लपक और आसमान को छू ले। मैं भी तेरे साथ उछलूंगा। मैं तेरे साथ जलूंगा। तेरे साथ मिटूंगा—जलूंगा। तेरा विरोध करते हुए तेरी पूजा करूंगा।"

"नाव! नाव!" स्टारबक चिल्लाया—"ऐ बुड्ढे! अपनी नाव तो देख!"

पर्थ की भट्टी में बना हुआ आहाब का हारपून अपने स्थान पर जमा रहा जिससे व्हेल-नाव का अगला हिस्सा सधा रहा परन्तु समुद्र की थपेड़ों से उसका चमड़े का खोल बह गया और उसके नोकीले कांटे से पीली आग की लपट निकलने लगी। किसी सर्प की लपलपाती जीभ की तरह उस खामोश हारपून को जलते देखकर स्टारबक ने आहाब की बांह पकड़कर कहा—"परमात्मा! परमात्मा तुम्हारे विरुद्ध है, बूढ़े आदमी! धैर्य रखो! यह एक दुर्भाग्यपूर्ण

यात्रा है ! दुर्भाग्य में ही आरम्भ हुई और उसी प्रकार चल रही है । महाशय ! हम लोग घर की तरफ चलें । उसमें अच्छी यात्रा रहेगी और वायु भी अनुकूल होगी ।"

स्टारबक की बात को सुनकर परेशान जहाज़ी रस्सों की ओर लपके । एक भी पाल इधर-उधर नहीं पड़ा रहने दिया गया । सभी लोग बुरी तरह चिल्ला रहे थे । परन्तु डेक पर बिजली से जलते हुए खम्भों की चरचराहट की ओर बढ़ते हुए और अपने जलते हारपून को खींचकर आहाब ने एक टार्च की तरह उसे सब तरफ हिलाते और बिगड़ते हुए कहा कि जो भी मछुआ रस्सा ढीला करेगा उसीको वह हारपून से दाग देगा । उस लोहे और आहाब दोनों को देखकर सभी जहाजी परेशान-से होकर इधर-उधर भागने लगे । तब आहाब फिर बोला :

"सफेद व्हेल को मारने की तुम्हारी सब क़समें उसी प्रकार स्थिर हैं जिस प्रकार मेरी । बूढ़ा आहाब दिल, आत्मा, शरीर, फेफड़ों और जीवनी शक्ति से उसके लिए दृढ़ है । तुम लोग यह भी जानते हो कि यह दिल क्या आवाज़ करता है । इधर देखो ! इस तरह मैं अपना आखिरी डर भी भस्म किए देता हूं !" यह कहते हुए उसने एक ही फूंक से आग को खत्म कर दिया ।

जिस प्रकार एक अन्धड़ मैदान को साफ कर देता है और लोग विशाल एल्म के पेड़ों के पास से भाग जाते हैं, क्योंकि उसके नीचे बिजली गिरने का भय और अधिक होता है—आहाब के उन अन्तिम शब्दों को सुनकर उसी तरह मछुए घबराकर उससे दूर हो गए ।

# ६९

*(आहाब पतवार के पास खड़ा है; स्टारबक उसके निकट पहुंचता है)*

"हमको बड़े मस्तूल का पाल नीचे गिरा देना चाहिए सर ! पाल ढीला पड़ रहा है । बीच के हिस्से की गरारी उलझ गई है । मैं उसे गिरा दूं ?"

"कुछ मत गिराओ । बांध दो । अगर मेरे पास और ऊंचे पाल के खम्भे होते तो मैं उन्हें ऊपर उठा देता ।"

"सर !—खुदा के नाम पर !—सर !"

"हां।"

"लंगर काम कर रहे हैं, सर। मैं उन्हें ऊपर घसीट लूं ?"

"कुछ मत गिराओ, कुछ मत खींचो; सिर्फ़ सब कुछ बांध दो ! हवा बढ़ रही है लेकिन उसने अभी मेरी मेज के हत्थों को नहीं छुआ है। जल्दी, उसे ठीक करो। मस्तूल और नावें भी ! वह मुझे किसी कूबड़ वाले स्किपर के पास—किसी किनारे वाले छोटे जलपोत के पास—लिए जा रहा है। बड़े मस्तूल का पाल नीचे गिरा दिया ! हो ! गोंद के बर्तन ! भारी से भारी अंधड़ के लिए बड़े और मजबूत जहाज बनाए गए और उनका मुख्य भाग और यह मेरा दिमाग़ी जहाज़ अपने आप उड़ा चला जा रहा है। मैं उसे तोड़ दूं क्या ? ओह, तूफ़ान के समय में केवल डरपोक ही अपने दिमाग़ से काम नहीं लेते। वहां क्या शोर हो रहा है ? अगर मुझे मालूम न होता कि पेट के दर्द में आदमी चीखता है तो मैं इसे भी बहुत ऊंचा ही मानता। अरे, दवा खाओ, दवा !"

## ७०

### आधी रात, ऊपर की किलेबंदी

*( स्टब और फ़्लास्क उस पर चढ़े हुए हैं और वहां लटकते हुए लंगरों को रस्सियों से बांध रहे हैं )*

"नहीं, स्टब ! उस गांठ को तुम जितना चाहो बांध सकते हो लेकिन मुझ पर उस बात को नहीं जमा सकते, जिसे तुम अभी-अभी मुझसे कह रहे थे। और अभी कितना समय हुआ है जब तुम इसी के खिलाफ कह रहे थे ? क्या तुमने एक बार नहीं कहा था कि जिस जहाज को आहाब चलावे उसे बीमे का कुछ अधिक रुपया देना चाहिए और जैसे उसके पीपों में तेल की जगह बारूद भरी है और सन्दूकों में विस्फोटक ! चुप रहो। क्या तुमने यह नहीं कहा था ?"

"मान लो कि मैंने कहा था, तो ? तब से मेरे शरीर में कुछ परिवर्तन हो गया है, तब मस्तिष्क में क्यों नहीं होगा ? मान लो कि पीपों में बारूद और सन्दूकों में जलते हुए विस्फोटक भरे हुए हैं, तो क्या उनमें इस बरसते पानी में

आग लग जाएगी ? क्यों, मेरे बौने ! तुम्हारे लाल रंग के बाल हैं लेकिन उनमें आग क्यों नहीं लग गई ? फ़्लास्क, अपने आपको हिलाओ-डुलाओ; या तो तुम अक्वारियस[1] हो या पानी ढोने वाले। क्या तुम्हें नहीं मालूम है कि समुद्री इश्योरेन्स कम्पनियां इस प्रकार के ख़तरों के लिए ज़्यादा गारंटी लेती हैं ? फ़्लास्क ! ये पानी के नल हैं। लेकिन फिर बोलो तो मैं दूसरी बात का जवाब दूं। लंगर पर से पहले अपना पैर हटाओ जिससे मैं रस्सा फेंक सकूं। अब सुनो। तूफ़ान में ऐसे मस्तूल के पास—जिसमें लाइटनिंग रॉड लगा हुआ है और ऐसे के पास जिसमें लाइटनिंग रॉड नहीं लगा है—खड़े होने में क्या विशेष अन्तर है ? क्या तुम जानते नहीं, लकड़ी की खोपड़ी वाले आदमी, कि जब तक मस्तूल पहले न गिरे तब तक रॉड को पकड़ने वाले आदमी पर कोई ख़तरा नहीं आ सकता ? तब तुम क्या बात करते हो ? सौ में एक जहाज़ भी ऐसा नहीं होता जिस पर रॉड और आहाब हो। और मेरी तुच्छ राय में जितना अधिक ख़तरा समुद्र में तैरने वाले दस हज़ार जहाज़ों को है उससे कहीं कम हम लोगों को है। क्यों किंग-पोस्ट, तब तो तुम चाहोगे कि संसार भर के लोग अपने टोप के कोने में एक छोटा-सा लाइटनिंग रॉड लगाए रहें जैसे कोई फ़ौजी अफ़सर पंख लगाए रहता है और वह पूंछ की तरह पीछे झूलता रहे। फ़्लास्क ! तुम कायदे की बात क्यों नहीं करते ? अक्ल से काम लेना तो सरल काम है फिर तुमको क्या हो गया है ? कोई भी आधी आंख वाला भी अक्लमन्द हो सकता है ?"

"स्टब ! मुझे वह कुछ पता नहीं। कभी-कभी मेरे लिए मुश्किल हो ही जाता है।"

"हां, जब कोई आदमी पानी से तर रहता है तब उसमें अक्ल ज़रा देर में आती है। यह सही है। और इस बौछार से मैं भीग चुका हूं। कोई चिन्ता नहीं। हां, तो धरती को छूने के अलावा डेक पर कड़कने वाली बिजली भी संतोषजनक थी। कुछ लोग लम्बी पूंछों पर हंसते हैं लेकिन मैं कहता हूं कि जल के ऊपर चलने वालों को हमेशा लम्बे कोट पहनने चाहिएं। लेकिन हे भगवान् ! स्वर्ग से आने वाली ये हवाएं इतनी बेहूदी क्यों होती हैं ? यह बड़ी ख़राब रात है, छोकरे !"

---

१. मीन राशि वाले।

## ७१

*(बड़े मस्तूल के आगे का खुला हिस्सा; टाशटेगो उसके चारों ओर नए रस्से बांध रहा है )*

"ऊं, ऊं, ऊं । ऐ तूफ़ान ठहर जा ! बहुत हो चुका। तूफ़ान से क्या फ़ायदा है ? ऊं, ऊं, ऊं । हमें तूफ़ान पसन्द नहीं है । हमें शराब चाहिए । हमें एक गिलास 'रम' दो । ऊं, ऊं, ऊं !"

## ७२

तूफ़ान के भारी धक्कों के कारण, पिकोड पर, जबड़े की हड्डी का बना पतवार का डंडा कई बार उछल-उछलकर डेक पर जा गिरा । वैसे रोकने वाले रस्से उसमें लगे हुए थे लेकिन उन्हें रोका ही नहीं जा सकता था ।

इस तरह के भारी तूफ़ानों के बीच जब जहाज़ खेल की चिड़िया की तरह उछलता है तो बारम्बार, कम्पास की सूइयों को थोड़ी-थोड़ी देर में देखना पड़ता है । पिकोड पर भी वैसा ही हो रहा था । हर धक्के पर पतवार वाला कम्पास के डायल को देखना न भूलता क्योंकि तेज़ी के साथ वह कार्ड पर घूम रहा था । वह ऐसा दृश्य था जिसे कोई भी आदमी आकुलता के बग़ैर नहीं देख सकता ।

आधीरात के कुछ घंटों बाद तूफ़ान इतना मंद पड़ गया कि स्टारबक और स्टब के निरन्तर परिश्रम के कारण पीछे, आगे और बड़े मस्तूल के फटे हुए पालों को काटकर उतार लिया गया और वे ऐसे जा गिरे जैसे अल्बैट्रास पक्षी के पंख कभी-कभी तूफ़ान में झर जाते हैं ।

तीन नए पाल और उनके ऊपर एक तूफ़ान के मौके वाला पाल चढ़ा दिए गए और जहाज़ कुछ ढंग से पानी पर बहने लगा और आदेश दिया गया कि

अगर संभव हो तो पूर्व-दक्षिण की ओर चलना है। क्योंकि तूफ़ान के बीच तो जहाज़ उसी की मर्ज़ी पर चलता रहा था। अब उसका काम था जहाज़ को यथासंभव रास्ते के पास रखना और इसीलिए वह बार-बार कम्पास देख रहा था।

"हो! अच्छी हवा! ओह-ई-हो! खुश होओ, भाइयो!" जहाजी मस्ती में गाने लगे कि इतनी जल्दी दुःख का स्थान सुख ने ग्रहण कर लिया।

चौबीस घंटों में किसी समय डेक पर स्थिति कुछ भी बदले तो फौरन खबर दी जाए—इस हुक्म के अनुसार स्टारबक कैप्टेन आहाब को सूचना देने नीचे गया।

उस शाही कमरे को खटखटाने के पहले वह एक मिनट को दरवाज़े के सामने ठहर गया। केबिन का लैम्प झटकों के साथ जल रहा था और उसकी हिलती-जुलती परछाइयां बन्द दरवाज़ों पर पड़ रही थीं। एक ख़ामोश सन्नाटा केबिन पर अधिकार जमाए हुए था। यों डेक के शोर से वह थोड़ी-थोड़ी देर में टूट भी रहा था। भरी हुई बन्दूकें रैक में सीधी खड़ी चमक रही थीं। स्टारबक एक ईमानदार और सीधा आदमी था, किन्तु उन बन्दूकों को देखकर उस क्षण, उसके मन में बुरी भावना उत्पन्न हुई, किन्तु तटस्थ अथवा शुभ संस्कारों के कारण वह स्वयं उस क्षण उसे समझ न सका।

"एक बार वह मुझे गोली से मारने जा रहा था," वह बुदबुदाया—"हां, यही वह बन्दूक है जिससे एक बार उसने मेरी ओर निशाना लगाया था—वही नक्काशीदार और जड़ाऊ ताले वाली। लाओ मैं छुऊं तो—उठाऊं तो। कैसी विचित्र बात है कि एक से एक खतरनाक़ बर्छे हाथ से उठाने के बाद भी इसे छूते मेरा हाथ कांप रहा है। यह भरी हुई है क्या? मैं ज़रूर देखूंगा। और प्याले में पाउडर भरा हुआ है,—यह तो ठीक नहीं है। क्या यह अच्छा होगा कि इसे गिरा दिया जाए?—ठहरो। मैं इससे अपने को ठीक करूंगा। कुछ सोचते हुए मैं बन्दूक को हिम्मत के साथ पकड़े रहूंगा।—उसे अच्छी हवा की सूचना देने मैं आया हूं। लेकिन अच्छी किस तरह? मौत और विनाश के लिए अच्छी,—वह मोबी डिक के लिए अच्छी है। अच्छी हवा केवल वही है जो उस शापित मछली के लिए हो। यही नली, जिसे उसने मेरी ओर ताना थी; यही, जिसे मैं इस समय पकड़े हूं। जिस चीज़ को इस समय मैं थामे हूं इसी से उसने मुझे

मार डाला होता ।—और वह अपने सब जहाजियों को मार डालेगा । क्या वह नहीं कहता है कि वह किसी भी तूफ़ान में मस्तूलों को नहीं गिराएगा ? क्या उसने अपना वह स्वर्गिक क्वाडरैन्ट नहीं तोड़ डाला ? और क्या इन खतरनाक समुद्रों में वह ग़लतियों से भरे 'लॉग' से दिशा जानकर रास्ते में भटक नहीं रहा है ? क्या इसी तूफान में उसने यह कसम नहीं खाई थी कि वह आगे से लाइटनिंग रॉड जहाज़ पर नहीं लगाएगा ? लेकिन क्या इस सनकी बुड्ढ़े को अपने साथ-साथ समूचे जहाज़ को विनाश की ओर ले जाने दिया जाए ? अगर इस जहाज़ को कोई विनाशकारी हानि हुई तो वह जान-बूझकर तीस या उससे भी ज्यादा लोगों का क़ातिल कहलाएगा । और मेरी आत्मा कहती है कि यदि इस आहाब की इच्छा ही चली तो जहाज़ ज़रूर खतरे में पड़ेगा । तब फिर, यदि वह इस समय अलग कर दिया जाए तो यह पाप उसका न होगा । हैं ! क्या वह नींद में बड़बड़ा रहा है ? हां—वह सो रहा है । क्या वह सो रहा है ? वह अभी भी ज़िंदा है और जल्दी ही जाग जाएगा । तब ऐ बुड्ढे ! मैं तुझे सह नहीं पाऊंगा ! कोई तर्क, कोई प्रतिवाद, कोई समझौता तुझे मंज़ूर न होगा; उस सब पर तू गुर्राएगा । सीधे हुक्म और सीधा उनका पालन, यही जैसे तेरी सांस में है । और कहते हैं कि हर आदमी ने तेरे संकल्पों को मान लिया है; तेरी क़समों को मान लिया है; हम सब आहाब हो गए हैं । ऐ खुदा ! बचाओ !—लेकिन क्या कोई दूसरा रास्ता नहीं है ? कोई कानूनी तरीक़ा ? क्या इसको कैदी बनाकर घर ले जाया जाए ? क्या इस बुड्ढ़े के सामने ही इसकी सारी ताक़त छीन ली जाए ? कोई बेवकूफ ही ऐसी कोशिश करेगा । इसको बांध दिया जाए; रस्सों और दूसरे लोहे वाले रस्सों से कस दिया जाए; इसे केबिन के फर्श पर ही लोहे की जंजीरों से जकड़कर डाल दिया जाए । यह तब किसी जंगले में बन्द शेर से अधिक खूंख्वार हो जाएगा । मैं वह दृश्य सहन नहीं कर सकता । उसकी चीख-चिल्लाहटों से मैं दूर नहीं भाग सकता । सब आराम करो, अपने आपको सोने दो । जिसकी मैं कल्पना नहीं कर सकता ऐसे तर्क सहित मुझे वह असह्य और लम्बी यात्रा पूरी करनी होगी । तब क्या बाकी रहता है ? धरती सैकड़ों मील दूर है और जापान ही सबसे नज़दीक है । इस खुले हुए समुद्र में मैं अकेला खड़ा हूं । दो सागर और एक समूचा भूखण्ड मेरे और कानून के बीच में हैं । यही स्थिति है । अपनी चादर और खाल को लपेटकर

सोने वाले इस संभाव्य हत्यारे को अपनी बिजली की कड़क से मार डालने पर क्या परमात्मा हत्यारा हो जाएगा ? और क्या मैं हत्यारा होऊंगा अगर"—और धीमे से, चोरी-चोरी इधर-उधर देखते हुए उसने उस भरी हुई बन्दूक की नली को दरवाजे से टिका दिया।

"इस सतह पर आहाब का झूलेदार पलंग झूल रहा है; उसका सर इस तरफ़ है। एक स्पर्श और फिर एक बार स्टारबक अपनी बीवी-बच्चों को प्यार कर सकेगा। ओह ! मरियम ! मरियम ! लेकिन ऐ बुड्ढे ! मौत के घाट उतार-कर यदि इस समय मैं तुझे नहीं जगाता हूं तो कौन जाने कि मुझे अन्य जहाजियों के साथ किसी दिन किन गहराइयों में डूब जाना पड़े।

"ऐ खुदा ! तू कहां है ? क्या मैं उसे मार डालूं ? क्या मैं उसे मार डालूं ? सर ! वायु शान्त हो गई है, आगे का और बड़ा मस्तूल ठीक कर दिए गए हैं ! जहाज़ ठीक रास्ते पर चल रहा है।"

"सबको ठीक करो ! पीछे भेज दो ! ओह मोबी डिक, अन्ततः मैं तेरा कलेजा पकड़ के रहूंगा।"

उस बुड्ढे की दुखियारी नींद से ऐसी ही आवाजें बाहर आईं जैसे स्टारबक की उस आवाज़ ने ही आहाब के लम्बे और गूंगे स्वप्न को बोलने के लिए मजबूर कर दिया हो।

दरवाजे से टिकी बन्दूक अभी भी शराबी के हाथ की तरह हिल रही थी। स्टारबक जैसे किसी फरिश्ते से कुश्ती लड़ रहा था। लेकिन दरवाज़े से घूमकर उसने उस मौत की नली को रैक में रख दिया और चला गया।

"बड़ी गहरी नींद में वह सो रहा है, मि० स्टब ! तुम नीचे जाकर उसे जगाओ और खबर दे दो। मैं यहां डेक को देखूंगा। क्या कहना है, यह तो तुम जानते ही हो।"

## ७३

अगली सुबह, अभी भी अशान्त समुद्र में ऊंची और लम्बी किन्तु धीमी लहरें उठ रही थीं जो पिकोड पर बराबर टक्कर दे रही थीं। उनके फैलाव से लगता था, जैसे किसी प्रेत का पंजा फैला हुआ हो। सर्द हवा से कुछ ऐसा वातावरण हो गया था, जैसे आकाश और वायु मिलकर उड़ने वाले पाल-सी दिखाई दे रही थी और समूचा संसार जैसे हवा से गूंज रहा था। सुबह की रोशनी में घुलमिलकर अदृश्य सूर्य केवल अपनी तेज़ी से जाना जा रहा था कि वह अमुक स्थान पर है जहां से उसकी ज्योतिर्मयी किरणें एक साथ फूटकर निकल रही थीं। बेबीलोन के शाह और मलका की तरह ताज पहने हुए प्रकृति की वह सजावट सब तरफ छाई हुई थी। समुद्र जैसे पिघले हुए सोने का बर्तन हो और प्रकाश तथा अग्नि से उसमें बुलबुले उठ-उछल रहे हों।

देर तक खामोश रहने के बाद आहाब दूर खड़ा हो गया और निरन्तर जहाज़ की गति के साथ सूर्य की किरणों को देखता रहा।

"हा, हा, मेरा जहाज़! तेरी विशालता को देखकर लोग तुझे समुद्र में चलने वाला सूर्य का रथ कहेंगे। हो, हो! मेरे जहाज़ की नोक के सामने वाले राष्ट्रो! मैं सूर्य को तुम्हारे पास ला रहा हूं। लहरें जैसे उस रथ का जुआ हैं; हल्लो! एक टमटम! मैं समुद्र को हांक रहा हूं।"

परन्तु शीघ्र ही उसके मन में दूसरा विचार आया और वह डांडों की ओर लपका और पूछता रहा कि जहाज़ किस ओर बढ़ रहा है।

"पूर्व—दक्षिण-पूर्व, सर", घबड़ाए हुए स्टियर वाले ने उत्तर दिया।

"तुम झूठ बोलते हो!" अपनी मुट्ठी भींचकर वह बोला—"इस समय, सुबह को पूर्व की ओर बढ़ रहे हो और सूर्य पीछे है?"

इस पर सभी लोग चकित हो गए। आहाब के अतिरिक्त इस ओर किसी का ध्यान ही नहीं था। अन्धा कर देने वाली वह प्रत्यक्ष स्थिति ही उसका कारण थी।

दूरबीन से पूरी तरह देखने के पहले ही आहाब की दृष्टि कम्पास पर गई

और उसने अपना एक हाथ धीरे से हटा लिया। एक मिनट को जैसे वह लड़खड़ा-कर गिरने वाला था। उसके पीछे स्टारबक खड़ा था और लीजिए! दोनों कम्पास पूर्व दिशा का संकेत कर रहे थे जबकि पिकोड अपने आप पश्चिम की ओर बढ़ा चला जा रहा था।

बुड्ढा अट्टहास कर उठा—"मैं समझ गया। पहले ऐसा हो चुका है। मि० स्टारबक! गत रात्रि के तूफान ने हमारे कम्पास उलट दिए हैं—बस।"

"लेकिन इसके पहले मैंने ऐसा कभी नहीं देखा सर!" पीला पड़ा हुआ मेट उदासी में बोल उठा।

"भारी तूफ़ानों में इस तरह की घटनाएं हो जाती हैं। मैगनेट की ताक़त जो जहाज़ियों की सुइयों में काम करती है वही बिजली है जो आकाश में होती है इसलिए इस बात पर अधिक उलझन की ज़रूरत नहीं है। जब कभी भी बिजली जहाज पर गिरती है और रस्सों तथा मस्तूलों को नष्ट करती है वहां उसका सबसे अधिक प्रभाव 'मैगनेटिक स्टील' की सुई पर पड़ता है और तब वह घर की औरतों की बुनने वाली सुई से अधिक कुछ नहीं रह जाती। और किसी भी हालत में वह सुई पूर्ववत् काम नहीं कर पाती। अगर दिशादर्शक कम्पासों में ऐसा हो जाता है तो वही हाल उनका भी होता है। नीचे वाले लंगर में लगी कम्पास पर भी वैसा असर हो जाता है।"

उलटी-पलटी कम्पासों को देखते हुए आहाब दूरबीन के सामने खड़ा होकर सूर्य की ओर निहारने लगा। वह इस बात से सन्तुष्ट था कि सुइयां पलट गई हैं। तब उसने हुक्म दिया कि जहाज़ का रुख बदल दिया जाए। एक बार फिर पिकोड विपरीत हवा में घुमा दिया गया।

स्टारबक के मन में क्या गुप्त विचार थे इसको तो उसने प्रकट नहीं किया और ख़ामोशी से उसने सभी ज़रूरी निर्देशों का पालन किया। स्टब और फ़्लास्क भी किन्हीं अंशों में उसके विचारों के साथ थे और ख़ामोशी अपनाए हुए थे। जहां तक दूसरे जहाज़ियों का प्रश्न था उनमें से कुछ धीमे-धीमे बुदबुदाते रहे परन्तु दुर्भाग्य के भय से अधिक आहाब का डर उनमें भरा था। हां, सदा की भांति वे मूर्तिपूजक हारपूनर पूरी तरह प्रभाव रहित थे और जो कुछ थोड़ा-बहुत असर उन पर हुआ भी था वह आहाब के अटल स्वरूप का।

किन्हीं विचारों में डूबा हुआ बुड्ढा कुछ समय तक डेक पर चहलकदमी

करता रहा। परन्तु हड्डी के पैर के फिसलने के डर से उसने क्वाडरैन्ट की उन देखने वाली नलियों को देखा जिन्हें वह कल ही तोड़ चुका था।

"बेचारा ग़रूरी! आसमान को देखने वाला! सूर्य का मार्गदर्शक! कल मैंने तुझे कुचल डाला लेकिन आज कम्पास मुझे नष्ट कर डालती। ठीक है, ठीक है। किन्तु आहाब अभी भी कम्पास का अधिकारी है। मि० स्टारबक, बिना लाठी का भाला, एक हथौड़ी, पाल बनाने वाले की छोटी से छोटी सुई, जल्दी!"

इस सामान से वह क्या करने जा रहा है इसके प्रति वह समूचे जहाज़ियों का कौतूहल जगाना चाहता था और उनका ध्यान बदलना चाहता था क्योंकि वे काफ़ी घबड़ाए हुए थे और बिगड़ी कम्पासों से उत्पन्न उनके हृदय की अप-शकुन की भावना को वह दूर करना चाहता था।

"आदमियो!" धीमे से स्थिरतापूर्वक जहाज़ियों की ओर मुड़ते हुए उसने कहा—"मेरे आदमियो! तूफ़ान ने आहाब की सुइयां घुमा दीं परन्तु लोहे के इस छोटे-से टुकड़े से भी आहाब कुछ फ़ायदा ही उठाएगा।" उसी समय मेट ने आहाब द्वारा मंगाई हुई चीजें उसे सौंप दीं।

यह सुनकर जहाज़ियों की कौतुकभरी निगाहें एक दूसरे की ओर घूम गईं और वे प्रतीक्षा करने लगे कि आगे क्या जादू सामने आने को है? लेकिन आहाब दूसरी ओर देखने लगा।

हथौड़े की एक चोट से आहाब ने भाले का ऊपरी हिस्सा तोड़ दिया और तब बचे हुए लोहे के 'रॉड' को मेट के सुपुर्द करते हुए उसने आदेश दिया कि वह उसे सीधे पकड़े रहे तथा उसे डेक पर न छुआए। तब लोहे के 'रॉड' के मत्थे को हथौड़े से कई बार पीटकर उसने उस पर सुई को ठोक दिया। मेट उस रॉड को उसी प्रकार पकड़े रहा। तब इधर-उधर चल-फिरकर विचित्र हाव-भाव दिखलाते हुए उसने या तो जहाज़ियों के डर की तेज़ी को कुछ कम करना चाहा या लोहे के चुम्बक के लिए उसे आवश्यक समझकर उसने सूत का डोरा मांगा और तब दूरबीन की ओर बढ़ते हुए कम्पास के 'डायल' पर से एक सूई निकाल ली। पहले तो थोड़ी देर तक लोहा यों ही चक्कर खाता रहा परन्तु अन्त में ठहर गया। तब ग़ौर से देखते हुए आहाब ने दूरबीन से पीछे हटते हुए कहा—"देखो! अपने आप तुम लोग देखो! अगर आहाब समतल 'लोडस्टोन' का

मालिक न होता तो''' ! सूर्य ही पूर्व दिशा है और कम्पास उस बात को पक्की करती है।"

वे सभी बौखलाए-से देखते रहे।

आहाब की तेज आंखों से विजय और उपेक्षा टपकती रही—अत्यन्त घातक अभिमान था आहाब की आंखों में उस समय !

# ७४

भाग्यहीन पिकोड को इस यात्रा में समुद्र पर तैरते काफी समय हो गया था लेकिन लॉग और लाइन[1] को बहुत कम काम में लाया गया था। जहाज़ किस स्थान अथवा किस स्थिति में है इसको देखने के लिए चूंकि अन्य साधन रहते हैं इसलिए कुछ व्यापारी जहाज़ तथा बहुतेरे व्हेल के शिकारी जहाज़—खास तौर पर जब शिकार करने की स्थिति में होते हैं तब 'लॉग' को जैसे बिलकुल भूल ही जाते हैं। वैसे वे जहाज़ की स्लेट पर प्रतिघंटा जहाज़ की चाल और जहाज़ के रास्ते बराबर लिखते रहते हैं। पिकोड में भी यही प्रबंध था। किलेबन्दी के नीचे, लकड़ी की गरारी और लॉग साथ टंगे हुए थे जिन्हें बहुत दिनों से छुआ तक नहीं गया था। पानी और बौछारों ने उन्हें गीला कर रखा था, धूप और हवा से वह ऐंठ गए थे। बेकार पड़ी चीज़ पर सभी तत्वों ने अपना असर दिखाकर उसे बरबाद कर दिया था। उस लोहे को तोड़ने के कुछ घंटों बाद अनायास ही आहाब का ध्यान उस गरारी पर गया और वह सोचने लगा कि उसका क्वाडरैन्ट अब उसके पास नहीं है; साथ ही लॉग और रस्से के सम्बन्ध में उसे अपनी सनक भरी क़सम का भी ध्यान आ गया। जहाज़ झूमते हुए चल रहा था। पीछे की तरफ लहरें जैसे दंगा किए हुए थीं।

"उधर, सामने ! लॉग को निकालो !"

दो मछुए आए। सुनहरे रंग वाला ताहिती और भूरे रंग वाला मैन्क्स-

१. लॉग और लाइन—एक घिर्री पर रस्सी लिपटी रहती है और उससे एक तैरने वाला लकड़ी का टुकड़ा बंधा होता है। इसका प्रयोग जहाज़ की गति मालूम करने में किया जाता है।

मैन। "तुममें से एक गरारी पकड़ो। मैं खींचता हूं।"

वे लोग बिल्कुल पीछे चले गए जहां डेक क्रीम के रंग के दूर तक फैले हुए समुद्र में हिलकोरे ले रहा था।

मैन्क्समैन ने गरारी ली और उसे ऊंचा उठाकर उस सूजे को थामे रहा जिसमें रस्सा बंधा हुआ था और घूम रहा था। लॉग नीचे लटक रही थी। आहाब आगे बढ़ा। सामने आते ही आहाब ने तीस-चालीस घुमाव खोले जिससे कि रस्से को दूर तक फेंक सके। तभी मैन्क्समैन ने—जो उसे व रस्से को गौर से देख रहा था—कहा—"मुझे इसका भरोसा नहीं है सर! गर्मी और पानी ने इसे खत्म कर दिया है।"

"यह मजबूत है, भले आदमी। क्या तेज गर्मी और पानी ने तुझे भी बरबाद कर दिया है? दिखता है कि तू मजबूत तो है। सच तो यह है कि जिन्दगी ने तुझे पकड़ रखा है न कि तूने उसे।"

"मैं तो गरारी पकड़े हूं सरकार। लेकिन जो मेरा कप्तान कहे! अपने इन सफेद बालों का तजुर्बा कहता हूं कि बकझक से कोई फायदा नहीं है विशेषत: अपने अफ़सर से जो अपनी बात कभी नीची नहीं रखेगा।"

"यह क्या? पुरानी प्रकृति के कठोर पत्थर की नींव वाले कालेज में जैसे एक खुतरा प्रोफेसर हो, परन्तु मेरा ख्याल है कि वह अधिक अनुसेवी है। तुम कहां पैदा हुए थे?"

"एक छोटे-से पहाड़ी टापू मैन में सर।"

"बहुत अच्छे! अपनी पैदाइश से ही तुमने संसार को चुनौती दे दी है।"

"सर! मुझे यह तो पता नहीं लेकिन मैं पैदा वहीं हुआ था।"

"मैन के टापू में, हः हः? दूसरी तरह से यह ठीक है। मैन का यह एक मैन (आदमी) है। एक आदमी जो कभी स्वतन्त्र मैन में पैदा हुआ था लेकिन अब मैन से निकाला हुआ है।—गरारी ऊपर उठाओ।"

लॉग उस पर उठाई गई। ढीले रस्से की घुमेड़ें जल्दी-जल्दी सरकती गईं और गरारी घूमती रही। उसके झटके से वह आदमी लड़खड़ा रहा था।

"कड़ाई से पकड़ो!"

धड़ाम!—पुरानी रस्सी कर्रे खिचाव से टूट गई और उससे लटकती लॉग लापता हो गई।

"मैंने क्वाडरैन्ट तोड़ डाला; तूफान ने सूइयां पलट दीं और अब इस पागल समुद्र में लॉग और रस्सी समा गई। ताहिती ! इसको संभालो। मैन्क्स-मैन ! रस्सा लपेट लो। देखो, सुनो ! बढ़ई से कहो कि दूसरी लॉग तैयार करे। और तुम रस्सी की मरम्मत कर लो।"

"वह सामने जा रहा है। उसके लिए कुछ भी नहीं हुआ। हां, मुझे ऐसा ज़रूर लग रहा है कि दुनिया का कसाव ढीला पड़ रहा है। ताहिती ! खींचो ! खींचो ! टूटी हुई रस्सी ही धीरे-धीरे खींच लाओ। हां, पिप ? कहां हो, मदद को आओ।"

"पिप ? तुम किसको पिप कहते हो ? पिप तो व्हेल नाव से कूद गया। पिप लापता है। ऐ मछुओ ! पता नहीं, क्या तुम लोग उसे मछली की तरह जाल में फंसाकर ले आए हो ? यह खींचने में तो बड़ा मुश्किल है। हो सकता है वह उसे पकड़े हो। उसे झटका दे दो। ताहिती ! उसे झटके से फेंक दो। हम लोग कोई डरपोक खींचने वाले नहीं हैं। ओहो ! उसका हाथ अभी पानी में चल रहा था। एक कुल्हाड़ी ! एक कुल्हाड़ी लाओ ! उसे काट फेंको। कैप्टेन आहाब ! सर ! सर ! पिप फिर जहाज पर चढ़ने की कोशिश कर रहा है।"

"चुप रहो, ऐ सनकी और पाजी !" उसका हाथ पकड़कर मैन्क्समैन बोला—"छोटे डेक से भाग जाओ।"

"बड़ा मूर्ख हमेशा छोटे को फटकारता है," आहाब ने आगे बढ़ते हुए कहा। "उस पवित्रात्मा से दूर रहो ! लड़के ! तू क्या कहता है कि पिप कहां है ?"

"पीछे सर ! पीछे ! वह ! वह !"

"लड़के ! और तुम कौन हो ? तुम्हारी इन रिक्त पुतलियों में क्या मैं अपनी छाया नहीं देख रहा हूं। ऐ खुदा ! यह आदमी तो अमर पुरुषों की आत्मा छानने वाली एक वस्तु होनी चाहिए। ऐ तुम कौन हो लड़के ?"

"घंटी वाला लड़का सर ! जहाज का चिल्लाने वाला छोकरा ! डिंग, डिंग, डिंग ! पिप ! पिप ! पिप ! पिप के लिए एक सौ पौंड मिट्टी का इनाम ! पांच फुट ऊंचा—वह तो डरपोक दिखाई दे रहा है—जल्दी ! डिंग, डांग, डिंग ! पिप डरपोक को किसने देखा ?"

"वर्फ की चोटी के ऊपर दिल धड़कता हुआ नहीं मिल सकता। ऐ जमे हुए आसमान! नीचे देखो! तूने इस अभागे बच्चे को जन्म दिया है। ऐ लम्पट! बाद में तूने उसे छोड़ दिया। यहां, लड़के! अब से आहाब का केबिन पिप का घर होगा। जब तक आहाब जीवित रहे। तूने मेरे दिल को छू लिया है, लड़के। मेरे दिल के तार के साथ जैसे तू जुड़ गया है।"

"यह क्या है? यहां यह मखमली शार्क-स्किन है," आहाब के हाथ की ओर गौर से देखते हुए और उसे छूते हुए वह बोला। "आह! पहले यदि पिप ने इतनी कोमल वस्तु का स्पर्श कर लिया होता तो वह कभी न डूबता। मुझे तो यह मुलायम डोरी दिखाई देती है जिसे कोई भी कोमल हृदय व्यक्ति छू सकता है। ओह, सर! बुड्ढे पर्थ को इन दोनों हाथों को मिलाकर बोल्ट कर देना चाहिए। काले वाले को सफेद से चिपका देना चाहिए क्योंकि मैं इसे जाने नहीं दूंगा।"

"ओह, लड़के! न ही मैं तुझे जाने दूंगा। मैं तुझे इनसे भी खतरनाक मामलों में पकड़ ले जाऊंगा। मेरे केबिन में आओ। लीजिए! आप परमात्मा को हर प्रकार से अच्छा कहते हैं और आदमी को बुरा कहते हैं। ऐ तुम देखो! उन सर्वज्ञानी देवताओं में दुखी मानव को भूल जाने का स्वभाव है। आदमी, यों बदतमीज है और यह नहीं जानता कि क्या करना चाहिए फिर भी उसमें बहुत मिठास, प्यार और करुणा भरी हुई है। इधर आओ। किसी भी बादशाह के हाथ को पकड़कर ले चलने से मैं तुम्हारे हाथ को पकड़कर ले चलने में अधिक गौरव का अनुभव करता हूं।"

"मैं समझता हूं दुनिया में दो चीजें एक साथ चलती हैं", बुड्ढा मैन्क्समैन बोला—"ताक़त के साथ कमजोरी जुड़ी हुई है। यहां यह व्यर्थ ही रस्सा टूट गया, और पानी में बैठ गया। इसे ठीक करो। मैं सोचता हूं कि रस्सा नया हो तो ही अच्छा। मैं मि० स्टव से इस बारे में बात करूंगा।"

## ७५

दिशा-संकेत करने वाले आहाब द्वारा निर्मित कम्पास और 'लॉग' तथा 'लाइन' के आधार पर पिकोड भूमध्य रेखा की ओर बढ़ रहा था।

इस तरह के समुद्र में जहां कोई जहाज़ नहीं चल रहा था, अपरिवर्तनीय व्यापारी हवाएं बगल से उसे ज़ोर लगा रही थीं; लहरों में उदास ख़ामोशी छाई हुई थी। कुल मिलाकर यह ख़ामोशी बड़ी विचित्र थी और किसी तूफ़ानी और जीवन-मरण का प्रश्न उठा देने वाले दृश्य की भूमिका-सी मालूम पड़ रही थी।

भूमध्य रेखा के निकट मछली के शिकार की जगह के पास पहुंचने पर जहाज़ सुबह के पहले के अंधेरे में दूर छितरे नोकीली पहाड़ियों वाले द्वीपों के पास से गुज़र रहा था। फ़्लास्क रात के पहरे का मुखिया था। अचानक ही एक विचित्र और भयानक चीख़ सुनकर वे चौंके जैसे किसी भूत के रोने और पुकारने की आवाज़ सुनाई पड़ रही हो अथवा 'हेरोड'[1]—'इन्नोसेन्ट्स[2] की हत्या कर रहा हो। अपनी नींद छोड़-छोड़कर वे उठ बैठे। कोई खड़ा हो गया, कोई बैठा रहा और कोई झांककर खुतरे रोमन गुलामों की-सी चीख़ को सुनता रहा। जहाज़ के क्रिश्चियन अथवा सभ्य लोग उसे जलपरियों की आवाज़ कहकर कांपते रहे किन्तु मूर्तिपूजक हारपूनरों पर उसका कोई प्रभाव नहीं हुआ। इस पर भी सफेद बालों वाले मैन्क्समैन ने, जो सब जहाज़ियों में बूढ़ा था, कहा कि यह उन आदमियों की आवाज़ें हैं जो थोड़े दिन ही हुए इस समुद्र में डूबे हैं।

नीचे अपने झूले वाले पलंग पर पड़े हुए आहाब ने तब तक उस आवाज़ को नहीं सुना जब तक वह सुबह डेक पर नहीं पहुंच गया। फ्लास्क ने ही उसको बताया, साथ ही यह भी कहा कि चीख़ों से किसी भावी दुर्घटना की आशंका है। वह खोखलेपन से हंस दिया जिससे उसके मन का आश्चर्य स्पष्ट हो रहा था।

---

१-२. हेरोड—ज्यू लोगों का शाह और ईसामसीह का समकालीन था। उसने इन्नोसेन्ट्स की निर्दय हत्याएं कराई थीं।

उन पहाड़ी द्वीपों के प्रदेश में—जहां से होकर उस समय जहाज़ गुज़र रहा था—बड़े आकार की सील मछलियों की बहुलता थी और मानव की-सी सिसकियों एवं आवाज़ों को निकालते हुए वे जहाज़ के साथ चल रही थीं। कुछ जहाज़ियों को इससे और भी भय जागृत हुआ क्योंकि उनमें से कुछ लोग सील मछली के सम्बन्ध में विकट धारणाएं रखते थे। जब सील मछलियां किसी कष्ट में होती हैं तो न केवल वे मनुष्य की-सी विचित्र आवाज़ में रोती हैं बल्कि उनकी गोल खोपड़ी में—जिसको देखने से उनमें कुछ बुद्धि होने का भी अनुमान लगाया जा सकता है—कुलबुलाती आंखें पानी के बाहर झांकती हैं। पानी में बहुत बार सील को देखकर आदमी का संदेह हो जाता है।

जहाज़ियों का डर व संदेह और भी दृढ़ हो गया जब उसी सुबह उनमें से एक आदमी एक दुर्घटना का शिकार हुआ। दिन निकलते-निकलते यह आदमी पलंग से उठकर डेक पर बड़े मस्तूल के पास तक गया। या तो वह अपनी नींद से पूरी तरह जग नहीं पाया था (क्योंकि जहाज़ी अफसर अपनी अर्ध निद्रा में ही चल पड़ते हैं।) या उस आदमी के साथ कुछ और बात हुई परंतु वह अपने स्थान पर अधिक देर नहीं रुका होगा कि एक चीख सुनाई दी—चीख के साथ भाग-दौड़ भी—और तब ऊपर देखने पर एक गिरता हुआ आकार हवा में दिखाई दिया और नीचे देखने पर पानी के नीलेपन में सफेद बुलबुले उछलते दिखाई दिए।

'जीवन रक्षक नौका'—एक लम्बी और पतली नाव जहाज़ के पिछले हिस्से से लटकाई गई—जहां वह समय पर काम आने के लिए लटकी रहती है; परंतु उसको पकड़ने के लिए कोई भी हाथ पानी से बाहर नहीं निकला और चूंकि काफी दिनों की सूर्य की गर्मी से सूख जाने के कारण, वह पानी में पड़ते ही धीरे-धीरे भर गई; साथ ही सूखी लकड़ी भी फूल गई और तब लोहे की जड़ाऊ मत्थे वाली वह नाव भी जहाज़ी के साथ-साथ नीचे डूब गई। मानो उसे आराम देने के लिए तकिया बनने गई हो।

और इस प्रकार पिकोड का वह पहला आदमी जो सफेद व्हेल को देखने डेक पर चढ़ा था; सफेद व्हेल के अपने निवासस्थान—समुद्र की गहराई द्वारा निगल लिया गया। लेकिन बहुत थोड़े लोगों ने उस समय वैसा सोचा। आगे आने वाली नहीं; बल्कि तत्काल उपस्थित दुर्भाग्य की जैसे वह एक आहुति थी।

जहाज़ियों ने सोचा कि उन चीख़-चिल्लाहटों का मुख्य कारण यही आने वाला दुर्भाग्य था। हां, बुड्ढे मैन्क्समैन ने फिर भी मना किया।

खोई हुई जीवन-रक्षक नौका के स्थान पर दूसरी नाव रखनी थी। स्टारबक को उसके लिए हुक्म दिया गया। चूंकि जहाज़ पर वैसी कोई हलकी चीज़ प्राप्त न हो सकी इसलिए जहाज़ का पिछला हिस्सा बिना 'नौका' के ही छोड़ दिया गया। तभी क्वीकेग ने अपनी 'लाश वाली डोंगी' की ओर संकेत किया।

"लाश वाली डोंगी को जीवन की नौका बनाएं!" कौतूहल में स्टारबक बोला।

"बहुत अनोखा!" सब ने कहा।

"ठीक तो रहेगी। बढ़ई उसे आसानी से ठीक कर देगा।" फ़्लास्क बोला।

"उसे लाओ। उससे अच्छा और कुछ नहीं रहेगा।" एक दुःखभरी सांस खींचकर स्टारबक ने कहा—"बढ़ई! जाओ उसको ठीक करो। मुझे इस तरह मत देखो।"

"क्या इसके ढक्कन में कीलें ठोक दूं?" हथौड़ी हिलाते हुए बढ़ई ने कहा।

"हां!"

"सर! क्या छेदों को बंद कर दूं?" कार्क वाले लोहे को घुमाते हुए बढ़ई बोला।

"हां!"

"और..."

"कुछ नहीं। उस 'काफ़िन' की जीवन-रक्षक नौका बनाओ, बस। मि० स्टब, मि० फ़्लास्क! मेरे साथ आइए!"

"यह भी अच्छी रही। उस डोंगी को बनाने का क्या लाभ हुआ। क्वीकेग ने उसे इस्तेमाल ही नहीं किया। अब मुझे इसकी जीवन-रक्षक नौका बनानी है! इस प्रकार के मोचीपन का काम मुझे पसंद नहीं है। मुझे तो बारीक काम पसंद है। मोची का काम करना तो बुढ़ियों को अच्छा लगता है। ऐ खुदा! इन बुढ़ियों को भी लोहार न जाने क्यों पसंद हैं। मुझे मालूम है कि एक पैंसठ साल की बुढ़िया एक गंजे कड़ाही बनाने वाले के साथ भाग गई थी। इसी से मैंने कभी किसी अकेली विधवा बुढ़िया को अपने पास नहीं बैठाता। हम लकड़ी का काम करने वाले भी खूब हैं। हम शादी का पलंग भी बनाते हैं, और लाश की गाड़ी भी। इधर आओ मेरे औजारो! मैं काम में जुटूं।"

## ७६

*(लाश वाली डोंगी दोनों कोनों पर उठाकर रखी हुई है। सामने औजारों की बेंच और दूसरी तरफ़ जहाज़ के बीच का रास्ता दिखाई दे रहा है। बढ़ई उसके छेदों को वन्द करने में जुटा है। सूत के रशों की पिंडी बढ़ई के फ्राक की जेब से खुलती चली आती है।—आहाव केबिन से धीरे-धीरे निकलकर आ रहा है। वह पिप को पीछा करते हुए सुन रहा है)*

"लड़के ! जाओ। मैं अभी फिर तुम्हारे साथ रहूंगा। वह जाता है। मेरे मज़ाक का आनन्द वह लड़का खूब लेता है।—किसी गिर्जाघर के बीच का हिस्सा ! यह क्या है ?"

"जीवन-रक्षक नौका सर ! मि० स्टारबक का हुक्म। ओह, देखिए, सर ! रास्ते में बचकर आइएगा।"

"शुक्रिया। यह क़फन और लाश की डोंगी ठीक जगह नहीं रखी है।"

"क्या ? जी हां, जी हां।"

"क्या तुमने ही पैर नहीं बनाया था ? देखो, क्या यह पैर तुम्हारे यहां से नहीं आया था ?"

"मैं सोचता तो हूं, सर। क्या इसका जोड़ ऊपर उठ आया है ?"

"ठीक है। लेकिन क्या तुम कफ़न का इन्तजाम करने वाले भी नहीं हो ?"

"हां, सर ! मैंने क्वीकेग के लिए एक डोंगी बनाई। अब उसका कुछ और बनाना है।"

"तब बोलो, क्या तुम निरे गधे नहीं हो। सब एक में घसड़-पसड़ करने वाले। एक दिन पैर बनाते हो तो दूसरे दिन उनको मरने के लिए लाश की गाड़ी बनाते हो और फिर उन्हीं से नौका। तुम देवताओं की तरह ही किसी नियम को न मानने वाले हो। और हो पूरे हरफ़न मौला।"

"लेकिन, श्रीमान् ! मेरा कोई मतलब नहीं रहता है। मुझसे जो होता है मैं करता हूं।"

"फिर वही देवताओं वाली बात बोलो। क्या लाश की गाड़ी बनाते समय तुमने कभी गीत नहीं गाया ? लोग कहते हैं कि तीतन लोग ज्वालामुखी के मुंह से कांच, शोले, और अंगारे हटाते समय गीत गुनगुनाते हैं। यही नहीं, हाथों में फावड़े लिए कब्र खोदने वाले मजदूर भी गाते हैं। क्या तुमने कभी नहीं गाया ?"

"क्या, श्रीमान्, गाना ? क्या मैं गाता हूं ? ओह, सर ! उसके प्रति मैं काफी उदासीन हूं परन्तु कब्र खोदने वालों के गाने का कारण यह है कि वहां खामोशी रहती है लेकिन मेरे ठोकने-पीटने में तो आवाज़ें योंही झंकारती हैं।"

"ऐ ! तो वह ढक्कन जैसे आवाज़ करने का तख्ता है और सभी चीज़ों में जो तख्ता आवाज़ करता है उसका कारण भी यह है कि वह खोखला होता है। और लाश की गाड़ी में रखी लाश भी क़रीब-क़रीब वैसी ही होती है, बढ़ई ! क्या कभी तुमने किसी लाश के सन्दूक को गिर्जे के दरवाज़ा तक ले जाने में मदद की है और तब उस डोलती क़ब्र को खड़खड़ाते सुना है ?"

"विश्वास कीजिए सर ! मैंने किया है—"

"विश्वास ? वह क्या है ?"

"विश्वास क्यों सर ! वह तो केवलमात्र सम्बोधन था—बस।"

"हूं, हूं, कहते जाओ।"

"मैं यह कहना चाहता था श्रीमान् कि—"

"क्या तुम रेशम के कीड़े हो ? क्या तुम उसकी तरह अपना तार अपने आप बुनते हो ? अपनी छाती को देखो ! इन सूतों को अलग हटाओ।"

"वह सामने जाता है। वह अचानक हुआ था किन्तु गरम अक्षांशों में तूफ़ान के झोंके ऐसे ही अचानक आते हैं। मैंने सुना है कि 'गैलीपैगो' के 'अलबरमार्ले' द्वीप को 'भूमध्य रेखा' ने दो हिस्सों में बांट रखा है। मेरा ख्याल है कि 'भूमध्य रेखा' ने इस बुड्ढे को भी ठीक बीच से दो टुकड़ों में बांट दिया है। उसमें हमेशा गर्मी चढ़ी रहती है। वह उधर देख रहा है— रस्सी के टुकड़े ! जल्दी निकलो। लकड़ी की यह मुंगरी कार्क है और मैं संगीत के शीशों वाले बाजे का प्रोफेसर हूं—खुट् खुट्।"

*(आहाब, स्वगत)*

"यह दृश्य है ! और यह एक ध्वनि ! सफेद खोपड़ी वाला कठफोड़ा

खोखले पेड़ पर चोंच मार रहा है। अन्धे और बहरों से मुक़ाबला किया जा सकता है। रट्-टट् आदमी की नब्ज की आवाज़! ओह् ये सब कितनी बेकार चीज़ें हैं! तब असली चीज़ें क्या हैं? हलके विचार? उस भुतही मौत का यहां कैसा डरावना चिह्न है। केवलमात्र एक घटना से खतरनाक जिन्दगी में आशा और सहायता के संकेत दिखाई देते हैं। एक लाश-डोंगी की जीवन-रक्षक नौका! क्या यह आगे बढ़ सकती है? दैविक स्वरूप में लाश की गाड़ी या सन्दूक अमरत्व को संभाल कर रखने वाले हैं। मैं इसको सोचूंगा। लेकिन नहीं। जहां तक पृथ्वी के अन्धकारमय रूप का प्रश्न है और उसका दूसरा पक्ष जो प्रकाशमय है—वह कार्य रूप में अनिश्चित चांदनी है। इस पापमय आवाज़ को क्या बढ़ई तुम दूर नहीं कर सकते? मैं नीचे जाता हूं। दुबारा आने पर मैं इस चीज़ को फिर नहीं देखूं। पिप! अब हम तुमसे फिर बातें करेंगे। मैं तुमसे अनोखी दार्शनिकता पा रहा हूं। कोई अदृश्य दुनिया तुममें समा गई है।"

## ७७

अगले दिन एक बड़ा जहाज़ 'रैचेल' सामने दिखाई दिया, जिसके मस्तूलों के चारों ओर आदमियों की खासी भीड़ थी। पिकोड इस समय काफी तेज़ चल रहा था लेकिन चौड़े परों वाला अजनबी, जब हवा के रुख की तरफ़ से सामने आया तो जैसे हवा बांधने वाले पाल खोखले गुब्बारों की तरह फूटकर एक साथ गिर गए और पिचके हुए पेंदे से सब जीवन-तत्व जैसे उड़ गया।

"कुसंवाद! वह कुसंवाद लाया है," बूढ़े मैन्क्समैन ने कहा। परन्तु उसका कमाण्डर अपने मुंह में 'बिगुल' लेकर बजाते हुए नाव पर खड़ा हो अथवा आशान्वित होकर मिले इसके पूर्व ही आहाब की आवाज सुनाई दी।

"सफ़द व्हेल देखी है कहीं?"

"हां, हां, कल। क्या तुमने किसी व्हेल-नाव को भटकते हुए देखा है?"

खुशी के मारे आहाब ने उस प्रश्न का उत्तर 'न' में दे दिया। वह उस अजनबी जहाज़ पर फ़ौरन ही चढ़ने को उतावला हो रहा था परन्तु दूसरे जहाज़ के कप्तान ने जो अब तक अपने जहाज़ को रोक चुका था अब पीछे

हटाना शुरू किया। हुक और जंजीरें खींची गईं तथा आहाब उस जहाज के डेक पर चढ़ा और उसे तत्काल पहचान लिया। वह नन्तुकेत का ही था, परन्तु उनमें आपस में विधिवत् कोई दुआ-बन्दगी नहीं हुई।

"वह कहां थी? मारी नहीं गई। मारी नहीं गई!" नजदीक आते हुए आहाब चिल्लाया। "वह कैसी थी?"

ऐसा लगता था कि पिछले दिन शाम को बहुत देर तक अजनबी जहाज की तीन नावें व्हेलों के एक झुंड से उलझी रही थीं जो उन्हें घसीटकर जहाज से चार-पांच मील दूर ले आया। हवा के रुख की तरफ वे जब तेजी से उनका पीछा कर रहे थे तभी मोबी डिक का सफेद सर और शरीर पानी के बहार आया जो बहुत दूर नहीं था। तत्काल एक चौथी नाव जो खास मौकों के लिए थी, पीछा करने के लिए, पानी में उतार दी गई। हवा के सामने काफ़ी सतर्कता-पूर्वक चल लेने के बाद इस चौथी नाव ने—जो उन सबमें तेज थी—लगता है उसको फांसने में सफलता पाई। कम से कम आगे के मस्तूल वाला आदमी यही कह सकता था। बहुत दूर, उसने एक नाव को डूबते हुए देखा और तब पानी में गड़प करके उठने वाले बगूलों को। उसके बाद कहीं कुछ नहीं था। जैसा कि बहुत बार होता है—यह अनुमान लगा लिया गया कि व्हेल अपने पीछा करने वाले को साथ ही घसीटती चली गई। ऐसी आशंका थी, परन्तु उसके लिए अभी तक कोई खतरे की सूचना नहीं दी गई थी। संकेत-घंटियां रस्सों में बांध दी गईं। तभी अंधियारा घिर आया। तब मजबूर होकर तीन नावें चढ़ा ली गईं। दूसरी ओर चौथी नाव को ढूंढ़ने जाने के पहले—जहाज मजबूर हो गया कि आधीरात तक अपना स्थान छोड़ दे और उस नाव को उसके भाग्य पर रहने दे लेकिन इस समय तो वह उससे दूर था ही। बाकी जहाजी सुरक्षित रूप में जहाज पर चढ़ गए। निशान के लिए तेल के कारखाने में आग जला दी गई और प्रत्येक आदमी सब तरफ़ ग़ौर से देखता रहा। बहुत दूर चलने के बाद जहाज थमा और उस नाव की खोज के लिए उसने अपनी तीनों नावें फिर पानी में उतार दीं और वे सुबह तक खोजते रहे। इस पर भी खोई हुई नाव का कोई निशान दिखाई नहीं दिया।

इस कथा को कहकर आगन्तुक कप्तान ने तत्काल अपना मन्तव्य बता दिया।

वह चाहता था कि उस नाव की खोज में पिकोड उसकी सहायता करे और दोनों जहाज़ दो ओर पता लगावें।

"अब मैं दृढ़तापूर्वक कह रहा हूं," स्टब ने फ़्लास्क से कहा—"कि उस खोई हुई नाव में कोई आदमी इस कप्तान का सबसे बढ़िया कोट या घड़ी पहने था, तभी उसको वापस पाने के लिए यह बहुत उतावला हो रहा है। आज तक कभी किसी ने सुना कि व्हेल के शिकार के सबसे बढ़िया मौसम में एक नाव की खोज में दो बड़े जहाज़ दौड़ लगावें? देखो फ़्लास्क! देखो तो। यह कितना पीला दिखाई दे रहा है—इसकी आंखों के दोनों बटन पीले दिखाई दे रहे हैं—देखो! वह कोट नहीं था। वह ज़रूर—

"मेरा लड़का! मेरा अपना लड़का उसमें था। परमात्मा के लिए मैं प्रार्थना करता हूं, मैं अनुरोध करता हूं"—नवागन्तुक कप्तान ने आहाब से कहा, जिसने उसके निवेदन को बड़े रूखे ढंग से सुना था। "केवल अड़तालिस घंटे मुझे अपने जहाज़ को उपयोग में लाने दीजिए—मैं खुशी से उसका खर्च दूंगा, दूना पैसा दूंगा—अगर कोई दूसरा रास्ता नहीं है तो केवल अड़तालिस घंटे केवल—उतना आप ज़रूर, आप ज़रूर वैसा करेंगे।"

"उसका लड़का!" स्टब चिल्लाया—"ओह! उसका लड़का खो गया है। मैं कोट और घड़ी की बात वापस लेता हूं—आहाब क्या कहता है? हमें उस लड़के को ज़रूर बचाना चाहिए।"

"पिछली रात वह सबके साथ डूब गया," बूढ़े मैन्क्समैन ने जो उनके पीछे खड़ा था कहा—"मैंने सुना था। तुम सबने भी उनकी आत्माओं की आवाज़ को सुना था।"

'रैचेल' की इस घटना में सर्वाधिक दुःख का प्रसंग यह था कि जिन परिस्थितियों में वह विषाद उपस्थित हुआ था उसमें केवल कप्तान का एक लड़का नहीं था बल्कि उस अन्धकार में खोज करते समय जो नाव गुम हुई थी उसमें एक लड़का और भी था। इससे उस पिता को असीम शोक सहन करना पड़ा था। ऐसे समय में जैसा उचित था मेट ने जान-बूझकर प्रचलित कार्य किया कि गिनती में अधिक नावों को बचाने की चेष्टा की। किन्तु कैप्टेन ने किसी वैधानिक कारण को लेकर वह सब जानबूझकर तब तक नहीं कहा जब तक आहाब के रूखेपन ने उसे विवश नहीं किया कि अभी भी लापता लड़के से सम्बन्धित बात

को वह छिपाए रहे। लड़का केवल बारह वर्ष का था और उसे उसके पिता ने नन्तुकेत के रिवाज़ के मुताबिक बिना अपने प्यार की चिन्ता किए ऐसे खतरे में डाल दिया था जिसका कि अंतिम फल सदा उसकी जाति को उसी रूप में मिला था। ऐसा बहुत बार होता है कि नन्तुकेत के कप्तान अपने लड़कों को इतनी कच्ची उम्र में ही तीन-तीन, चार-चार साल की समुद्र-यात्रा पर भेज देते हैं और वह भी अपने नहीं दूसरे जहाज़ों के साथ जिससे पिता का अपनी सन्तान के प्रति मोह तथा भय न रहे और अन्य लोगों की दृष्टि में वह पक्षपाती भी न दिखाई दे।

अजनबी कप्तान अभी भी आहाब की कृपा की कामना कर रहा था और आहाब, एक निहाई की तरह स्थिर खड़ा था जिस पर चाहे जितनी चोटें पड़ती जाएं और वह हिले तक नहीं।

"जब तक आप 'हां' नहीं कहेंगे, मैं नहीं जाऊंगा। ऐसे अवसर पर जैसा तुम अपने लिए करते वैसा मेरे लिए करो क्योंकि कैप्टेन आहाब! तुम्हारे भी एक लड़का है—वैसे वह निरा बच्चा है और घर पर किलकारियां भर रहा है—वह बच्चा तुम्हारे बुढ़ापे का सहारा भी है—हां, हां, तुम निष्ठुर आहाब! मैं कहता हूं—जहाजियो! भागो! दौड़ो! तैयारी करो।"

"ठहरो!" आहाब चिल्लाया—"रस्से का एक डोरा भी मत छूना।" तब ऐसी आवाज़ में वह बोला जो धीरे-धीरे मुलायम पड़ती गई—"कैप्टेन गार्डिनर मैं ऐसा नहीं करूंगा। मेरा काफ़ी समय नष्ट हो चुका है। गुड-बाई! गुड-बाई! खुदा तुम्हारी मदद करे और मैं अपने आपको माफ करूं लेकिन मैं जाऊंगा, ज़रूर। मि० स्टारबक! घड़ी देखो। अबसे तीन मिनट के अन्दर प्रत्येक अजनबी को हटा दो और जहाज़ फौरन चलाओ।"

फौरन मुड़ते हुए वह अपने केबिन में उतरा और उस अजनबी कप्तान को उसकी प्रार्थना के उत्तर में निराश और किंकर्तव्यविमूढ़ छोड़ गया। परन्तु अपनी विमूढ़ता को समाप्त कर गार्डिनर चुपचाप जहाज के किनारे पर पहुंचा और अपनी नाव पर उतरा नहीं बल्कि गिर पड़ा और अपने जहाज़ पर लौट गया।

शीघ्र ही दोनों जहाज़ अपनी-अपनी दिशा में चल दिए। पानी में दोनों ही

झूम रहे थे। गार्डिनर के जहाज के तीन मस्तूल शेरी[1] के तीन पेड़ों की तरह दिखाई दे रहे थे जिन पर बच्चे झूल-झूलकर स्ट्राबेरी खा रहे हों।

किन्तु अपनी उस कष्टमय स्थिति में इतने रोने-कलपने के बाद भी, 'रैचेल' को कोई संतोष नहीं मिला, क्योंकि उसके बच्चे डेक पर नहीं थे।

## ७८

*(आहाब डेक की ओर जाने को बढ़ रहा है; पिप उसके साथ चलने को उसका हाथ थाम लेता है)*

"छोकरे! छोकरे! मैं तुझसे कहता हूं कि तू आहाब का पीछा मत कर। समय आ रहा है, जब उसके साथ आहाब तुझे भी नहीं डरा सकेगा और न ही तू उसके पास रह सकेगा। ऐ ग़रीब लड़के! तुझमें कुछ ऐसा है जो मेरी बीमारी का इलाज जरूरत से ज्यादा कर रहा है लेकिन इस शिकार के लिए मेरी बीमारी ही मेरी तन्दुरुस्ती है। तू यहीं रह जिससे सब लोग कप्तान समझकर तेरी ख़ातिर करें। हां, लड़के! तू यहीं मेरी इस पेंचवाली कुर्सी पर बैठ। उसके लिए दूसरा पेंच तू बन जाएगा।"

"नहीं, नहीं, नहीं! तू विकलांग है। अपने ग़ायब हुए पैर की जगह तू मुझे इस्तेमाल कर सकता है। मैं और कुछ नहीं चाहता, केवल तेरे साथ रहना चाहता हूं।"

"ओह! बहुत-से बदमाशों में यों कहिए लाखों धूर्तों में—यह जैसे मुझे मनुष्य की सतेज विश्वासी भावना में पनपा रहा है! और एक काला लड़का! सनकी! लेकिन मैं सोचता हूं कि समान व्यक्ति एक दूसरे का इलाज भली प्रकार कर सकते हैं। वह फिर सन्तुलित हो रहा है।"

"लोग कहते हैं कि एक बार स्टब ने बेचारे पिप को छोड़ दिया जिसकी सब हड्डियां डूबने से सफेद निकल आईं भले ही उसकी त्वचा काली हो। लेकिन मैं आपके साथ वैसा विश्वासघात कभी नहीं करूंगा जैसा स्टब ने मेरे साथ

---

१. एक मीठा फल।

किया। मैं आपके साथ ज़रूर जाऊंगा।"

"तुम अगर इतना बोलोगे तो आहाब के काम को नुकसान होगा। मैं तुमसे कहता हूं—नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।"

"ओह, मेरे अच्छे मालिक! मालिक! मालिक!"

"तुम इस तरह रोए तो मैं तुम्हारी हत्या कर दूंगा। यह सोच लो कि आहाब भी पागल है। सुनो! आर डेक पर मेरे हड्डी के पैर की आवाज़ सुनते रहो कि मैं वहां हूं। अब मैं तुझे छोड़ता हूं। तेरा हाथ! मिल गया छोकरे! तुम सच्चे हो, जैसे परिधि अपने केन्द्र के प्रति सच्ची होती है। इसलिए खुदा तुम्हें हमेशा खुश रखे। वह हमेशा तुम्हारी मदद करे।"

*(आहाब जाता है, पिप एक कदम आगे बढ़ता है)*

"वह अभी यहां खड़ा था। मैं उसकी हवा में खड़ा हूं—लेकिन मैं अकेला हूं। अगर यहां पिप होता तो मैं यह सहन कर लेता लेकिन वह तो लापता है। पिप! पिप! डिंग, डांग, डिंग! पिप को किसने देखा? वह यहां ज़रूर होगा, ज़रा दरवाज़ा तो खोलो। क्या? न ताले, न चटखनी, न कोई रोक, लेकिन इस पर भी यह खुल नहीं सकता। यह तो कोई जादू है। उसने मुझे यहां ठहरने को कहा है और यह भी कि यह पेंच वाली कुर्सी मेरी है। तब मैं यहां बैठूंगा—जहाज के बीचोंबीच, उसकी सब नावें और मस्तूल मेरे सामने हैं। यहां हमारे पुराने जहाज़ी कहते हैं कि उनके काले चौहत्तर में कभी-कभी सेना के बड़े अफ़सर एक मेज़ पर बैठते हैं और कप्तानों एवं लेफ़्टिनेन्ट लोगों का नेतृत्व करते हैं। यह क्या है? फौजियों के निशान! फौजियों के निशान! सब एक साथ। आपको देखकर प्रसन्नता हुई मोशियो! क्या आपने पिप को देखा है? कितना बुरा लगता है जब कोई काला आदमी गोरे आदमी की तरह अपने कोट में सोने के फीते और फौजी निशान लगा लेता है। मोशियो, क्या आपने किसी पिप को देखा है? एक छोटा नीग्रो छोकरा, पांच फुट ऊंचा, काले कुत्ते की शक्ल का, डरपोक! एक बार एक व्हेल-नाव से कूद पड़ा था। आपने देखा है? नहीं! तब ठीक है! तब प्याला फिर भरिए, और हर डरपोक के लिए शरम की घूंट चढ़ाइए। मैं कोई नाम नहीं लेता। उन सब पर शर्म कीजिए। एक पैर मेज़ पर रखिए।—हिश! हड्डी की आवाज़! मालिक, मालिक! जब आप मेरे

ऊपर चलते हैं तो मैं डर जाता हूं। परन्तु मैं यहां रुकूंगा। यों जहाज़ का यह पिछवाड़ा चाहे फिर चट्टान से टकराकर फट क्यों न जाए और मैं घोंघों के साथ तलहटी में क्यों न समा जाऊं !"

## ७९

अन्त में वह समय तथा स्थान आ गया जिसका आहाब को बहुत दिनों से इन्तजार था और जिसका पीछा करते-करते वह न मालूम कितने सागर पार करता चला आया था। अब वह अपने दुश्मन को मज़ा चखा सकता था। यही वह जगह थी जहां उसके वह भयानक जख्म लगा था। एक दिन पहले उसी स्थान पर एक जहाज़ का 'मोबी डिक' से मुकाबला हुआ था। अब तक जितने जहाज़ उसे मिले थे उन सबने बताया था कि मोबी डिक कितनी उदासीनता से अपने विपक्षियों का शिकार करती और चीर-फाड़ डालती थी। उस बुड्ढे कप्तान की आंखों में कोई विचित्र चमक थी जिसे देखकर कमज़ोर व्यक्ति तो घबड़ा ही जाते। जिस प्रकार ध्रुवतारा छः महीने की रात में अपनी स्थिर और तीखी दृष्टि से आर्कटिक प्रदेश को देखता रहता है उसी प्रकार आहाब अर्ध रात्रि की उदासी में डूबे अपने जहाज़ियों को बराबर देख रहा था। उनमें यह बात जम रही थी कि उनके समस्त भ्रम, संदेह, भय, उनकी आत्मा के अन्दर ही मिट जाने चाहिएं और उनका एक भी तेज बर्छा या धारदार लोहा बाहर नहीं निकलना चाहिए।

आगे आने वाली परिस्थिति की सम्भावना में जैसे सब हंसी-मज़ाक काफ़ूर हो गया था। स्टब की मुस्कराहट खत्म हो गई। स्टारबक खामोश हो गया। उसी प्रकार आनन्द और अफसोस, आशा और डर सभी कुछ आहाब की लौह-आत्मा के उस खाल में पिसकर महीन चूरन हो रहे थे। मशीन की तरह, वे डेक पर गुमसुम चल-फिर रहे थे और पहले से अधिक सतर्क थे कि बुड्ढे की नज़र उन्हीं पर टिकी हुई है।

परन्तु क्या किसी ने उसको अधिक एकान्त क्षणों में परखने की चेष्टा की है जब वह सोच रहा हो कि केवल एक की नज़र ही उस पर पड़ रही है ?

आपको स्पष्ट ज्ञात होगा कि जिस तरह आहाब की दृष्टि से जहाज़ के कर्मचारी थर्राते थे, उसी तरह पारसी की नजर से आहाब कांपता था। उस पतले-दुबले फेडैलाह को उस विचित्र भावना का कुछ-कुछ अनुभव हो रहा था; जैसे वह घबड़ा रहा हो। लोग उसको शंका की दृष्टि से देखते थे। वे सोचते थे कि वह कोई आदमी है या कांपने वाली छाया जो एक डेक पर किसी अदृश्य व्यक्ति को शरीर द्वारा डाली गई है। वह घंटों-घंटों खड़ा रहता था। वह न बैठता, न झुकता और उसकी अनोखी आंखें जैसे कहतीं—'हम दो पहरेदार कभी आराम नहीं करते।'

जब तक आहाब पहले से न होता तब तक दिन-रात में कभी भी मल्लाह डेक पर नहीं चढ़ते थे। वह अपने हड्डी वाले पैर को खटखटाता कभी डेक पर दिखाई देता और कभी केबिन की सीढ़ियों पर तथा उसका टोप उसकी आंखों तक चढ़ा रहता। चाहे जितना निश्चल वह हो; चाहे जितनी रातें या दिन उसने अपने झूले वाले पलंग पर बिना आराम किए बिता दी हों परन्तु उसके उस दबे हुए टोप में छिपी आंखें कभी-कभी मुंदी रहतीं और यह निश्चय न हो पाता कि वह सो रहा है अथवा उन पर पैनी नजर गड़ाए खड़ा है। वह रस्सा पकड़े हुए, एक-एक घंटों खड़ा रहता और रात की नमी, अनदेखे ही, उसके पत्थर-से कोट तथा टोप पर छाई रहती। ओस उसके जिन कपड़ों को रात में भिगो देती, दिन की धूप उन्हें सुखा देती। रात-दिन इसी प्रकार तख्तों पर वह बिताता और अपनी जरूरत की चीजें भी वहीं मंगवा लेता था।

उसी खुली हवा में वह अपना दो समय का भोजन भी करता था। सुबह के नाश्ते और भोजन के अतिरिक्त रात का खाना वह कभी छूता नहीं था। उसने अपनी दाढ़ी बनाना भी बन्द कर दिया जो खूब घनी हो गई, जैसे किसी पेड़ पर घास उग आई हो। उसका समूचा जीवन जैसे डेक पर पहरा देने में ही सीमित हो गया था। पारसी की भेदभरी दृष्टि भी उसकी दृष्टि के समान जमी थी, परन्तु कोई भी किसी से बोलता नहीं था। कभी-कभी रात में आहाब रस्सों के सहारे और पारसी बड़े मस्तूल के पास खड़े होते और दोनों ही एक दूसरे पर नजरें गड़ाए रहते जैसे पारसी में आहाब अपनी छाया देखता था और आहाब में पारसी का अस्तित्व विलीन हो गया था।

सुबह, दिन निकलते-निकलते, उसकी लोहे की-सी आवाज सुनाई देती—

"मस्तूलों को ठीक करो !" उसके पश्चात् सूरज छिपने और शाम डूबने के बाद, हर घंटे, पुकार की घंटी बजती रहती—"तुम देख रहे हो ?···तेज···और तेज···"

बच्चों को ढूंढ़ने वाले 'रैचेल' से भेंट होने के अनन्तर तीन-चार दिन निकल गए लेकिन कोई भी फव्वारा अभी तक नहीं दिखाई दिया। वह एक लक्ष्य वाला बुड्ढ़ा अपने कर्मचारियों की वफ़ादारी पर शक करता-सा मालूम पड़ने लगा। कम से कम, उन मूर्तिपूजक हारपूनरों को छोड़कर बाकी सब पर। यहां तक कि स्टब और फ़्लास्क के लिए भी वह सोचने लगा कि वे जान-बूझकर उसकी वांछित सफेद व्हेल को नहीं देखेंगे। इस प्रकार के अपने सन्देहों को वह कहकर नहीं बल्कि अपने व्यवहार से प्रदर्शित करना चाहता था।

"सबसे पहले व्हेल को मैं स्वयं देखूंगा।" उसने कहा। "हां ! आहाब ही इनाम जीतेगा।" और उसने अपने हाथ से आगे के रस्सों के एक जाल को हिला दिया। तब उसने एक-एक करके हर नाविक को देखा। डैग्गू, क्वीकेग तथा टाशटेगो को देखकर उसकी नजर ठहर गई। फेडैलाह पर उचटती नज़र फेंक-कर उसने मुख्य मेट से कहा—"स्टारबक ! रस्सा पकड़ो। मैं इसे तुम्हें सौंप रहा हूं।"—तब रस्सों की बनी एक डलिया में बैठते हुए उसने लोगों से कहा कि उसे ऊपर घसीट दें। अन्त में स्टारबक ने रस्सा पकड़ लिया और पास ही खड़ा हो गया। बड़े मस्तूल पर अपना एक हाथ लपेटकर आहाब ने मीलों-मीलों दूर तक समुद्र के फैलाव पर नजर दौड़ाई।

इस प्रकार रस्सों को ऊपर-नीचे करने में यदि विशेष सतर्कता न बरती जाए तो ऊपर रस्सों पर चढ़ा कोई जहाज़ी कभी भी समुद्र की घुमेड़ों की भेंट हो सकता था। आहाब की भी वही स्थिति थी किन्तु एक विचित्रता के साथ कि उसने अपने रस्सों को ऊपर-नीचे करने का भार स्टारबक को देकर अपना जीवन उसके हाथों सौंप दिया था जबकि स्टारबक ही जहाज़ पर एक ऐसा व्यक्ति था जो पग-पग पर आहाब की बातों का विरोध करता था।

उस जाल के ऊपर आहाब लगभग दस मिनट रहा। उसी बीच भारी समुद्री चिड़ियों में से एक लाल रंग की चोंच वाली डरावनी चिड़िया ने, जो जहाज़ी मस्तूलों के पास मंडराया करती है, आहाब के चारों ओर भनभनाना शुरू कर दिया। वह कभी हज़ार फुट सीधी ऊपर चली जाती और तब···

फिर चक्कर खाती हुई नीचे आती। लौटकर आहाब की खोपड़ी के चक्कर लगाती।

चूंकि आहाब की नज़र दूर फैले क्षितिज पर स्थिर थी इसलिए उसने इस चिड़िया पर ध्यान नहीं दिया। न ही किसी और का ध्यान उस ओर गया होगा क्योंकि वह एक साधारण-सी बात थी।

"आपका टोप, आपका टोप, सर!" सिसिली के जहाज़ी ने अनायास चिल्लाकर कहा जो मस्तूल के पास और आहाब के ठीक पीछे खड़ा था। उस समय तक चिड़िया का फैला हुआ पंख बुड्ढे की आंखों के सामने था और भारी चोंच सिर के ऊपर। एक चिल्लाहट के साथ चिड़िया आहाब का टोप लेकर उड़ गई।

एक बाज ने तीन बार तारक्विन के सिर का चक्कर लगाया था और उसकी टोपी उतारकर फिर पहनाने आया था। उसके बाद तारक्विल—उस की पत्नी—ने उससे कहा था कि वह रोम का शाह बनेगा। उस टोपी का दुबारा पहनाया जाना ही ऐसे में अच्छा शकुन माना जाता है। आहाब का टोप तो कभी लौटा नहीं। वह भारी चिड़िया उसे लेकर उड़ती ही चली गई और अन्त में ग़ायब हो गई। जहां वह गायब हुई थी उस स्थान पर एक काला-सा धब्बा बहुत ऊंचाई से उड़कर जल में समा गया।

## ८०

भारी पिकोड बढ़ता चला जा रहा था। घुमड़ती लहरों के साथ दिवस बीतते चले जा रहे थे। 'कॉफ़िन' से बनी जीवन-रक्षक नौका धीरे-धीरे हिल रही थी। तभी अपने नाम 'डिलाइट' के गुणों के विपरीत एक जहाज़ सामने दिखाई दिया। सब नज़रें उसके चौड़े शहतीरों पर स्थिर हो गईं। उनको कैंचियां भी कहते हैं जो अनेक व्हेल-जहाज़ों में छोटे डेक से आठ-नौ फुट ऊपर रहती हैं तथा बेकार या अतिरिक्त नावों को रखने के काम में आती हैं।

उस आगंतुक की उन कैंचियों से छोटी-छोटी लकड़ियां जुड़ी हुई थीं और किसी पुरानी नाव के कुछ तख्ते जड़े हुए थे। सब मिलाकर वह एक घोड़े

के अस्थिपंजर-सा दिखाई दे रहा था।

"सफेद व्हेल देखी है क्या ?"

"देखी है !" उस पोपले मुंहवाले कप्तान ने 'ताफ़ेल'[1] पर खड़े होकर कहा और अपने बिगुल से उसने ध्वस्त नाव की ओर संकेत किया।

"क्या उसे मार डाला गया ?"

"अभी तक ऐसा हारपून नहीं बना जो उसे मार सके," एक झूले वाले पलंग को डेक पर देखकर और उसके चारों ओर कुछ जहाजियों को कोई वस्तु सीते हुए देखकर दूसरे ने कहा।

"अभी तक नहीं बना ?" और पर्थ द्वारा बनाए हुए बर्छे को हाथ में लेकर आहाब ने कहा—"ऐ नन्तुकेत वालो ! इधर देखो ! इस हाथ में मैं उसकी मौत लिए खड़ा हूं ! इस पर खून और आसमान की बिजली ने सान रखी है, और इन तेज कांटों पर भी और मैं क़सम खाता हूं कि उसके सुफ़नों के नीचे का जो गरम हिस्सा है, मैं उस पर तीन बार वार करूंगा जहां उस पापिन सफेद व्हेल की ज़िंदगी है !"

"तब भगवान् तुम्हारी रक्षा करे, ऐ बुड्ढे दोस्त—तुमने उसे देखा है"—झूले वाले पलंग की तरफ़ इशारा करके वह बोला—"कल मेरे पांच में से चार हट्टे-कट्टे आदमियों को दफ़ना दिया गया जो कल तक जिन्दा थे और रात होते-होते खत्म हो गए। उस एक को मैं दफ़ना रहा हूं, बाकी मरने के पहले ही दफ़न हो गए। अब तुम उनकी कब्रों पर अपना जहाज़ बढ़ा रहे हो"—अपने जहाजियों की ओर मुड़ते हुए—"क्या तुम लोग तैयार हो ? तब तख्तों को रेल पर रखो और लाश को उठा लो; हां, इसी तरह···ऐ खुदा !"—अपनी फैली आंखों से छाया की ओर बढ़ते हुए वह कहता गया—"भगवान् करे जीवन और मुक्ति—"

"'आगे बढ़ो ! पतवारें तेज चलाओ !" अपने जहाजियों को उत्साहित करते हुए आहाब चिल्लाया।

परंतु पिकोड की गति एकाएक इतनी तेज नहीं हो सकी कि आदमी के डूबने पर उठने वाली 'गड़प' आवाज़ और बुलबुलों के मिटने की ध्वनि सुनाई

---

१. जहाज़ के पिछले भाग में लगे कठघरे का ऊपरी भाग।

न देती। जरूर ही उन बुलबुलों ने जहाज के पेंदे को टक्कर दी होगी।

अब जब आहाब उस शोकमग्न जहाज से दूर हटा तो उस अनोखी जीवन-रक्षक नौका को जो पिकोड के पीछे लटक रही थी—जैसे एक परेशानी से नजात मिली हो।

"हा! सामने देखो! दोस्तो! सामने देखो!" पीछे से एक आवाज ने जैसे जाते हुए पिकोड को चेतावनी दी, "तुम अजनबी लोगो! ओह! बेकार ही हमारे शोकाकुल अन्त्येष्टि से भाग रहे हो। तुम इस तरह अपने ताफ़ेल को मोड़कर अपनी कब्र ही दिखा रहे हो।"

# ८१

दिन बिल्कुल साफ़ था। नीलिमा में जल और वायु समुद्र और आसमान एक हो रहे थे। स्वच्छ और पारदर्शी वायु की कोमलता में जैसे किसी नारी का रूप निखर रहा था; साथ ही समुद्र की विशालता में उठती लम्बी, तीखी और उलझती लहरें इस तरह उठ रही थीं मानो सोया हुआ सैम्सन सांस ले रहा हो।

इधर-उधर छोटी सफेद चिड़ियां अपने छोटे-छोटे डैनों को फैलाए, ऊंचाई पर, बर्फीली धवलता को ऐसे चमका रही थीं जैसे किसी युवती की कल्पना साकार हो रही हो। परन्तु, किनारे के आसपास में समुद्र के नीलेपन में और जल की अथाह गहराई में भारी-भारी व्हेल, सोर्ड-फिश, शार्क तैर रही थीं; और ये थीं पुरुष-समुद्र की मजबूत, आन्दोलित और हत्याकारी भावनाएं।

यह आन्तरिक भेद तो था, किन्तु बाहर का अन्तर केवल कम और ज्यादा गहरी छायाओं में था। वे दोनों जैसे एक हो रहे थे। जैसे केवल 'सेक्स' अथवा यौन ही उनका अन्तर बताता था।

ऊंचाई पर, जार या राजा की भांति, वह यशस्वी शाहों का शाह सूर्य, कोमल वायु बलशाली समुद्र को अर्पित कर रहा था जैसे किसी वधू को वर की भेंट दी जा रही हो। सामने क्षितिज की उस धारा में, एक मन्द किन्तु गतिमान चेतना झलक रही थी—जो इस भूमध्य रेखीय प्रदेश में—बहुत बार दिखाई

देती है और उसी रूप में मन्द-मधुर और धक्-धक् करता प्यार आनन्द की हिलकोरें ले रहा था और वह कोमल बध अपना तन-मन न्योछावर कर रही थी।

बंधे,-खिंचे, चेहरे की झुर्रियों से दबे किन्तु स्थिर और न झुकने वाले आहाब की आंखें अंगारे की तरह चमक रही थीं जैसे उस विनाश की राख में भी उनमें तेजी और गर्मी बनी हो। सुबह की उस निर्मलता में स्थिर खड़े आहाब ने अपनी एक भौंह के ऊपर से लोहे का टोप हटाकर आकाश की ओर देखा, मानो वह किसी सुन्दर युवती का मस्तक हो।

ओह ! नीलिमा का अमर बालपन और अबोधता ! वे पंख लगे अदृश्य प्राणी जो हमारे चारों ओर किलकारियां भरते हैं ! वायु और प्रकाश की मधुर बाल्यावस्था ! बुड्ढे आहाब के दुःखों के प्रति तुम सब कितने उदासीन हो। किन्तु इसी तरह की हंसी-खुशी नेत्रों वाले मिरियम[1] और मार्था[2] को अपने माता-पिता से बेखबर इठलाते हुए मैंने देखा है। उस जली हुई मौत पर उगे गोल छल्लेदार बालों से इठलाते गेसुओं को देखने से ऐसा लग रहा था जैसे वह उसके मस्तिष्क रूपी ज्वालामुखी का मुख हो।

रस्सेबन्दी से हटकर धीमे-धीमे डेक को पार करके आहाब ने नीचे पानी में झांका और अपनी ही छाया में डूब गया। वह अधिकाधिक विचारमग्न होता जा रहा था। उस सुन्दर और सुवासित वायु ने जैसे अपना जादू-सा प्रभाव उस पर डाल दिया था तथा उसकी आत्मा की करोचन को एक क्षण के लिए दूर कर दिया था। वह मधुर और खुशनुमा हवा, वह आकर्षक आसमान जैसे उसे थपथपाने लगे। दुनियां का सौतेलापन, उसकी समूची कठोरता सिमटकर दूर हो गई और प्यार की बांहें उसकी सख्त गर्दन को लपेटने लगीं जैसे वह सौतेली मां अभी भी अपने सब दुर्गुणों को दूर करके खुशी से सिसकियां भरते हुए अपने मातृ हृदय से उसको आशीर्वाद देकर रक्षा करना चाहती है। अपने पिचके हुए टोप के नीचे आहाब का एक आंसू समुद्र में गिरा। सम्पूर्ण प्रशान्त महासागर में भी उतनी सम्पदा नहीं हो सकती जितनी उस एक बूंद आंसू की निरीहता में थी।

---

**१-२. यूरोप के लोकगीतों में मिरियम और मार्था को इंसान के रूप में एक दैवी शक्ति माना गया है।**

स्टारबक ने बुड्ढे को देखा कि वह किस बुरी तरह से समुद्र पर झुका हुआ है। उसने उसके हृदय की व्यथा को समझा। वह उसे देख न सके और छू न जाए इसके प्रति सतर्क होकर स्टारबक उसके पास जाकर खड़ा हो गया।

आहाब घूमा।

"स्टारबक !"

"सर !"

"ओह स्टारबक ! बड़ी अच्छी हवा चल रही है और आसमान बहुत सुहाना दिखाई दे रहा है। ऐसे ही दिन, आज ही की तरह मधुर था वह दिवस जब मैंने अपने जीवन में पहली व्हेल मारी थी। तब मैं अठारह साल का एक छोकरा हारपूनर था; चालीस, चालीस, चालीस साल पहले !—इतने दिन हो गए। व्हेल का शिकार करने में निरंतर चालीस साल बीत गए। चालीस साल का एकांत खतरा और तूफ़ान ! इस निर्दयी समुद्र पर चालीस साल की ज़िंदगी। चालीस साल से आहाब ने उस शांत पृथ्वी का त्याग कर रखा है। चालीस साल से इस जल की गहराई की भयानकताओं से लड़ाई करता रहा हूं। हां स्टारबक ! इन चालीस सालों में मैंने किनारे पर तीन साल भी नहीं बिताए हैं। अब मैं ऐसे जीवन का स्मरण करता हूं, जैसा मेरा रहा है, कारीगरों का बनाया हुआ दीवारों से घिरा कप्तान का वह शहर जो केवल उसकी घिरी हुई दुनिया थी और जहां उसको संतोष पाने का कोई मार्ग न था—ओह, इतनी थकावट ! इतना भारीपन ! एक हुक्म के जोम में घिरी 'गिनी कोस्ट' जैसी गुलामी ! जब मैं उस सबको सोचता हूं जो मेरे लिए अज्ञात है और जिसका थोड़ा आभास मुझे रहता था—और किस प्रकार मेरी आत्मा ने इन चालीस सालों में निरे सूखेपन को अपनाया है और किस तरह मैं इस शुष्कता और खारेपन में जीवित रहा हूं, जबकि भूमि पर रहने वाला छोटे से छोटा आदमी अपने खाने के लिए रोज़ ताज़े फल तोड़ता है और संसार की ताज़ी रोटी का कड़ा भाग मेरे लिए फेंकता रहता है—दूर ! अपनी उस नौजवान पत्नी से महासागरों दूर, जिससे मैंने पचास साल पूर्व विवाह किया था और अगले ही दिन मैं हार्न अन्तरीप के लिए समुद्री यात्रा पर चल दिया था—तथा अपने विवाह के तकिए पर केवल एक दबाव छोड़ गया था—पत्नी ! पत्नी ! जैसे अपने पति के रहते भी विधवा ! स्टारबक ! मैंने शादी करते ही उसे विधवा

बना दिया। और तब वह पागलपन, वह सनक, वह खौलता हुआ खून और जलती हुई भौंह की तेजी में जब आहाब ने हज़ारों व्हेलों को—किटकिटाकर और झाग उठाकर—पीछा किया। मेरे वे कर्म आदमी के नहीं राक्षस के थे! —हां! हां! चालीस साल का कैसा मूर्ख—मूर्ख! आहाब पुराना मूर्ख रहा है! *मछलियों का पीछा करने का यह संघर्ष क्यों? क्यों यह थके हुए और जैसे* लकवा लगे हुए हाथ पतवारों पर चलते रहे, और लोहे तथा बर्छों को संभालते रहे? और, अब आहाब पहले से अमीर और बेहतर कैसे है? सोचो! ओह, स्टारबक! क्या यह दुर्भाग्य नहीं है कि जीवन के इतने बोझ के बाद भी मेरा एक पैर मुझसे छिन जाए? यहां, इस पुराने बालों छल्ले को हटा दो, यह मुझे अंधा बनाता है, जैसे मैं रो पड़ूंगा। इस तरह के बालों के छल्ले यों सफ़ेद कभी नहीं होते, बल्कि किसी राख में लिपटकर हुए हैं! लेकिन स्टारबक! क्या मैं बहुत, बहुत बुड्ढा लगता हूं? मुझको बेहोशी आती है, कमज़ोरी; मैं झुक गया हूं, मेरे कूबड़-सा निकला मालूम पड़ता है जैसे स्वर्ग के बाद सदियों-सदियों तक आदम उसके नीचे लड़खड़ा रहा हो। परमात्मा! ऐ परमात्मा! ऐ परमात्मा! मेरे दिल को पीस डालो!—मेरे दिमाग़ को कुचल डालो!—इतना मज़ाक! मज़ाक! ऐसी तीखी और काटने वाली दिल्लगी और इन सफ़ेद बालों की; क्या मैंने इतना आनन्द लूटा था कि मुझे यह सहन करना पड़ता? स्टारबक! मेरे नज़दीक आओ, नज़दीक! मैं किसी इंसान की आंखों में झांकना चाहता हूं। समुद्र और आसमान की तरफ नजरें गड़ाए रहने से यह कहीं अच्छा है। भगवान् की ओर नजरें गड़ाने से कहीं ज्यादा अच्छा है। हरे मैदानों के पास; इस चमकीली भट्ठी के पत्थर के पास यह एक जादू का शीशा है, मेरे साथी! मैं तुम्हारी आंखों में अपनी बीवी और बच्चे को देख रहा हूं। नहीं, नहीं; जब मैं पानी में उतरूं तो तुम मत उतरना। जब यह कलंकी आहाब मोबी डिक का पीछा करे तब तुम मत आना। वह संकट तुम्हारा नहीं होगा। नहीं, नहीं! तुम्हारी आंखों में अपना सुदूर स्थित घर मैं देख रहा हूं! इसलिए यह संकट तुम नहीं झेलोगे!"

"ओह, मेरे कप्तान! मेरे कप्तान! महान् आत्मा! विशाल हृदय वृद्ध! उस गन्दी व्हेल का पीछा कोई क्यों करे! आइए मेरे साथ! इन खतरनाक समुद्रों से हमें उड़ भागना चाहिए। हमें घर चलना चाहिए! स्टारबक

के भी बीवी है, बच्चा है; उसके बहनों, भाइयों की खुशनुमा जवानी की तरह ही बीवी और बच्चा ! आपकी स्नेहमयी, चाहनायुक्त पिता की भावना की पुरानी आयु ! चलिए ! हम लोगों को चलना चाहिए ! कहिए ! मैं अभी ही जहाज़ का रास्ता बदल दूं ! अपने नन्तुकेत की ओर चलते वक्त हममें कितनी उमंग, कितना उत्साह, आनंद होगा ! सर ! आज के इस सुहाने-नीले दिवस की भांति नन्तुकेत में भी हर्ष छाया होगा।"

"ज़रूर ! ज़रूर ! गर्मियों की कुछ सुहानी सुबहों को मैंने उन्हें वैसा खुश देखा है। इस समय ही—हां, यह उसके दोपहर के सोने का समय है—लड़का तपाक से जगता है। बिस्तर पर बैठ जाता है और उसकी मां मेरे सम्बन्ध में बातें करती है—मुझ राक्षसी जीव के बारे में ! किस प्रकार मैं समुद्रों में विदेश गया हूं परन्तु उसके साथ नृत्य करने को जल्दी ही लौटने वाला हूं।"

"वह मेरी 'मेरी', मेरी 'मेरी' स्वयं दिखाई दे रही है ! उसने मुझसे वादा किया था कि प्रत्येक सुबह वह लड़के को पहाड़ी के ऊपर ले जाएगी और वहां से वह अपने पिता के जहाज़ को देखने की प्रतीक्षा करेगा ! हां, हां ! अब आगे नहीं, बहुत हो चुका ! हमें नन्तुकेत की ओर चलना चाहिए ! मेरे कैप्टेन ! घर के रास्ते को देखिए ! देखो, देखो ! उस खिड़की से लड़के का चेहरा देखो ! बच्चे का हाथ पहाड़ी चट्टान पर टिका हुआ है।"

परन्तु आहाब की दृष्टि पलट गई। कीड़ा लगे फल के पेड़ की तरह वह हिला और अपने आखिरी फल ज़मीन पर फेंक दिए।

"यह क्या है ? यह कैसी अजीब और बेनाम चीज़ है ? कौन-सा धोखेबाज़ और छिपा हुआ मालिक, निर्दयी बादशाह मुझ पर हुक्म चला रहा है कि सभी स्वाभाविक स्नेह और चाहनाओं के होते हुए भी मैं व्यर्थ आगे बढ़ता ही चला जाता हूं और घिरकर हर समय ज़िच खा जाता हूं। अपनी भावनाओं के प्रतिकूल जूझता रहता हूं। क्या यही आहाब आहाब है ? ऐ खुदा ! क्या यह मैं ही हूं जो अपना हाथ हिला रहा हूं ? परन्तु यदि वह महान सूर्य अपने आप न घूमता और स्वर्ग के शैतान छोकरे की तरह डोलने वाला कहलाता, या किसी अदृश्य शक्ति के द्वारा सितारे न टिमटिमाते तो यह छोटा-सा हृदय भी कैसे धक्-धक् करता ? यदि परमात्मा न संचालित करता तो इस छोटे-से मस्तिष्क में विचार कैसे आते ? यदि परमात्मा—हृदय की धक्-धक्, मस्तिष्क की

विचारशक्ति, प्राणी के जीवन का संचालक न होता तो मैं क्या हो सकता था ? परमात्मा की शक्ति से ही जहाजों की सांकेतिका एवं हाथ के बर्छे पर टिके भाग्य की ही भांति हम इस संसार में घूमा करते हैं। यह मुस्कराता आसमान, यह ख़ामोश जलागार देखो। अलबिकोर को सामने देखो! किसने उसे उड़ने वाली मछली के पीछे दौड़ने को प्रेरित किया है ? ये हत्यारे कहां जाते हैं मेरे दोस्त ! यदि जज स्वयं ही अपराधी बन जाएगा तो न्याय कौन करेगा ? यह भीनी-भीनी हवा, यह भोला-मुस्कराता आकाश, पवन की यह सुगंधि जैसे कहीं दूर बगीचे से चली आ रही है; किसी चरागाह से तैरती आ रही है; किसी झाड़ी से डोलती आ रही है। स्टारबक ! एन्डीज के किसी ढाल के ऊपर वे सूखी घास का ढेर लगा रहे हैं और उस सबके कर्ता उसी नई सूखी घास के ढेर पर लोट लगा रहे हैं। क्या वे सो रहे हैं ? हां, चाहे जितना परिश्रम हम करें हमें भी धरती पर ही सो जाना है कैसा सो जाना है! हां, उस हरियाली में लीन हो जाना है! स्टारबक ! जिस तरह पिछले साल हंसिए चलते रहे और *आधी कटी घास पर यों ही छोड़ दिए गए।"*

परन्तु निराशा में एक लाश की-सी सफेदी लिए मेट चुपचाप चला गया था।

दूसरी ओर देखने के लिए आहाब ने डेक पार किया। वहां टकटकी बांधे देखती हुई दो आंखों को देखकर वह चंचल हो उठा। फेडैलाह भी बिना हिले-डुले उसी रेल पर झांक रहा था।

## ८२

उसी रात एक सुनसान और ख़तरनाक द्वीप के पास पहुंचने पर आहाब ने अनायास अपना सर बाहर निकाला और वायु की गंध को सूंघकर बोला कि यहां कहीं व्हेल अवश्य है। शीघ्र ही वह विशेष गंध एक स्पर्म व्हेल का आभास देने लगी जिससे सभी पहरेदार भी परिचित थे। निकट पहुंचने के लिए आहाब ने हुक्म दिया कि जहाज़ को थोड़ा मोड़ा जाए।

समुद्र में दूर तक फैली चिकनाहट को देखकर, सुबह होते-होते, जहाज़ पर

काफ़ी चहल-पहल हो गई। वह तेल का-सा पदार्थ चमकदार पालिश की तरह समुद्र की सतह पर जगमगा रहा था और लहरों के साथ घुला हुआ था।

"मस्तूलों को ठीक करो। सब लोगों को बुलाओ।"

डैग्गू अपने हाथ में फेंकने वाला लोहा लिए हुए तथा दूसरे लोग भी तत्परता-पूर्वक डेक पर चलने-फिरने लगे।

"तुम लोगों ने क्या देखा ?" आकाश की ओर सर उठाते हुए आहाब ने प्रश्न किया।

"कुछ नहीं, कुछ नहीं, साहब !" जवाब में आवाजें फैल गईं।

"बड़ा पाल, छोटा और दूसरे पाल—सब ठीक करो।"

सभी पाल संभाल दिए गए। एक रस्से को—जो खास तौर से उसके लिए ही था—ऊपर खींच दिया गया। मुख्य मस्तूल पर जब वह दो तिहाई चढ़ गया तो मुख्य मस्तूल और बीच मस्तूल के बीच की जगह पर झांकते हुए वह समुद्री पक्षी की तरह चिल्लाया—"वह देखो ! वह वहां फड़फड़ा रही है ! बर्फ़ीली शिला की तरह उसका कूबड़ चमक रहा है ! वही मोबी डिक है !"

तीन आदमियों के एक साथ देखने के बाद जो चीख निकली, उसे सुनकर रस्सों के आसपास खड़े जहाजियों ने उस मशहूर व्हेल को देखने के लिए डेक पर उचकना शुरू किया, जिसका पीछा वे इतनी दूर से करते चले आ रहे थे। आहाब अब सबसे ज्यादा ऊंचाई पर था। टाशटेगो ठीक उसके पैरों के नीचे खड़ा मुख्य मस्तूल का सहारा लिए था। इस ऊंचाई से व्हेल बहुत साफ दिखाई दे रही थी, जो कुछ मील की दूरी पर थी और समुद्र की प्रत्येक घुमेड़ के साथ उसका चमकता कूबड़ लहरें ले रहा था, साथ ही उसका खामोश फव्वारा हवा में उड़ रहा था। उन सहज विश्वासी जहाजियों ने वैसा ही फव्वारा देखा जैसा अतलांतक और हिन्द महासागर की चांदनी रातों में देखा था।

"और क्या तुममें से किसी ने इसको पहले नहीं देखा था ?" उसके चारों ओर खड़े रस्सेवालों को सम्बोधित कर आहाब ने कहा।

"मैंने भी उसी क्षण देखा जिस मिनट आपने देखा था और तभी मैं भी चिल्ला पड़ा," टाशटेगो बोला।

"नहीं, उसी क्षण नहीं। उस समय—नहीं-नहीं। सबसे पहले मैंने देखा

था। सबसे पहले देखना मेरे भाग्य में था। सिर्फ़ मेरे। तुममें से कोई भी सफ़ेद व्हेल को पहले नहीं देख सकता था। वह वहां फुफकार रही है! वह वहां घुमेड़ ले रही है!—वह! वहां फिर! फिर!" जैसे-जैसे व्हेल का फव्वारा ऊंचा उठ रहा था वैसे ही वैसे आहाब की आवाज़ देर तक गूंज रही थी। "वह नीचे जाने वाला है! पीछे के पालों पर! ऊपर का बड़ा पाल ढीला करो! तीनों नावों के पास खड़े होओ। मिस्टर स्टारबक! याद रखना, जहाज़ पर ही रहना और उसकी देखभाल करना। पतवार उधर! आगे! थोड़ा आगे! हां, जमकर। लोगो, जमकर! वह डुबकी मार गई। नहीं-नहीं, सिर्फ़ काला पानी है! सब नावें तैयार हैं न! तीन नावें तैयार रखो! मिस्टर स्टारबक! मुझे पानी में उतारो। नीचे, नीचे,—जल्दी बहुत जल्दी!" और वह पलभर में ऊपर हवा से नीचे डेक पर सरक आया।

"वह पीछे की ओर बढ़ रही है, साहब" स्टब ने कहा—"हमसे दूर हट रही है। हो सकता है कि अभी जहाज़ न देख पाई हो।"

"चुप रहो, भले आदमी! रस्सों के पास खड़े रहो। पतवारों को दाबकर चलाओ।—रस्से घसीटो! उसे डराओ! डराओ! डराओ!—हां, ठीक है! नावें, नावें!"

स्टारबक की नाव को छोड़कर बाकी सब नावें उतार दी गईं। हर नाव के पाल सीधे कर दिए गए; डांडे चलने लगे। उनमें तेज़ी थी और वे भी पीछे की ओर ही बढ़ रहे थे। आहाब सबसे आगे था। फेडैलाह की भिंची आंखों में मौत की-सी पीली चमक दिखाई दे रही थी। उसका मुंह अत्यन्त घृणित ढंग से चल रहा था।

नाटीलस की खामोश कौड़ी की तरह नावों के नोकीले अग्रभाग पानी को चीर रहे थे और बहुत धीमे-धीमे वे दुश्मन के पास पहुंच रहे थे। जब वे नज़दीक पहुंचे तो समुद्र और भी चिकना हो गया था जैसे अपनी लहरों पर कालीन फैलाए हुए हो। जैसे दोपहर में कोई चरागाह सुनसान पड़ा हो। सांस रोककर पीछा करने वाला वह शिकारी, अन्त में प्रत्यक्षत: बेखबर शिकार के पास जा पहुंचा और अब उसका समूचा चमकीला कूबड़ साफ दिखाई देने लगा जैसे समुद्र में वह कोई अलग वस्तु तैर रही हो और चिकने, चमकदार और हरे रंग के झागों के बढ़िया घेरे में चक्कर खा रही हो। उसने उस फैले हुए और झुर्रियों

वाले सर को थोड़ा उठा हुआ देखा। उसकी दूधिया चमकदार खोपड़ी की सफेद छाया चमक रही थी और जैसे संगीत की रुनझुन पास ही फूट रही थी। समुद्र का नीला जल उसके ऊपर से होकर बह रहा था और चारों ओर चमकदार पानी के बुलबुले उठकर जैसे नृत्य कर रहे थे। परन्तु लहरों द्वारा वे सब बन-बनकर मिट रहे थे। भारी व्यापारी जलपोत के पेन्ट किए हुए पेंदे पर जैसे झंडे की छड़ लगी हो उसी तरह एक बर्छे की लाठी सफ़ेद व्हेल की पीठ पर गड़ी हुई थी। थोड़ी-थोड़ी देर में मुलायम पूंछों वाली चिड़ियों का झुंड इधर-उधर आकर उसे छाते की तरह छा लेता था। कभी वे खामोशी से आकर इस बर्छे की छड़ पर बैठतीं या झूला झूलती थीं और झंडे की तरह अपने पंख फैला देती थीं।

एक हर्ष, विश्राम का एक आनन्द उस तैरती हुई व्हेल के चारों ओर छाया हुआ था।

उस सफ़ेद बैल पर ज्यूपिटर यूरोपा को बैठाकर ले गया था और वह उसके सींगों को पकड़े रही थी; उसकी मनोरम व झुकी हुई आंखें यूरोपा निहार रही थी; यह क्रीट की उन छायादार झाड़ियों, जिनकी कोमलता और लुभावनेपन में विवाह का ऐश्वर्य झूमता है, की ओर जा रहा था; वह महान् देवता ज्यूपिटर स्वयं उस सफ़ेद व्हेल के समान न तैर सके होंगे।

अपनी चमक से वह व्हेल लोगों को लुभा रही थी। इसमें ताज्जुब की क्या बात थी यदि इतनी प्रतीक्षा के बाद वे उसके प्रति इतने आकर्षित हो रहे थे और उस पर हमला करने का साहस कर रहे थे। उसका अनुभव तो उन्हें बाद में हुआ कि उस शान्ति में तूफ़ान लिपटा हुआ था। ऐ खामोश और लुभाने वाली शान्ति, ओह व्हेल! जो भी तुझे पहले देखता है—देखता ही रह जाता है। न जाने कितने तेरे उस मायाजाल में फंसकर समाप्त हो गए!

भूमध्यरेखीय समुद्रों की गम्भीरता में लिपटी प्रसन्नता के घेरे में मोबी डिक बढ़ती जा रही थी। वह अभी भी अपने शरीर के खतरों को पानी के भीतर किए हुए थी और जबड़े की निर्दयता को छिपाए हुए थी। परन्तु अचानक ही उसका आगे का हिस्सा धीरे-धीरे पानी से ऊपर उठा। एक तरह से संगमरमर सरीखा उसका शरीर एक मेहराब बना रहा था जैसे वर्जीनिया का प्राकृतिक पुल। यही नहीं, उसकी पूंछ सावधान करती हुई हवा में लहरा उठी। और

तब वह फिर पानी में विलीन हो गई।

पतवारों के छपाकों के साथ पालों के कपड़े इधर-उधर उड़ रहे थे और वे तीनों नावें मोबी डिक के दुबारा निकलने की प्रतीक्षा में थीं।

"एक घंटा", नाव के पिछले हिस्से पर खड़े आहाब ने कहा और व्हेल की जगह को गौर से देखता रहा। तेज़ हवा उठने लगी और समुद्र भी कुछ-कुछ उबाल खाने लगा।

"चिड़ियां! चिड़ियां!" टाशटेगो चिल्लाया।

जिस प्रकार भारत में सारस चिड़ियां पंक्तिबद्ध होकर उड़ती हैं उसी तरह की सफेद चिड़ियां आहाब की नाव की ओर उड़ती चली आ रही थीं। वे निकट आकर खुशी की किलकारियां भरकर पानी को उछाल-उछालकर खेलने लगीं। उनकी निगाह मनुष्य से अधिक तेज़ थी। आहाब को उस समय कहीं कुछ निशान नहीं दिखाई दे रहा था। तभी अचानक दो दांतोंकी पंक्तियां सामने चमकीं। वह मोबी डिक का खुला हुआ मुंह और फैला जबड़ा था। वह चमकदार मुंह नाव के सामने संगमरमर के मकबरे के फाटक की तरह दिखाई दे रहा था। उस विशालकाय जीव से बचने के लिए आहाब ने अपनी नाव एक ओर कर ली। तभी उसने फेडैलाह को अपने स्थान पर बुलाया और वह उसकी जगह जा खड़ा हुआ। आहाब ने पर्थ का बनाया हारपून हाथ में ले लिया और अपने नाविकों को हुक्म दिया कि वे डांडे घसीट लें तथा पीछे खड़े हो जाएं।

इस प्रकार व्हेल के सर को पानी से निकलने के पहले ही उसके लिए यह तैयारी पूरी की गई। परन्तु जैसे इस सबसे खबरदार मोबी डिक ने अपनी बुद्धि की तीक्ष्णता में किनारा कस लिया और अपने सर को नाव के नीचे उसने लम्बा-लम्बा डाल दिया।

नाव का हर तख्ता और हर लकड़ी जैसे कांप गई क्योंकि व्हेल उसकी पीठ पर टेढ़ी-टेढ़ी लेटी हुई थी, जैसे काटने वाली कोई शार्क टटोलकर, उसके समूचे अगले भाग को जबड़ों में दबाना चाहती हो। उसका लम्बा, पतला निचला जबड़ा हवा में फैल गया तथा उसका एक दांत नाव के कुंदे में फंस गया। कुछ नीलापन और कुछ मोती की-सी सफेदी—जो जबड़े के अन्दर चमक रही थी और आहाब के सर से केवल छ: इंच दूर थी; उससे भी ऊंची थी। इस प्रकार सफ़ेद व्हेल उस नाव को ऐसे दाबना चाहती थी जैसे खूंख्वार बिल्ली चूहे को

दाबती है। बिना किसी ताज्जुब के फेडैलाह ने आंखें गड़ाईं और अपने हाथों से 'क्रॉस' बनाया। चीते के-से पीले रंग के जहाज़ी एक दूसरे पर फांदते हुए बिलकुल पीछे भाग गए।

आगे के इलैस्टिक गनवेल[1] इधर-उधर खिंच रहे थे और वह व्हेल अपने खूंख्वार ढंग से नाव के साथ खिलवाड़ कर रही थी और चूंकि उसका शरीर नाव के नीचे डूबा हुआ था इसलिए उस पर ऊपर से वार करना भी सम्भव न था। इस समय आहाब उन्हीं जबड़ों में था जिनको वह बुरी तरह घृणा करता था। इस प्रकार क्रुद्ध होकर आहाब ने अपने खाली हाथों से ही उस लम्बी हड्डी को पकड़ा और ऐंठकर मुक्त करने लगा। इस प्रकार बेकार कोशिश करते रहने पर भी वह जबड़ा फिसल गया और आगे के गनवेल झुककर टूट गए; वह व्हेल दोनों जबड़ों के बीच में जैसे कैंची की तरह उस नाव के दो टुकड़े कर देना चाहती हो। इस भयानक कठिनाई में जहाज़ियों को अपने आपको संभालना मुश्किल हो गया और वे पतवारों तथा रस्सों को खींचने में लगे।

नाव अन्तिम रूप से समाप्त हो जाए इसके पूर्व आहाब ने व्हेल का इरादा समझकर अपना सर ऊपर हटाकर अपने उस कसाव को ढीला किया और तब उसने एक कोशिश की कि नाव को उस जबड़े की काट से दूर हटा दे। लेकिन वह और भी व्हेल के मुंह में घुस गई और आहाब का हाथ छूट गया। देखते-देखते वह सीधे पानी में जा गिरा।

अपने शिकार से अपने आप हटते हुए मोबी डिक दूर जा पहुंची और अपने सर को उसने लहरों के बीच में सीधा-सीधा डाल दिया तथा अपने समूचे शरीर को धीरे-धीरे घुमाती रही, साथ ही जब उसने अपने आगे के धड़ को बाहर निकाला तो वह लगभग बीस फुट पानी से ऊपर उठ गया, तब वह अपने चमकदार फव्वारे को और ऊंचा उछालने लगी।

शीघ्र ही अपने उस सीधे शरीर को उठाते हुए मोबी डिक ख़तरे में डूबे जहाज़ियों के चारों ओर तैरने लगी और पानी में ऐसे घुमेड़ें उठाने लगी जैसे और भयंकर हमला करने के लिए वह उन्हें घेर रही हो। जैसे मेक्काबीज की किताब में एन्टियोशस का हाथी अंगूरों और मलबेरी के खूनी रस को सामने

---

१. रबड़ की तरह खिचने वाले रस्से।

पाकर पागल हो उठता था, उसी प्रकार उस टूटी हुई नाव का दृश्य व्हेल को भी पागल बना रहा था। पानी की उस घुमेड़ में फंसा आहाब तैर नहीं पा रहा था फिर भी वह पानी के ऊपर ही उतरा रहा था। उस असहाय आहाब का सर वैसे बुलबुले की तरह था जो तनिक-से झटके से फूट सकता था। नाव के धुर्रे उड़ गए थे और पीछे की ओर फेडैलाह आहाब को विचित्र कौतूहल में देख रहा था। दूर पड़े जहाजी और दूसरा हिस्सा उसकी कुछ भी सहायता करने में असमर्थ थे। अपनी रक्षा कर पाना ही उनके लिए बहुत था। सफ़ेद व्हेल इतनी तेज और चक्करदार घुमेड़ें ले रही थी कि लग रहा था सब कुछ उसमें ही सिमट-कर समाप्त हो जाएगा।

यों शेष नावें सुरक्षित अवस्था में दूर तैर रही थीं और उस दृश्य को देख रही थीं फिर भी उस परेशानी में वे आहाब को किसी मार्ग से भी सहायता नहीं पहुंचा सकती थीं। वे अपने भागने की स्थिति में भी न थे। अपनी घबड़ाई आंखों से वे सब उस भयानक स्थान से दूर किनारे पर खड़े थे, जिस चक्रव्यूह का केन्द्र-स्थल आहाब का सर बना हुआ था।

शुरू से ही यह सब दृश्य जहाज के मस्तूलों से देखा जा रहा था और अब जहाज, धीरे-धीरे उस घटनास्थल के निकट आ गया जिसे देखकर आहाब चिल्ला उठा !—"बढ़ते···" परन्तु मोबी डिक द्वारा उछाली हुई समुद्र की एक भारी लहर आहाब के ऊपर से निकल गई, जिसने उस समय आहाब को पानी में डुबा दिया। परन्तु पानी से लड़कर आहाब ने फिर सर बाहर निकाला और चिल्लाया— "व्हेल की तरफ़ बढ़ो !—उसे दूर भगाओ।"

पिकोड की नोकें सामने कर दी गईं और घुसते हुए जहाज़ ने सफेद व्हेल को अपने शिकार से दूर भगा दिया। जैसे ही वह दूर हटी; नावें बचाव के लिए लपकीं।

उस समय खून की तरह लाल और जैसे अन्धे आहाब को स्टब की नाव में घसीट लिया गया। आहाब की शारीरिक शक्ति की वह तीव्र उत्तेजना जैसे चूर-चूर हो गई और अपनी कमजोरी तथा असहायावस्था में वह स्टब की नाव के पेंदे में पड़ा रहा जैसे कोई आदमी हाथियों के झुंड के पैरों से रौंदा गया हो। उस समय उसके भीतर किन्हीं गहरे खण्डहरों से विलाप की आवाजें आ रही थीं और वह उनमें विलीन हो रहा था।

शरीर की इस विपन्नावस्था में वह अधिक सीमित हो रहा था। कभी-कभी एक पल में बहादुर से बहादुर व्यक्ति भी सिमटकर एक प्रकार की गहरी पीड़ा में समा जाते हैं और उस प्रकार के छिछले दर्द कमज़ोर लोगों को समूचे जीवन भर घेरे रहते हैं। अतः ऐसे हृदय, प्रत्येक कष्ट में सिमट जाते हैं। इस पर भी अगर परमात्मा ने उसको लाद ही दिया तो वे समूचे जीवन की वेदनाओं को एकत्र कर लेते हैं और वही उनकी हर समय की उत्तेजना बन जाती है। अपने उन केन्द्र-स्थलों में उस प्रकार के अच्छे स्वभाव कमजोर आत्माओं के पूरे घेरों को अपने में लीन कर लेते हैं।

"हारपून", आहाब बोला। वह आधा उठा और अपने एक झुके हुए हाथ पर टिककर कहता रहा—"क्या वह सुरक्षित है?"

"हां, साहब! उस पर हमला नहीं हो सका, यह है", उसको दिखाते हुए स्टब बोला।

"उसे मेरे सामने डालो; —कोई आदमी खोया तो नहीं?"

"एक, दो, तीन, चार, पांच—पांच पतवारें थीं और ये पांच ही आदमी हैं।"

"बहुत ठीक।—मुझे उठाओ तो। मैं खड़ा होना चाहता हूं। वह, वह, मैं उसे देख रहा हूं! वह सामने! अभी भी पीछे जा रही है। वह फव्वारा कैसी उछाल मार रहा है!—हाथ हटाओ! आहाब की हड्डियां फिर उत्तेजना से भर उठी हैं! पाल ठीक करो! पतवारें बाहर! चर्खी!"

ऐसा बहुत बार होता है कि जब कोई नाव नष्ट हो जाती है तो उसके कर्मचारी दूसरी नाव द्वारा बचाए जाते हैं और तब वे उस दूसरी नाव के काम के सहायक बन जाते हैं और तब फिर शिकार का पीछा करना प्रारम्भ हो जाता है। इस स्थिति को डबल-बैंक्ड ओर्स—अथवा दोहरी शक्ति और दूने डांडों से काम करना कहते हैं। ऐसा ही इस समय भी था। परन्तु नाव की दूनी शक्ति व्हेल की बढ़ी हुई दूनी शक्ति के बराबर अब भी नहीं पहुंच सकती थी, क्योंकि अपने हर सुफने पर जैसे वह तिगुनी शक्ति फैला चुकी थी। इस समय जिस तेजी से वह तैर रही थी उससे दिखाई दे रहा था कि उन परिस्थितियों में 'पीछा करना' यदि चालू रखा गया तो अगर असफलता न भी मिली तो देर तो अवश्य रहेगी। परन्तु इतनी देर तक पतवार चलाने का कष्ट हर मल्लाह सहन नहीं कर सकता। ऐसे में स्वतः जहाज ही 'पीछा करने' में आगे रहता है। अतः

अपनी पूरी तैयारी करके पिकोड भी मोबी डिक के पीछे-पीछे चल पड़ा। थोड़ी-थोड़ी देर में मस्तूल पर से एक व्यक्ति व्हेल की स्थिति के सम्बन्ध में सूचना देता जाता था। जैसे ही पता लगता कि व्हेल पानी के भीतर चली गई है, आहाब कार्य प्रारम्भ कर देता। और दूरबीन की छड़ी अपने हाथ में लेकर उसने दूर तक देखा और जैसे ही निश्चित समय समाप्त हुआ, एक आवाज सुनाई दी—"अब कौन उसे देख रहा है ? क्या तुमने उसे देखा ?" यदि उत्तर 'न' में आता तो आहाब यह हुक्म देता कि उसे ऊपर घसीटा जाए। इस प्रकार समूचा दिन बीत गया। आहाब दूर देख रहा था और निश्चल बना हुआ था। तब जल्दी से, उलझन में, वह तख्तों पर पैर बढ़ाता रहा।

इस ख़ामोशी में वह क़दम बढ़ाता जाता था और केवल लोगों को बढ़ावा देता जाता था या पालों को और ऊंचा उठाने को कहता जाता था और हर बार अपनी उस टूटी हुई नाव को देखता जाता था जो छोटे डेक पर उलटी पड़ी थी। अन्त में वह उसके सामने ठहर गया। बादलों से घिरे आसमान में उठे नए बादलों की तरह उसके चेहरे पर भी विषाद की नवीन रेखाएं उभर आईं।

स्टब ने उसे रुकते देखा और अपने कप्तान के मस्तिष्क को दुरुस्त रखने के ख्याल से वह आगे बढ़ा और उस टूटी नाव को देखते हुए बोला—"गोखरू का पौधा, जिसे गधे ने लेने से इंकार कर दिया क्योंकि वह उसके मुंह में चुभता। साहब ! हा, हा !"

"ऐसे नाश के सामने भी यह कैसी निर्दयता है जो हंसने को विवश कर रही है ? दोस्त ! क्या मैं निडर अग्नि की ही भांति तुम्हें बहादुर (और उतना ही यांत्रिक) नहीं समझता हूं ? मैं कसम खा सकता हूं कि तुम एक डरपोक व्यक्ति थे। किसी विनाश के समक्ष विलाप करो, हंसो मत।"

"हां, सरकार !" निकट आते हुए स्टारबक बोला—"यह एक गम्भीर दृश्य है। एक शकुन और वह भी अपशकुन।"

"शकुन ? शकुन ? —कोई शब्द-कोष है ? अगर देवता आदमियों से कोई बात कहना चाहते हैं तो वे सीधे-सीधे कहेंगे। वे सर नहीं हिलाएंगे और खुर्राट बीवी की तरह ऊटपटांग संकेत नहीं देंगे। —चलो भागो। तुम लोग एक ही वस्तु के दो विपरीत खम्भे हो। स्टारबक स्टब का उलटा है और स्टब स्टारबक का, और मजा यह है कि तुम लोग इंसान हो और आहाब लाखों आदमियों के बीच

में अकेला खड़ा है। न देवता उसके साथी हैं न इंसान उसके पड़ोसी ! सर्दी ! सर्दी ! मैं कांप रहा हूं !—अब क्या ? ओ ऊपर वाले ! क्या तुम देख पा रहे हो ? हर फव्वारे की सूचना दो, फिर चाहे वह एक सेकेंड में दस बार फव्वारे उछाले।"

दिन बीत चुका था। उसकी सुनहली पोशाक का छोर भर दिखाई दे रहा था। जल्दी ही अंधेरा हो गया लेकिन खोज करने वाले अभी भी कार्यरत थे।

"अब फव्वारा नहीं दिखाई देता सर ! बहुत अंधेरा हो गया है", हवा में एक आवाज़ गूंजी।

"आखिरी बार किधर जा रही थी ?"

"पहले की तरह सर !—सीधे पीछे की ओर।"

"ठीक। रात में वह धीमे चलेगी। मिस्टर स्टारबक ! मुख्य और बड़े मस्तूल गिरा दो। सुबह के पहले हम उसके पीछे नहीं दौड़ेंगे। अब वह रास्ता बना रही है और फिर थोड़ी देर के लिए आराम लेगी। ड्यूटियां बदल दो और बड़े मस्तूल पर नया आदमी भेज दो मि० स्टब !" तब बड़े मस्तूल के पास लगे डबलून की ओर बढ़ते हुए वह बोला—"साथियो ! यह सोना मेरा है क्योंकि यह मेरी कमाई है लेकिन जब तक सफ़ेद व्हेल मर नहीं जाती तब तक मैं इसे यहीं लगा रहने दूंगा। तुममें से जो उसे सबसे पहले जिच देगा और उसी दिन उसकी हत्या भी हो गई तो सोना उसका हो जाएगा, या ऐसा हो कि उस दिन उसे यदि मैं जिच दूंगा तो इसकी दसगुनी क़ीमत तुम सबमें बांट दी जाएगी ! अब जाओ। डेक तुम्हारे सुपर्द है, दोस्तो।"

यह कहते हुए वह रस्सों की ओर बढ़ गया और रात की उदासी को समय-समय पर निहारने लगा।

## ८३

सुबह होते-होते तीन मस्तूलों पर नए आदमी बैठा दिए गए।

"क्या तुमने उसे देखा ?" सुबह का प्रकाश फैलते ही आहाब ने प्रश्न किया।

"कुछ नहीं देखा साहब ।"

"सब लोग तैयार रहो और पालों को ठीक करो ! जैसा मैं सोचता था उससे वह तेज़ भागती है; हां, बड़ा पाल संभालो ! उनको समूची रात निगरानी करनी चाहिए थी । लेकिन कोई बात नहीं—"

यहां यह बताना आवश्यक है कि एक खास व्हेल के पीछे इतनी भाग-दौड़, जो रात-दिन चलती रही कुछ ऐसी नहीं थी जो दक्षिणी समुद्रों में मछली के शिकार में कोई नई चीज हो । नन्तुकेत के कप्तानों में यह एक विशेष अनुभव तथा योग्यता की बात थी कि वे व्हेल की चाल-ढाल को एक बार देखकर बता सकते थे कि उसकी रफ़्तार क्या है और वह कब कहां पहुंच सकती है । जिस प्रकार जहाज़ का पाइलट यह बता सकता है कि वह कितनी देर में बन्दरगाह तक पहुंच जाएगा उसी प्रकार कम्पास लिए हुए व्हेल का शिकारी मछुआ बता देता है कि उसकी चाल क्या होगी । किसी आधुनिक रेलवे लाइन की ट्रेन और उसका भीमकाय इंजन उसी तरह अपनी गति बताता है जिस तरह डाक्टर घड़ी के साथ बच्चे की नब्ज की चाल । व्हेल के शिकारी को व्हेल की गति ठीक-ठीक जानने के लिए यह आवश्यक है कि हवा और समुद्र का जल दोनों उसका साथ दें ।

"डांडे संभाले रहो !" स्टब चिल्लाया—"लेकिन जहाज़ की इस तेज़ चाल से पैर लड़खड़ाते हैं और दिल दहलता है । यह जहाज़ और मैं—दो बहादुर हैं । हां, हां ! कोई मुझे उठाए और समुद्र के पानी में फैला दे क्योंकि मैं ओक की जिन्दा लकड़ी हूं । मेरी आंतें एक नाव हैं । हा, हा ! हम बड़ी सफ़ाई से आगे बढ़ते हैं ।"

"वह है, वह सामने !—वहां तैर रही है !—दाहिनी ओर !" ऊपर के मस्तूल से आवाज़ें आ रही थीं ।

"ठीक है, ठीक है !" स्टब चिल्लाया—"मैं जानता था—तू भाग नहीं सकती । व्हेल, तू अपना फव्वारा उछाल और नष्ट हो जा ! पागल राक्षस तेरे पीछे लगा हुआ है ! अपना बाजा तोड़ दे—अपने फेफड़े फाड़ डाल । आहाब तेरा खून खींच लेगा वैसे ही जैसे कोई धार का पानी बन्द कर दे ।"

स्टब सभी जहाज़ियों के बदले में चिल्लाता रहा । जैसे पुरानी शराब ताज़ा कर देती है उसी तरह व्हेल का पीछा करने से लोगों में उत्साह भर जाता है ।

जहाज़ियों के सब डर भाग गए थे और आहाब के डर ने उन्हें नई उत्तेजना प्रदान की थी। भाग्य ने उनकी आत्माओं पर अधिकार जमा लिया था। पिछले दिन के वे दिल दहलाने वाले ख़तरे; पिछली रात की निरन्तर प्रतीक्षा में डूबते मन और अब आगे जूझ जाने के लिए तत्पर उछलता जहाज़—उस सम्पूर्ण वातावरण के कारण उनके दिल तेज़ी से धड़कने लगे थे। हवा ने जिस प्रकार पालों को फुलाकर, जहाज़ को ढकेलना आरम्भ किया था उससे प्रतीत होता था कि कोई अदृश्य हाथ उन्हें इस दौड़ के लिए आकर्षित कर रहा है।

वे सब मिलकर तीस नहीं एक व्यक्ति बना हुआ था। जिस तरह लकड़ी, लोहा, ईंट, मसाला मिलकर एक जहाज़ तैयार हुआ था उसी तरह उन सबको लेकर भी एक ही जहाज़ बढ़ रहा था। प्रत्येक व्यक्ति का अपना-अपना व्यक्तित्व; किसी का पराक्रम; किसी का भय ; किसी का सन्तोष; किसी के दोष; किसी के पाप सब एकत्र होकर एक बने हुए थे और सब उस लक्ष्य की ओर एक अपने मालिक आहाब के द्वारा घसीटे जा रहे थे, जहां मौत का नज़्ज़ारा साफ़ दिखाई दे रहा था।

रस्से खिंचे हुए थे। लम्बे पाम के पेड़ों की तरह मस्तूल तने हुए थे। कोई पाल का कपड़ा पकड़े था तो कोई तेज़ धूप से बचने के लिए किसी छाया की खोज में था और एक प्रकार से सभी अपने-अपने भविष्य की ओर दृष्टि टिकाए, जमे हुए थे। ओह ! उस असीम नीलिमा, उस समुद्र में वह उस वस्तु को खोजने जा रहे थे जो उनके नाश का कारण हो सकती थी।

"उसे देखते हो तो उसके लिए गीत क्यों नहीं गाते ?" पहली आवाज़ आने के बाद जब कुछ समय के लिए सन्नाटा छा गया था तो आहाब ने कहा—"ऐ ! मुझे ऊपर चढ़ाओ। तुम लोगों को धोखा हुआ होगा। इस तरह एक फव्वारा फेंककर मोबी डिक कभी गायब नहीं होती।"

कुछ समय में ही—जहाज़ से एक मील से भी कम दूर पर सफेद व्हेल के दर्शन हुए जो अपने तेज फव्वारों को उछालते हुए धूप की चमक में समूचे शरीर को पानी में चमका रही थी। चारों ओर जैसे क्रोध में भरी हुई समुद्र की लहरें अपने तीखेपन में घुमेड़ें ले रही थीं।

"वहां वह तैर रही है। वहां है !" जैसे सफेद व्हेल बड़ी बहादुरी में सालमन की तरह स्वर्ग की ओर बढ़ रही हो। उस हवा और समुद्र के नीलेपन

के बीच सफ़ेद व्हेल का चमकदार फव्वारा ग्लैशियर की तरह चमक रहा था और धीरे-धीरे ऐसे दवता जा रहा था जैसे किसी घाटी में तेज़ बरसात के बाद की धीमी फुहार।

"ऐ, मोबी डिक ! सूर्य के सामने अन्तिम सांस खींच ले मोबी डिक !" आहाब चिल्लाया—"तेरी मौत का क्षण और तेरा हारपून मेरे पास है। आगे एक आदमी को छोड़कर सब लोग उतरो। नावें बराबर खड़े होओ !"

रस्सों की सीढ़ियों और भारी रस्सों की बिना परवाह किए, टूटते तारे की तरह, मल्लाह पीछे और आगे से डेक पर सरकते चले आए। आहाब भी शीघ्र ही नीचे उतार दिया गया।

"नीचे उतारो," ज्योंही उस नाव के निकट पहुंचा—जिसे पिछली शाम को ही रस्सों और पालों से लैस किया गया था—आहाब चिल्लाया। "मि० स्टारबक ! जहाज़ तुम्हारा है। नावों से अलग लेकिन पास ही रहना। सब लोग उतरो।"

जैसे उनमें डर का धमाका बैठाते हुए और पहले हमलावर की भांति मोबी डिक घूम पड़ी और तीनों नावों की ओर लपकी। आहाब की नाव बीच में थी। अपने साथियों को उत्साहित करते हुए वह चिल्लाया—"व्हेल के सर से सर लड़ाया जाएगा। उसके मस्तक से सामने जूझ जाओ।" वह कोई नई बात नहीं क्योंकि उससे व्हेल की दृष्टि की सीमाएं कम हो जाती थीं। लेकिन जब तक कि तीनों नावें नजदीक पहुंचे और सफ़ेद व्हेल तीनों नावों को जहाज़ के तीन मस्तूल समझती रहे—मोबी डिक बेहद तेज़ी में समुद्र को मथती हुई अपने जबड़े को फाड़कर सामने लपकी जैसे लड़ाई के लिए तैयार हो। अपनी पूंछ लम्बी उठाकर उसने दुश्मन को हर तरफ़ से घेरना चाहा। उसने इसकी भी तनिक परवाह न की कि हर नाव से उस पर हमला हो रहा है। और वह प्रत्येक नाव के एक-एक तख्ते को उखाड़ फेंकने को बढ़ती गई। इस तरह की लड़ाई में निपुण जहाज़ियों ने तत्परतापूर्वक उस हमले का बचाव किया। उस समय जूझ पड़ने के लिए आहाब हुंकार लगा रहा था।

उमड़ती-घुमड़ती सफ़ेद व्हेल अपने हज़ार तरीकों से तीनों नावों को घेरती गई। व्हेल पर पहले ही से लगे उस लोहे की ओर नावों की दिशाएं थीं। तभी व्हेल ने करवट ली और दूने वेग से हमला करने को उद्यत हुई। इस मौके को

देखकर आहाब ने और रस्से फेंके और उन्हें हिलाने-डुलाने लगा, जिससे व्हेल की गुर्राहट बढ़े, तभी शार्क मछलियों के दांतों से भी भीषण दृश्य सामने आया।

सफ़ेद व्हेल से रस्सों, झूमते हुए हारपूनों और बर्छों की नोकों और कांटों के बीच आहाब की नाव के अगले हिस्से में चमक और कड़कड़ाहट के साथ भूकम्प-सा आ गया। केवल एक काम हो सकता था—जीवन-रक्षक नाव को लेकर आहाव रस्सों के बीच घुसा और रस्सों के उलझाव को ढीलाकर उसने उस लोहे के गट्ठर को पानी में फेंक दिया और तब स्थिति ठीक की। उसी समय व्हेल ने दूसरी दो नावों पर हमला किया। वे उससे धमाके के साथ भिड़ गए। स्टब और फ़्लास्क की नावें उसकी ओर ऐसे खिचती चली गईं जैसे लहरों से पिसे समुद्री किनारे पर चक्कर खाते हुए दो तिनके। तब अचानक ही उस तूफ़ानी समुद्र के अन्दर उसने एकदम डुबकी ले ली और खुशबूदार सेडार लकड़ी के टुकड़े, जो नावों से चरचराकर टूट चुके थे, पानी में चक्कर लगाने लगे।

दोनों नावों का फर्नीचर, रस्से, लाइन-टब, पतवारें पानी में तैरने लगे और खाली शीशी की तरह फ़्लास्क ऊपर-नीचे खिचने लगा। तभी उसने उस भयानक जबड़े से अपने पैरों को बचाने के लिए अपने आपको ऊपर घसीटा। उसी समय स्टब ने किसी को आवाज़ दी कि वह उसे ऊपर खींचे। आहाब की नाव ने—जो दूर हटती जा रही थी—फिर उस तरफ़ बढ़कर लोगों को बचाने की कोशिश करनी चाही। उन हज़ार खतरों के सामने भी आहाब की नाव किसी विशेष शक्ति के द्वारा आकाश की ओर खिची जा रही थी जैसे कोई तीर समुद्र से ऊपर की ओर जा रहा हो। तभी सफ़ेद व्हेल ने अपने चौड़े माथे को उसके पेंदे से टकरा दिया और उसे हवा में उलटा दिया। आहाब और उसके आदमी बड़ी मुश्किल से अन्दर से बाहर निकल पाए।

अब इस सर्वनाश के केन्द्र से उस व्हेल ने अपने आपको कुछ हटाया और अपनी पीठ उधर करते हुए वह आगे बढ़ने लगी परन्तु जब कोई पतवार, तख्ते का कोई टुकड़ा या कोई भी वस्तु उससे छू जाती तो वह अपनी पूंछ को जल्दी से डुला देती। वह समुद्र के पानी को उछालती हुई बराबरी में आ गई। जल्दी ही, जैसे यह सन्तोष करके कि उसका काम पूरा हो गया, उसने अपने मत्थे को घुमाया और एक ओर चल दी। उसके पीछे वे उलझे हुए रस्से खिचते चले गए।

पहले की ही भांति सब कुछ ग़ौर से देखते हुए उस जहाज़ ने बचाव के लिए अपनी चाल तेज़ की और एक नाव उतारकर उसने सामान तथा लोगों को अपने डेक पर चढ़ाया। कुछ ज़ख्मी मल्लाह लड़ाई-झगड़े में पिटे; जस्त के रंग के उनके जिस्म; टूटे हुए हारपून और बर्छे; उलझे रस्सों के ढेर; छितरे हुए तख्ते और पतवारें; लेकिन कहीं कोई मौत नहीं हुई थी। जो दशा पिछले दिन फेडैलाह की नाव की हुई थी वही दुर्दशा आहाब की नाव की आज हुई परन्तु वह कल की तरह परेशान नहीं था।

आहाब जब डेक पर चढ़ाया गया तब सभी नजरें उसकी ओर लगी हुई थीं। वह अपने पैरों पर न खड़े होकर सहायता के लिए सबसे आगे बढ़े हुए स्टारबक के कन्धों पर झूल रहा था। उसका हड्डी वाला पैर गायब हो चुका था।

"ऐ, ऐ स्टारबक ! कभी-कभी किसी पर झूलना बड़ा मीठा लगता है भले ही झूलने वाला कोई हो। और बूढ़ा आहाब अब से पहले बहुत बार झूल चुका है।"

"जोड़ अभी ठीक है, साहब ! मैं पैर को फौरन ठीक कर दूंगा।" आगे बढ़ते हुए बढ़ई ने कहा।

"लेकिन कोई हड्डी तो नहीं टूटी सर ! मेरा विश्वास है ?" स्टब ने ईमानदारी से सवाल किया।

"हां ! स्टब ! हर चीज़ के धुर्रे उड़ गए ! तुमने देखा—लेकिन टूटी हड्डी के होते हुए भी आहाब अछूता है। यह जो मेरी हड्डी गायब हो चुकी है उसका मूल्य मैं अपने शरीर की किसी भी पूरी हड्डी से कम नहीं समझता। न सफ़ेद व्हेल, न कोई आदमी, न राक्षस—आहाब को अपने स्थान से हिला-डुला सकता है। वह सामने किधर गई ?"

"पीछे की ओर सर !"

"ठीक है, डांडे ठीक करो। जहाज़ के रखवालो ! पालों को फिर संभालो। बची हुई नावें फिर नीचे उतारो और उनके रस्से ठीक कर दो। मि० स्टारबक ! जाओ और नाविक को ठीक करो; उन्हें गिन लो।"

"पहले मुझे आपको ठीक से पहुंचा देने दीजिए।"

"ओह, हां, हो ! यह टूटन अब मुझे कैसी तकलीफ दे रही है। दुर्भाग्य !

ऐसे अजेय कप्तान की आत्मा ऐसे कायर मेट का साथ करे !"

"क्या है सर ?"

"कुछ नहीं। मेरा शरीर, तुम नहीं। छड़ी के लिए मुझे कोई चीज़ दे दो। वह, वह टूटा हुआ बर्छा काम देगा। आदमियों को तैयार करो। आदमियों को संभाल लो। मैंने उसे अभी तक नहीं देखा है। खुदा के लिए ऐसा नहीं हो सकता ?—क्या ग़ायब है ?—जल्दी करो, सबको इकट्ठा करो।"

बुड्ढे का संकेत ठीक था। समूचे दल को संभालने पर पारसी ग़ायब था।

"पारसी !" स्टब चिल्लाया—"वह ज़रूर फंस गया।—"

"दुष्टो ! तुम्हारा बुरा हो। जाओ भागो। जहाज़ का एक-एक कोना छान डालो। ढूंढो। वह कहीं नहीं गया। कहीं नहीं।"

शीघ्र ही वे लोग घबड़ाए हुए लौटे कि पारसी का कहीं पता नहीं है।

"हां, साहब," स्टब बोला—"आपकी नाव के उलझे रस्सों के साथ वह खिंचा चला गया—मेरा ख्याल है, वह अन्दर था।"

"मेरी नाव ! मेरे रस्से ! चले गए ?—चले गए ? इस छोटे शब्द का क्या अर्थ है ?—मौत की कौन-सी घंटी इसमें बजती है जिससे बुड्ढा आहाब ऐसे कांपता है जैसे वह स्वयं घंटा हो। हारपून भी !—सब कूड़ा-करकट बाहर फेंको।—तुमने देखा ?—वह बना हुआ लोहा, साथियो ! सफेद व्हेल का था—नहीं, नहीं, नहीं !—बेवकूफ़ ! इस हाथ ने उसे फेंका था!—वह मछली में लगा है।—ठीक है, वहां उसके कील ठुकी रहने दो—जल्दी करो !—सब लोग नावों के रस्सों के पास जाओ—पतवारें इकट्ठा करो—हारपूनरो ! लोहे लोहे !—झंडे ऊंचे उठाओ—सारी तैयारी करो। पाल ! धरती के गोले को मैं दस बार बाधूंगा ! चाहे सब कुछ डूब जाए लेकिन मैं उसकी हत्या करूंगा !"

"ऐ खुदा ! एक ही क्षण के लिए तू अपने को दिखा दे।" स्टारबक चिल्लाया, "तुम उसे कभी, कभी नहीं पकड़ सकते बुड्ढे, ईशू मसीह के नाम पर अब यह और मत करो। किसी राक्षसी पागलपन से यह कहीं ज़्यादा है। दो दिन का मोर्चा; दो बार टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए, तुम्हारा वही पैर फिर काट लिया गया; तुम्हारे ऊपर की बुरी छाया अब हट गई है, सावधान करते हुए फरिश्ते तुम्हें घेर रहे हैं—तुमको और क्या चाहिए ? क्या हम इस हत्यारी मछली का

तब तक पीछा करते रहेंगे जब तक वह हमारा आखिरी आदमी न निगल जाए? क्या हम उसके द्वारा समुद्र के नीचे घसीटे जाएंगे ? क्या वह हमें ठोकरें मार-कर दूसरी दुनिया में पहुंचा देगी ? ओह, ओह ! अब उसके पीछे भागने के माने हैं गन्दगी, अपवित्रता और ईश्वर का कोप सहन करना; उसकी निन्दा करना।"

"स्टारबक ! बहुत दिनों से मैं तुम्हें देख रहा हूं। उस मिनट से हमने एक दूसरे को हर तरह से देखा—एक दूसरे की नजरों में पढ़ा कि कौन क्या है। लेकिन इस व्हेल के मामले में तुम अपने इस मुंह को हाथ की हथेली से ज़्यादा मत समझो जिसके न कोई जबान है और न उसका पृथक् अस्तित्व। भले आदमी, आहाब हमेशा आहाब ही रहेगा। यह समूचा काम पहले से निश्चित है। यह समुद्र इस संसार में चक्कर लेने लगा, इससे करोड़ों साल पहले हमने और तुमने इस बात का रिहर्सल कर लिया है। मूर्ख ! मैं भाग्य का लेफ्टिनेन्ट हूं। मैं हुक्म के मुताबिक काम करता हूं। इधर देख, नीच ! तुझे मेरी आज्ञा का पालन करना होगा। साथियो ! मेरे चारों ओर खड़े होओ। तुम एक आदमी को पेड़ की शाखा की तरह टुकड़े-टुकड़े होते देखो; एक टूटे हुए बर्छे को पकड़े हुए देखो; एक अकेले पैर पर लड़खड़ाते देखो। वह आहाब है—उसके शरीर *का वह एक हिस्सा है लेकिन आहाब सौ पैरों चलता है; उसकी आत्मा एक कई* पैरों पर चलने वाले कनखजूरे की तरह है। मुझे चोट लगी है; मैं अपने को असहाय पा रहा हूं उस रस्से की तरह जिसने किसी तूफान में अपने आपको ढीला कर लिया हो। मैं ऐसा लग भी रहा होऊंगा। लेकिन मैं टूक-टूक होजाऊं इसके पहले तुम सुनोगे कि मैंने किसी दूसरे को टुकड़े-टुकड़े कर दिया है। अपने लक्ष्य के लिए आहाब जूझता रहेगा। साथियो ! विश्वास करो कि ये चीजें शकुन कहलाती हैं। तब हंसो, जोर से हंसो; जी भरकर चीखो ! डूबो ! डूबने दो। डूबने वाली चीजें दो बार सतह पर आएंगी; फिर उठो और फिर हमेशा के लिए डूब जाओ। मोबी डिक दो दिन से तैर रही है। कल तीसरा दिन होगा। वह फिर एक बार ऊपर उठेगी लेकिन आखिरी सांस लेने के लिए। बहादुरो ! क्या तुम अपने को बहादुर सोच रहे हो ?"

"निर्भय अग्नि की भांति," सब चिल्लाए।

"और उसी तरह यांत्रिक" आहाब बुदबुदाया। सब व्यक्तियों के आगे

बढ़ जाने पर वह बुदबुदाता रहा—"ये चीज़ें शकुन कहलाती हैं। मैंने यही बात अपने नाव के सम्बन्ध में कल स्टारबक से की थी। ओह! दूसरों के दिल जो मुझ पर टिके हैं, उनको मैं किस बुरी तरह से खदेड़ता हूं। पारसी! पारसी! गया, चला गया? और उसे पहले जाना था फिर भी मैं समाप्त होऊं उसके पहले वह दिखाई देगा। ऐसा क्यों है? न्यायाधीशों की हर टोली में, भूलों के लिए, वकीलों के सामने यह एक पहेली है। किसी चिड़िया की चोंच की तरह यह मेरे दिमाग को कोंचती है। मैं इसका समाधान जरूर करूंगा।"

शाम हो गई तब भी सफ़ेद व्हेल दिखलाई पड़ती रही।

सब तैयारियां फिर हुईं। हथौड़ों की चोटें और धार रखने वाले पत्थर की भनभनाहट दिन निकलते-निकलते तक सुनाई दी क्योंकि लोगों ने लैम्पों के सामने काम किया और नई नावों के पाल व रस्से खींचे। साथ ही अपने नए हथियारों को पैना किया। बढ़ई ने आहाब का दूसरा पैर तैयार किया। आहाब स्थिर होकर अपने सामने देखता रहा। उसका छिपा हुआ हेलियोट्रोप[1] अपने डायल पर बड़ी आशा भरकर आगे-पीछे घूमता रहा। वह सूर्य की सबसे पहली किरण की प्रतीक्षा में पूर्व की ओर मुंह करके बैठा रहा।

# ८४

तीसरे दिन की सुबह भी बड़ी खुशनुमा और ताज़ी थी। एक बार फिर बड़े मस्तूल वाला अकेला पहरेदार अपनी ड्यूटी पूरी करके गया और उसकी जगह दिन में काम करने वालों की खासी भीड़ इधर-उधर छितर गई; कोई मस्तूल संभाल रहा था तो कोई पाल और पतवारें।

"क्या तुमने उसे देखा?" आहाब ने ज़ोर से पूछा परन्तु व्हेल अभी तक दिखाई नहीं दी थी।

"वह जरूर उभरेगी; तब तुम उसका पीछा करना। चर्खी उधर घुमाओ। जैसे पहले जा रहे थे वैसे ही बढ़ते जाओ। आज फिर कैसा सुहाना दिन निकला

---

१. निरीक्षक का संकेत यंत्र।

है। यह नई दुनिया बनाई गई है; जैसे फरिश्तों के लिए समर-हाउस[1] बनाया गया हो और आज पहली सुबह उनके लिए यह खोला गया हो। इससे अच्छा दिन उनके लिए इस दुनिया में नहीं निकल सकता। सोचने के लिए काफ़ी मसाला है अगर सोच सकने का समय हो; परन्तु आहाब कभी सोचता नहीं है; वह केवल अनुभव करता है, अनुभव, अनुभव। किसी भी नश्वर मनुष्य के लिए वही रोमांचित करता है! सोचना एक बड़ी गुस्ताखी है। यह अधिकार और अवसर केवल परमात्मा को ही मिला हुआ है। सोचने का अर्थ है शीतलता, सन्तोष, शान्ति, परन्तु उसके लिए हमारे ये ग़रीब दिल और दिमाग़ बहुत ज्यादा फड़फड़ाया करते हैं। अब भी मैं कभी-कभी सोचता हूं कि मेरा मस्तिष्क बहुत शान्त है—एकदम सुन्न। यह पुरानी खोपड़ी एक शीशे की तरह चटखती है जैसे उसके अन्दर की चीज़ें जमकर बरफ़ हो गई हैं और कांप रही हैं। इस पर भी ये बाल उगते चले जा रहे हैं; इस मिनट भी निकल रहे हैं, और गर्मी उन्हें पैदा कर रही है; लेकिन ये तो उस तरह की मामूली घास हैं जो कहीं भी उग आती हैं; भले ही वह ग्रीनलैंड का बर्फ़ीला स्थान हो या 'विसुवियस' का ज्वालामुखी पर्वत। और फिर तूफ़ानी हवाएं इन्हें कैसे उड़ाती हैं जैसे किसी उछलते हुए जहाज के फटे हुए पाल। खराब हवा जेलों के गलियारों और कोठरियों में और अस्पतालों के वार्डों में बहने के बाद निर्दोष ऊन की तरह यहां चली आ रही है। दूर हटो!—ये सब गन्दी हैं। अगर मैं हवा होता तो इस क्रूर, कष्टमय दुनिया पर कभी न बहता। मैं किसी गुफा की ओर रेंगता और वहीं चुपचाप बैठ जाता। वैसे यह हवा बड़ी ताकतवर और गुणी है। आज तक किसने इसको जीता है? हर लड़ाई में इसी की विजय होती है। उसके सामने से भागिए और वह आप पर जूझ पड़ेगी। हा! हा! कमज़ोर और डरपोक हवा नंगे शरीर को छूती है लेकिन स्वतः एक भी चोट सहन करने को रुकती नहीं। आहाब उससे कहीं बहादुर, कहीं अच्छा आदमी है। अगर कहीं हवा का अपना कोई शरीर होता; परन्तु वे सब पदार्थ जो इस नश्वर मनुष्य को परेशान करते हैं शरीर रहित होते हैं। हां, वे शरीर-रहित पदार्थ हैं कोई शरीरवान नहीं। यह बहुत ख़ास, बड़ा चालाक और बड़ा बुरा अन्तर है। इस पर मैं कह सकता

१. गर्मियों में आराम करने का स्थान।

हूं कि वायु में शान और गर्व है। कम से कम ये व्यापारी हवाएं[1] अपनी मन्थर गति से स्वच्छता एवं कोमलतापूर्वक बहती रहती हैं, भले ही बिना अपने अन्त को समझे मिसीसिपी बाढ़ से उत्तेजित हो जाए अथवा समुद्र क्रुद्ध होकर चाहे जितना उछलता रहे। और इन अनन्त ध्रुवों के निकट भी ये ही हवाएं बहती हैं जो मेरे इस जहाज़ को गति दे रही हैं। ये ही हवाएं—अपरिवर्तनीय और सबल, कभी-कभी मेरी आत्मा को भी झकझोरती हैं! हां, तो वहां सामने क्या देखा, साथियो?"

"कुछ नहीं, श्रीमान्।"

"कुछ नहीं! और दोपहर हो चली! डबलून को जीतने वाला कोई नहीं है। सूर्य को देखो। हां, हां, ऐसा ही हो सकता है। मैं आगे बढ़ आया हूं। हम कैसे ाल दिए? हां, अब वह हमारा पीछा कर रही है न कि हम उसका और यह भद्दी बात है। मूर्ख! मुझे यह जानना चाहिए था। पीछे लौटो! बराबर देखते रहो। रस्से ठीक रखो।"

पिकोड को लौटना पड़ा और हवा के रुख़ से उल्टी तरफ़ चलने को विवश होना पड़ा। अब जहाज़ पानी में घुमेड़ें उठाकर दूधिया झाग निकाल रहा था।

"हवा के रुख़ से विपरीत अब मोबी डिक के खुले जबड़े में समा जाने के लेए यह लौट रहा है," बड़े मस्तूल के रस्से को रेल से बांधते हुए स्टारबक अपने आपसे बुदबुदाया—"ऐ खुदा! हमको बचाना। मेरी हड्डियां चरचरा रही हैं। मेरा गोश्त सर्द हुआ जा रहा है। मुझे संदेह हो रहा है कि इस कम्बख़्त का हुक्म मानकर मैं खुदा की हुक्मउदूली कर रहा हूं।"

"मुझे डलिया में चढ़ाने के लिए इधर आओ!" आहाब ने कहा—"जल्दी ही उसके साथ हमारा मुकाबला होगा।"

"हां, हां, साहब," और फ़ौरन ही स्टारबक ने आहाब के निर्देशानुसार उसे उपर चढ़ा दिया।

पूरा एक घंटा निकल गया। मानो युग बीत गए। समय स्वतः ही लम्बी-गहरी सांसें भर-भरकर इन्तज़ार की घड़ियां काटता रहा। अन्ततः मौसम बताने

---

१. 'ट्रेड विंड्स'—उष्ण कटिबन्ध में चलने वाली हवाएं।

वाले धनुष से लगभग तीन मील दूर आहाब ने फव्वारे को फिर देखा और तीनों मस्तूलों से आग की लपटों की तरह चीखती हुई तीन आवाजें आसमान में गूंज गईं।

"तीसरी बार, मोबी डिक ! मैं तेरे सर से सर लड़ा दूंगा। उधर डेक पर। मिस्टर स्टारबक ! वह अभी इतनी दूर है कि पानी में उतरना ठीक नहीं। पाल हिल रहे हैं। चर्खी के पास हथौड़ी लेकर खड़े होओ। ठीक है, ठीक है—वह तेज़ भाग रही है। मुझे समुद्र को एक बार ठीक से आंकने दो। उसके लिए समय है। वही पुराना दृश्य है लेकिन फिर भी नया। वही जिसे छोटी उम्र में मैंने पहली बार नन्तुकेत के बालू के पहाड़ पर चढ़कर देखा था। वही। वही। जैसे नोआह के लिए वैसे ही मेरे लिए। किनारे की ओर। वह हमें ऐसे थल की तरफ ले जा रही है जो पाम से भी अधिक खुशनुमा है। पीछे की तरफ़ ! सफ़ेद व्हेल तेरी तरफ़ जा रही है। हवा के रुख की तरफ देखो। जितनी खतरनाक जगह होगी उतना ही अच्छा है। ऐ पुराने मस्तूल ! अलविदा ! अलविदा ! यह क्या है ?—हरियाली ? इन दरारों में छोटी हरी दूब। ऐसा सुहाना मौसम आहाब के मन पर असर नहीं करता। जानदार और बेजान चीज़ की उम्र में—इन्सान और पदार्थ की आयु में बड़ा अन्तर है। लेकिन ऐ पुराने मस्तूल ! हम दोनों साथ ही बूढ़े हो गए हैं। ऐ जहाज़ ! तेरे पेंदे की भी वही स्थिति है। बस मेरा एक पैर कम हो गया है। खुदा कसम; इस सूखी लकड़ी की हालत मेरे ताजे गोश्त से कहीं अच्छी है। मैं उसका कोई मुकाबला नहीं कर सकता। मुझे मालूम है कि हृष्ट-पुष्ट पिताओं की बलवान सन्तानों से मुर्दा पेड़ों के बने जहाजों की जिन्दगी कहीं ज्यादा होती है। अलविदा मस्तूल ! व्हेल पर नजर रखना। मैं अब जा रहा हूं। हम कल बातें करेंगे। नहीं...आज रात में ही करेंगे जब सफ़ेद व्हेल का सिर और पूंछ यहीं बंधी होगी।"

उसने संकेत किया और डेक पर उतार लिया गया।

आहाब ने उतरने के स्थान पर खड़े होकर मेट को हाथ से इशारा करके बुलाया और पास रुकने को कहा।

"स्टारबक !"

"साहब।"

"स्टारबक! तीसरी बार मेरी आत्मा का जहाज़ जल-यात्रा को उतर रहा है।"

"हां सर ! आपकी यही इच्छा थी ।"

"कुछ जहाज़ बन्दरगाहों से चले और आज तक उनका पता नहीं है, स्टारबक ।"

"सच है सर ! कड़वा सच ।"

"कुछ लोग ज्वार-भाटे पर ही मर जाते हैं, कुछ गहरे में, कुछ अथाह बाढ़ में; लेकिन स्टारबक ! मैं महसूस कर रहा हूं कि मैं अब आखिरी सीमा पर पहुंच गया हूं । मैं बुड्ढा हूं;—साथी ! हाथ मिलाओ मुझसे ।"

उनके हाथ मिले । उनकी दृष्टियां उलझ गईं । स्टारबक की आंखों से आंसू निकल आए ।

"ओह, मेरे कप्तान, मेरे कप्तान ! शुभ्र हृदय ! मत जाओ—मत जाओ ।—देखो एक बहादुर आदमी की आंखों में आंसू हैं । तब उसके मन में कितनी बड़ी वेदना होगी ।"

"नीचे उतरो !"—आहाब चीखा और उसने मेट का हाथ झटक दिया । "जहाज़ियों के साथ रहो ।"

क्षण भर में नाव जहाज के पिछले हिस्से का चक्कर काटकर घूम गई ।

"शार्क मछलियां ! शार्क मछलियां !" नीचे के केबिन की खिड़की से पुकारें आईं—"ओ मालिक ! मेरे मालिक ! लौट आओ !"

परन्तु आहाब ने कुछ नहीं सुना । उसकी आवाज सबसे तेज़ थी और नाव उछालें मार रही थी ।

यों आवाज़ ने ठीक ही कहा था । जहाज़ से वह थोड़ी ही दूर बढ़ा होगा कि बहुत-सी शार्क मछलियां दिखाई दीं जो लग रहा था कि पेंदे से निकल-निकलकर पतवारों से उलझ रही थीं और हर बार पानी में डुबकी ले लेती थीं । इस प्रकार कटकटाती वे नाव के साथ बढ़ने लगीं । यह कोई ऐसी बात नहीं थी जो व्हेल-नाव के लिए अनोखी हो, क्योंकि बहुत बार मछलियां वैसे ही साथ हो लेती हैं जैसे मार्च करती हुई फौज के साथ गिद्ध लग जाते हैं । सफ़ेद व्हेल के दिखने के बाद पिकोड ने पहली बार मछलियों के ज़खीरे को देखा था । हो सकता है कि आहाब की नाव के मल्लाहों के चीते के-से पीले रंग की बर्बरता में कुछ ऐसी मुश्की सुगन्ध उड़ रही थी जो शार्क मछलियों को पसन्द है क्योंकि

और नावों को छोड़कर वे केवल उसी के साथ लगी हुई थीं।

"कितना सख्त है इसका दिल !" दूर जाती हुई नाव को देखकर स्टार-बक बुदबुदाया—"क्या तू उस दृश्य को बहादुरी से देख सकेगा ?—उन खुले जबड़ों वाली मछलियों के बीच में तूने अपनी नाव उतार दी। आज यह तीसरा दिन है, बहुत कठिन। अगर एक ही मोर्चे में तीन दिन लगें तो सोच लो कि पहला दिन सुबह है, दूसरा दोपहर और तीसरा शाम या अन्त। ओह ! ए खुदा ! यह क्या है जो मेरे मन को कंरोच रहा है और मुझमें मौत की-सी खामोशी भर रहा है; इस पर भी आशा बंधी हुई है जो कंपकंपी की नोक पर स्थिर है ! इन खोखली रगों और समूचे ढांचे में भविष्य की बातें जैसे बह रही हैं। अतीत जैसे धुंधला पड़ गया है। 'मेरी' ! लड़की ! मेरे पीछे तेरी पीली नौजवानी मुरझा गई। मेरे लड़के ! मैं देख रहा हूं कि तेरी आंखें कमाल की नीली हो गई हैं। ज़िंदगी की अनोखी समस्याएं जैसे साफ हो रही हैं लेकिन बीच-बीच में बादल घिर आते हैं—क्या मेरे सफर का अन्त आ रहा है ? मेरे पैर जैसे कांप रहे हैं; इस तरह कौन समूचे दिन चल सकता है ? अपना दिल टटोलो तो—क्या वह अभी भी चल रहा है ? कांपो स्टारबक !—दूर फेंको—बढ़ो ! बढ़ो ! जोर से चिल्लाओ।—वह सामने मस्तूल है ! क्या तू मेरे लड़के को पहाड़ी पर चढ़े देख रहा है ?—पागल ! सामने देख !—अपनी तेज़ से तेज नज़र नावों पर गड़ाए रह—व्हेल को ठीक से देख।—हो। फिर ! उस चिड़िया को उड़ा दे। देख ! वह चोंच मारती है—वह झंडे को फाड़ रही है"—जहाज़ पर उड़ते हुए लाल झंडे को देखकर उसने सोचा—"वह उसके साथ दुखी है !—अब वह बुड्ढा कहां है ? ओह आहाब ! तुमने क्या वह दृश्य देखा ?—कांपो ! कांपो !"

नावें बहुत दूर नहीं गई होंगी कि जहाज़ के मस्तूल पर से एक संकेत पाकर आहाब ने समझा कि व्हेल ने डुबकी ले ली है। आगे बढ़ने के लिए वह अब जहाज़ से कुछ बगल होकर चलने लगा। कौतुक में डूबे मल्लाह एकदम खामोश थे और सर से ऊंची उठने वाली लहरें बारम्बार हथौड़ों-सी चोटें दे रही थीं।

"लहरो ! उठो, खूब उठो ! उनको सर से निगल जाओ। परन्तु बिना ढक्कन की एक चीज़ पर चोट करो। तब न कोई 'कॉफिन' मेरा होगा न कोई लाश। तब केवल एक डांडा ही मुझे खत्म कर सकेगा ! हा-हा !"

तभी अचानक भारी-भारी चक्कर लेकर पानी ऊपर उठने लगा।

शीघ्रता में बर्फ़ की एक शिला की तरह कोई चीज ऊपर आई। धीमी चर-चराहट सुनाई दी; एक डरावनी भनभनाहट और सभी ने सांस थाम ली; रस्सों, हारपूनों और बर्छों को उठाए एक भारी शरीर सीधा-सीधा समुद्र में फैल गया। धनुष की भांति एक बार ऊपर उठकर फिर वह अथाह जल में समा गई। भारी-भारी फव्वारों की तरह पानी उछलता रहा। तभी उस व्हेल के चारों ओर ताज़े दूध-से सफेद झाग सब तरफ फैल गए।

"रास्ता दो!" आहाब ने पतवार वालों से चिल्लाकर कहा और तत्परता-पूर्वक हमले के लिए नावें सामने आईं। ऐसा लगा जैसे कल के ताजे धारदार लोहों से मोबी डिक पागल हो रही थी और उस पर लगे उन बर्छों में स्वर्ग के फरिश्तों के आशीर्वाद आ टपके थे। उसके फैले हुए सफेद मत्थे पर कलगी के तार फैले हुए थे जो पारदर्शी खाल के साथ जैसे बुने हुए थे। नावों के पास उसकी पूंछ घुमड़ती हुई फैल रही थी। उसने एक बार फिर सबको तितर-बितर कर दिया; दोनों मेटों की नावों के लोहे और बर्छे फैल गए और उनके आगे के हिस्सों पर उसने टक्कर दी लेकिन इस बार आहाब की नाव बची हुई थी।

डैग्गू और 'क्वीकेग' टूटे हुए तख्तों को रोक रहे थे और जैसे ही व्हेल तैर-कर उनसे कुछ दूर हुई, वह घूम पड़ी; तभी एक हमला फिर हुआ; उसी समय एक जोर की चीख उभरी। मछली की पीठ पर बार-बार घुमेड़ें लेने और रस्सों के उलझने से चिथड़े हुई पारसी की लाश सामने दिखाई दी। उसके टुकड़े रस्सों पर बंध-लिपटकर फैल रहे थे और उसकी आंखें आहाब को देख रही थीं।

उसके हाथ से हारपून छूट गया था।

"मुझे मूर्ख बनाया तूने!" पतली गहरी सांस लेते हुए उसने कहा—"ऐ पारसी! तुझे मैंने फिर देखा और तू पहले चला गया। इस लाश के अतिरिक्त दूसरी लाश कहां है? मेटो! तुम लोग जहाज़ पर लौट जाओ। अब वे नावें बेकार हैं। अगर हो सके तो समय से इन नावों की मरम्मत कर मेरे पास लौट आओ। अगर नहीं आ पाओगे तो मरने के लिए आहाब अकेला काफ़ी है।—साथियो! लौट जाओ। बस जब इस नाव से कूदूंगा तो हारपून फेंक-कर नीचे उतरूंगा। तुम लोग कोई दूसरे नहीं बल्कि मेरे हाथ-पैर हो। इसलिए

मेरा कहना मानो।—व्हेल किधर गई ? क्या फिर डुबकी ले गई ?"

लेकिन वह नाव के बहुत नजदीक दिखाई दी; जैसे उस लाश को साथ लेकर भागना चाहती हो और जैसे पीछे की ओर भागते समय उसके लिए वह युद्धस्थल एक स्टेज हो। अब मोबी डिक स्थिरतापूर्वक सामने तैर रही थी और एक तरह से जहाज को पार कर चुकी थी, जो उसके विपरीत दिशा की ओर जा रहा था। वैसे उस समय उसके आगे बढ़ने की गति ठहरी हुई थी। मोबी डिक अपनी पूरी तेज़ी में भाग रही थी।

"ओह ! आहाब," स्टारबक चिल्लाया—"अभी बहुत देर नहीं हुई है। आज तीसरा दिन है। अपना विचार त्याग दो। देखो ! मोबी डिक तुम्हारी खोज में नहीं है। यह सिर्फ तुम्हारा पागलपन है जो तुम उसके पीछे पड़े हो।"

बढ़ती हुई हवा के रुख़ के साथ नाव किनारे की ओर बढ़ती गई और उसने पालों तथा पतवारों को संभाला। जहाज के बगल से निकलते समय स्टारबक का चेहरा देखकर आहाब ने हाथ हिलाया और कहा कि वह जहाज को लौटाकर पीछे-पीछे कुछ दूरी तक ले आए। ऊपर नज़र डालने पर उसने टाशटेगो, 'क्वीकेग' और डैग्गू को ऊपर वाले तिहरे मस्तूल पर आतुरता से चढ़ते देखा। नावों पर मरम्मत का काम लगा हुआ था। स्टब और फ्लास्क भी डेक पर दिखाई दिए जो नए बर्छों और लोहे के बन्डलों को खोल रहे थे। जब उसने वह सब देखा, नावों पर हथौड़े की चोट सुनी तभी उसके हृदय में एक कील-सी चुभ गई। उसने अपने आपको संभाला। बड़े मस्तूल से झंडा गायब देखकर उसने टाशटेगो को पुकारकर कहा कि नया झंडा लगा दो।

तीन दिन के मोर्चे के कारण या उसके तैरने की चाल में अवरोध आने के कारण अथवा उसमें उस तरह की कोई चालाकी या धोखादेही के कारण—जो भी हो, अब सफेद व्हेल के भागने की गति मंद थी क्योंकि नाव शीघ्र ही उसके पास पहुंच चुकी थी। यों इस समय व्हेल पहले की तरह फैलकर भी नहीं चल रही थी। आहाब की नाव के साथ छोटी शार्क मछलियां अब भी चल रही थीं और उसे तंग कर रही थीं।

"उनकी परवाह मत करो। खींचे जाओ ! उनके दांत पतवारों की धारें पैनी करेंगे।"

"लेकिन साहब ! उनके हर बार चबाने पर पतवारें पतली होती जा रही हैं।"

"वे काफ़ी मजबूत हैं। खींचो !—लेकिन कौन कह सकता है"—वह बुद-बुदाया—"कि ये छोटी मछलियां मोबी डिक की दावत खाएंगी या आहाब की ? लेकिन खींचे जाओ ! हां, तैयार रहना—हम पास आ गए। चर्खी पकड़ो ! पतवारें संभालो ! मुझे आने दो," दो डांडे वालों ने उसे आगे आने में मदद की और वह नाव के अगले हिस्से पर पहुंच गया।

इस समय जहाज़ बगल से चल रहा था और आहाब मोबी डिक के फव्वारे से उठे धुएं के बीच में घिर रहा था जो उसके कूबड़ के चारों ओर गिरकर फैल रहा था। आहाब ने काफ़ी पास से अपना हारपून और उसके साथ तमाम गालियां उस घृणित व्हेल पर निशाना लगाकर मारा। हारपून लगते ही मोबी डिक बगल से घूम गई और उसने अपनी चौड़ाई का एक धक्का नाव के अगले हिस्से पर लगाया। अगर रस्सों की संभाल न होती तो एक बार फिर आहाब उछलकर समुद्र में जा पड़ता। तीन पतवार वाले यह नहीं जानते थे कि वार हो चुका है और इसीलिए उसके बाद के असर से वे बेख़बर थे। तभी वे उछाल दिए गए। दो ने रस्सों को पकड़कर अपने को संभाला और तीसरा पानी में गोते खाने लगा।

ठीक इसी समय अपनी पूरी ताक़त और तेज़ी के साथ सफेद व्हेल उस तूफ़ानी समुद्र में तीर की तरह बढ़ती चली गई। आहाब ने अपने आदमियों और पतवार वालों को हुक्म दिया कि वे अपनी-अपनी जगहों पर घूमकर बैठ जाएं और नाव को बढ़ाते चलें। उस समय ऐसा लगा कि जैसे दूना जोर लगाना पड़ रहा है।

"मेरे हृदय में यह टूटन कैसी ? क्या कोई पुट्ठा या हड्डी चटख रही है ! वह सब फिर वैसा ही, डांडे ! डांडे ! उस पर जूझ जाओ।"

समुद्र को चीरने वाली नाव का भारी शोर सुनकर व्हेल घूम गई कि जिससे अपना खुला मस्तक हमले के लिए सामने कर दे। इस घुमाव को लेते ही व्हेल को जहाज़ का विशाल काला पेंदा दिखाई दिया और उसे लगा जैसे कोई दूसरा बड़ा दुश्मन उसका पीछा कर रहा है। अचानक उस नाव की अगली नोक के

सामने झुकते हुए उसने अपने जबड़े चलाए और अपने फव्वारे से जैसे झागों की बरसात कर दी।

आहाब लड़खड़ाया। उसने अपना मस्तक हाथों से थाम लिया। "मैं अंधा हो रहा हूं, हाथ लाओ! मेरे सामने से हट जाओ जिससे अब भी मैं अपने रास्ते को टटोल सकूं। क्या रात है?"

"व्हेल! जहाज! जहाज!" विनयशील पतवार वालों ने कहा।

"डांडे! डांडे! ऐ समुद्र! तू अपनी गहरी से गहरी गहराई की ओर सरक जा और मुझे मौका दे कि मैं अन्तिम बार उस पर हमला कर सकूं। मैं समझा! जहाज! जहाज! जूझ जाओ, मेरे साथियो! क्या तुम मेरे जहाज़ को नहीं बचाओगे?"

उस क्रोधित और उफान खाने वाले समुद्र में ज्यों ही पतवार वालों ने नाव को आगे बढ़ाया, पहले के व्हेल द्वारा धक्के खाए दो तख्ते इस समय टूट गए और अब एक प्रकार से बेकार नाव लहरों के समानान्तर हो गई। परेशान मल्लाहों ने किसी प्रकार उस छेद को बन्द करके पानी रोकने की अथक चेष्टा की।

उस दृश्य को देखकर टाशटेगो का हथौड़ा हाथ में ही अटका रह गया। *लाल झंडा उसके दिल की तरह उछलता हुआ हवा में तैर गया। स्टारबक और* स्टब ने नीचे आते हुए उस राक्षसी जलमच्छ को देखा।

"व्हेल! व्हेल! डांडे ऊपर! डांडे ऊपर! ओह! पवन की सब मीठी शक्तियो! मुझे दुलराओ! स्टारबक को मरने मत दो। यदि वह मरे भी तो औरतों की दौरे की बीमारी में मरे! ऐ मूर्खो! पतवारें ऊपर! जबड़ा! जबड़ा! क्या मेरी उन तमाम तूफ़ानी प्रार्थनाओं का यही अन्त है? क्या मेरे समस्त जीवन की ईमानदारी का यही नतीजा है? आह! आहाब! आहाब! अपने कर्म देख! संभल कर! चर्बी वाले आदमी! संभल कर! नहीं, नहीं! फिर पतवारें तेज! हमारे सामने आने को वह घूम रही है। और ओह! उसकी कभी न झुकने वाली भौंह केवल एक ही ओर बढ़ती है; जिसका कर्तव्य उसे समझाता है कि वह कभी मौत के मुंह में नहीं जाएगा! हे परमात्मा! जहाजियो! अब मेरे बराबर खड़े होओ।

"मेरे बराबरा मत खड़े होओ बल्कि मेरे नीचे खड़े होओ। हरेक स्टाब की

मदद करो ! स्टब भी उसी में चिपका है। और अब बेचारा स्टब एक मुलायम चटाई पर सोने जा रहा है। ऐ दांत निपोरने वाली व्हेल ! मैं तुझ पर खीसें निपोरता हूं। ऐ सूर्य, चन्द्रमा और तारो ! मैं तुम सबको हत्यारा कहता हूं क्योंकि तुमने ऐसे आदमी की हत्या की है जिसने किसी छाया को भी दुःख नहीं दिया। इस पर अगर तुम प्याले थामों तो मैं गिलासों को खनकाऊं। ओह, ओह, ओह, ओह ! ऐ दांत निकालने वाली व्हेल ! लेकिन जल्दी ही मोर्चा डटेगा। ओ आहाब ! तू भाग क्यों नहीं आता है ! मैंने जूते और वास्कट उतार ली है। स्टब को अपने पाजामे में ही मरने दो। बड़ी खस्ता और नमकीन मौत—शेरी ! शेरी ! शेरी ! ओह फ़्लास्क ! मरने के पहले कमसे कम एक मीठी शेरी तो मिल जाए !"

"क्या शेरी फल ? नहीं, हम तो केवल इतना चाहते हैं कि जहां वे पैदा होते हैं वहां पहुंच जाएं। ओह स्टब ! मेरी मां बेचारी ने इसके पहले मेरी कुछ तनख्वाह पा ली होगी। यदि नहीं तो उसे कुछ सिक्के मिल जाएंगे क्योंकि यात्रा अब समाप्त है।"

जहाज़ के कोनों पर लगभग सभी जहाजी निष्क्रिय खड़े थे। हथौड़े, तख्तों के टुकड़े, बर्छे और हारपून जैसे मशीन की तरह थमे हुए उनके हाथ में ही रह गए। क्योंकि वे सब अपने-अपने काम से हटकर इधर लपक आए थे और उनकी दृष्टियां उस मायावी व्हेल पर टिकी हुई थीं जो विचित्र रूप से बारम्बार अपने सर को चक्कर दे रही थी और आगे बढ़ते समय झागों के फव्वारे छोड़ती जाती थी। प्रतिकार, तत्काल बदला लेने की भावना, हर तरह के मन के मैल—उसकी रग-रग में समाए हुए थे और इस पर भी यह नश्वर मनुष्य जो कुछ भी कर सकता था वह इतना कि जहाज़ के अगले हिस्से को उस मक्खन-सी दूधिया मछली के माथे से टकरा दे और अपने आदमियों और तख्तों को नष्ट करके समुद्र में बहने दे। कुछ लोगों के चेहरे उदास हो रहे थे। हारपूनर अपनी बैल की तरह की गर्दनें झुकाए खामोश खड़े थे।

"जहाज ! लाश !—दूसरी लाश !" नाव पर से आहाब चिल्लाया—"वह अमेरिकन के अलावा और कौन हो सकता है !"

रुके हुए जहाज़ के नीचे डुबकी लेने के बाद व्हेल उसकी नाव की ओर भागी और पानी के अन्दर ही करवट लेकर फिर पानी के ऊपर आ गई। अब वह

आहाब की नाव से कुछ गज़ दूर ही थी, जहां इस समय वह मौन-स्थिर खड़ा था।

"मैं अपने को सूर्य की ओर से हटाता हूं। टाशटेगो, क्या हुआ! मुझे अपने हथौड़े की आवाज़ सुनने दो। ओह! मेरे तीनों अजेय मस्तूलो! मेरे जहाज़! तेरी स्थिर नावें! तेरा दैविक पेंदा! तेरा मजबूत डेक और तेज चर्खी तथा पोल की तरह नोकीला तेरा अग्र-भाग,—ऐ मौत को जीतने वाले जहाज़! अब मेरे बिना ही तू समाप्त हो जा! बुरी से-बुरी घटना के शिकार किसी भी जहाज़ के कप्तान से भी क्या मैं गया-बीता हूं और इसीलिए दूर फेंक दिया गया हूं? ओह एकान्तिक जिन्दगी पर खामोश मौत! ओह! अपनी भारी से भारी व्यथा पर भी मैं महानता का अनुभव कर रहा हूं। हो, हो! तेरी सब सीमाओं के आगे मेरे अतीत जीवन की सब लहरें तैर रही हैं और मेरी मौत का कंघा पानी की लहरों पर तैर रहा है। ऐ सर्वनाशी किन्तु अजेय व्हेल! मैं तेरी ओर बढ़ रहा हूं। आखिरी वक्त तक मैं तुझसे भिड़ूंगा। नर्क से भी मैं तुझ पर भाला भोंकूंगा। इतनी घृणा करते हुए भी मैं अपनी अन्तिम सांस तेरे ऊपर ही लूंगा। एक ही घेरे में सब लाशें और लाश-गाड़ियां डुबो दो। ऐ नीच व्हेल! अब भी तेरा पीछा करते हुए मुझे चूर-चूर हो जाने दे! अब, मैं भाला छोड़ता हूं।"

हारपून फेंका गया। चोट खाई व्हेल ऊपर उछलकर सामने आई और आग की तेजी की तरह रस्सा बरबाद हो गया। बेकार! उसको साफ़ करने के लिए आहाब झुका; उसने उसे हटा भी दिया लेकिन हवा में उड़ती हुई उसकी घुमेड़ ने लौटकर आहाब की गर्दन पकड़ ली और जिस तरह खामोशी में तुर्किस्तान के गूंगे चुपचाप अपने शिकार को बांध लेते हैं उसी तरह वह नाव से बाहर चुपचाप फेंक दिया गया। उसके साथियों को तो बाद में पता लगा कि वह चला गया। दूसरे झपेटे में मछली के तेल का खाली बर्तन गिरा और उससे एक पतवार वाला पानी में जा गिरा और उसकी गहराई में ग़ायब हो गया।

एक क्षण को उस चोट खाई नाव के मल्लाह चित्रवत् स्थिर खड़े रह गए। तब घूमे। "जहाज़! ऐ खुदा! जहाज़ कहां है। ऊपर के मस्तूल पानी के बाहर दिखाई दे रहे थे और समूचा जहाज़ पानी के अन्दर हो गया था। अपनी सचाई, ईमानदारी और भाग्य को सराहते हुए हारपूनर अपनी डूबती नजरों से समुद्र को निहार रहे थे। और अब उस डूबने की घुमेड़ ने नाव को भी अपने चक्कर

में घसीटा और पिकोड का सब कुछ देखते-देखते अदृश्य हो गया। उसका ज़र्रा-ज़र्रा समुद्र में डूब गया।

केवल वह आदिवासी बड़े मस्तूल के सबसे ऊपर चढ़ा बैठा था और झंडे को लहरों में उड़ा रहा था। अभी भी तना हुआ पाल, चार-छः इंच पानी के ऊपर चमक रहा था। उसी समय एक लाल हाथ और एक हथौड़ा हवा में पीछे से झूमता हुआ आया और वह उस डूबते हुए पाल पर कीलें-सी ठोकने लगा। हवा में उड़ता हुआ एक बाज़ आया और आसमान में तारों के बीच अपने घर को छोड़कर जहाज़ के साथ पानी में घुसता चला गया। उसने झंडे पर चोंच मारना शुरू किया। वहीं टाशटेगो जमा हुआ था। इस चिड़िया ने अपने चमकते हुए पंख फैला दिए जो हथौड़े और लकड़ी के बीच में थे। उसी समय उस आकाशीय कंपन का अनुभव करके पानी में डूबे हुए उस बर्बर इंसान ने चारों ओर मौत से जकड़े रहकर अपने हथौड़े को वहां बर्फ की तरह जमा दिया। और इस प्रकार वह ईश्वरीय चिड़िया अपनी फ़रिश्तों की-सी चीख़ों के साथ; अपनी चोंच ऊपर उठाकर आहाब के उस झंडे में लिपटकर जहाज़ के साथ पानी में उसी तरह चली गई जिस तरह किसी शैतान नर्क में डूबने के पहले स्वर्ग का कुछ हिस्सा भी ज़रूर साथ ले लेता है।

अभी भी उस भारी घुमेड़ से छोटे-छोटे बुलबुले उठ रहे थे। सफ़ेद झाग भी आसपास टकरा-टकरा जाते थे। सब कुछ नष्ट हो गया। समुद्र की भारी लहरें उसी तरह उछलती रहीं जैसे पांच हज़ार साल पहले उछलती थीं।

# उपसंहार

'''और आपसे कहने के लिए केवल मैं बच गया।

—जॉब

"नाटक समाप्त हो गया। तब कोई आगे क्यों बढ़े?—क्योंकि उस विनाश में भी एक आदमी अवश्य ही बच रहा।

ऐसा हुआ कि पारसी के ग़ायब हो जाने के बाद, मुझे आहाब की नाव के अगले हिस्से के पतवार चलाने वाले का कार्य मिला क्योंकि उस पतवार वाले ने पारसी की खाली जगह ल ली थी। उस टूटती हुई नाव से जो तीन आदमी उछलकर पानी में जा गिरे थे, मैं भी उनमें से था और पीछे फेंक दिया गया था। तब आगे आने वाली दुर्घटनाओं को देखते हुए मैं तैरता रहा और जब डूबते हुए जहाज़ का आधा हिस्सा मेरे पास आया तब मैं, धीरे-धीरे, उस भंवर में खिंचा चला गया। जब मैं वहां पहुंचा तो वह क्रीम के रंग का ताल बना हुआ था। उस हौले-हौले घूमने वाले पहिए के धुरे की भांति जैसे दूसरा 'इक्सियन[1]' हो, मैं चारों ओर बुलबुले की तरह चक्कर काटता रहा। तब उसके केन्द्रस्थल पर पहुंचकर वह काला बुलबुला फूटा और तभी वह 'कॉफिन' से बनी जीवन-नौका बड़ी तेज़ी के साथ ऊपर उठकर मेरे बराबर आ लगी। उसके सहारे पानी पर तैरता हुआ मैं एक पूरे दिन और रात समुद्र की मुलायम लहरों पर तैरता रहा। नुकसान न पहुंचाने वाली मछलियां साथ-साथ डोलती रहीं जैसे उनके मुंह पर ताले पड़े हों। खतरनाक समुद्री बाज अपनी चोंचें बन्द किए उड़ते रहे। दूसरे दिन एक जहाज़ पास आया; और पास आया और उसने आखिरकार मुझे अपने डेक पर ले लिया। यह वही 'रैचेल' था, जो अपने बच्चों की खोज करता घूम रहा था और अब उसे एक दूसरा अनाथ मिल गया था।

◇ ◇ ◇

---

१. लेपिथी का राजा जो तेज पहिए की भांति सदा आकाश में चक्कर लगाता है।